जॉयस मेयर

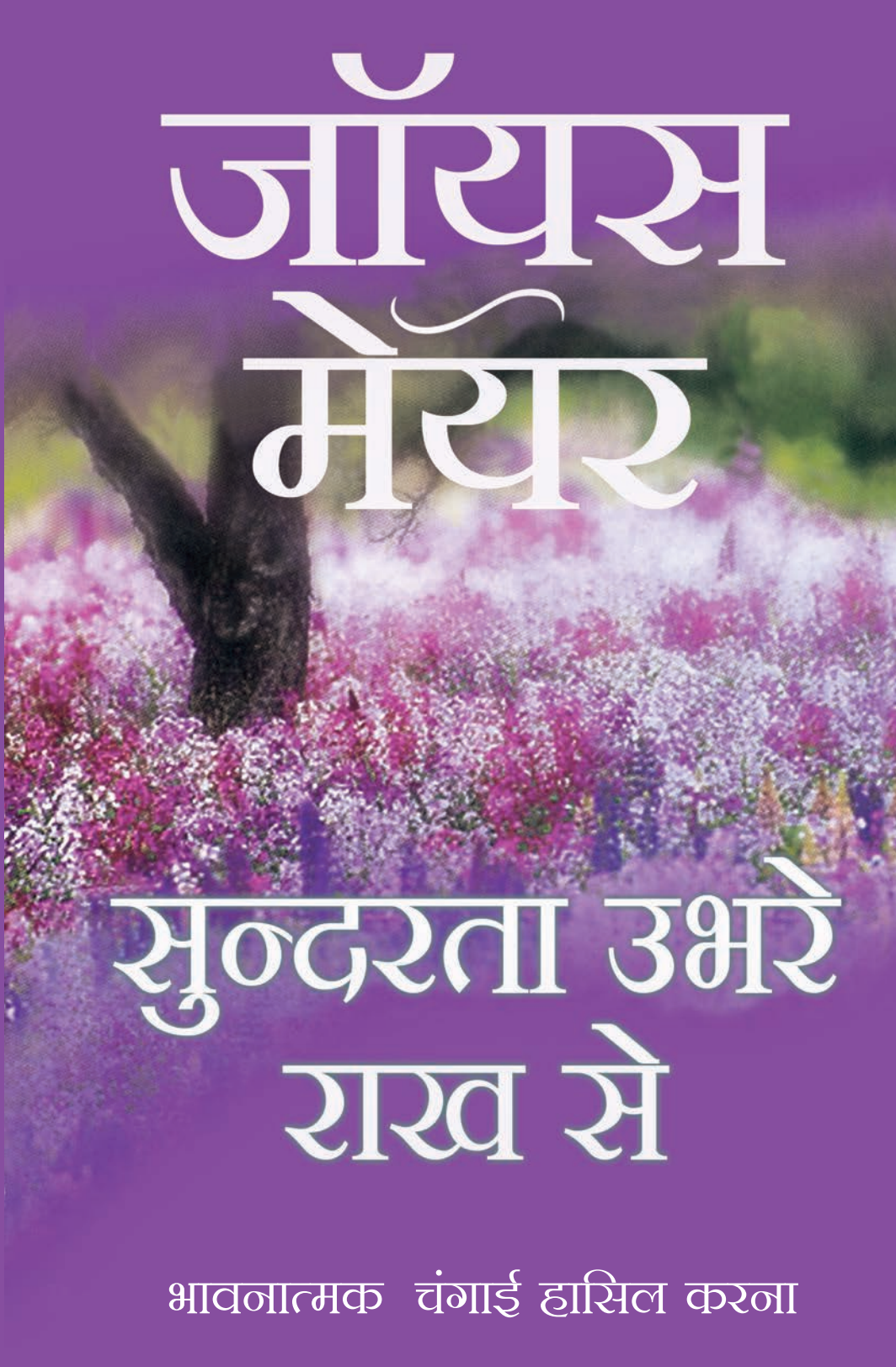

सुन्दरता उभरे राख से

भावनात्मक चंगाई हासिल करना

सुन्दरता
उभरे
राख से

सुन्दरता उभरे राख से

भावनात्मक चंगाई हासिल करना

जॉयस मेयर

JOYCE MEYER
ministries
Post Bag No.1, Jubilee Hills, Hyderabad 500 033

BEAUTY FOR ASHES — *Hindi*

Printed at
CAXTON PRINTERS
Red Hills, Hyderabad-500 004

मैं यह पुस्तक अपने पति डेव मेयर को समर्पित करना चाहूंगी. जिन्होंने मुझे यीशु का प्रेम दिखाया चब मेरी चंगाई प्रक्रि या जारी थी.

धन्यवाद डेव, मुझे तुमने वो बने रहने दिया जो मैं हूं, तब भी जब मैं ज़्यादा अच्छी नहीं थी. तुम हमेशा सहनशील और सकारात्मक बने रहे, और परमेश्वर पर विश्वास किया कि वह मुझे बदल देंगे जबकि ऐसा होना असम्भव दिखता था.

मेरा मानना है कि ये काम मेरा और तुम्हारा दोनों का है, और इसके लिये मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने तुम्हें मेरी ज़िंदगी में आने के लिये चुना, तुम सचमुच हमेशा रहे. ''नाईट इन शाईनिंग आर्मर.''

सूची

परिचय ix

भाग पहला : मैं कभी बंधन में थी

1 कृपा के पुरस्कार 13

2 शोषण की राख 17

3 भय की दासता 21

4 शोषण के कारण व्यवहार की लत 31

5 प्रेम द्वारा बचाये जाना 41

6 पवित्र आत्मा का अनुसरण करो 51

7 दो क़िस्म की पीड़ा 57

8 निकलने का एक ही रास्ता है 67

9 अतीत को भुला दो 73

10 मुक्त हुये और धर्मी बने 85

11 आत्म-अस्वीकृति या आत्म-स्वीकृति 97

12 अस्वीकृति का सम्बंधों पर प्रभाव 107

13 आत्मविश्वास आत्म-अनुभूति का 113

14 क्षमा आपको मुक्त करा के दोबारा जीने देती है 123

भाग दो : पर अब मैं मुक़्त हूँ

15 अपने शोषणकर्ता को क्षमा करना 131

16 अपने शत्रुओं को आशीष देना 137

17	बदला परमेश्वर लेंगे	147
18	दूसरों के साथ आनन्दित होने से मुक्त हो जायें	153
19	भावनात्मक स्थिरता	161
20	निकटता और विश्वास	165
21	मांगो और पाओ	173
22	भीतर से सशक्त होना	183
23	अंत में आज़ादी	191
24	सेतु बनाओ-दीवारें नहीं	199
25	कुछ भी व्यर्थ नहीं जायेगा	205
26	आपके कष्टो से दुगना	213
27	इसे झाड़ फेंको	221
28	चमत्कारी इनाम	233

परिचय

यदि आपको आनंद में भावनात्मक पीड़ा द्वारा बाधा उत्पन्न हो रही है, यदि आपका शोषण हुआ या आपने अस्वीकृति की भावना का दुख भोगा है मैं आपको प्रेरित करती हूं कि आप ये किताब पढ़ें. यदि आपने कभी मेरे रेडियो या टीवी प्रसारण सुने हों, तो आपने मुझे ये सत्य भी बताते सुना होगा कि अपने पूरे बचपन और किशोर अवस्था में मेरा यौन शोषण होता रहा. वास्तव में, मेरा जीवन एक राख के ढेर के समान था परमेश्वर से मिलने से पहले और फिर उनके वचन के सत्य ने मुझे मुक्त कर दिया.

ये मेरे अतीत की भद्दी यादों के वर्णन से भरी एक कहानी नहीं है, पर मैं आपको अवश्य थोड़ा बहुत तो बताना चाहूंगी अपने शुरूआती जीवन के बारे में ताकि आपको बता सकूं कि मैं समझती हूं कि क्या होता है आशाहीन और प्रेमहीन महसूस करना. सालों पहले, परमेश्वर ने मुझे प्रेरित किया मैं इन सच्चाईयों को अन्य लोगों तक पहुंचाऊ ताकि अन्य वो लोग भी मुक्त हो सकें जो इसी परिस्थिती में फंसे हैं. इस पुस्तक के पहले प्रकाशन के बाद से ही, मुझे हज़ारों लोगों के पत्र प्राप्त होते रहे हैं जो बताते है कि उन्हें प्रार्थना और शिक्षाओं की ज़रूरत है ताकि अपना जीवन उस विजयी भाव से जी सकें जो याजेना परमेश्वर ने उनके लिये बनाई है. वे साक्षी हैं कि इस पुस्तक ने उनकी बहुत सहायता की है.

हाल ही में, परमेश्वर ने मुझे उत्साहित किया कि इस पुस्तक की शिक्षाओं को और विकसित करूं ताकि इसे उस ठोस बुनियाद के रूप में उन लोगों के लिये बनाया जा सकें जो अपने अतीत को भुलाकर उस सुंदर जीवन की ओर बढ़ना चाहते हैं जिसका आनंद परमेश्वर उन्हें दिलवाना चाहते हैं. मेरे अपने अनुभवों के आधार पर, और विस्तृत अध्ययन जो मैंने किये कि शोषण के कारण व्यवहार कैसी लतों का शिकार हो जाता है, मैं बताना चाहती हूं कि कैसे परमेश्वर का प्रेम आपके अतीत के शोषण पर विजय पा लेगा. मैं दो प्रकार की पीड़ा पर भी रोशनी डालूंगी जो एक शोषित व्यक्ति को झेलनी पड़तीं हैं. बदलाव की पीड़ा या वहीं बने रहने की पीड़ा, और भावनात्मक चगांई प्राप्त करने के छः कदम.

अतीत से भागना चंगाई की ओर अग्रसर नहीं होने देता, इसलिये मैंने उन कई तरह के तरीकों को पहचाना है जो लोग अतीत से भागने के लिये अपनाते हैं ताकि आप अपनी विजय तक पहुंचने की देरी को टाल सकें. मैं आपको समझाऊंगी कि उस पीड़ा के द्वार से गुज़र कर कैसे आगे बढ़ना है जो आपके भविष्य में बाधा बन गई है.

यदि आपको अतीत को भूल जाने की और परमेश्वर से आंतरिक शक्ति पाने की ज़रूरत है जो आपको अन्य लोगों पर विश्वास करने के योग्य बनाये निकटतम संबंध विकसित करने और क़ायम रखने के क़ाबिल बनाये और आपको अपने जीवन का दोबारा आनंद दिलाये,

तो फिर ये किताब आप ही के लिये है एक बार आप शुरू करें, तो आगे पढ़ते रहें किताब के आख़िर तक ताकि आप उस ख़ुशख़बरी तक पहुंच सकें, उस पुरस्कार तक जिसके लिये परमेश्वरने आपको बुलाया है.

मैं अपने अनुभव से कहती हूं, कि परमेश्वर उन्हें पुरस्कृत करते हैं. जो लगन से उनकी खोज करते हैं. आप सीख सकते हैं कि कैसे मुसीबतों को झाड़ फेंकना है और दुगना हर्ज़ाना हासिल करना है उसके लिये जो आपने झेला है.

भाग पहला

मैं कभी बंधन में थी

''जो अन्धियारे और मृत्यु की छाया में बैठे, और दुख में पड़े और बेड़ियों से जकड़े हुये थे, इसलिए कि वे परमेश्वर के वचनों के विरूद्ध चले, और परमप्रधान की सम्पति को तुच्छ जाना.''

भजन संहिता १०७:१०-११

१

कृपा के पुरस्कार

बाहर से बहुत से लोगों के जीवन संयम और संभले लगते हैं, पर भीतर से वो भावनात्मक तबाही के शिकार हैं. क्योंकि शोषण ने उन्हें मानसिक आघात पहुंचाया इस मानसिक आघात से पीड़ित व्यक्ति ऐसा होता है जो शारीरिक रूप से और भावनात्मक रूप से घायल हुआ है किसी अचानक हुये या ज़ोरदार सदमे से जिसने भयानक और स्थायी हानि पहुंचाई उस व्यक्ति के मानसिक विकास को.

मेरा मानना है कि संसार में बहुत से ऐसे लोग मानसिक आघात से ग्रस्त हैं. जिनके अतीत में उनका शोषण हुआ और अब वे मानसिक अभाव के शिकार हैं; रोज़मर्रा की ज़िंदगी को वे सामान्य रूप से नहीं जी सकते. कुछ लोग तो ऐसे हैं जिन्हें ऐसा मानसिक आघात पहुंचा है कि उसने उनकी भावनाओं को गंभीर रूप से घायल किया है, क्योंकि उन्होंने कुछ ऐसा सहा है जो इतना भयानक था कि बताया भी नहीं जा सकता.

शोषण का मानसिक आघात सह कर निकलने वाले लोग ऐसे मनोविकार का शिकार हो जाते हैं कि ये उनके अन्य लोगों के साथ संबंधों और इच्छा में बाधक हो जाता है. ऐसे पीड़ित समझ नहीं पाते कि उनमें क्या ख़राबी है, या अपनी विनाशकारी प्रकृति के ढेरों से कैसे बाहर निकले ताकि वे सामान्य जीवन जी सकें. मेरी भी यही स्थिति थी इससे पहले कि मैंने सीखा कि अपने जीवन के अभिघात पर विजय कैसे पानी है.

परमेश्वर को ढूंढने द्वारा और उनके वचन को पढ़नें पर मैंने पाया कि परमेश्वर की मुख्य चिंता है आपका आंतरिक जीवन. क्योंकि वहीं हम उनकी उपस्थिति का आनंद लेते हैं. यीशु ने कहा, ''देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है (तुम्हारे हृदयों में है) और तुम्हारे भीतर है (तुम्हारे आसपास तुम्हें घेरे हैं) (लूका १७:२१ विस्तारित)

ये पुस्तक निचौड़ है उसका कि कैसे परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि मसीह द्वारा अपने जीवन के शोषण के दुखद हादसे पर विजय प्राप्त कर सकूं. उनके वचन का प्रचार कई वर्ष करने के बाद परमेश्वर मुझे ले गये २ कुरिंथियों २:१४ पर: ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद

हो, जो मसीह में सदा हमको जय के उत्सव में लिये फिरता है (मसीह की विजय के पुरस्कार रूप में) और अपने ज्ञान की सुगंध हमारे द्वारा हर जगह फ़ैलाता है.''

धन्यवाद देते हुये एक सुबह, धन्यवाद की आत्मा मेरे अंदर उभरनी शुरू हो गई जैसे जैसे मैंने वो सब महसूस करना शुरू किया जो परमेश्वर ने मेरे लिये किया है. उस दिन उन्होंने मेरे हृदय से बात की और मुझसे कहा, ''जॉयस, तुम मेरी कृपा का पुरस्कार हो, और अन्य पुरस्कार प्राप्त करने में तुम मेरी मदद कर रही हो.'' फिर मुझे एक दृश्य दिखा कि स्वर्ग क्या सजाया गया है, पुरस्कारों यानी ट्रॉफ़ीयों से भरा मंच. मैं समझ गई कि जब कोई पुरस्कार जीतता है, वह इसलिये क्योंकि वह व्यक्ति एक चैम्पियन है उस क्षेत्र में जिसमें वह कार्यरत है. यदि लोगों के पास बेसबॉल, गॉल्फ़ या बॉलिंग की ट्रॉफ़ीयां हों तो वे उन्हें अपने घर में सजाकर रखते हैं, इससे स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने उस क्षेत्र विशेष में योग्यता हासिल करने के लिये काफ़ी समय दिया है. परमेश्वर लोगों को विनाश के स्थान से लाकर संपूर्ण विजय के मुक़ाम तक लाने में चैम्पियन हैं. जैसे ही वे विजय के मुक़ाम तक पहुंचते हैं वे उनकी कृपा की ट्रॉफ़ी का रूप ले लेते हैं और उन्हें सजा कर रखा जाता है परमेश्वर की नेकी की सुगंधमयी स्मृति बना कर. मैं इस पुस्तक में अपनी गवाही आपसे बांट रही हूं उन लोगों की मदद के लिये जो अभी भी परमेश्वर का पुरस्कार बनने की प्रक्रिया में हैं.

दुखों और सफलताओं दोनों के दौरान मैंने सीखा है कि यीशु मेरे राजा हैं, और वह आपके राजा भी बनना चाहते हैं. वह राज्य जिस पर वह राज करना चाहते हैं. वो है आपकी अंदरूनी ज़िंदगी - हमारा मन, इच्छा, भावनायें, आकांक्षायें और विचार. वचन स्पष्ट तौर पर सिखाता है ''क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं (यानी खाने का इंतज़ाम या पीने का) परन्तु धर्म और मिलाप और आनंद है (धार्मिकता यानी वो स्थिति जो परमेश्वर को स्वीकार है) जो पवित्र आत्मा से होता है (हृदय से) और जो इस रीति से परमेश्वर की सेवा करता है वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों के ग्रहण योग्य ठहरता है.'' (रोमियों १४:१७-१८)

दूसरे शब्दों में, यदि परमेश्वर का राज्य हमारे भीतर राज करता है, तो हम आनंद लेंगे पवित्र आत्मा की धार्मिकता, शांति और ख़ुशी का. हम परमेश्वर को भी स्वीकार होंगे और मनुष्य को भी. यीशु ने कहा कि हमें गहरी बातों की चिंता नहीं करनी चाहिये जैसे खानापीना और कपड़े, पर हमें खोजना है (हमारा लक्ष्य और सब प्रयास इसी ओर हो) पहले संपूर्ण परमेश्वर को ''इसलिये पहले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो. (वह कैसे धार्मिकता में चलना सिखाते हैं) तो वे सब वस्तुयें भी तुम्हें मिल जायेंगी.'' (मत्ती ६:३३)

इसलिये हमें सबसे पहले, परमेश्वर के राज्य को खोजना है, जो हमारे भीतर ही है, और तब हमारी सारी बाहरी चिंताये भी निबट जायेंगी. जब हम यीशु को अपना प्रभु स्वीकारते हैं, वह हमारी अंदरूनी ज़िंदगी पर राज करते है और अपने साथ लाते हैं. धार्मिकता, शांति और आनंद. चाहे हमने अपनी बाहरी ज़िंदगी में कितने ही दुख मुसीबतें या परीक्षायें क्यों न झेली

हो, यदि हम भीतर से संपूर्ण हैं. हम न केवल जीयेंगे, हम अपने जीवनों का आनंद लेंगे.

हमारा भीतरी जीवन हमारे बाहारी जीवन से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है. इसलिये भावनात्मक चंगाई, जिसे मैं भीतरी चंगाई भी कहती हूं, वो विषय है जिसे आत्मिक दृष्टि से देखा जाना चाहिये, संतुलित तरीके से जो परमेश्वरीय परिणाम निकाले प्रेरित पौलुस ने कहा कि हम सुनिश्चित हो सकते हैं कि जिसने प्रभु यीशु को जिलाया, वही हमें भी यीशु में भागी बना कर जिलायेगा और तुम्हारे साथ अपने सामने उपस्थित करेगा.'' (२ कुरिन्थियों ४:१४) वचन १६ से १८ में वह आगे बात जारी रखते हैं.

''इसलिये हम हिपाव नहीं छोड़ते (निराश नहीं होते अपने डर के कारण आत्माहीन, थके और निढाल नहीं होते) हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी हो जाता है. (धीरे धीरे) तो भी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन (धीरे धीरे) नया होता जाता है.

क्योंकि हमारा पलभर का हल्का-सा क्लेश (ये छोटी-सी बेचैनी जो गुज़र जाती है) हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है (सभी मापदण्डों से परे, सभी तुलनाओं और हिसाब किताब से कहीं ज़्यादा ऊंची, एक महान और अच्छादित महिमा और आशीष जो कभी समाप्त नहीं होती) और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं; क्योंकि देखी हुई वस्तुयें चौथे ही दिन की है. (बहुत छोटी और गुज़र जाने वाली) परन्तु अनदेखी वस्तुयें सदा बनी रहती हैं.''

हर कोई प्रभावित होता इससे जिसे पौलुस ने कहा है ''पल भर का हल्का-सा क्लेश'' और हममें से कुछ ने इसे भोगा है और उस समय ये असहनीय लगती थी, ये भावनात्मक पीड़ा परन्तु यीशु और घोषणा की ''मुझे इसलिये भेजा है कि बन्धुओं को छुटकारे का और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं (वो जो दलित, घायल, कुचले और किसी प्रकोप द्वारा टूटे हुये हैं)'' (लूका ४:१८-१९)

किंग जेम्स के संस्करण में वचन १८ में लिखा है कि यीशु ने कहा मैं आया हूं ''टूटे हृदयों को चंगाई देने.'' ''स्ट्राँग की एग्ज़ाऊस्टिब कॉनकोर्डेंस'' के अनुसार शब्द ''टूटे हृदय का रूपांतर इस वचन में दो युनानी शब्दों का मेल है, 'कार्डिया' जिसका साधारण-सा मतलब है 'हृदय' और ''सुंट्रीबो'' (सून-ट्री बो) जिसका मतलब है पूरी तरह कुचल देना यानी छितरा देना... टुकड़े टुकड़े कर देना तोड़कर छितरा देना..., उसे पहुंचाना'' मेरा मानना है कि यीशु उन्हें चंगाई देने आये जो अंदर से टूट चुके हैं... जो अंदर से कुचले गये और घायल हैं.

यदि आपको शोषण द्वारा मानसिक आघात पहुंचा है, ये मेरी आशा है कि ये किताब आपको राह दिखाने वाली मार्गसूचिका का काम करेगी ताकि आप तबाही की राख से उभर कर वो सुंदरता पा सकें जो आपके भीतरी मुनष्यत्व के स्वास्थ और संपूर्णता से प्राप्त होती है. मैं प्रार्थना करती हूं कि आपको ये संदेश सरल, स्पष्ट और शक्तिशाली लगेगा और पवित्र आत्मा

आपको इस योग्य बनायेगा कि आप शांति और आनंद के अपने गंतव्य तक पहुंच सकें.

मेरी प्रार्थना आपके लिये इफ़िसियों ३ वचन १६ की ही व्याख्या है.

''कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होते जाओ.''

मैं आपको इस बात के लिये भी उत्साहित करती हूं कि हमेशा परमेश्वर का वो वादा याद रखें जो हमें मिलता है इब्रानियो १३:५-६ में.

''क्योंकि उसने (परमेश्वर ने) आप ही कहा है, मैं तुम्हें कभी न छोडूंगा और न कभी तुझे त्यागूंगा. (मैं तुम्हें कभी नहीं) (मैं तुम्हें) कभी नहीं, (मैं तुम्हें) कभी नहीं किसी भी तरह से असहाय न छोडूंगा और न ही तुम्हें त्यागूंगा, न ही (अपनी पकड़ तुमपर ढीली छोडूंगा) (निश्चय ही ये न होगा)

इसलिये हम बेधड़क होकर कहते हैं कि प्रभु मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा (मैं डरूंगा नहीं, भयभीत न होऊंगा या आंतकित न होऊंगा) मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?''

२

शोषण की राख

मेरा मानना है कि बहुत से लोगों का उनके जीवनकाल में किसी न किसी तरह से शोषण हुआ है. लगभग हर व्यक्ति ऐसा समय याद कर सकता है जब उसके साथ दुरव्यवहार हुआ. मेरा ये भी मानना है कि वहां भारी संख्या में ऐसे लोग हैं जो भयंकर रूप से मानसिक आघात से पीड़ित हैं उस शोषण द्वारा जो उन पर थोपा गया.

इस क्रिया 'शोषण' की कुछ और परिभाषायें भी हैं: ''ग़लत इस्तेमाल किये जाना या बुरा इस्तेमाल,''; ''धोखा देना''; ''इस्तेमाल जिससे हानि या घाव हो: ''दुरव्यवहार''; शब्दों द्वारा हमला करना: अपवित्र करना. संज्ञा ''शोषण'' शब्द की परिभाषा में शामिल हैं: ''एक भ्रष्ट तरीका या रिवाज़''; ''ग़लत या अत्याधिक इस्तेमाल या इलाज: ग़लत इस्तेमाल'', ''एक धोखा देने वाला कार्य: छल''; ''वो भाषा जो दोष लगाए या नकारे... अन्यायी तरीक़े से, जानबूझकर और ग़ुस्से में''; ''शारीरिक दुरव्यवहार.''

कुछ आम तरह के शोषण हैं: शारीरिक, शाब्दिक, मानसिक, भावनात्मक और यौन संबंधित: किसी भी तरह का लगातार शोषण किसी व्यक्ति में अस्वीकृति की जड़ लगा देता है जिसके साथ दुरव्यवहार हुआ, और उसकी आत्मअयोग्यता की सुरक्षा भावना फिर बहुत सी गहरी समस्यायें उत्पन्न कर सकतीं हैं उसके परस्पर व्यक्तिगत संबंधों में. आज हम ऐसे समाज में रह रहे हैं जिसमें ऐसे लोग भरे पड़े हैं जो ये नहीं जानते कि दूसरे लोगों के साथ कैसे निभाना है;

हालांकि उनके जीवन का शोषण ख़त्म हो चुका है, उस मानसिक आघात के अवशेष अभी तक दूसरों से संबंध रखने की उनकी योग्यता पर प्रभाव डालते है.

परमेश्वर ने हमें बनाया है प्रेम और स्वीकृति के लिए, पर शैतान उससे भी ज़्यादा प्रयत्न करता है कि हम नकारा महसूस करते रहें क्योंकि वो जानता है कि आत्मयोग्यता की कमी और नकारात्मकता महसूस करने की जड़ कैसे एक व्यक्ति, परिवारों और मित्रताओं को घायल करती है.

ऊपर दिए गए शोषण के प्रकार-चाहे वो टूटे रिश्तों के रूप में हों, त्यागे जाने, तलाक़, झूठा दोष, किसी समूह से बाहर निकालना हो, अध्यापकों द्वारा नापसंद किए जाना या अन्य सत्ताधारी व्यक्तिओं की नापसंद, बड़ों द्वारा मज़ाक किए जाना-या ऐसी ही कई सैकड़ों प्रक्रियायें जो ठेस पहुंचाती हैं - और कर सकती हैं और करती भी हैं भावनात्मक घाव जो लोगों के स्वस्थ और चिरस्थाई सम्बन्ध रखने के प्रयासों में बाधा बनते हैं.

क्या आपका शोषण हुआ है?

यदि आपके साथ बुरा या ग़लत व्यवहार हुआ है, तो ये आपके भावनात्मक पक्ष पर गंभीर प्रभाव डालता है. पर शोषण की पीड़ा से चंगाई पाने के लिए आप में स्वयं स्वस्थ होने की इच्छा हो.

शास्त्रवचन में मेरा सबसे मनपसंद भाग है (परंतु ये काफ़ी चौंकाने वाला भी है) युहन्ना, अध्याय ५, वचन ५ में, यीशु का वर्णन है कि उन्होंने एक मनुष्य को देखा जो बेतहसदा के कुण्ड के पास पड़ा था ''यीशु ने उसे पड़ा हुआ देखकर और जानकर कि वह बहुत दिनों से इस दशा में पड़ा हैं'' दरअस्ल वो एक लाइलाज बीमारी के कारण अड़तीस वर्ष से बीमार था, यीशु ने उसकी यह गंभीर हालत देखी और यीशु ने उससे पूछा'' क्या तू चंगा होना चाहता है'' (क्या सचमुच तुम स्वस्थ होने के प्रति गंभीर हो?) किस तरह का ये सवाल है ख़ासकर ऐसे व्यक्ति से जो इतने लम्बे समय से पीड़ा भोग रहा है? ये एक वाजिब सवाल है क्योंकि हर कोई चंगा होने के लिए इतना उत्सुक नहीं होता कि वो करे जो करने की ज़रूरत है. घायल भावनाएं ऐसी जेल बना सकती है जो आपको अंदर तालाबंद कर दें और दूसरों को बाहर, पर यीशु आये जेल के दरवाज़े तोड़ने और बंदीओं को आज़ाद कराने. (देखिए लूका ४:१८-१९)

बेतहसदा में यह व्यक्ति आज-कल के ही बहुत से लोगों जैसा था, जिसमें बहुत ही गंभीर गहराई तक गई और लाइलाज सी बीमारी थी एक लम्बे समय से. मुझे यक़ीन है कि अड़तीस साल के बाद उसने सीख लिया होगा कि इस बीमारी के साथ कैसे जीना है. लोग जो जेल में होते हैं वो भी जीते हैं, पर वो आज़ाद नहीं होते. फिर भी, कई बार क़ैदी, चाहे वो शारीरिक या भावनात्मक क़ैदी हों वो अपने उस बंधन के आदी हो जाते हैं कि अपनी उसी अवस्था में रहना और उन्ही बेड़ीओं के साथ जीना सीख लेते हैं.

क्या आप भावनात्मक बंदी हैं? यदि हैं; तो आप इस अवस्था में कितने अर्से से हैं? क्या ये भीतर तक गया है और लगातार चलते रहने वाला रोग है? क्या आप इससे मुक्त होना चाहते हैं? क्या आप सचमुच स्वस्थ होना चाहते हैं? यीशु आपको चंगा करना चाहते है. वो राजी हैं, क्या आप राजी हैं?

क्या आप मुक्त होना और चंगा होना चाहते हैं?

भावनात्मक बंधनों से मुक्त हो जाना आसान नहीं होता. मैं शुरू से ही ईमानदारी से ये कहूंगी, स्पष्ट कहूंगी कि बहुत से लोगों के लिए अतीत की पीड़ा से मुक्त हो जाना आसान नहीं होगा. हो सकता है ये चर्चा उनकी वो भावनायें और अनुभूतियां बाहर ले आये जिसे वे छुपाने की कोशिश कर रहे हैं बजाय उनका सामना करने के. शायद उन लोगों में से एक आप भी हों.

शायद आपने कुछ ऐसी भावनायें महसूस की हों अपने अतीत में कि जिनसे निपटना बहुत ही पीड़ा दाई हो, इसलिए जब भी कभी वो आपकी याद में उभरकर आती हों, आपने परमेश्वर से कहा ''में अभी तैयार नहीं हूँ प्रभु! मैं इस समस्या का सामना बाद में करूंगा.'' इस किताब में हम उस भावनात्मक पीड़ा से निपटेंगे जो उस वजह से उत्पन्न हुई हो जो किसी ने कभी आपके साथ किया, और हम इससे भी निपटेंगे कि परमेश्वर के प्रति आपकी ज़िम्मेदारी क्या है और चंगा होने के लिए इन मानसिक आघातों से उभरना होगा.

कुछ लोग (दर अस्ल बहुत संख्या में लोग) अपनी भावनात्मक सेहत के प्रति ज़िम्मेवार होने से कतराते हैं. इन पृष्ठों में, हम व्यवहारिक तरीक़े से निपटेंगे क्षमा, दबे ग़ुस्से, आत्मदया, किसी के लिए दुर्भावना, तुम पर अहसान वाला रवैया और ऐसे बहुत से बहुत से दूसरे ज़हरीले रवैये जिन्हें पूरी तरह साफ़ करना ज़रूरी है यदि आप सचमुच पूरी तरह स्वस्थ होना चाहते हैं.

आप शायद सोचें, पर उस व्यक्ति से कौन निपटेगा जिसने मुझे ठेस पहुंचाई? हम उस विषय पर भी आयेंगे. शायद आप इस पर भी हैरान हो रहे हों, 'ये औरत कौन होती है जो अपने आपको भावनाओं के विषय पर विशेषज्ञ समझती है- ख़ासकर मेरे' शायद आपके पास कुछ सवाल हों जो आप मुझसे पूछना चाहते हों, जैसे कि: ''क्या तुम्हारे पास मनोविज्ञान की डिग्री है? तुमने अपना अध्यन कहां से किया? क्या तुम भी कभी उन हालातों से गुज़री हो जो मैं झेल रहा हूँ? तुम क्या जानो कि क्या होता है भावनात्मक जेल में क़ैद होना?'' इन सभी प्रश्नों के जवाब मेरे पास हैं, और यदि आप इतने बहादुर हैं कि अपनी परिस्थिति का सामना कर सकें और आप ये फ़ैसला कर चुके हैं कि आप सचमुच चंगा होना चाहते हैं, तब आगे पढ़िये.

मेरा शोषण हुआ

मेरा स्कूल, डिग्रीयां, अनुभव और शैसनिक योग्यता इस विषय पर बात करने और शिक्षा देने के लिए मेरे व्यक्तिगत अनुभव से प्राप्त हुई है. मैं हमेशा कहती हूँ, ''मैं जीवन के स्कूल की स्नातक हूँ.'' मैं भविष्यवक्ता यशायाह के वचनों को अपने डिप्लोमा के रूप में पेश करती हूँ ''प्रभु का आत्मा मुझ पर हैं; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया

और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मन के लोगों को शांति दूं; कि बंधुओं के लिए स्वतंत्रता (शारीरिक और आत्मिक) का और क़ैदिओं के लिए छुटकारे का प्रचार करूं.

कि यहोवा के प्रसन्न रहने के वर्ष का (वो वर्ष जो परमेश्वर के हित में हैं) और हमारे परमेश्वर के पल्टा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करने वालों को शांति दूं,

और सिय्योन के विलाप करने वालों के सर पर की राख दूर करके सुंदर पगड़ी बांध दूं (उन्हें आनंद और सुकून दूं, उन्हें हार पहनाऊ या सम्मानित करूं) कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढ़ना उढ़ाऊं; जिससे वे धर्म के बांज वृक्ष और यहोवा के लगाये हुए कहलायें (वो ऊंचे हो मज़बूत हों और शानदार दिखें, अपने स्पष्टवादिता के कारण पहचाने जाएं, न्यायी हों धर्मी हों और परमेश्वर के साथ सही स्थान रखें) और जिससे उसकी महिमा प्रकट हो. (यशायाह ६१:१-३)

परमेश्वर ने मेरी राख को सुंदरता में ढाल दिया है और मेरा अभिषेक किया है कि मैं दूसरों की मदद कर सकूं ताकि उनके लिए भी वो यही कर सकें. मेरा यौन, शारीरिक, शाब्दिक, मानसिक और भावनात्मक शोषण हुआ उस समय से जब से मुझे याद है अंत में जब तक मैने अठारह साल की उम्र में घर नहीं छोड़ दिया तब तक. असल में, मेरे बचपन में ही कई आदमीओं ने मेरा शोषण किया. मैं नकारी गई, त्यागी गई, छली गई और मुझे तलाक़ दिया गया. मैं जानती हूँ क्या होता है ''भावनात्मक क़ैदी'' होना.

इस किताब को लिखने का मेरा मक़सद ये नहीं कि मैं अपनी पूरी गवाही विस्तार से दूं बल्कि ये कि अपने अनुभव से आपको वो दूं जो आपके लिए पर्याप्त रहे ताकि आप ये विश्वास कर सकें कि मैं जानती हूँ कि ठेस खाने का मतलब क्या होता है. मैं आपको दिखा सकती हूँ कि पीड़ा और शोषण के मानसिक आघात से कैसे उभरना है. मैं आपकी मदद करना चाहती हूँ. और मैं ये तभी बेहतर कर सकती हूँ यदि आप सचमुच ये विश्वास करें कि मैं समझती हूँ कि आप पर क्या बीत रही है.

इससे पहले कि मैं अपने बचपन और कुछ बातें जो मैंने अनुभव की हैं उन पर विस्तार से चर्चा शुरू करूं, मैं ये कहना चाहती हूँ कि किसी भी तरह मेरा ये मतलब नहीं कि इन बातों से मै अपने माता-पिता का अपमान कर रही हूँ इस किताब के पहले प्रकाशन के बाद से, परमेश्वर कृपालू रहे और उन्होंने उनके साथ मेर संबंधों को पुन: स्थापित किया.

पर मैंने ये सीखा है कि ठेस खाये लोग, लोगों को ठेस पहुंचाते हैं; ये कि ज़्यादातर लोग जो दूसरों को ठेस पहुंचाते हैं उन्हें कभी किसी और ने ठेस पहुंचाई है. परमेश्वर ने अपनी कृपा द्वारा मुझे ये कहने के योग्य बनाया है, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहें हैं'' मैं ये कहानी केवल एक ही मक़सद से सुना रही हूँ कि इससे अन्य उन लोगों की मदद हो जिनका मेरी तरह शोषण हुआ.

३

भय की दासता

घर में यौन और भावनात्मक शोषण के कारण, मेरा पूरा बचपन भय से भर गया. मेरे पिता अपने ग़ुस्से और प्रताड़ना द्वारा मुझ पर पूरा नियंत्रण रखे थे. उन्होंने कभी भी शारीरिक ज़बरदस्ती द्वारा मुझे अपने सामने आत्मसमर्पण करने पर मज़बूर नहीं किया, पर मैं उनके ग़ुस्से से इतनी भयभीत थी कि मुझे जो कुछ भी करने को कहते मैं करती. उन्होंने बेशक़ मुझे ये दिखावा करने पर मजबूर किया कि वो जो मेरे साथ कर रहे थे वो मुझे पसंद था, पर ये मैं चाहती थी कि वो ऐसा करें. कई बार जब मैंने डरते-डरते ईमानदारी से अपनी परिस्थिति के बारे में बोलना चाहा कि ये मुझे तबाह कर रही थी. मेरे पिता की ये हिंसक प्रतिक्रिया-उनका ग़रजना और बरसना- मेरे लिए इतना डरावना था कि मुझे जल्दी ही ये सीखना पड़ा कि बिना किसी विरोध के बस वो सब करूं जो वो कहते हैं. मेरा मानना है कि अपनी सच्ची भावना व्यक्त करने की असमर्थता कि मेरे साथ क्या हो रहा है, और मुझे ये करने को मजबूर किया जा रहा है कि जो दुष्कर्म वो मेरे साथ कर रहे हैं उसका मैं आनंद ले रही हूँ, इसने मेरे अंदर बहुत ही गहरे जज़्बाती ज़ख़्म छोड़ दिये.

मेरे पिता शाम को काम पर जाते और रात को ग्यारह या बारह बजे घर लौटते और मुझे याद है कि कैसे मेरा पूरा शरीर डर से भर जाता जैसे ही मैं ताले में घूमती चाबी की आवाज़ सुनती. मैं पूरी तरह अकड़ जाती, क्योंकि मुझे ये कभी पता नहीं होता कि वो मेरे कमरे में आयेंगे और मुझ पर अपना हाथ डालने की कोशिश करेंगे, और या वो अंदर आयेंगे और किसी चीज़ के बारे में जो उन्हें पसंद नहीं गरजना शुरू कर देंगे.

मेरे लिए सबसे कठिन बात यही थी कि मुझमें स्थिरता की कमी थी कि मैं जान सकूं कि क्या होने वाला है; मैं हमेशा इसी डर में जीती रही बिना ये जाने कि मैं क्या कर सकती और क्या नहीं कर सकती थी. मैं किसी एक दिन कोई एक बात करती और मेरे पिता उससे ठीक-ठाक रहतें, पर बिल्कुल वही चीज़ जब मै कुछ दिन बाद करती तो मुझे ऐसा थप्पड़ पड़ता कि कमरे में दूर जाकर गिरती.

भय मेरा सदा का साथी था; मेरे पिता का भय, उनके ग़ुस्से का भय, बात खुलने का भय, ये भय कि मेरी मां को पता लग जायेगा कि क्या हो रहा है, और मित्र रखने का भय.

मित्र रखने का मेरा भय दो पहलूओ से उपजा: यदि वे स्त्रियां होतीं, तो मुझे डर था कि मेरे पिता उन्हें भी अपने जाल में खींचने की कोशिश करेंगे. यदि वे पुरूष होते तो मुझ भय था कि मेरे पिता उनका हानि पहुंचायेंगे या मुझे, उन्होंने बहुत हिंसक होकर एक बार मुझ पर इल्ज़ाम लगाया कि मैं अपने स्कूल के एक परिचित से यौन सम्बन्ध रखे हुए हूँ. वो किसी को भी मेरे निकट आने की अनुमति नहीं देते क्योंकि मैं उनकी ''सम्पत्ति''थी

हाईस्कूल में मुझे कभी भी फ़ुटबॉल गेम, बेस बॉल गेम, बास्केट बॉल गेम में जाने की अनुमति नहीं मिली. मैने स्कूल में मेल जोल बढ़ाने की कोशिश की पर मैने कभी भी रिश्तों को इतना पनपने नहीं दिया कि मुझे अपने नये मित्रों को अपने घर पर निमन्त्रित करना पडता. मैंने कभी भी किसी को इतना आज़ाद महसूस नहीं करने दिया कि वो मुझे घर पर सम्पर्क कर सकें. यदि फ़ोन बजता और वो कॉल मेरे लिए होती तो मैं घबरा जाती, ''कहीं कोई स्कूल से तो नहीं?'' हर समय मैं मित्र रखने और अकेला महसूस करने के भय से निपटती रही, मैं अभी भी इसके लिए राज़ी नहीं थी कि किसी और को इसमें शामिल करूं जो उनके लिए शायद तबाही बन जाता, और शायद इससे मुझे और शर्मिंदगी और हिचकिचाहट महसूस होती.

भय! भय! भय!

हर सप्ताह अंत पर मेरे पिता बहुत शराब पीते, अक्सर मुझे भी अपने साथ इन शराबी दौरों पर ले जाते और जब जी चाहता मुझे शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते, कई बार, वो ग़ुस्से में भरे घर आते और मेरी मां को पीटते. एक बार उन्होंने मेरी मां को सिर्फ़ इसलिए पीटा, और कहा कि उनकी नाक बड़ी थी. उन्होंने मुझे अक्सर पीटा नहीं, पर मेरे ख़्याल से उन्हें बेरहमी से अपनी मां को मारते देखना ही बस मेरे लिए उतना ही नुक़सान देह था जितना यदि वे सचमुच मुझे भी मारते.

मेरे पिता हर बात पर नियन्त्रण रखते जो भी उनके आस-पास होतीं. वही फ़ैसला करते कि हमें किस समय उठना है और कब सोने जाना है; क्या हमें खाना, पहनान और खर्चना है; हमें किसके साथ मेल जोल रखना है; टेलीविज़न पर हमें क्या देखना है- संक्षेप में, हमारे जीवन की हर बात वे मुझे और मेरी मां को गालीयां देते, और अंत में मेरे इकलौते भाई को, जो तब जन्मां जब मैं नौ साल की थी. मुझे याद है मैं कितनी बेसब्री से ये चाहती थी कि नया बच्चा एक लड़की हो. मैंने सोचा कि शायद यदि परिवार मैं कोई और बालिका हुई तो शायद मुझे अकेला छोड़ दिया जायेगा, कम से कम कुछ समय के लिए तो.

मेरे पिता लगातार अपशब्द कहते रहते, बहुत ही अश्लील और गंदी भाषा का इस्तेमाल करते. वे हर चीज़ और हर व्यक्ति की आलोचना करते उनकी ये राय थी कि हममें से कोई

भी कभी कोई सही काम नहीं करता, या हम कभी भी कुछ योग्य बनने के क़ाबिल नहीं होंगे. ज़्यादातर समय, हमें यही याद कराया जाता कि हम बस ''बेक़ार थे''

कभी-कभी मेरे पिता इससे बिल्कुल विपरीत होते. वे हमें पैसे देते और कहते जाओ जाकर शॉपिंग करो; कई बार तो वो हमारे लिए उपहार भी लाते. वे बहुत ही चालबाज़ और ज़बरदस्ती करनेवाले थे. उन्होंने वो सब किया जो वो करना चाहते थे और वो जो पाना चाहते थे उसके लिए कुछ भी करते. दूसरे लोगों की उनके सामने कोई क़ीमत नहीं थी सिवाय इसके कि उन्हें अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करें.

हमारे घर में कोई शांति नहीं थी. दर अस्ल मुझे मालूम ही नहीं था कि सच्ची शांति क्या होती है जब तक कि मैं बड़ी नहीं हुई और कई साल तक परमेश्वर के वचन में डूबी ना रही.

नौ साल की उम्र में मैं दोबारा जन्मीं जब मैं शहर से बाहर अपने कुछ रिश्तेदारों से मिलने गई थी एक रात में उनके साथ एक चर्च सर्विस में शामिल होने गई, उद्धार खोजने की इच्छा से. मुझे मालूम नहीं कि मुझे कैसे पता चला कि मुझे उद्धार पाने की ज़रूरत है, सिवाय इसके कि परमेश्वर ने ही ये इच्छा मेरे हृदय में डाली होगी. मैंने अवश्य यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया उस शाम और एक महिमामयी स्वच्छता महसूस की. इससे पहले तक मैं हमेशा गंदा महसूस किया करती उस व्यभिचार के कारण अब, पहली बार, मुझे स्वच्छ महसूस हुआ, जैसे कि मैं अंदर से नहा चुकी थी. फिर भी, क्योंकि ये समस्या दूर नहीं हुई थी जैसे ही मैं घर लौटी मेरी पुरानी भावनायें लौट आई. मैंने सोचा कि मैंने यीशु को खो दिया, इसलिए मैंने कभी भी सच्ची आन्तरिक शांति और ख़ुशी नहीं जानी.

वो छल

मेरी मां का क्या हुआ? इस सब चीज़ों में वो कहां फिट होती हैं? उन्होंने मेरी मदद क्यों नहीं की? मैं क़रीबन आठ या नौ साल की थी जब मैंने मां को बताया कि मेरे पिता और मुझमें क्या चल रहा है. उन्होंने मुझे जांचा और मेरे पिता का सामना किया, पर उन्होंने दावा किया कि मैं झूठ बोल रही थी-और उन्होंने मेरी बजाय उन पर विश्वास करना चुना. ऐसी परिस्थिति में कौन औरत अपने पति पर विश्वास नहीं करना चाहेगी? मेरे ख़्याल से कहीं अंदर ही अंदर मेरी मां को सच्चाई मालूम थी वो यही उम्मीद पर उम्मीद कर रही थी कि उनका अंदाज़ा ग़लत हो.

जब मैं चौदह साल की हुई, वो एक दिन घर में घुसीं, अपनी ग्रॉसरी शॉपिंग से कुछ पहले ही लौट आयीं थीं, और सचमुच उन्होंने मेरे पिता को मेरा यौन शोषण करते हुए पकड़ लिया. उन्होंने देखा, बाहर चली गईं, और दो घण्टे बाद लौट आईं ऐसा दिखावा करते हुए जैसे वो

वहां कभी आईं ही नहीं. मेरी मां ने मुझ से छल किया. उन्होंने मेरी मदद नहीं की, और उन्हे ये करना चाहिए था.

बहुत-बहुत साल बाद (दरअस्ल तीस साल बाद) उन्होंने मेरे सामने इक़रार किया कि वे इस कलंक का सामना करने की हिम्मत नही जुटा पायीं थीं तीस साल तक उन्होंने कभी इसका ज़िक्र नहीं किया. उस समय के दौरान ही उन्हें एक दिमाग़ी बीमारी का भी शिकार होना पड़ा. सब जो उन्हें जानते थे उन्होंने इसका दोष ''जीवन परिवर्तन'' को दिया.

दो साल तक उन्हें शॉक ट्रीटमेंट दिये गए, जिसने अस्थाई तौर पर उनकी याद्दाश्त का कुछ हिस्सा मिटा दिया. कोई भी डांक्टर ये नही जानता था कि वो क्या झूलने में उनकी मदद कर रहे हैं. पर वो सब सहमत थे कि उन्हें कुछ भुलाने की ज़रूरत है. ये ज़ाहिर था कि उनके दिमाग़ पर कोई बोझ था जो उनकी दिमाग़ी सेहत को खाये जा रहा था.

मेरी मां का दावा था कि उनकी ये समस्या उनकी शारीरिक अवस्था के कारण हुई. उनके जीवन के उस काल में उन्हें बहुत ही मुश्किलों का सामना करना पड़ा था क्योंकि उम्र से पहले ही उन्हे कई स्त्री रोगों की समस्या हो गई थी. छत्तीस साल की उम्र में ही गर्भाशय पूरी तरह निकाल दिए जाने से उन्हे समय से पहले ही मेनो पॉज़ (रजोनिवृति) का शिकार होना पड़ा था. उस समय ज़्यादातर डॉ. स्त्रिओं को हार्मोन्स देने में विश्वास नहीं रखते थे, इसलिए ये समय उनके लिए बहुत कठिन समय था ऐसा लगता था कि उनके जीवन में हर चीज़ उनके निपटने की क्षमता से कहीं ज़्यादा बड़ी हो गई है.

निजी तौर पर मैं हमेशा यही मानूंगी कि मेरी मां का ये दिमाग़ी सदमा सालों सहे उस शोषण का नतीजा था, और उस सच्चाई का जिसका सामना करने और उससे निपटने से उन्होंने इंकार किया था. याद करो युहन्ना ८:३२ में हमारे प्रभु ने हमें बताया ''और सत्य को जानोगे आर सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेंगा''.

परमेश्वर का वचन सत्य है और यदि अपनाया जाये तो इसमें बंदीओं को घुड़ाने की समर्था है. परमेश्वर का वचन हमें अपने जीवन के मुद्दों से भी आमने-सामने कराता है. यदि हम मूंह मोड़कर भाग जाना चुनें जब परमेश्वर कह रहे हों कि उठो और सामना करो तो हम बंधन में बंधे रहेंगे.

घर छोड़ना

अठारह साल की उम्र में मैं घर से निकल आई जब मेरे पिता काम पर गये थे. उसके थोड़ी ही देर बाद मैंने उस पहले नौजवान से शादी कर भी जिसने मुझमे थोड़ी सी भी रूचि दिखाई थी.

मेरी तरह मेरे पति को भी बहुत सी समस्यायें थी. वो चालबाज़, चोर और एक ठग था. ज़्यादातर समय,

उसने कभी काम नहीं किया. हम बहुत घूमें फिरे, और एक बार उसने मुझे कैली फॉर्निया में छोड़ दिया बिना किसी चीज़के. मेरे पास थी एक कौड़ी और सोडा पॉप बोतलों की एक पेटी. मैं भयभीत थी, पर क्योंकि मैं भय और मानसिक आधात की आदी थी, शायद इसीलिए मुझ पर इतना प्रभाव नहीं पड़ा जितना किसी कम ''अनुभव'' वाले पर पड़ता.

मेरे पति ने कई बार मुझे इसी तरह छोड़ा था कभी भी दिन में छोड़ के चला जाता जब मैं काम पर होती. हर बार जब भी वो गया, तो कुछ हफ्तों से कुछ महिनों तक ग़ायब रहा. फिर अचानक ही वो टपक पड़ता, और मैं उसकी चिकनी-चुपड़ी बातें और माफ़ीयां सुनती और उसे वापस ले लेती– यही सब बार-बार दोहराया जाता. जब वो मेरे साथ था, वो लगातार शराब पीता और नियमित दुसरी औरतों से संबंध रखता.

पांच साल तक हमने ये खेल खेला जिसे हम ने विवाह कहा था. हम दोनों बहुत ही जवान थे केवल अठारह साल के और हममें से दोनो को ही माता-पिता का सही पालन-पोषण नहीं मिला. हम पूरी तरह असमर्थ थे एक दूसरे की मदद करने में मेरी समस्यायें और भी जटिल हो गईं जब इक्कीस साल की उम्र में मेरा गर्भपात हुआ. और मेरा पहला बेटा तब जन्मां जब मैं बाईस साल की थी. ये घटना हमारे विवाह के अंतिम वर्ष में घटी. मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया और एक और औरत के साथ रहने लगा जो हमारी जगह से कुछ ही ब्लॉक्स की दूरी पर थी, सबको जो भी उसकी बात सुनते ये बता रहा था कि जो बच्चा मेरे गर्भ में था वो उसका नहीं था.

मुझे याद है १८६५ की गर्मियों के दौरान मैं अपना दिमाग़ी संतुलन खोने की कग़ार पर थी अपनी संपूर्ण गर्भवस्था के दौरान मेरा वज़न घटता गया. क्योंकि मैं खाने की मौहताज़ थी. बिना मित्रों, पैसों, या सुरक्षा के मैं एक हॉस्पिटल की क्लीनिक में गई, हर बार चैक-अप कराने के लिए में अलग-अलग डॉक्यर से मिलती. दरअस्ल जिन डॉक्टरों से मैं मिलती वो ट्रेनिंग लेने वाले इन्टर्न थे. मैं सो नहीं सकती थी इसलिए मैंने काऊंटर पर उपलब्ध नींद की गोलियां लेनी शुरू की. प्रभु का धन्यवाद कि उन्होंने मुझे और मेरे अजन्में शिशु को नुकसान नहीं पहुंचाया.

उन गर्मिओं के दौरान तापमान १०० से भी ज़्यादा हो गया और मेरी तीसरी मंज़िल के एटिक अपार्टमेट में ना कोई फ़ेन था न एअर कन्डीशिनिंग.

सांसारिक सम्पत्ति के रूप में मेरे पास सिर्फ़ एक पुरानी स्टुडी बेकर गाड़ी थी जो अक्सर ख़राब हो जाय करती पेट्रोल न मिलने पर. क्यों कि मेरे पिता ने हमेशा ये कहा था किसी दिन मुझे उन की ज़रूरत पड़ेगी और मैं घुटनों के बाल चला कर वापस आऊंगी, और मैंने

फ़ैसला कर लिया कि मैं कुछ भी करूंगी सिवाय इसके– हालांकि मुझे ख़ुद ये नहीं पता था कि क्या होने वाला है.

मुझे याद आता है कि मैं कितने भयंकर मानसिक तनाव में थी कि मैं बैठे-बैठे दीवारों को घुरा करती. या घण्टों खिड़की से बाहर देखा करती, बिना ये महसूस किए कि मैं क्या कर रही थी. मैंने काम किया जब तक कि मेरे बच्चे के जन्म का समय नहीं हुआ. जब मैंने अपनी नौकरी छोड़ी, मेरी हेअर ड्रेसर और उसकी मां ने मुझे अपने साथ रख लिया. मेरा बच्चा साढ़े चार हफ़्ते देरी से जन्मां. मुझे कुछ भी अंदाज़ा नहीं था कि क्या करना है, और बिल्कुल भी अनुमान नहीं था कि उसकी देखभाल कैसे करनी है जब उसका जन्म हुआ. तब अवश्य मेरा पति अस्पताल में आया. क्यों कि वो बच्चा हु-बहु उस जैसा दिखता था, वो किसी भी तरह इस बात से इंकार नही कर सकता था कि ये बच्चा उसका है. एक बार फिर उसने कहा कि उसे अफ़सोस है और वो ख़ुद को बदलने वाला है.

जब मेरे लिए अस्पताल से डिस्चार्ज़ होने का समय आया, तो हमारे पास रहने को कोई जगह न थी तो मेरे पति ने अपने भाई की पूर्व पत्नी को फ़ोन किया, जो एक बहुत ही अच्छी मसीही महिला था और कुछ देर उन्होंने हमें अपने साथ रहने दिया जब तक कि मैं वापस नौकरी करने के योग्य न हो गई.

मेरे ख़्याल से इस थोड़ी सी जानकारी से ही आप कल्पना कर सकते हैं कि मेरा जीवन कैसा था. दरअस्ल, ये मुर्खतापूर्ण था. मेरे पूरे अस्तित्व में कहीं भी स्थिरता नहीं थी, और स्थिरता ही ऐसी चीज़ थी जिसकी मुझे ज़रूरत थी और जिसके लिए मैं बैचेंन थी.

अंत में, १८६६ की गर्मिओं में, मैं एक ऐसे मुक़ाम पर पहुंची जहां मुझे कोई परवाह नहीं रही कि मेरा क्या होगा अब मैं और ज़्यादा अपने पति के साथ रहने के विचार से नफ़रत करने लगी. उस आदमी के लिए मेरे दिल में रत्ती भर भी इज़्जत ना रही, ख़ास कर उस समय, इन सब के बावजूद सोने पे सुहागा कि वो क़ानूनी अपराधी भी बन गया. मैने अपने बेटे को लिया और साथ जो कुछ भी समेट पाती और मैं बाहर निकल आई. मैं कोने के टेलीफ़ोन बूथ पर गई जहां मैंने अपने पिता को फ़ोन किया और उन्हें पूछा कि क्या मैं घर आ सकती हूँ. बेशक़, वो तो ख़ुशहुए

घर पर कई महिने रहने के बाद, मुझे पता लगा कि मेरा तलाक़ मुझे मिल गया है. ये हुआ सितम्बर १८६६ मे. इस समय तक मेरी मां की दिमाग़ी हालत दिन-बदिन बिगड़ती जा रही थी. उन्हें बहुत ही हिंसक दौरे पड़ने लगे, वो दुकान दारों पर इल्ज़ाम लगाती कि उन्होंने उन्हें लूटा है जिन लोगों के साथ काम करती उन्हें भी बिना मतलब की बातों के लिए धमकातीं उन्होनें अपने पर्स में एक चाकू रखना भी शुरू कर दिया वे किसी भी बात के लिए किसी पर भी गरजतीं बरसतीं. मुझे अच्छी तरह याद है एक रात जब उन्होंने मुझे झाड़ू से पीटा क्योंकि मैं बाथरूम का फ़र्श पौछना भूल गई थी. जब ये सब चल रहा था, तौ मैंने इस बात का ख़ास

ध्यान रखा कि अपने पिता से दूर ही रहूं. जहां तक संभव हो सकता मैं उनके साथ अकेली होना टालती रही.

संक्षिप्त में , मेरा जीवन एक जीवित नर्क था. (मनोरंजन के लिए मैंने सप्ताहअंत पर बार में जाना शुरू किया शायद मैं किसी ऐसे की तलाश में थी जो मुझे प्रेम दे सकता. मैं ड्रिंक्स लेती, पर बहुत कम इतना ज़्यादा शौक़ नहीं था. जिन अलग-अलग आदमियों से मैं मिलती उनके साथ सोने से भी मैंने इंकार किया. हालांकि मेरा जीवन इतना बेकार हो गया था फिर भी मेरे अंदर एक गहरी इच्छा थी कि मैं नेक और पवित्र बनूं.

असमंजस में, भयभीत, अकेली, निराश और उदास, मैं अक्सर प्रार्थना करती ''प्रिय परमेश्वर, कृप्या मुझे ख़ुशी दे दें.. किसी दिन. मुझे कोई ऐसा इंसान दे जो सचमुच मुझसे प्रेम करे– और वो ऐसा व्यक्ति हो जो मुझे चर्च ले जाये.

मुझे बचाने वाला वो शूरवीर

मेरे माता पिता के पास दो फ़ैमिली अपार्टमेंट थे जिसमें वो रहते थे. उनका एक किरायेदार एक डेव-मायर नामक व्यक्ति के साथ काम करता था. एक शाम डेव अपने दोस्त को लेने और बॉलिंग के लिए लेजाने आया. मैं अपनी मां की कार धो रही थी. उसने मुझे देखा और मेरे साथ छेड़ खानी करनी चाही पर मैं अपने पहले जैसे अक्खड मिज़ाज़ में थी. उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं अपनी कार धोने के बाद उसकी कार भी धो दूंगी, और मैंने उत्तर दिया ''यदि तुम अपनी कार धुलवाना चाहते हो तो खुद धोओ'' अपने पिता और अपने पूर्व पति के अनुभव के कारण मैं मर्दों पर बिल्कुल भी भरोसा नहीं करती थी, और ये बात मैं बढ़ा चढ़ा कर नहीं कह रही.

डेव, फिर भी, परमेश्वर की आत्मा से प्रेरित थे. पुन:जन्में और पवित्त आत्मा में बपतिस्मा पाये, वे परमेश्वर से अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रेम करते थे, २६ साल की उम्र में, वे भी विवाह के लिए तैयार थे और ६ महिने से परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि वे उन्हें सही औरत से मिलवायेंगे. उन्होंने परमेश्वर से ये भी मांगा था कि वो महिला ऐसी हो जिसे सहायता की ज़रूरत हो

क्यों कि डेव के प्रभु निर्देषित कर रहे थे, मेरी व्यंग्यात्मकता ने उन्हें और भी उकसाने का काम किया बजाय अपमानित महसूस करने के बाद में उन्होंने अपने इस सहकर्मी मित्र से कहा कि वो मुझसे मुलाक़ात करना चाहेंगे. पहले तो मैंने इंकार कर दिया पर बाद में मैंने अपना मन बदला. पांच मुलाक़ातों में हम बाहर गये जब डेव ने मुझे विवाह का प्रस्ताव दिया. उसने मुझे बताया कि पहली रात ही जब हम बाहर गये थे तो उसने जान लिया था कि वे उसे अपनी पत्नी बनाना चाहते हैं. पर उन्होंने फ़ैसला किया कि विवाह का प्रस्ताव रखने से पहले वे कुछ हफ़्ते रूकेंगे कहीं ऐसा ना हो कि मैं डर जाऊं.

जहां तक मेरा सवाल था मुझे सचमुच नहीं मालूम था कि प्रेम क्या होता है, और मैं एक और आदमी से सम्बन्ध रखने को उत्सुक नहीं थी. ख़ैर क्यों कि घर पर बातें और भी बिगड़तीं जा रहीं थीं, और क्यों कि मैं हर समय पूरी तरह हड़बड़ाहट में जी रही थी, मैने फ़ैसला किया कुछ भी उससे तो बेहतर हो जो इस समय मुझ पर गुज़र रही है.

डेव ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उनके साथ चर्च जाऊंगी, जिसके लिए मैं तुरंत राज़ी हो गई. याद है, मेरी प्रार्थना की एक मांग ये भी थी कि प्रभु मुझे कोई प्रेम करने वाल व्यक्ति दें, तो वो ऐसा व्यक्ति हो जो मुझे चर्च ले जाये. मसीह जीवन जीने की मेरे अंदर तीव्र इच्छा थी, पर मैं जानती थी कि मुझे राह दिखाने वाला कोई मज़बूत व्यक्ति होना-चाहिए. डेव ने मेरे नन्हें बेटे को भी अपनाने का वादा किया, वह दस महिने का था जब हम मिले. मैंने उसका नाम डेविड रखा. ये मरे भाई का नाम था और लड़के के लिए ये मेरा मनपसंद नाम था. मैं अभी भी हैरान हूँ कि किस तरह प्रभु मेरी भलाई के लिए एक योजना बना रहे थे. ठीक उस अंधकार से भरी निराश के बीच. जनवरी ७

१८६७ को डेव और मेरा विवाह हुआ. और हम इसके बाद, ''हमेशा राज़ी ख़ुशी'' नहीं रहे विवाहने मेरी समस्याओं को नहीं सुलझाया ना ही मेरे चर्च जाने ने मेरी समस्यायें मेरी घरेलू जिंदगी या मेरे विवाह में नहीं थीं, पर मुझमें थीं, मेरी घायल, अपाहिज भावनाओं में.

शोषण किसी भी व्यक्ति को भावनात्मक रूप से अपाहिज बना देता है, स्वस्थ और दीर्घस्थाई संबंध क़ायम रखने के अयोग्य जब तक कि किसी क़िस्म का हस्तक्षेप ना हो. मैं भी नियन्त्रण रखे थी, चालबाज़, ग़ुस्सैल, आलोचक, नकारात्मक, हावी होना, और न्याय करना. इन्हीं सबके साथ तो मैं बड़ी हुई थी, मैं आत्म-दया से भर गई थी, मैं अपशब्ध इस्तेमाल करती. उदासी और कड़ुवाहट से भरी. मैं अपना वर्णन करते-करते काफ़ी दूर निकल सकती हूँ पर मुझे यक़ीन है आप समझ गये होंगे.

मैं समाज में जी रही थी. मैं काम कर रही थी डेव काम कर रहे थे. हम इकट्ठे चर्च जाते. कुछ समय तक तो हम में ठीक-ठाक निभती, सिर्फ़ वो इसलिए क्योंकि डेव बहुत ही सरल स्वभाव के थें. वो अक्सर मुझे अपनी मर्ज़ी करने देते, पर जब वो ऐसा नहीं करते तो मैं ग़ुस्से से भर जाती. जहां तक मेरा सवाल था मै हर बात में सही थी. मेरे लिए, मुझमें समस्या नहीं थी, बाक़ी सब में थी.

अब याद कीजिए मैं दोबारा जन्मीं थी. मुझे यीशु से प्रेम था. मैं मानती थी कि मेरे पापक्षमा हुए और मरने पर में स्वर्ग जाऊंगी. पूर मुझे किसी भी विजय की अनुभूति नहीं थी, कोई शांति नहीं मेरे प्रतिदिन के जीवन में कोई आनंदनहीं. हालांकि मेरा मानना था कि मसीहीओं को आनंदित होना चाहिए बेशक मैं नहीं थी. मुझे ये भी नहीं मालूम था कि धार्मिकता क्या है जो यीशु के लहू द्वारा मुझमें बो दी गई, हमेशा मैं दोषी महसूस करती. मैं नियन्त्रण से बाहर थी.

केवल तब ही मैं स्वयं से नफ़रत नहीं करती जब मैं अपने किसी निजी मक़सद के लिए काम कर रही होती जो मेरे ख़्याल से मुझे आत्म-योग्यता दिलवा सकता था.

मैं हमेशा सोचती रहती कि काश् सब बदल जाये, काश् दूसरे लोग बदल जायें, तब मैं ठीक हो जीऊंगी. यदि मेरे पति, मेरे बच्चे, मेरे आर्थिक हालात, मेरी सेहत अलग होती; काश् में छुट्टिओं पर जा सकती, नई कार ख़रीद सकती, नई ड्रेस ख़रीद सकती; काश्, मैं इस घर से बाहर निकल सकती, एक नौकरी पा सकती, ज़्यादा पैसा कमा सकती, तब मैं ख़ुश और तृप्त हो सकती थी. मैं हमेशा वही करती रही जिसका वर्णन यिर्मयाह २:१३ में है मैं ऐसे कूएं खोद रही थी जिनमें पानी नहीं था मैं

ऐसी हताशाजनक और दुखद ग़लती कर रही थी परमेश्वर के राज्य को ढूंढने की जो है ''धर्म; मिलाप और वो आनंद'' (देखिये रोमियों १४:१७) जो लोगों और कई बातों में है. मैंने ये महसूस नहीं किया कि परमेश्वर का राज्य हमारे अंदर ही है जैसा कि प्रेरित पौलूस ने समझाया है ''और वो ये है, कि मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है'' (कुलुसियों १:२०) यीशुने कहा ''देखो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है (तुम्हारे हृदयों में है, और परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है (तुम्हरे हृदयों में है, और तुम्हारे भीतर है (तुम्हें घेरे हुए है)'' (लूका १७:२१) मेरा आनंद मुझे मसीह में ही मिलना था, पर इसे पाने में मुझे सालों साल लग गए.

मैंने धार्मिकता पानी चाही नेक बनकर शरीर के कार्यो द्वारा. मैं प्रचारक कमेटी में थी और चर्च बोर्ड पर थी.

मेरे पति चर्च में एक अगुवा थे. मेरे बच्चे मसीही स्कूल में जाते. मैंने सभी धर्मी बातें करने की कोशिश की. मैंने कोशिश की, कोशिश की और कोशिश की, पर फिर ऐसा लगता कि मैं ग़लतियां करने से स्वयं को नहीं रोक सकती मैं थक चुकी थी, ख़त्म हो चुकी थी निराश और दुखी थी.

मैं सचमुच समस्या से अंजान थी

मुझे ये कभी भी नहीं लगा कि मैं सालों साल के शोषण और उस नकारात्मकता जो मैंने झेली थी उसी से पीड़ित थी. मैने सोचा था कि वो सब मैं पीछे छोड़ आई. ये सच है कि शारीरिक तौर से अब ये मेरे साथ नहीं हो रहा था, पर ये सब मेरी भानवाओं और मेरे मन में दर्ज़ था. मैं अभी भी इसका प्रभाव महसूस कर रही थी और मैं अभी भी इस पर प्रतिक्रिया कर रही थी.

'मुझे भावनात्मक चंगाई की ज़रूरत थी'

क़ानूनन मैं मसीह में नई सृष्टि थी. वचन में लिखा है ''सो यदि कोई मसीह में है तो वो नई सृष्टि है (बिल्कुल नये रूप में) पुरानी बातें (पुराने नैतिक और आत्मिक हालात) पुरानी बातें बीत गईं है; देखो वे सब नई हो गईं है'' (२ कुरिन्थिओं ५:७) पर उपयोग में मैंने नई सृष्टि की सत्यता को अभी तक जीआ नहीं था. मैं अपनी ही मर्ज़ी अपने ही मन और अपनी ही भावना अनुसार जीती थी, जो हानि ग्रस्त थे. यीशु ने संपूर्ण उद्धार के लिए क़ीमत चुकाई थी पर मुझे जरा भी अंदाज़ा नहीं था कि उनके इस कृपालू उपहार को कैसे स्वीकार करूं.

४

शोषण के कारण व्यवहार की लत

पहली बात जो मैंने महसूस की वो ये कि हमारे जीवन में फल (हमारा व्यवहार) कहीं और से आता है. यदि कोई व्यक्ति हिंसक है तो किसी वजह से वो ऐसा है; बुरा व्यवहार बुरे फल की तरह है जिसका ख़राब वृक्ष और ख़राब जड़ें हैं. सड़ा फल सड़ी जड़ों से आता है.

ये बहुत महत्वपूर्ण है कि आप अपनी जड़ों पर नज़र डालें. यदि वे भद्दी, हानिकारक और अपशब्द वाली हैं, तो ख़ुशख़बरी ये है कि आप उस बुरी ज़मीन से जड़ से उखाड़े जा सकते हैं और दोबारा रोपे जा सकते हैं. यीशु मसीह की अच्छी ज़मीन में. आप उनमें बोये जा सकते हैं और जड़ें पकड़ सकते हैं और उनका प्रेम पा सकते है ''और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में (सचमुच) बसे (बढ़ा रहे हमेशा साथ, अपना स्थाई घर उसे बनाये) कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डाल कर. सब पवित्र लोगों के साथ (परमेश्वर के श्रद्धालू लोग, उस प्रेम का अनुभव) भलिभांति समझने की शक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई लम्बाई और ऊँचाई और गहराई कितनी है.'' (इफ़िसियों ३:१७-१८)

वचन हमें सिखाता है: ''और उसी में जड़ (अपना व्यक्तित्व) पकड़ते और बढ़ते जाओ (उनमें स्थिर हो जाओ, उनमें आधार पकड़ लों) और जैसे तुम सिखाये गए वैसे ही विश्वास में दृढ़ होते जाओ और अत्यन्त धन्यवाद करते रहो (और विश्वास में क़ायम होते जाओ और ज़्यादा से ज़्यादा स्थिरता की ओर बढ़ते जाओ.) (कुलुस्सियों २:७)

यीशु स्वयं को तुम में रोप देंगे. जैसे आप एक शाख़ की तरह उनमें लगा दिए जाते हैं जो स्वयं दाखलता है (देखिये युहन्ना १७:५) आप उनका रस पाना शुरू कर देंगे (उनके प्रेम और कृपा का धन) जो उनसे बहकर तुम में बहेगा. दूसरे शब्दों में यदि जब

आप बड़े हो रहे थे तब आपको वो नहीं मिला जिसकी आपको ज़रूरत थी ताकि आप ताक़तवर और सेहतमंद बन सकते, यीशु अभी आपको ख़ुशी से देंगे.

मेरे अपने जीवन में बहुत से ख़राब फल थे, जिनसे छुटकारा पाने की मैं कोशिश करती रही. मैंने बहुत कोशिश की कि मैं सही बर्ताव करूं. फिर भी ऐसा लगता था कि चाहें किसी भी प्रकार के बुरे व्यवहार से मैंने छुटकारा पाने की कोशिश की हों, दो या तीन अन्य व्यवहार कहीं न कहीं उभर आते. ये जैसे घास पात निकालने जैसा था. जो दिखता था उसे मैं खींचती रही, पर मैं समस्या की छुपी जड़ तक नहीं पहुंच रही थी. वो जड़ जीवित थी और नये-नये पौधे समस्या के उगाती रहती. यहां दिया गया ये चित्त दिखाता है कि कैसे सड़ी जड़े सड़ा फल लाती हैं. पर अच्छी जड़ों से अच्छा फल आता है.

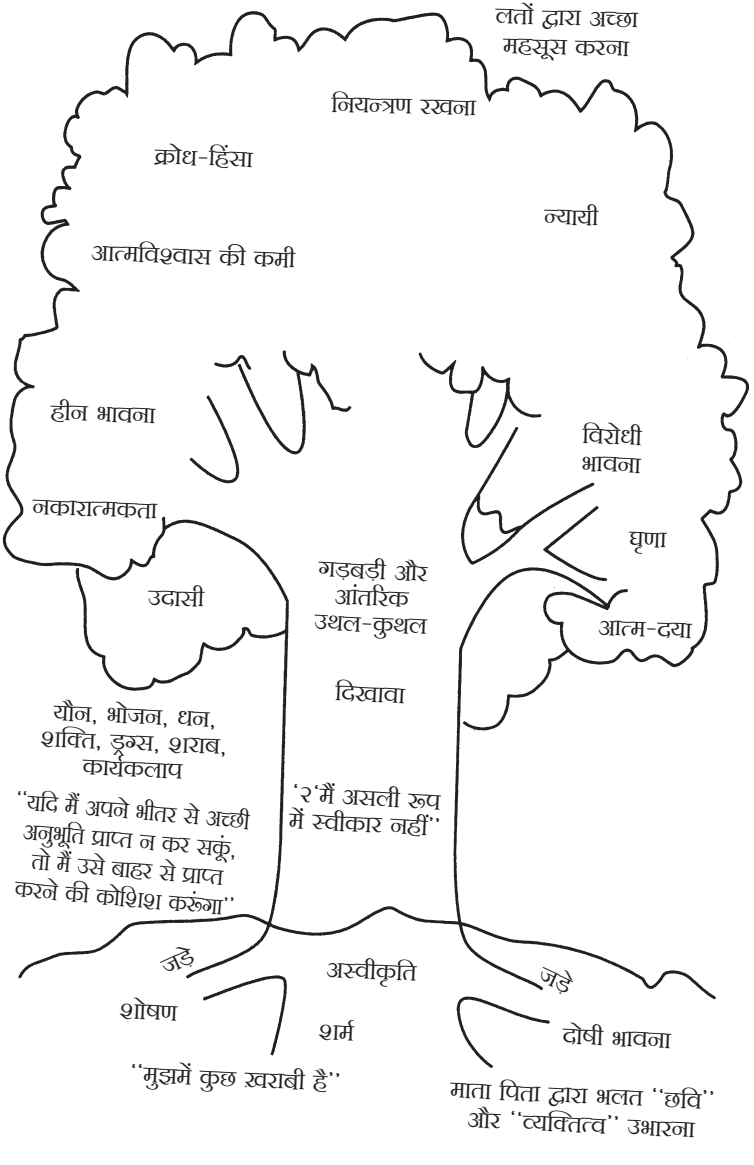
लतों द्वारा अच्छा
महसूस करना
नियन्त्रण रखना
क्रोध-हिंसा
न्यायी
आत्मविश्वास की कमी
हीन भावना
विरोधी
भावना
नकारात्मकता
घृणा
गड़बड़ी और
आंतरिक
उथल-कुथल
उदासी
आत्म-दया
दिखावा
यौन, भोजन, धन,
शक्ति, ड्रग्स, शराब,
कार्यकलाप
''यदि मैं अपने भीतर से अच्छी
अनुभूति प्राप्त न कर सकूं,
तो मैं उसे बाहर से प्राप्त
करने की कोशिश करूंगा''
''मैं असली रूप
में स्वीकार नहीं''
जड़े
अस्वीकृति
जड़े
शोषण
शर्म
दोषी भावना
''मुझमें कुछ खराबी है''
माता पिता द्वारा झलत ''छवि''
और ''व्यक्तित्व'' उभारना

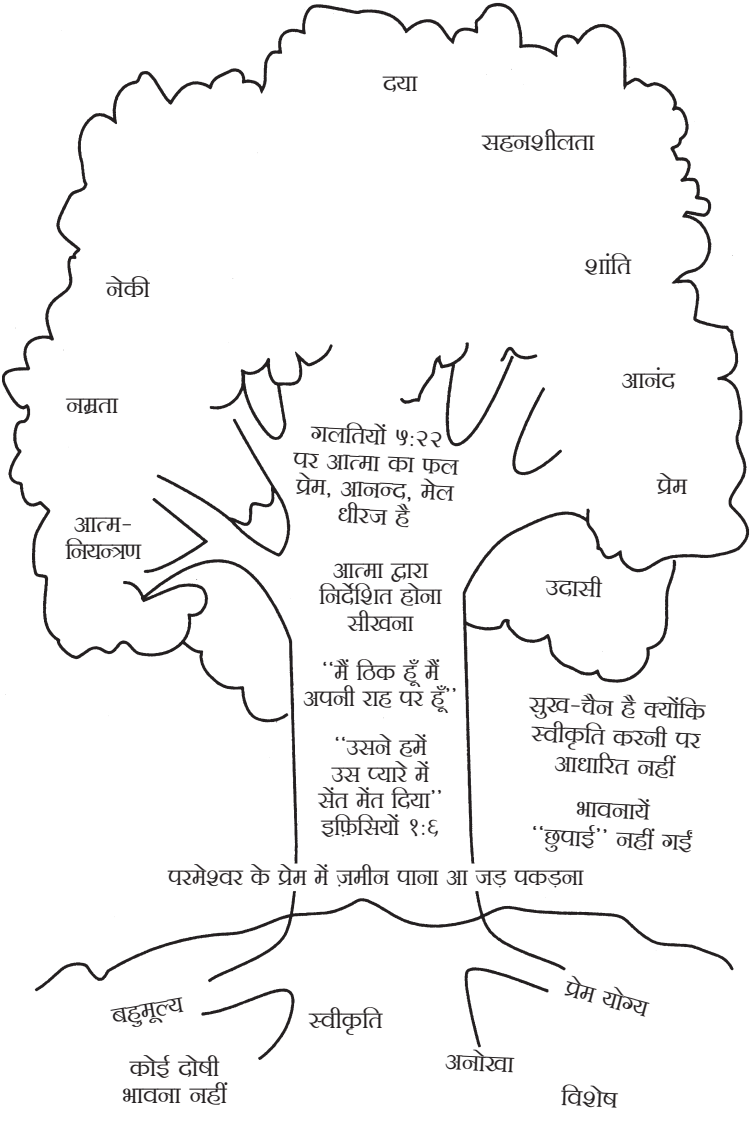
दया
सहनशीलता
शांति
नेकी
आनंद
नम्रता
गलतियों ७:२२
पर आत्मा का फल
प्रेम, आनन्द, मेल
धीरज है
प्रेम
आत्म-
नियन्त्रण
आत्मा द्वारा
निर्देशित होना
सीखना
उदासी
''मैं ठिक हूँ मैं
अपनी राह पर हूँ''
सुख-चैन है क्योंकि
स्वीकृति करनी पर
आधारित नहीं
''उसने हमें
उस प्यारे में
सेंत मेंत दिया''
इफ़िसियों १:६
भावनायें
''छुपाई'' नहीं गईं
परमेश्वर के प्रेम में ज़मीन पाना आ जड़ पकड़ना
बहुमूल्य
स्वीकृति
प्रेम योग्य
कोई दोषी
भावना नहीं
अनोखा
विशेष

ये एक चित्रण है, जो परमेश्वर ने मुझे उदाहरण के रूप में दिया. क्या आपने कभी उस बदबू की ग़ौर किया है जो फ्रिज खोलते ही आती है? आपको तुरंत पता लग जाता है कि वहां कुछ सड़ गया है, पर ये जानने के लिए किये दुर्गन्ध कहां से आ रही है आपको फ्रिज से हर चीज़ निकालनी पड़ती है.

यही सिद्धांत आपके व्यक्तिगत जीवन पर भी लागू होता है. यदि आपको भावनात्मक समस्यायें हैं, तो शायद इसका कारण ये हो कि आपको अंदर कोई बात गहराई में सड़ गई है. शायद आपको कुछ खोज करनी पड़े, कुछ खाली करना पड़े और शायद कुछ निकालना पड़े समस्या की जड़ तक पहुंचने को और उसे हटाना पड़े ताकि हर चीज़ ताज़ा और नई हो सकें.

याद रखिये जड़ से उखड़ना बहुत ही मानसिक पीड़ा और दर्द पहुंचा सकता है. दोबारा रोपे जाना, ज़मीन पाना और जड़ पकड़ना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें समय लगता है. केवल विश्वास और धीरज द्वारा ही हम परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं (देखिए इब्रानियों ६:१२) इसलिए धीरज रखिये.

परमेश्वर ही कर्ता और सिद्ध करने वाले हैं (देखिए इब्रानियों १२:२) और उन्होंने जो काम आपमें शुरू किया है वे अवश्य समाप्त करेंगे: ''और मुझे इस बात का भरोसा है कि जिसने तुम में अच्छा काम आरंभ किया है वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा (ठीक उस समय तक जब उनके आने का समय होगा, वो इस नेक काम को तुम्हारे अंदर पूरा करेंगे ताकि तुम्हें सम्पूर्ण और सिद्ध बना सकें. (फिलिप्पियों १:६)

बुरा फल

मेरे जीवन में इतना ज़्यादा बुरा फल था कि मुझे लगातार दौरे पड़ते उदासी के, नकारात्मकता के, आत्मग्लानि के तुरंत गुस्सा आने के और घृणात्मक धारणा के. मुझमें नियन्त्रण करने वाली और अधिकार जताने वाली आत्मा थी. मैं बहुत ही कठोर, निर्दयी, सख्त, कानून बधारने वाली और न्याय देने वाली इंसान थी. मैं मन-मुटाव पाले रखती और भयभीत थी – ख़ासकर नकारे जाने से.

मैं अंदर से एक अलग व्यक्ति थी और बाहर से बिल्कुल दूसरा ही व्यक्ति. मैं आत्मविश्वासी होने का दिखावा करती और किसी हद तक अभी भी मुझ में बहुत ही हीन भावना थी.

मेरा ये दिखाने वाला आत्मविश्वास इस पर आधारित नहीं था कि मैं मसीह में क्या हूँ, पर दूसरों की स्वीकृति पर आधारित था, कि मैं कैसी लगती हूँ और मेरी उपलब्धियाँ क्या हैं, और एसे ही अन्य बाहरी पहलू.

बहुत से लोग सोचते हैं कि उनमें आत्मविश्वास है पर यदि उनके आत्मविश्वास का मुखौटा उधेड़ दिया जाए, तो वो दरअस्ल बहुत ही भयभीत होंगे मैं उलझनों और भीतरी उथल-पुथल से पीड़ित थी.

मैं स्वयं को बहुत आशीषित समझती हूँ कि मैं आज ये कहने के योग्य हूँ कि मुझे कभी भी नशीली दवाओं या शराब की लत नहीं पड़ी. मैं सिगरेट पीती थी पर मैं किसी और रसायनिक व्यसन का शिकार नहीं थी. शराब तो बस मुझे पसंद ही नहीं थी. मैं कुछ ड्रिंक्स लेती पर जैसे ही मुझे अपना सिर घूमता महसूस होता मैं उससे आगे न बढ़ती.

मुझमें हमेशा काफ़ी आत्मनियन्त्रण था. ये मेरे व्यक्तित्व का ही हिस्सा था कि मैं किसी को स्वयं पर नियन्त्रण नहीं करने देती इसीलिए मैं ड्रग्स से दूर रही. मेरे ख़्याल से ये सच कि मेरे पिता ने मेरे जीवन पर बहुत समय तक नियन्त्रण रखा था इसी ने मुझे इस निश्चय पर दृढ़ किया कि कोई और अब नियन्त्रण नहीं करेगा. हालांकि मैं अपनी भीतरी समस्याओं को नियन्त्रण में नहीं रख सकती थी. लगता है कि मुझमे इतनी अक़्लमंदी तो थी कि मैं उन चीज़ो से दूर रहूं जो मुझे उन पर आश्रित बनातीं.

मैं डायट की गोलियां लेती क्योंकि हमेशा मेरा वज़न २५ पाऊंड ज़्यादा ही रहता. हालांकि एक डॉक्टर ने वो मुझे लिखकर दी थी पर उनसे मैं बहुत उत्तेजित हो जाती. ये गोलियां थी एम्फेटामाईन, पर मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वो हानिकारक हैं मुझे बहुत अच्छा लगता जो मुझे उन्हें लेने से दिनभर सहसूस होता. जब मैं उन्हें ले रही थी मैं एक मशीन की तरह काम कर सकती थी, घर साफ़ करना, रचनात्मक होना और दोस्ताना होना. मुझमें बस जोश भरा था. पर जब उनका असर निकल जाता मैं थकी हारी हो जाती.

हालांकि मेरा वज़न ज़रा भी कम नहीं हुआ, गोलियों ने मेरी भूख को अवश्य संभाला – जब तक उनका असर रहता. मैं दिन भर कुछ ना खा सकती पर रात को मुझे इतनी कमज़ोरी और भूख महसूस होती कि दिन भर जो मैंने खोया था उसे बराबर कर लेती. मुझे याद हैं मैं इसी पर बहस कर रही थी क्या मुझे ये दवाई दोबारा डॉक्टर से लिखवानी चाहिए, पर मुझे अंदर ही कहीं पता था कि मुझे इन गोलिओं की लत लग जायेगी यदि मैं इन्हें लेती रही, इसलिए मैंने बस इन्हें छोड़ दिया.

अब मुझे महसूस होता है कि उन चीज़ों से दूर रहने की योग्यता जो मुझे तबाह कर सकती थीं वो मुझे इस कारण मिली क्योंकि मैंने नौ साल की उम्र से यीशु को स्वीकार किया था.

हालांकि मुझे ये नहीं पता था कि प्रभु से सच्चा रिश्ता कैसे क़ायम करना है, वो हमेशा मेरे साथ थे, और किसी न किसी तरीके से मेरी मदद कर रहे थे और समय समझदारी की कमी के कारण मैं ये बात पहचान ना पाई. सालों बाद, ये आशीषें मेरे सामने स्पष्ट उभरकर आई.

मैं जानती हूँ कि परमेश्वर की दया और कृपा ने मुझे गंभीर समस्याओं से दूर रखा जैसे

अपराध, ड्रग्स, शराब और वैश्याप्रति मैं प्रभु के प्रति आभारी हूँ और अभी भी हैरान हूँ कि उन्होंने मुझे कैसे बचाये रखा.

हालांकि मुझमें उस तरह की समस्यायें नहीं थीं, बहुत सी अन्य थीं. बुरी जड़ों ने मुझमें बुरा फल उत्पन्न किया था.

दिखावा

मैं इतनी दु:खी और उदास थी. फिर भी, बहुत से अन्य लोगों की तरह, मैंने दिखावा किया कि सब ठीक-ठाक है. हम इंसान दूसरों के फ़ायदे के लिए दिखावा करते हैं, ये नहीं चाहते कि वो हमारे दुख को जाने, पर हम स्वयं से भी दिखावा करते हैं ताकि हमें मुश्किल मुद्दों से निपटना ना पड़े ना ही उनका सामना करना पड़े.

मेरे ख़्याल से मैंने कभी ये महसूस ही नहीं किया था कि मैं सचमुच कितनी दुखी थी. जब तक कि मैंने परमेश्वर के वचन में समय बिताना शुरू नहीं किया और थोड़ी भावनात्मक चंगाई का अनुभव लेना शुरू नहीं किया. यदि किसी व्यक्ति ने सच्ची ख़ुशी कभी जानी ही न हो तो वो कैसे जान सकता है कि वो किस चीज़ से वंचित है? मुझे याद नहीं कि मैंने कभी पूरी तरह आराम महसूस किया हो और सचमुच बचपन में आनंद महसूस किया हो. मैं नहीं मानती कि कोई भी लगातार डर में जीते हुए जीवन का आनंद ले सकता है.

मुझे याद आ रहा है कि हमारी शादी के बाद एक शाम डेव मुझे अपने बचपन के बारे में बता रहे थे. वो सता बहनों और भाईओं के साथ पले बड़े. उनके घर में इतना प्यार था और बचपन में उन्होंने बहुत ही मज़े किए. उनकी गर्मियों की छुट्टियां गांव में बीततीं जहां पिकनिक, बॉल गेम्स और दोस्त होते और एक मसीही मां जो उनके साथ खेलती भी और यीशु के बारे में सिखाती. उनके पास ज़्यादा पैसा नहीं था क्योंकि डेव के पिता की मृत्यु हो चुकी थी शराब के कारण जिगर की बीमारी से. फिर भी वो प्रभाव, प्रार्थनायें और डेव की मां के मसीही उदाहरण ने पूरे परिवार को मुसीबत से बचाये रखा. उनके पास प्रेम था और इसी की ज़रूरत हम सभी को होती है और इसी के लिए हम बनाये गए हैं.

जब डेव ने मुझे उस शाम ये बताया कि कैसे उसने अपने परिवार के साथ इतना अच्छा समय बिताया था और उसने अपने यौवन के वर्षों का कितना आनंद लिया था. अचानक मुझे महसूस हुआ कि ये मुझे पसंद नहीं आया. मैं कभी भी ये याद नहीं कर पा रही थी कि मेरा बचपन ख़ुशी गुज़रा हो. मेरे अंदर से कुछ चुरा लिया गया था जो मुझे कभी वापिस नहीं मिल सकता था. मुझे महसूस हुआ कि मेरे साथ बहुत बड़ा धोखा हुआ. शायद आप भी ऐसा महसूस करते हों. यदि ऐसा है, तो परमेश्वर आपके लिए भी वही करेंगे जो उन्होंने मेरे लिए किया.

वो आपके लिए इसकी भरपाई करेंगे वो स्वयं आपके लिए इसकी भरपाई करेंगे. वो स्वयं आपके लिए उपहार बनेंगे और उस सबका हरज़ाना देंगे जो आपने खोया है.

मैंने महसूस किया कि मुझे दिखावा छोड़ना होगा और सच का सामना करना होगा. अतीत में कुछ व्यवहारिक लतों का शिकार थी. मेरा अतीत डेव की ग़लती तो नहीं था ना ही मेरे बच्चों की. इसलिए जिस चीज़ में उनका कोई लेना देना नहीं था उसके लिए उन्हें लगातार दुखी करते रहना ज़ायज़ नहीं था.

व्यसनी

शोषण के कारण व्यसनी व्यवहार उत्पन्न हो सकते हैं. जो शायद अनगिनत हों, पर उनमें से कुछ की सूचि यहां है:

- पदार्थों का व्यसन
  - शराब
  - ड्रग्स (ग़ैर क़ानूनी और लिखित)
- आर्थिक मोह
  - अत्याधिक व्यय
  - बचाकर रखना
- खाने से सम्बन्धित बीमारियां
  - बुलिमिया (अत्याधिक खाने की चाह)
  - एनॉरेक्ज़िया (ख़ुद को भूखे रखना)
  - पेटूपन की वज़ह से ज़्यादा वज़न

नोट: कुछ लोग असंयमी होते हैं और वो जान-बुझ कर वज़न बढ़ाये रखते हैं ताकि आकर्षक ना दिखें. वो डरते हैं कि कहीं वो लालच में न पड़ें. जो लोग प्यार से वंचित रहे है वो इसलिए खाते हैं कि जो उन्होंने गवाया है उसकी भरपाई करें.

- भावनाओं की लत
  - गुस्सा
  - उदासी
  - भय
  - अत्याधिक उत्तेजना
  - धार्मिक धर्मीपन
  - आनंद की ग़लत फ़हमी (हमेशा ठण्डी मुस्कान चेहरे पर रखना)

कभी भी क्रोधित न लगना; ग़लत समय हँसना, हमेशा ख़ुशी की बातों का ज़िक्र करना.

❖ विचारों की लत
- •ज़्यादा विस्तार से वर्णन
- • चिंता
- •बिना रूके बोले जाना
- •वासनाभई विचार
- •अस्थिर मन (कभी चैन से न बैठना; हमेशा यही अंदाज़ा लगाना कि क्या कहना और करना है, कैसे प्रतिक्रिया करनी है इत्यादि)

❖ कार्यशीलता की सनक
- • काम
- • खेल
- • पढ़ना
- • जुआ
- • कसरत
- •टेलीविज़न देखना
- •बहुत ज़्यादा पालतू जानवर पालने और उनकी देखभाल करनी

❖ इच्छा की लत
- • नियन्त्रण – नियन्त्रण करने वाले लोग समझते हैं कि हर परिस्थिति में उन्हीं की मर्ज़ी चलनी चाहिए. उन्हें भावनाओं के बदले तर्क या कारण के आगे झुकना चाहिए, वो तभी सुरक्षित महसूस करते हैं जब वो नियंत्रण रखे हों.
- • नियन्त्रण में – जो नियन्त्रण में रहते हैं वो इतने शिथिल हो जाते हैं कि वो अपनी इच्छा-शक्ति ही दूसरों को दे देते हैं और जो कुछ भी कोई कहता है वो करते हैं. वो बहुत ज़्यादा वश में हो सकते हैं. या भयंकर रूप से दबाये जाते हैं अपनी इच्छा-शक्ति शैतान के हवाले करके. वो शर्म से इतने ग्रसित होते हैं कि वो समझते हैं कि उनका कोई हक़ नहीं-ना ही चुनाव का हक़.
- • पुन: अभिनय करने की लत – ये पीड़ित अपने ही शोषण को पुन: अभिनित करते हैं या दोहराते हैं. अपने बच्चों पर या बार-बार स्वयं को ऐसी परिस्थिति में डालते हैं कि जो उनके साथ बचपन में हुआ वही उनके साथ जवानी में भी हो. जाना पहचाना दृश्य उनके सम्मुख अतीत वापस ले आता है और वो स्वयं शोषक की भूमिका निभाने लगते हैं ताकि वो अपने अतीत के शोषण की यादों को महसूस ना कर सकें. उदाहरण के लिए एक व्यक्ति बचपन मं अपने पिता द्वारा पिटता रहा और शायद वो अपने बच्चों को भी इसी शारीरिक यातना का शिकार बनाये.

ये वो उसके परिणाम स्वरूप करता है जो पुराना दृश्य वो अतीत के फ़्लेश-बैक में देखता है और बजाय स्वयं शोषण का शिकार होने के वो स्वयं शोषक की भूमिका अपना लेता है. एक औरत जिसका शारीरिक, यौन या शाब्दिक शोषण अपने पिता द्वारा हुआ वो शायद ऐसे व्यक्ति से शादी करें या एक के बाद एक कई आदमीओं से शादी करें, जो उसके साथ वैसा ही बर्ताव करें. वो शायद ये महसूस करे कि वो किसी चीज़ के क़ाबिल नहीं या वो उसी क़ाबिल है कि उसके साथ दुर्व्यवहार हो. शायद वो इस बात का ख़ास ध्यान रखे कि उसे दुर्व्यवहार मिले, शायद वो किसी को उकसाये भी कि वो उसका शोषण करें.

- पालक – कुछ लोग अपनी योग्यता इसी में पाते कि वो उनकी देखभाल करें जिन्हें उनकी ज़रूरत वो इतना अयागेय महसूस करते हैं कि उन्हें लत लग जाती है. देख-भाल की, मदद करने की, लोगों को ख़ुश करने की और अच्छा बने रहने की क्योंकि ऐसा करने से उन्हें अच्छा महसूस होता है.

भीतर से अच्छा महसूस करने को बने

एक इंसान के नाते हमें परमेश्वर ने बनाया कि हम ख़ुश रहे और स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करूं. सच कहा जाये तो, हमें अपने बारे में अच्छा महसूस करना ही चाहिए. वरना् अंत में हम किसी क़िस्म का अनियन्त्रित व्यय अपना लेंगे.

क्योंकि ऐसा व्यवहार हमें अच्छा महसूस कराता है चाहे ये थोड़े समय के लिए ही हो.

सोचिए इस बारे में ड्रग्स की लत वाले इंसान ने शायद इसलिए शुरूआत की कि उसका दर्द इतना ज़्यादा असहनीय होगा कि उसे मज़बूर होना पड़ा उससे छुटकारा पाने और अच्छा महसूस करने के लिए बेशक़ ये थोड़े समय के लिए ही था. ऐसी ही बात होती है मदिरा सेवन में भी.

कुछ लोग आराम महसूस करने के लिए भोजन का इस्तेमाल करते हैं. खाना आनंद दाई होता है, उन्हें अच्छा महसूस होता है जब वे इसमें लगे होते हैं. बहुत से लोगों में खान-पान की बीमारियां इसलिए होती है क्योंकि वो प्रेम के भूखे है. वे अपने बारे में अच्छा महसूस करना चाहते हैं. यदि उन्हें अन्दर से अच्छी भावना नहीं मिलती फिर वो उन्हें कहीं और सेले लेते हैं.

यदि आपमें कोई व्यसनी व्यवहार है, तो ये अध्याय, ये समझने में आपकी मदद करेगा कि समस्या की जड़ क्या है. आप अपने बाहरी व्यवहार को दबाने में पूरा जीवन लगा सकते हैं (वो बुरा फल) पर ये मही और निकल कर बाहर आ जायेगा यदि जड़ों से निपटा नहीं गया हो.

५

प्रेम द्वारा बचाये जाना

यदि आप ऐसे व्यक्ति हैं जिसका शोषण हुआ है, तो अब तक आपने शायद अपने जीवन की कुछ समस्यायी क्षेत्रों को पहचान लिया होगा. समस्या की ओर इशारा करना बिना उसका हल सुझाये तो ये काफ़ी हानिकारक हो सकता है. यदि मैंने ऐसा किया तो शायद आप पहले से ज़्यादा हताश में डूब जायेंगे जो इस किताब के पढ़ने से पहले थी.

मेरा इरादा है कि मैं मुख्य्य सच्चाई को उजागर करूं जिन्होंने मेरे जीवन में चंगाई थी. जब मैं ऐसा करती हूँ, तो मैं आपको याद दिला दूँ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करते (देखिये प्रेरितों के काम १०:३४) जो वो एक व्यक्ति के लिए करते है वहीं वो दूसरे व्यक्ति के लिए भी करते हैं. यहीं वादा किया गया है उनके वचन में.

चंगाई की प्रक्रिया

मेरे पहले पति को पता नहीं था कि प्रेम कैसे करते हैं, इसलिए मुझे अपने इस रिश्ते में कोई प्रेम नहीं मिला. हालांकि मेरे कमाल के दूसरे पति डेव ने मुझसे सच्चा प्रेम किया, मुझे कभी ये पता ही नहीं था कि प्रेम स्वीकार कैसे करना है इसलिए मैं इधर से उधर घूमती रही: (१) उनके प्रेम को अस्वीकार करके और उन्हें अपने जीवन से बाहर रख के अपने आसपास दीवारें खड़ी के ताकि मैं सुनिश्चित हो सकूं कि मुझे ठेस नहीं लगेगी (या मैंने ऐसा सोचा) और, (२) कोशिश की कि मुझे इस तरह का प्रेम दें जो इक क़िस्म से सम्पूर्ण और सिद्ध प्रेम हो और उनके लिए ये करना इंसानी तौर पर संभव नहीं था.

१ युहन्ना ४:१८ में हम पढ़ते हैं, ''कि सम्पूर्ण प्रेम में भय नहीं होता वरन् सिद्ध प्रेम भय को दूर करता है'' केवल परमेश्वर ही आपको ऐसा सम्पूर्ण प्रेम कर सकते हैं जो त्रुटिहीन हो. चाहे कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति से चाहे कितना भी प्यार करें, वो फिर भी इंसान रहता है. जैसा हमारे प्रभु ने कहा, ''आत्मा तो तैयार है परंतु शरीर दुर्बल है'' (मत्ती २६:४१) लोग

हमेशा दूसरे लोगों को निराश करते हैं वो हमेशा किसीको सम्पूर्ण रीति से प्रेम नहीं कर पाते क्योंकि यहीं इंसान के स्वभाव का हिस्सा है.

मैं कोशिश कर रही थी कि डेव मुझे वो दें जो परमेश्वर ही मुझे देख सकते थे. जो थी मुझमें अपना मूल्य और क़ीमत की भावना जगाना. मैं चाहती थी कि मेरे पति मुझे पूरी तरह प्रेम करें और मेरे साथ ऐसा सम्पूर्ण व्यवहार करें ताकि मैं स्वयं के साथ अच्छा महसूस कर सकूं. जब भी उन्होंने मुझे निराश किया असफलता दी, या दुख पहुंचाया, मैं हम दोनों के बीच दीवार खड़ी कर लेती और कई हफ़्तों और कई दिनों तक उन्हें अन्दर आने नहीं देती.

बहुत से लोग जो शोषण करने वाले और विघटित परिवारों से आते हैं वो स्वस्थ और चिरस्थाई रिश्ते क़ायम नहीं रख सकते क्योंकि या तो उन्हें मालूम नहीं कि ये प्रेम कैसे पाना है या फिर वो अपने जीवन साथी से ऐसी असंतुलित मांग रखते हैं कि वो उन्हें वो दें जो केवल परमेश्वर ही दे सकते हैं. परिणाम स्वरूप उपजी निराशा अक्सर वैवाहिक जीवन तबाह कर देती है.

यही सिद्धांत मित्रता पर भी लागू किया जा सकता है. एक बार एक महिला हमारी प्रार्थना की टेलीफ़ोन लाईन पर आई और कहा, ''जॉयस, मेरी मदद करो, मैं इतनी अकेली हूँ. जब भी मुझे कोई सहेली मिलती है मैं उसका दम घोट देती हूँ'' ये महिला प्यार की इतनी भूखी थी कि यदि कोर्स उसे ऐसा मिले जो उस पर ज़रा-सा भी ध्यान दें, तो ये कोशिश करती कि अपने अतीत के सारे भावनात्मक क़र्ज़े जमा करके उस व्यक्ति पर लाद दें, जिसे दरअसल उसे कुछ भी नहीं देना था. उसके नये मित्र अक्सर डरकर भाग जाते.

परमेश्वर का असीमित बिनाशर्त संपूर्ण प्रेम

एक दिन जब मैं बाईबल पढ़ रही थी तो मैंने २ कुरिन्थिओं ५:७ के इस बयान पर ग़ौर किया ''क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से चलते हैं'' (हम अपने जीवनों का संचालन और अपना व्यवहार अपनी धारणाओं के आधार पर या इस विश्वास पर करें कि परमेश्वर का मनुष्य से नाता है और परमेश्वरीय बातें हम विश्वास और पवित्रता के साथ करें और इस तरह चलें.)

पवित्र आत्मा ने मुझे रोका और पूछा, ''तुम किस पर विश्वास करती हो जॉयस, परमेश्वर से तुम्हारा नाता क्या है? क्या तुम विश्वास करती हो कि वे तुमसे प्यार करते है?''

जब मैंने ईमानदारी से अपने दिल में खोजना शुरू किया और इसी विषय पर परमेश्वर के वचन का अध्यन किया, मैं इस नतीजे पर पहुंची कि मैं अवश्य ही विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं पर शर्तें हैं.

बाइबल हमें सिखाती है कि परमेश्वर हमसे सम्पूर्ण और बिना शर्त प्रेम करते हैं. उनका सम्पूर्ण प्रेम हमारी सम्पूर्णता पर आधारित नहीं. ये किसी और बात पर आधारित नहीं सिवाय उनके. परमेश्वर प्रेम है. (देखिये १ युहन्ना ४:८) प्रेम उनका व्यवसाय नहीं, वे स्वयं वहीं है. परमेश्वर हमेशा हमसे प्रेम करते हैं, पर अक्सर हम उनका प्रेम पाना रोक देते हैं. ख़ासकर यदि हमारा व्यवहार अच्छा नहीं.

मैं यहां रूकना चाहूंगी और शास्त्रवचन के कुछ भाग पेश करना चाहूंगी. जिनका मेरे लिए बहुत ज़्यादा महत्व है कृपया इन्हें समय लेकर धीरे-धीरे पढ़ियें. उन्हें ग्रहण कीजिए और उन्हें अपना हिस्सा बनने दीजिए: ''और जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है उसको हम जान गए हैं (हमने समझा, पहचाना, और सचेत है; उसे देखते हैं और अनुभव करते हैं) हमें उसकी प्रतीति है (हम उस पर चलते हैं और पूरा भरोसा करते हैं और उस पर निर्भर रहते हैं) परमेश्वर प्रेम है और जो प्रेम में बना रहता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है.

इसीसे (उनके साथ मिलने और उनके साथ सम्पर्क रखने से) प्रेम हममें सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हिपाव दो (हमें ये सुनिश्चितता मिले और हम बेधड़क उनका सामना कर सकें) क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही संसार में हम भी है.

प्रेम में भय नहीं होता (डर का अस्तित्व ही नहीं बरन सिद्ध प्रेम (सम्पूर्ण और मुक़म्मल) भय को दूर कर देता है क्योंकि भय से कष्ट होता है (इसलिए) जो भय करता है वह प्रेम में सिद्ध नहीं हुआ (वह अभी तक परिपक्व नहीं हुआ सम्पूर्ण और सिद्ध प्रेम में)

''हम इसलिए प्रेम करते हैं कि पहले उसने हमसे प्रेम किया'' (१ युहन्ना ४:१६-१८)

''जो प्रेम परमेश्वर हमसे रखता है (जो दर्शाता है) वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने इकलौते (सबसे अनोखे) पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वाराजीवन पायें.

प्रेम इसमे नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया. और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा (उसका बलिदान दिया)

''हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया (इतना अधिक प्रेम किया) तो हमको भी आपस में प्रेम रखना चाहिए.'' (१ युहन्ना ४:८-११)

''कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? या क्लेश, या संकट या उपद्रव या अकाल या नङ्गाई या ज़ोखिम या तलवार?'' (रोमियों ८:३५)

''क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ (मुझे यक़ीन है) कि ना मृत्यु, ना जीवन, ना स्वर्गदूत, न प्रधानतायें, न वर्तमान, न भविष्य, ना सामर्थ्य, ना ऊँचाई, ना गहराई और ना कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है अलग कर सकेगी.'' (रोमियो ८:३८-३९)

''और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे (सचमुच आकर रहने लगे, साथ जुड़ा रहे, इसे अपना स्थाई घर बना ले) कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नींव डालकर.

सब पवित्र लोगों के साथ (परमेश्वर के श्रद्धालू लोग, उस प्रेम का अनुभव) भलिभांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई और गहराई कितनी है?

(और तुम सचमुच ये जान जाओ) और मसीह के उस प्रेम को जान सको (व्यवहारिक तौर पर स्वयं के अनुभव द्वारा) जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ) (तुम्हारा सारा व्यक्तित्व उसके परमेश्वरीय अस्तित्व से भरकर समृद्ध हो जाये और तुम्हारा शरीर स्वयं परमेश्वर से भरकर बहने लगे) (इफ़िसियों ३:१७-१८)

''और आशा से लज्जा नहीं होती क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है'' (रोमियों ५:५)

''देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलियों पर खोद कर बनाया है'' (यशायाह ४८:१६)

पहला युहन्ना ४:१६ मेरे लिए शास्त्रवचन में एक कुंजी है क्योंकि उसमें लिखा है कि हमें परमेश्वर के प्रेम के प्रति सचेत और जागरूक रहना चाहिए जो उन्होंने हममें डाला है मैं परमेश्वर के प्रेम के प्रति जागरूक नहीं थी ना ही सचेत थी; इसीलिए मैं उनके अपने प्रति प्रेम पर विश्वास नहीं कर रही थी.

जब शैतान ने मुझ पर दोष लगाया, मुझे पता नहीं था कि ये कैसे कहूँ, ''हां, मैंने एक ग़लती की है'' फिर परमेश्वर के पास जाऊं और उनकी क्षमता मांगू, उनका प्रेम पाऊं और आगे बढ़ूं. इसकी बजाय, मैं घण्टों और दिनों तक अपराधी महसूस करती उन छोटी-छोटी बातों के बारे में जो मैंने ग़लत की होती. मैं सचमुच सताई जा रही थी. युहन्ना हमें बताता है कि भय अत्याचारकरता है पर परमेश्वर का सम्पूर्ण प्रेम भय दूर हटा देता है. (देखिये १ युहन्ना ४:१८) मेरे लिए परमेश्वर का प्रेम सिद्ध था क्योंकि ये उन पर ही आधारित था मुझ पर नहीं इसलिए जब मैं असफल भी होती, वे मुझे प्रेम करना जारी रखते.

आपके लिए परमेश्वर का प्रेम सम्पूर्ण है और बिना शर्त है. जब आप असफल होते हैं, वे आपसे प्रेम रखना जारी रखते हैं, क्योंकि उनका प्रेम आप पर नहीं परंतु उन पर आधारित है. जब आप असफल होते हैं, क्या आप परमेश्वर का प्रेम पाना बंद कर देते हैं और दोषी महसूस करके और दण्डित महसूस करके स्वयं को सज़ा देनी शुरू कर देते हैं? मैंने अपने जीवन के पहले चालीस साल दोषी महसूस किया और स्वयं के बारे में बुरा महसूस किया. मैं बड़ी वफ़ादारी से अपनी दोषी भावना का बोरा अपनी पीठ पर लादकर सब जगह घूमती-फिरती ये बहुत वज़नी भार था, और ये हमेशा मेरे साथ था. मैं नियमित रूप से ग़लतियाँ करती और उनमें से हर एक के लिए दोषी महसूस करती. रोमियो ८:३३-३५ में प्रेरित पौलूस कहते हैं.

''परमेश्वर के चुने हुओं पर दोष कौन लगायेगा? (जब कि स्वयं परमेश्वर ही वो हैं)

परमेश्वर वह है जो उनको धर्मी ठहराने वाला है फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा (परमेश्वर ही हैं जो हमें अपने साथ धर्मी रिश्ते में बांधते हैं. कौन आगे आयेंगे और दोष लगायेंगे या सज़ा देंगे उन्हें जिन्हें परमेश्वर ने चुना है? क्या परमेश्वर ही हमें मुक्त नहीं करवायेंगे) मसीह वह है जो मर गया बरन् मुर्दों में से जी भी उठा और परमेश्वर की दाहिनी ओर है और हमारे लिए निवेदन भी करता है? कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?''

शैतान का लक्ष्य है कि हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग करे क्योंकि परमेश्वर का प्रेम ही हमारी भावनात्मक चंगाई में मुख्य तत्व है हम प्रेम के लिए रचे गए. इफ़िसियो २:४-६ में पौलूस कहते हैं ''परंतु परमेश्वरने जो दया का धनी है अपने उस बड़े प्रेम के कारण जिससे उसने हमें प्रेम किया'' ऐसा प्रेम जिसके हम अधिकारी नहीं थे. ज़रा सोचिए इस बारे में. परमेश्वर की इच्छा है कि हमसे प्रेम करें. उन्हें हमसे प्रेम करना है– वे प्रेम हैं.

आप और मैं प्रेम के लिए बनाये गए. पाप ने हमें परमेश्वर से जुदा किया परंतु वो हमसे इतना अधिक प्रेम करते थे कि उन्होंने अपने इकलौते पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे लिए मरें हमें मुक्त करायें ताकि परमेश्वर हमें वापिस पा सकें हमें वापिस ख़रीद सकें ताकि वो अपना महान प्रेम हम पर लुटा सकें. हमें बस यही करना है कि उस पर विश्वास करें जो बाईबिल में लिखा है. हमारे और परमेश्वर के सम्बन्ध के विषय में. एक बार हम ऐसा कर लें तो चंगाई की प्रक्रिया शुरू हो सकती है.

उस पहले साल जब मेरे पति और मैंने अपनी सेवकाई लाईफ़ इन द वर्ल्ड शुरू की, पवित्र आत्माने मेरे साथ काम किया और मुझे परमेश्वर के प्रेम के बारे में सिखाया. मैंने एक किताब रखी वो ख़ास बातें याद रखने को जो ब्रभुने उस दौरान मेरे लिए की– छोटी-छोटी बातें, ज़्यादातर व्यक्तिगत बातें जिन्होंने मुझे दिखाया कि परमेश्वर परवाह करते हैं. इस विधी द्वारा मैं उनके बिना शर्त प्रेम के प्रति और ज़्यादा सचेत होने लगी इसने ये याद कराने में मेरी मदद की कि परमेश्वर मुझे प्रेम करते हैं.

'यदि आप ये विश्वास करें कि परमेश्वर जो इतने सम्पूर्ण हैं आपसे प्रेम करते हैं, तब आप इस पर भी विश्वास कर सकते हैं कि आप प्रेम के योग्य है.'

एक बार आप इस पर विश्वास कर लें कि आप परमेश्वर द्वारा स्वीकारे गये और वे आपसे प्रेम करते हैं, तब आप स्वयं को स्वीकारना और स्वयं को प्रेम करना शुरू कर सकते हैं. तब आप बदले में ना केवल परमेश्वर से प्रेम करना शुरू करेंगे, आप अन्य लोगों को भी प्रेम करना शुरू कर देंगे.

आप वो नहीं दे सकते जो आपके पास नहीं

बहुत से लोग यीशु को स्वीकार करते है और फिर तुरंत ही हर एक प्रेम करना शुरू करने की कोशिश करते हैं. अक्सर वो दोषी महसूस करने लगते हैं. क्योंकि वो पाते हैं कि वो ऐसा कर ही नहीं सकते. ये बिल्कुल असंभव है कि दूसरों को सच्चा प्यार दिया जा सकें पहले परमेश्वर का प्रेम पाये बिना. क्योंकि देने को कोई प्यार है ही नहीं.

१ कुरून्थिओं के अध्याय १३ को अक्सर कहा जाता है ''प्रेम का अध्याय'' पौलूस ये सच्चाई बहुत स्पष्ट रूप से जोरदार तरीक़े से बताते हैं पहले वचन में ही वो प्रेम की परिभाषा बताते हैं (कि कारण इच्छा और आत्मिक श्रद्धा वहीं है जो परमेश्वर के उस प्रेम द्वारा प्रेरित हो जो हम में है) ये पूरा अध्याय इसी पर केन्द्रित है कि हमें सिखाये कि प्रेम में कैसे चलना है, फिर भी ये साफ़-साफ़ बताता है कि ये प्रेम सबसे पहले हममें होना चाहिए.

बहुत से लोग इस बात का विश्वास तब करते है कि परमेश्वर उनसे प्रेम करते है जब उन्हें ये महसूस हो कि वे इसके हक़दार है. समस्या तब खड़ी होती है जब वे महसूस करें कि वे परमेश्वर के प्रेम के अधिकारी नहीं और फिर भी उन्हें इसकी बेहद ज़रूरत है.

निम्नलिखित चार्ट इस बात को दर्शाता है कि परमेश्वर का प्रेम स्वीकार करने या ना स्वीकार कर पाने से किस प्रकार के प्रभाव लगातार होते रहते हैं. ग़ौर कीजिए कि हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम का विश्वास यदि इस पर आधारित है कि हमारी योग्यता क्या है तो ये एक ऐसा धोखा है जो हमारे जीवनों में बहुत सी समस्यायें उत्पन्न करता है. दूसरी ओर ये विश्वास रखना कि परमेश्वर हमसे बिना शर्त प्रेम करते हैं हमें आनंद और आशीषें दिलाता है.

परमेश्वर का प्रेम पाना

अपने दिल में फ़ैसला कर लें कि आप परमेश्वर का प्रेम स्वीकार करेंगे. यहां कुछ व्यवहारिक सुझाव दिये गए हैं. जो आपकी मदद कर सकते हैं. ये सभी वो बातें हैं जो मेरा विश्वास है कि परमेश्वरने मुझसे करवाईं, और मैं मानती हूँ कि ये आपकी भी मदद करेगी. फिर भी, ये याद रखिये कि हम सब विशेष और अनौखे हैं और परमेश्वर की हम सबके लिए एक व्यक्तिगत और निजी योजना है रीतिओं में भटक न जाएं.

बिना शर्त प्रेम के बहने का सिद्धांत

यीशु मुजसे प्रेम करते हैं; ये मैं जानता हूँ,
वे मुझसे बिना शर्त प्रेम करते है.
इसलिये : मेरे प्रति उनका प्रेम जो वह है उस पर आधारित है.
इसलिये : मैंने उनका प्रेम कमाया नहीं. न ही मैं उनका प्रेम कमा सकता हूँ.
इसलिये : मैं उनके प्रेम से जुदा नहीं किया जा सकता.
जब मैं उनकी अवज्ञा करूंगा. तो मेरे बर्ताव के परिणाम होंगे.
शायद उन्हें मेरा बर्ताव पसंद न हो; पर वह हमेशा मुझसे प्रेम करेंगे.
इसलिये : क्योंकि मैंने परमेश्वर का प्रेम अनुभव किया है. मैं जानता हूं प्रेम योग्य हूं.

इसलिये क्योंकि मैं जानता हूं कि परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं. मैं ये विश्वास करने के योग्य हुआ कि लोग हैं जो मुझसे भी प्रेम कर सकते हैं.

इसलिये, मैं उन लोगों पर भरोसा करने के योग्य हुआ जो सचमुच मुझसे सच्चा प्रेम करते है.

इसलिये, मैं वो प्रेम स्वीकार करने के योग्य हुआ जो वे मुझे देते हैं.

इसलिये, क्योंकि मेरी प्रेम की मूल आवश्यकता और आत्म-योग्यता की अनुभूति परमेश्वर द्वारा पूरी कर दी गई, मुझे अन्य लोगों द्वारा ''देखे जाने'' की ज़रूरत नहीं.

इसलिये, हालांकि मेरी कुछ आवश्यकताएं है जिनके लिये मुझे अन्य लोगों की ओर देखना पड़ता है (यानी सहवास, प्यार, आनंद लेना) मेरा मानना है कि ये ज़रूरते संतुलित और प्रभु द्वारा दी गई है. मैं इमानदारी से इन ज़रूरतों का आंकलन करूंगा और जो चाहिये वहीं मांगूंगा.

इसलिये, मैं उम्मीद करता हूं कि अन्य लोग भी मेरे प्रति इमानदार होंगे. मैं अलोचना और मुकाबला निबर सकती हूं यदि ये प्रेम से किया हो.

इसलिये, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं परमेश्वर की विशेष और अनूठी सृष्टी हूं. मैं जानता हूं कि मेरे पास देने के लिये जो प्रेम है वे महत्वपूर्ण है.

इसलिये, मुझे महसूस नहीं होता कि मुझे अन्य के लिये करके दिखाना होगा. या तो वह मुझे जो मैं हूं उस रूप में प्रेम करें. मेरे लिये महत्वपूर्ण है कि जो मैं हूँ उसी के लिये मुझे प्रेम किया जाये.

इसलिये, मैं इससे अपना ध्यान हटा सकूंगा कि दूसरे मेरे बारे में क्या सोचते हैं और मैं दूसरे लोगों और उनकी ज़रूरतों की ओर ध्यान दे सकूंगा.

इसलिये, मैं एक स्वस्थ, प्रेमपूर्ण और चिरस्थाई रिश्ता कायम कर सकूंगा.

बिना शर्त प्रेम के बहने का सिद्धांत

यीशु मुझसे प्रेम करते हैं; पर...
वे शर्तों के अनुसार मुझसे प्रेम करते है.
इसलिये: उनका प्रेम मेरी करनी पर आधारित है.
इसलिये: मुझे उनका प्रेम हासिल करना है, उन्हें खुश करके.
इसलिये: जब मैं उन्हें खुश करता हूँ, मुझे प्रेम मिलना महसूस होता है.
जब मैं उन्हें खुश नहीं करता, मैं अस्वीकृत महसूस करता हूँ.
इसलिये: यदि परमेश्वर जो 'संपूर्ण प्रेम' है मुझे प्रेम नहीं करते, स्वीकार नहीं करते, मेरी कद्र नहीं करते,
मैं ये विश्वास करने की मैं ये आशा करूं कि मैं मूल्यवान और प्रेम योग्य हूँ?
इसलिये: मैं विश्वास नहीं करता कि मैं प्रेम योग्य, मूल्यवान व्यक्ति हूँ.

इसलिये: मैं अन्य लोगों पर विश्वास नहीं कर सकता जो कहते हैं कि मुझसे प्रेम करते हैं मैं उनके इरादों पर शक़ करता हूँ और अनुमान लगाता हूँ कि वो मुझे असलीयत में अभी तक नहीं जानते.

इसलिये, मैं अन्य लोगों से प्रेम स्वीकार नहीं कर सकता. उसे मोड़ देता हूँ. मैं ये सिद्ध करने की कोशिश करता हूँ कि मैं सहीं हूँ - मैं प्रेम योग्य नहीं और अन्त में वो मुझे नकार देंगे इसलिए, वे अक्सर ऐसा ही करते हैं.

इसलिये, मैं सांसारिक *मापदण्ड* इस्तेमाल करता हूँ (धन, हैसियत, कपड़े इत्यादि) दूसरों को ये सिद्ध करने के लिए कि मैं मूल्यवान हूँ. मुझे दूसरे लोगों से शाबासी और प्रतिक्रिया चाहिए ताकि मैं सिद्ध कर सकूं कि मैं *प्रेम योग्य हूँ.*

इसलिये, मुझे हर रोज़ शाबासी "ताज़ी मात्रा" में चाहिए ताकि मैं पूरा दिन स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करते गुज़ार सकूं.

इसलिये, मैं दूसरों की ओर देखता हूँ कि वो मुझे वो दें जो केवल परमेश्वर ही दे सकते हैं. *मेरी अपनी कद्र का (आत्मयोग्यता) अहसास.*

इसलिये, वो लोग जो मुझसे प्रेम करते हैं उनके आगे मैं असंभव मांगे रखता हूँ. मैं उन्हें हताश करता हूँ. मैं उन्हें अपने आगे ईमानदार बनने या मेरा सामना करने का मौका ही नहीं देता. मैं स्वयं पर केन्द्रित हूँ. और मैं उम्मीद करता हूँ कि वो भी मुझ पर केन्द्रित रहें.

इसलिये, क्योंकि जो मैं हूँ वो मुझे पसंद नहीं, इसलिए मैं ये उम्मीद नहीं करता कि दूसरे भी मुझसे प्रेम करेंगे. क्यों कोई ऐसी चीज़ चाहेगा जिसकी कोई क़ीमत ही नहीं.

इसलिये, जो मैं करता हूँ उसीसे उनका प्रेम हासिल करना चाहता हूँ. मैं प्रेम करने की इच्छा जाहिर नहीं करता पर प्रेम पाना चाहता हूँ. ज़्यादातर मैं जो भी कुछ करता हूँ वो मेरे "स्वयं" से बंधा है.

इसलिये, जो लोग प्रेम का इक़रार करते हैं वो स्वयं प्रेम महसूस नहीं करते. उन्हें अपने साथ छल महसूस होता हैं. मैं अस्वीकृति टालने की कोशिश कर रही हूँ बजाय प्रेम भरा रिश्ता क़ायम करने के लिए.

इसलिये, मैं एक स्वस्थ, प्रेमपूर्ण और चिरस्थाई रिश्ता कायम रखने के योग्य नहीं.

मेरा सुझाव है कि आप निम्नलिखित बातें करें जिससे आपको सहायता मिलेगी कि आपके लिए परमेश्वर का प्रेम आपको प्रकट दिखें:

- स्वयं को बताईये, अपने मन में और ऊँची आवाज़ में ''परमेश्वर मुझे प्रेम करते हैं.'' ये कहो, और इसे अपने अन्दर सोखने दो. अक्सर इसे दोहराओ: जब आप सुबह उठते हैं, जब आप रात सोने जाते हैं, और पूरा दिनभर स्वयं को आईने में देखो, अपनी ओर इशारा करो. ख़ुद को अपने नाम से बुलाओ, और कहो ''... परमेश्वर तुम्हें प्रेम करते हैं.''
- एक डायरी रखो, याद करने की पुस्तक, वो ख़ास बातें जो परमेश्वर आपके लिए करते हैं. जिनमें छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीज़े शामिल हो. अपनी ये सूचि कम से कम सप्ताह में एक बार पढ़ें और आप उत्साहित होंगे. इसे पवित्र आत्मा की एक परियोजना बनने दें. मेरे ख़्याल से आपको इसमें मज़ा आयेगा, जैसे मुझे आया.
- सीखो और याद कर डालो, शास्त्रवचन के कुछ भाग जो आपके प्रति परमेश्वर के प्रेम के विषय में हों.
- परमेश्वर प्रेम के बारे में कुछ अच्छी किताबें पढ़ों. मेरा सुझाव है कि आप उनसे शुरूआत करें जो मैंने लिखी है जिनके शीर्षक हैं *''उनसे कहो मैं उनसे प्रेम करता हूँ''* और *''मुझे प्रेम में ढाल लो''*
- पवित्र आत्मा के लिए प्रार्थना करो, जो एक शिक्षक है, परमेश्वर का प्रेम आपके लिए प्रकट कर दिखाता है.

६

पवित्र आत्मा का अनुसरण करो

यदि आप इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि आपको भावनात्मक चंगाई चाहिए, और ये कि बहुत-सी समस्यायें जो आप झेल रहे हैं. वो अतीत की ख़राब जड़ों के कारण हैं, शायद आप समस्या की इन जड़ों से छुटकारा पाने को उतावले हो जाएं ताकि आप चंगाई प्राप्त कर सकें. ये समझा जा सकता है, पर ये महत्वपूर्ण है कि अगवाई के लिए, मार्गदर्शन और इस चंगाई की प्रक्रिया में आपको निर्देशित करने के लिए पवित्र आत्मा को आने दें.

परमेश्वर ने पहले ही यीशु मसीह को भेजा कि वो धरती पर आयें और आपकी सम्पूर्ण चंगाई ख़रीद लें. एक बार जब ये हो गया, उन्होंने अपना पवित्र आत्मा भेजा कि आपमें उसका संचार कर सकें जो यीशु ने अपने लहू से ख़रीदा.

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था "कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं ना जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आयेगा (देखिये युहन्ना १६:७) ये सहायक की पवित्र आत्मा है. और विस्तृत बाइबिल के संस्करण के इस वचन में यीशु पवित्र आत्मा को बहुत से नामों से पुकारते हैं हमारा सलाहकार, सहायक, वकील, माध्यम, शक्तिदायक और साथ खड़ा होने वाला. आपके स्वस्थ होने की प्रक्रिया में, आपको पवित्र आत्मा की सेवकाई के हर पहलू को अनुभव करने की ज़रूरत है.

केवल परमेश्वरीय सलाह ही खोजो

किसी से भी सलाह मांगते ना फिरो. पहले प्रार्थना करो, परमेश्वर से पूछो कि क्या उनकी ये इच्छा है कि आप सलाह के लिए किसी और मनुष्य के पास जाएं, या उनकी ये इच्छा है कि स्वयं आपकी सलाह मशवरा दें.

मेरे जीवन में बहुत-बहुत सी समस्यायें आई, फिर भी मैं कभी किसी और के पास सलाह मशवरे के लिए नहीं गई, सिर्फ़ एक बार को छोड़कर. इस अवसर पर मैंने सेवकाई में कार्यरत एक महिला की सलाह ली जिसका भी कभी शोषण हुआ था. मेरा मलब यहां उसका निरादर

करना नहीं पर वो सचमुच मेरी मदद न कर सकी. ये उसका दोष नहीं था; उसे बस ऐसा करने के लिए परमेश्वर का अभिषेक प्राप्त नहीं था.

परमेश्वर कभी भी उसका अभिषेक करने को बाध्य नहीं जो उन्होंने शुरू नहीं किया. इसलिए अक्सर लोग दूसरों की ओर दौड़ते हैं बिना पवित्र आत्मा का मार्गदर्शन और अगुवाई किए. और कभी भी इसका अच्छा और चिरस्थाई फल प्राप्त नहीं होता 'जब आप पर मुसीबत आये आप सिंहासन के सम्मुख जायें इससे पहले कि आप फ़ोन की और हाथ बढ़ायें.'

मैं ये सुझाव नहीं देना चाह रही कि मनोवैज्ञानिक सलाह पाना गलत है. मैं बस ये सलाह दे रही हूँ कि आप प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा द्वारा परमेश्वर को अपनी अगवाई और मार्गदर्शन करने दें. उन्हें अपने लिए सही सलाहकार चुनने दें. सिर्फ़ इसलिए कि किसी व्यक्ति पर भी वही गुज़री है जो आप पर गुज़री है, या वो आपका बहुत गहरा निजी दोस्त है, इसका ये मतलब नहीं कि वो व्यक्ति आपके लिए सही सलाहकार हो. इसलिए मैं दोहराती हूँ, प्रार्थना करो.

मैं बेशक ये नहीं कह रही कि आप सलाह ना लें क्योंकि मैंने नहीं ली. हम सबके अलग-अलग व्यक्तित्व हैं. मेरा व्यक्तित्व था मज़बूत दृढ़ निश्चय वाला आत्म संयमवाला, लक्ष्य की ओर लक्षित. इन गुणों ने मुझे अपने मकसद की ओर आगे बढ़ते रहने में सहायता की, जो थी भावनात्मक सम्पूर्णता. दूसरों को शायद किसी की मदद की ज़रूरत हो, कोई जो उनका सहायक बने उनके लिए लक्ष्य आधारित करने के लिए और इन लक्ष्यों की ओर बढ़ते रहने के लिए.

ये बहुत महत्वपूर्ण है कि पवित्र-आत्मा की अगुवाई का अनुशरण करें. वह सबसे उत्तम सलाहकार है. या तो वो सीधे आपकी मदद करेगा, या वो आपको किसी और की तरफ़ भेजेगा जिसके द्वारा वो आपकी सेवा कर सकें. दोनों ही मामलों में, आखिरकार आपको मदद के लिए उसकी ओर ही देखना चाहिए. वो सलाह भी जो शायद दूसरे लोग आपको दें वो पवित्र-आत्मा की मदद के बिना शायद कारगर ना हो (परमेश्वर द्वारा एक व्यक्तिगत प्रकाश प्राप्त ना हो.)

ये जानना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का बुलावा हमारे जीवनों के लिए अलग-अलग है. क्योंकि उन्होंने मुझे अपने वचन की शिक्षा देने को बुलाया है, मेरे लिए बेहतर ये था कि जिस सच्चाई की मुझे ज़रूरत है वो मैं उनसे सीधे प्राप्त करूंगा. हालांकि, हर एक के लिए ये नियम नहीं है.

पवित्र आत्मा की सेवकाई

एक और कारण कि पवित्र-आत्मा की सेवकाई क्यों इतनी महत्वपूर्ण है हम युहन्ना १६:८ देखें जिसमें यीशु कहते हैं ''कि पवित्र आत्मा आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरूत्तर करेगा.''

बहुत से लोग जिनका शोषण हुआ वो शर्मसार व्यक्ति है. (शर्म का ये विषय बाद में विस्तार से बताया जायेगा बाद में एक अध्याय के ज़रिये) वो अपने बारे में खराब महसूस करते हैं. वे स्वयं को पसंद नहीं करते; इसलिए वो बहुत सी दोष भावना और दण्डित महसूस करते हैं.

ये शैतान है जो दण्ड दिलाता है; पवित्र आत्मा न्याय दिलाता है. (इनमें फ़र्क़ है. मैं न्याय का स्वागत करती हूँ पर दण्ड का प्रतिरोध करती हूँ - और आपको भी ये करना चाहिए) केवल पवित्र आत्मा ही परमेश्वर के वचन और परिवर्तन लाने की उनकी समर्थाद्वारा, किसी शर्मसार व्यक्ति को यकीन दिला सकता है कि यीशु मसीह द्वारा बहाये लहू द्वारा वो धर्मी बनाया गया ''जो पाप से अज्ञात था उसीको उसने हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर (उससे जुड़कर उसके साथ होकर और उसका उदाहरण बनकर) परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (जो हमें करना होगा, उसके रिश्ते में धार्मिकता प्राप्त कर उसकी नेकी द्वारा हमें मान्यता प्राप्त हुई और हम स्वीकार हुए)'' (२ कुरिन्थिओ ५:२२)

यीशु ने पवित्र आत्मा का वर्णन सत्य की आत्मा कहकर किया है और हमें यक़ीन दिलाया है कि वो हमें सत्य की ओर ले जायेगा – सम्पूर्ण सिद्ध सत्य (देखिये युहन्ना १६:१३) यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा हमारी स्मरण शक्ति को निर्देशित करेगा ''परंतु सहायक (सलाहकार, मददगार, माध्यम, वकील, शक्ति दाई, साथ खड़े रहने वाला) अर्थात पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा (मेरी जगह, मेरा प्रतिनिधित्व करने और मेरी जगह काम करने) वह तुम्हें सब बातें सिखायेगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वो सब तुम्हें स्मरण करायेगा (आपको याद करायेगा, आपकी यादें ताज़ा करेगा)'' (युहन्ना १४:२६)

पवित्र आत्मा की सेवकाई के लिए दो मुख्य पहलू उन लोगों के लिए सहायता के मुख्य क्षेत्र हैं जो शोषण से चंगाई पाने की प्रक्रिया में हैं. ऐसे लोगों को अपने इंकार से बाहर निकलना होगा और सत्य का सामना करना होगा. शायद कुछ बातें हों जो वो भूल गए हों क्योंकि उन्हें याद रखना बहुत पीड़ादाई है. वो बातें जिन्हें वापस याद करना होगा और चंगाई की प्रतिक्रिया के दौरान उनका सामना करना होगा. यदि वो व्यक्ति जो चंगाई का भार संभाले है स्वयं पवित्र आत्मा से निर्देशित नहीं, तो कई बार वो शोषित व्यक्ति को इस प्रक्रिया से बहुत जल्दी गुज़ार देता है. यदि बहुत ज़्यादा रफ़्तार हो तो ये बहुत पीड़ादाई हो जाता है जिससे वो व्यक्ति निपट नहीं सकता.

मुझे याद है एक लड़की जो एक बार हमारी प्रार्थना की लाईन में आई. वो बहुत परेशान थी और बहुत ज़्यादा भावुक, तकरीबन पूरी हड़बड़ाहट में भरी हुई. वो मुझे सुनाने लगी हर सप्ताह जब वो अपने सलाहकार के पास जाती है, तो ये सब इतना पीड़ादाई हो जाता है कि उसके लिए सहन करना असंभव-सा हो जाता है. वो इतनी उत्तेजित थी, मैंने उसे कईबार ये कहते सुना ''येलस बहुत कठिन है, मुझे इतनी पीड़ा होती है कि मैं सहन नहीं कर सकती.''

उस समय जब वह बात कर रही थी मैं प्रार्थना कर रही थी और परमेश्वर से मांग रही थी कि मेरी मदद करें. ताकि मैं उसकी मदद कर सकूं. मुझे सचमुच उसकी बहुत चिंता थी कि कहीं वो वहीं ऑल्टरपर पागलपन के दौर से न घिर जाए. अचानक मुझे परमेश्वर से जवाब मिला. मुझे महसूस हुआ कि शायद उसका सलाहकार आत्मा के प्रति संवेदनशील नहीं और वो इस नौजवान महिला के सभी मुद्दे जल्दी निपटाना चाहती है जिससे उसका मन और उसका भावनात्मक तन्त्र संभालने में असमर्थ था.

जब मैंने उस लड़की से कहा, ''सुनो मेरी बात मेरे ख्याल से मैं जानती हूँ कि तुम्हारी समस्या क्या है'', वो इतने समय के लिए तो चुप हो गई कि मैं उसे बता सकूं कि परमेश्वर उसे क्या कर रहे है. जैसे ही उसने सुना उसे तुरंत कुछ आराम महसूस होने लगा वो मान गई कि जो मैं बता रही हूँ बिल्कुल वैसा ही हो रहा है.

मैंने उसे बताया कि स्वयं मेरी चंगाई की प्रक्रिया के दौरान, पवित्र आत्मा मुझे कई अलग-अलग माध्यमों की ओर ले गई मार्गदर्शन प्राप्त करने को. पहली किताब वो थी जिसे मेरे ने पढ़ने का सुझाव दिया था. ये ऐसी महिला की गवाही थी जिसका बचपन में यौन शोषण हुआ उस समय तक, मैंने ये नहीं सोचा था कि मेरी कोई भी समस्या मेरे अतीत का नतीजा है.

उस किताब को पढ़ना बहुत ही कठिन था. जब मैं उस भाग पर पहुंची जहाँ उस महिलाने विस्तृत वर्णन द्वारा बताना शुरू किया कि कैसे उसके सौतेले पिता ने उसका यौन शोषण किया, वो यादें, पीड़ा, गुस्सा और क्रोध कहीं भीतर गहरे से मुझमें तेज़ी से उभरना शुरू हुआ मैंने वो किताब फ़र्श पर फैंक दी और चिल्लाकर कहा, ''मैं ये नहीं पढ़ूंगी.''

बस उसी समय मैंने पवित्र आत्मा का उत्तर सुना, ''समय आ गया है.''

मैं परमेश्वर के साथ चलने का प्रयास कई सालों से कर रही थी. जब ये घटना हुई तो उसने पहले क्यों नहीं मेरी मदद के लिए ऐसी किसी चीज़ की ओर निर्देशित किया? जवाब है क्योंकि समय नहीं आया था. पवित्र आत्मा बिल्कुल सही जानता है कि हमारे जीवन में सही समय क्या है? मैं हमेशा कहती हूँ, ''केवल पवित्र आत्मा ही जानता है कि कब आप किस के लिए तैयार'' अन्य शब्दों में, केवल परमेश्वर का आत्मा ही वो है जो जानता है कि आपकी मदद के लिए क्या लगेगा, और कब आप वो बदल पाने को तैयार हैं.

शायद ये एक किताब के रूप में आये, कोई विशेष वक्ता या कोई एक दोस्त बस वही कहता है उस पल जो आपको सुनने की ज़रूरत है. या शायद ये व्यक्तिगत गवाही के ज़रिये आये, या स्वयं प्रभु से सीधे संपर्क द्वारा प्राप्त हो, शायद आप ये समय परमेश्वर द्वारा निर्धारित समय है आपके लिए जब आप ये किताब पढ़ रहे हैं यदि ऐसा है, परमेश्वर इसे किसी ऐसे क्षेत्र में इस्तेमाल करेंगे जहां इस समय आपको दुख पहुंच रहा हो . शायद ये आपकी चंगाई

की प्रक्रिया की शुरूआत हो और इस प्रक्रिया में अगला कदम हो, या आपके लम्बे समय से चलनेवाले सम्पूर्णता के संघर्ष के लिए अंतिम पड़ाव.

बहुत से लोग जो मेरे पास प्रार्थना के लिए आते है भावनात्मक चंगाई के लिए वे चिंतीत रहते हैं और बहुत बेचैन भी क्योंकि उनके बचपन का कोई हिस्सा है जो उन्हें याद नहीं आ रहा है. वो उससे गुज़र रहे हैं जिसे मैं कहती हूँ, ''खुदाई की साहसिक यात्रा'' भूली हुई यादों को खोदकर निकालने की कोशिश ताकि वो उसका सामना कर सकें, उनसे निपट सकें और उन्हें अपने सिस्टम से बाहर निकाल सकें. ऐसे लोगों को मैं बताती हूँ कि मेरे खुद अपने अतीत के ऐसे हिस्से हैं जिन्हें मैं याद नहीं कर पाती. असल में, मेरे बचपन का ज़्यादातर भाग लगता है कोरे पन्नों से भरा है.

मैं लोगों को याद दिलाती हूँ कि पवित्र आत्मा हमें सम्पूर्ण सत्य की ओर ले जाता है. और हमें बहुत सी बातें स्मरण कराता है. पर हमें इस संवेदनशील क्षेत्र में उसे अगुवाई करने देना चाहिए. मैंने उसे अपनी स्मरण शक्ति सौंपदी है. मैं सचमुच विश्वास करती हूँ कि यदि मेरे अतीत की कोई बात याद करने से मेरी मदद होगी, तब ये मुझे ज़रूर याद आयेगी. यदि ये मेरी मदद ना करे, गैर ज़रूरी हो या इसे याद करना हानिकारक हो, तब मैं धन्यवादी हूँ कि मैं इसे याद नहीं कर पा रही. मेरा विश्वास है कि कई बार जो हम नहीं जानते वो हमें ठेस नहीं पहुंचा सकता.

ज़ाहिर है, हमेशा ऐसा नहीं होता. बहुत से लोग किसी मानसिक आघात वाली घटना को याद करके बहुत चैन महसूस करते हैं, उससे निपटकर और फिर उसे अपने जीवन से निकालकर कई बार यदि ये यादें जान-बूझकर बंद कर दी गई हों और दिमाग के किसी गहरे कोने में दबा दी गई हों तो वे पूरे सिस्टम में ज़हर फैला देगी. ऐसे मामले में यादों को बाहर लाना बहुत ज़रूरी है. इससे पहले कि सम्पूर्णता प्राप्त की जा सकें. यहाँ एक बार फिर, ये याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है, कि यदि ये प्रक्रिया पवित्र आत्मा की अगुवाई और मार्गदर्शन में नहीं की गई तो ये हानिकारक हो सकती है और असल घायल भावनाओं को और ज़्यादा हानि पहुंचा सकती है.

पवित्र आत्मा भला है, नाज़ुक है ख्याल रखने वाला, दयालू, प्रेम करने वाला और सब्रवाला है. फिर भी इतना शक्तिशाली और सामर्थी है और लोगों के लिए वो सब कर सकता है जो वो अपने बल पर कभी नहीं कर सकते. भजनसंहिता के लेखक ने कहा है ''यदि घर को यहोवा ना बनाये, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होगा. यदि नगर की रक्षा यहोवा ना करें तो रखवाले का जागना व्यर्थ ही होगा'' (भजन १२७:१) मैंने अपने जीवन के बहुत से साल जागते हुए और मेहनत करते हुए व्यर्थ ही गवाये. मैं आपको प्रेरित करती हूँ कि अपने जीवन के सबसे कीमती वर्ष ''स्वयं करने'' की कोशिश में ना गवायें. अपने सुधार के लिए परमेश्वर और उनकी योजना की खोज करें. वो आपको एक-एक कदम करके आगे ले जायेंगे और हम उसके तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जायेंगे. (देखिये २ कुरिन्थिओं ३:१८)

७

दो किस्म की पीढ़ा

तब भी जब हम पवित्र आत्मा को अपना नेतृत्व करने देते हैं, भावनात्मक चंगाई तब भी पीडा दाई रहती है. पर मेरा मानना है कि दो क़िस्म की पीड़ा होती है: परिवर्तन की पीड़ा, और कभी न बदलने और वही बने रहने की पीड़ा यदि आप प्रभु के आत्मा को अपनी चंगाई की प्रक्रिया का नेतृत्व करने देंगे, तो वो हमेशा वहां होगा आपको शक्ति उपलब्ध कराने के लिए जो हर दौर के लिए ज़रूरी है, ताकि जो भी परीक्षाएं आपको झेलनी पड़ें, आप उन्हें सहने के योग्य हो सकें.

प्रभु ने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वे हमें न छोड़ेंगे न त्यागेंगे. इब्रानियों १३:५ में किया गया ये वादा बहुत ही शक्तिशाली है. ''तुम्हारा स्वभाव लोभरहित हो (जिसमें ना लालच हो, ना शत्रुता, ना वासना और ना सांसारिक चीज़ों के लिए तड़प) और जो तुम्हारे पास है उसी पर संतोष करो (उन्ही परिस्थितियों में और जो भी उस समय तुम्हारे पास हैं) क्योंकि उसने आप ही कहा है कि मैं तुझे कभी ना छोडूंगा और ना कभी तुझे त्यागूंगा (मैं तुम्हे कभी भी, कभी भी, कभी भी किसी तरह बेसहार और असहाय नहीं छोडूंगा, और ना ही कभी तुम्हे निराश करुंगा, अपनी पकड़ तुम पर कभी ढीली नहीं करूंगा, ये सुनिश्चित जान लो)''

हमें इस वचन को थामें रहना है जब यदि हम (अपनी मर्ज़ी आप) करना शुरु कर दें. तो हम बहुत ही ख़तरनाक क्षेत्र में है. हमारे स्वर्गीय पिता किसी भी तरह बाध्य नहीं कि हमें उन परीक्षाओं ने सहारा दें जो हमारे लिए उनकी योजना नहीं थी. शायद हम उससे बच तो जाएं पर इस प्रक्रिया में इतना ज़्यादा संघर्ष होगा जिसकी ज़रूरत नहीं थी.

भावनात्मक घावों की पीड़ा शारीरिक पीड़ा से कहीं ज़्यादा मानसिक आघात पहुंचा सकती है जब आप परमेश्वर द्वार प्रकृत योजना पर चल रहे होते हैं और आप पीड़ा दाई दौर में आते हैं, याद रखिये कि पवित्र आत्मा शक्ति दायी है. कई बार शायद ऐसा लगे कि आप सफल नहीं हो पायेंगे, ऐस पल परमेश्वर से मांगिये कि वो आपको मज़बूत बनाये.

इन कठिनाई की घड़ियों में मूंहज़बानी याद करने के लिए एक महान शास्त्र वचन है, १ कुरिन्थिओं १०:१३ जिसमें प्रेरित पौलूस हमें याद दिलाते हैं.

> ''किसी ऐसी परीक्षा में ना पड़े (कोई भी ऐसी परीक्षा जो पाप के लालच द्वारा उत्पन्न हो, चाहे वो कहीं से भी उत्पन्न हो चाहे तो कहीं भी ले जाये) जो मनुष्य के सहने से बाहर है (इसका मतलब ये है कि कोई भी परीक्षा या परख आप पर ऐसी नहीं आती जो मानव की सहनशक्ति से बाहर हो. और जो मानव के अनुभव के अनुसार इस तरह ढाली जाती है या बना दी जाती है कि मनुष्य उसे सह सके) और परमेश्वर सच्चा है (वो अपने वादे का पक्का है और अपने दयालू स्वभाव के कारण दयालू है) और वह (विश्वास योग्य है) तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में ना पड़ने देगा वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको (वो तुम्हें राह भी दिखायेगा कि परीक्षा से बाहर कैसे निकलना है और तुम्हें योग्य, मजबूत और शक्ति शाली बनायेगा कि इस परीक्षा को सब्र से सहन कर सको).

ऐसे कठिन समयों के साथ बहुत सी परीक्षायें आती हैं इनमें से एक परीक्षा ये भी है कि आप छोड़ दे हिम्मत हार जाएं और पुरानी राहें और पुराने विचारों की ओर वापस मुड़ जाएं, नकारात्मक बन जाएं. निराश, और परमेश्वर पर क्रोधित क्योंकि आप समझ नहीं पा रहे कि वह क्यों आपको अपनी पीड़ा से बाहर निकलने की राह उपलब्ध नहीं कर पा रहे. जो पीड़ा आपको अपने जीवन में भोगनी पड़ रही है. फिर भी शास्त्र वचन का ये भाग हमें बताता है कि परमेश्वर हमेशा हमारी और से हस्तक्षेप करेंगे.

और उनकी सहायता हमेशा सही समय पर पहुंच जायेगी. अपने दिल में ठान लो कि डटे रहना है और हार नहीं माननी.

दूसरा मददग़ार हिस्सा हमें मिलता है २ कुरिन्थिओं १२:७-९ में जहां पौलूस स्वयं अपने दुखों का वर्णन करते हैं क्योंकि उसकी वो तुलना करते हैं. ''मेरे शरीर में एक कांटा चुभाया गया'' इसका सचमुच कोई मलतब नहीं कि वो कांटा क्या था पर हम जानते हैं किये उन्हें बेचैन कर रहा था और वो उसे निकालना चाहते थे. चाहे वो जो भी कुछ था, तीन बार पौलूस ने परमेश्वर से मांगा कि वो उसे हटा दे तब भी परमेश्वर का उत्तर उसके लिए यही था मेरा अनुग्रह (मेरी कृपा और मेरी प्रेमभरी दयालुता और दया) तेरे लिए बहुत है (किसी भी ख़तरे के लिए काफ़ी है और ये तुम्हे इस योग्य बनाती है कि कष्ट का सामना मर्दानगी पूर्वक करो) क्यों कि मेरी सामर्थ निर्बलता में सिद्ध होती है (सम्पूर्ण होती है पूरी होती है)

हमें हमेशा अपने कष्टों से ठीक उसी समय मुक्ति नहीं मिल जाती जब हम प्रभु का नाम पुकारते हैं कई बार हमें कुछ देर सहना पड़ता है, सब्र करना पड़ता है और विश्वास में बढ़ते

रहना पड़ता है. धन्यवाद प्रभु कि उस दौर में जब परमेश्वर ये फ़ैसला करते हैं कि किसी कारण वे हमें इससे तुरंत मुक़्ति नहीं दिलायेंगे वे हमेशा अपनी कृपा और शक्ति हमें देते हैं. जिसकी हमें ज़रूरत है कि आगे बढ़ते रहें और अन्त में विजय पायें.

क्या कभी आपने सोचा है कि परमेश्वर क्यों हमेशा हमें और हमारे बन्धनों और समस्याओं से तुरंत छुटकारा नहीं दिलवाते? कारण ये है कि केवल प्रभु ही वो हर बात जानते हैं जो ज़रूरी है कि उनके बच्चों के जीवनों में हो-और उसे करने का सही समय क्या है.

मेरे अपने अनुभव से मैंने सीखा है कि मैं विश्वास करुँ बजाय सवाल करने के परमेश्वर से पूछना ग़लत नहीं हैं कि क्यों जब तक कि उस तरह के सवाल उलझन पैदा ना करते हों, ऐसे मामलों में बेहतर यही है कि परमेश्वर पर भरोसा करें, ये जानते हुए कि वो भी ग़लत नहीं होते-और ये वो कभी देर नहीं करते. अक़्सर हम किसी घटना या परिस्थिति से उत्पन्न क्यों को समझ सकते हैं. तभी जब सब कुछ समाप्त हो जाए और हम दूसरी ओर खड़े हो कर, इसे पीछे मुड़कर देखें, मेरे जीवन में भी कई अनुभव हैं जिन्हें बेशक़ मैं उस समय नहीं समझ सकी जब मैं उनसे गुज़र रही थी

हालांकि अब कुछ कुछ उनका मतलब और उद्देश्य समझ पाई हूँ.

परीक्षाओं से गुज़रना पीड़ादाई होता है. अपनी सेवकाई में मैं अक़्सर लोगों को वो बताती हूँ जो प्रकाशित वाक़्य की पुस्तक में लिखा है कि हम शैतान पर विजय पा सकते हैं मेमने के लहू द्वारा और अपनी गवाही के वचन के कारण (देखिये प्रकाशित वाक्य १२:११) जीवन के किसी भी क्षेत्र में विजय की गवाही बहुत महत्वपूर्ण है. फिर भी सकारात्मक गवाही हासिल करने के लिए, ये बहुत ज़रूरी है कि हम सफलतापूर्वक विजय पा सकें कुछ कठिनाइयों पर या विरोधों पर.

पीड़ादायी भाग यही है हमें इसे सहना पड़ेगा जब हमारी परीक्षा हो रही है और हम परखे जा रहे हैं, तेजस्वी हिस्सा तब आता है जब हम परीक्षा से गुज़र चुके होते हैं और परमेश्वर की महान विजय और उसकी निष्ठा की गवाही से सकते हैं. बिना परीक्षा के हमें-गवाही नहीं मिलती.

पीडा का फ़ाटक

क्योंकि मैंने व्यक्तिगत अनुभव द्वारा इतनी अधिक भावनात्मक पीड़ा झेली है, जो शायद आपने भी झेली हो, कि मैं दुख से थक गई. मैं कोशिश कर रही थी कि पवित्र आत्मा की अगुवाई के अनुसरण द्वारा चंगाई पा सकूं फिर भी सच कहूँ तो मैं समझ नहीं पा रही थी कि क्यों ये प्रक्रिया इतनी पीड़ा दायी है. मैंने महसूस किया कि यदि मैं लगातार पीड़ा सहने के योग्य हो जाऊँ. तो मुझे परमेश्वर से कुछ जवाब तो मांगने थे. मैं असल में सुधर रही थी, बेहतर

हो रही थी, यहां वहां विजय पा रही थी, पर ऐसा लगता था कि हर बार जब मैंने कोई प्रगति की, तो परमेश्वर मुझे चंगाई के एक और दौर में ले आते जिसका हमेशा अर्थ होता और ज़्यादा पीड़ा और बेचैनी.

जैसे ही मैंने अपनी परिस्थिति के बारे मैं प्रार्थनी की परमेश्वर ने मुझे एक दृश्य दिखाया. अपने मन में मैंने देखे दरवाज़े श्रृंखलाबद्ध– एक के बाद एक. हर एक मेरे अतीत के किसी मानसिक आघात को प्रकट कर रहा था. जिसने घटित होते समय बहुत पीड़ा पहुंचाई परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि कैसे हर बार जब मैं इनमें से घर पर यौनशोषण का शिकार, स्कूल में मज़ाक उड़ाये जाना क्योंकि मैं मोटी थी, मित्र न बना पाने की अयोग्यता हमेशा लगातार डर

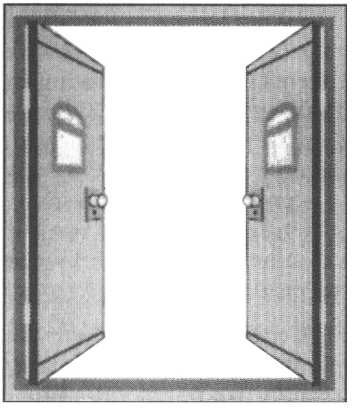

The Doorways of Pain

में डूबे रहना, अपने पहले पति द्वारा त्यागे जाना, कलीसिया में दोस्तों के एक समूह द्वारा धोखा खाना, और बहुत कुछ) ये हमेशा पीड़ा का एक नया दरवाज़ा था जिससे निकलने के लिए मुझे मज़बूर होना पड़ता.

मुझे अच्छी तरह याद है भय का दुख, नकारे जाने, त्यागे जाने और धोखे का दुख-और आप भी ऐसा करते होंगे. यदि आप इन्ही शोषणों का शिकार हुए हों जो लोगों को बंधन में बांधकर ग़ुलाक बना देते हैं.

जब अंत में मैने परमेश्वर को अपने जीवन में काम करने दिया, तो उन्होंने ये प्रकाश मुझे दिया कि मैं ऐसे ही ''पीड़ा के दरवाजों'' के पीछे छुपी हुई थी. मैं गहरे बंधनों में बंधी थी, झूठी शख्सियत के पीछे पनाह ले रही थी. दिखा और मुखौटा लगाये थी. मैं बस समझ नहीं पा रही थी कि स्वयं को कैसे आज़ाद करूं. जब परमेश्वर ने बन्धन से मुझे मुक़्त कराना शुरु किया, इससे पीड़ा हुई.

अब मैं समझ सकती हूँ कि बंधन से निकल कर आज़ादी में आने के लिए हमें ग़ुजरना पड़ता है इन्ही, या ऐसे ही पीड़ा के दरवाज़ों से जिनसे हम पहले ग़ुज़रे थे ताकि हम उनके दूसरी ओर जा सके. जब हम पीड़ा के इन दरवाज़ों से ग़ुज़र कर बन्धनों में बांधे गए, तो हमें इन्ही दरवाज़ों से वापिस निकलना पड़ेगा. बन्दीगृह से बाहर आने को दोनों बार दरवाज़ों से ग़ुज़रना पीड़ा दाई होता है. पहले असली शोषण के कारण और फिर दोबारा उसकी याद के द्वारा.

हमें मुक्त कराने और चंगाई देने के लिए प्रभु को हमें वहां ले जाना पड़ता है कि हम उन्ही विषयों, लोगों और सच्चाईयों का सामना करें जो हमें मुश्किल लगती है यदि असंभवना भी हों, अपने बलबूते उनका सामना कठिन होता है. मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहूंगी:

उदाहरण एक

मैं अपने पिता से भयभीत थी. अपने चालीसवें वर्ष में भी पक्की उम्र हो जाने पर भी, जब कि मेरे अपने चार बच्चे थे, मैं अभी भी उनसे भयभीत थी. बहुत सी पीड़ा दाई घटनाओं ने मेरे जीवन में वो डर भर दिया था.

मैं सैंतालीस साल की थी, जब अंत में परमेश्वर ने मुझे वहां पहुंचाया जहां मुझे अपने पिता का सामना करना पड़ा. इसी किताब में बाद में मैं आपको इस सामने का हाल बताऊंगी, पर मुझे सीधे अपने पिता की आंखो में देखना पड़ा और उन्हें बताना पड़ा ''कि अब मैं आपसे बिल्कुल नहीं डरती.''

अंत में जब मैंने अपने पिता से उस बर्ताव का ज़िक्र किया जहां उन्होंने मेरा यौन शोषण किया था, मैने ये किया आज्ञाकारिता में और विश्वास में, पर बिना ''डरते और काँपते'' हुए नहीं (देखिये फिलिप्पियो २:१२) मुझे अपनी पीड़ा के एक दरवाज़े के आमने सामने होता पड़ा था. मुझे पता था या तो मैं वापस इससे ग़ुज़रू और दूसरी ओर जाकर आज़ाद हो जाऊं, या दरवाज़े के पीछे बंधनों में बंधी रहूँ, छुप कर और हमेशा अपने ही पिता के डर में बंधी रहूँ. ये जानना महत्वपूर्ण है कि मैने अपने पिता का सामना किया, प्रमुख रूप से जो स्वयं मेरी पीड़ा का कारण था, केवल इसलिए क्योंकि पवित्र आत्मा ने ऐसा करने के लिए मेरी अगुवाई की थी. अपने शोषण करने वाले का सामना केवल इसीलिए ना करो क्योंकि मैंने ये किया आपको अवश्य ही प्रार्थना करनी चाहिए और परमेश्वर को सुनना चाहिए की आपकी मुक्ति के लिए वो कौन से सही कदम आपको सुझा रहे हैं.

उदाहरण दो

कई बार लोग कलीसिया में ही अन्य मसीहीयों द्वारा ठेस खाते हैं. कई बार हम सोचते हैं कि विश्वासी अन्य विश्वासियों को ठेस नहीं पहुंचाते– और उन्हें पहुंचानी भी नहीं चाहिए पर अक़्सर बातें वैसी नहीं होतीं जैसे उन्हें होना चाहिए. परमेश्वर के लोगों के जीवन में भी. कलीसिया में भी हम एक दूसरे को ठेस पहुंचाते है, और इससे अवश्य ही पीड़ा होती है.

अक़्सर जब ऐसा होता है तो घायल पक्ष ऐसी संस्था से नाता तोड़ लेता है या उस व्यक्ति से रिश्ता जिसने ये पीड़ा पहुंचाई हो. पीड़ा के दरवाज़े के पीछे छुपकर, ये घायल व्यक्ति शायद फ़ैसला करे: ''क्योंकि मुझे कलीसिया में ठेस पहुंची है मैं प्रार्थना सभा में जाना जारी रखूंगा (शायद) पर कभी भी मैं उन लोगों से दोबारा सरोकार नहीं रखूंगा'' ये एक प्रकार की दासता है, क्योंकि ये व्यक्ति अतीत को स्वयं पर हावी होने दे रहा है.

परमेश्वर हमें ऐसे मुक़ाम पर लायेंगे जहां हमें अपने छुपने के स्थान से बाहर आना होगा और एक बार फिर ठेंस खाने का जोखिम उठाना होगा. जब हम क़दम बढ़ाते हैं. तो वो उसी पीड़ा के दरवाज़े के गुज़रने के समान होता है जिसने हमें पहले बन्दी बनाया था.

उदाहरण तीन

सत्ता के सामने समर्पण करना कुछ लोगों के लिए मुश्किल हो सकता है. मेरे लिए ये बहुत ज़्यादा कष्ट दाई था क्योंकि मुझे अधिकार प्राप्त छवि द्वारा ही शोषण का शिकार होना पड़ा था, मेरा रवैया यही था ''मैं क्यों किसी को स्वयं को ये बताने दूं कि मुझे क्या करना है?'' मुझे किसी पर भरोसा नहीं या ख़ासकर आदमीयों पर.

जब पवित्र आत्मा ने मुझे मेरी चंगाई के उस दौर तक पहुंचाये जहां मुझे अपने पति के आगे झुकना पड़ता, वहीं जंग शुरु हो गई मुझे अपने शरीर में एक भयंकर विद्रोह महसूस हुआ. मैं अधीन होना चाहती थी क्योंकि मैं सचमुच ये जानती थी कि ऐसा शास्त्रवचन में लिखा है पर अधीन होने की पीड़ा मेरे लिए इतनी असहनीय थी कि मुझे पता नहीं था कि इससे कैसे निपटूं.

मुझे समझ नहीं आया कि मुझमे क्या ख़राबी है. अब मुझे समझ आया है कि किसी और की अधीनता स्वीकारना और उस व्यक्ति को अपने फ़ैसले करने देना, इसी ने पुराने भय और यादें एक बार फिर वापिस ला दी. जहां मुझे ज़्यादती हो रही थी और मेरा फ़ायदा उठाया जा रहा था. जहां मेरे पिता, (जो स्वयं एक अधिकार की छवि थे) मुझे ये बता रहे थे किये पीड़ा दाई फैसला जो वो मेरे लिए कर रहे हैं वो मेरी भलाई के लिए है और हर समय जो वो मेरे साथ कर रहे थे. मैं उससे कितनी घृणा करती थी. और उस मेरी मेरी हताशा

और कुछ न कर पाने की असमर्थता ने मुझे अधीनता प्रति कोई लगाव नहीं दिखाया.

आज़ाद होने के लिए और वैसा संपूर्ण इंसान बनने के लिए, जैसी परमेश्वर की मेरे लिए इच्छा थी, मुझे सीखना पड़ा कि अपने पति की अधीनता स्वीकार करूं बहुत से अन्य मसीहीयों की तरह मैं भी विश्वास करती थी, जो शास्त्रवचन हमें सिखाता है कि पत्नी और बच्चों को पति और पिता को घर का प्रमुख मानकर उनके अधीन रहना चाहिए और यही परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना है. मुझे यक़ीन हो कि उनके वचन में दिया गया ये सिद्धांत है इसलिए मेरे आगे और कोई चारा नहीं था सिवाय अधीनता स्वीकारने के या परमेश्वर का विद्रोह करने करने. पर बेशक़ ये बहुत पीड़ा दाई था. अब मैं आज़ाद हूँ और मैं देख सकती हूँ वो सुरक्षा वो हिफ़ाज़त जो परमेश्वरीय अधीनता में है.

बहुतसे लोग अधीन होने के विषय में उलझन में पड़ जाते हैं. वो सोचते हैं कि इसका मतलब है कि उन्हें वो हर बात करनी चाहिए जो अधिकार उन्हें करने को कहता है चाहे वो कुछ भी हो. बाईबल हमें सिखाती है कि हमें अधीनता स्वीकार करनी चाहिए 'केवल' जैसा प्रभु में उचित हैं'' (कुलुस्सियों ३:१८)

मेरा विश्वास है कि ये उदाहरण ''पीड़ा के दरवाज़ों'' को समझने में आपकी मदद करेंगे और ये कि कैसे उनका सामना करना है. उन्हें दुखों के प्रवेश द्वार के रूप में ना देखें पर चंगाई की दहलीज़ समझें. यीशु हमेशा आपके साथ होंगे आपको साथ ले जाने और मज़बूती देने को कि आप इन दरवाज़ों से गुज़र सक़े और सम्पूर्णता की ओर जा सकें.

याद रखिये, पीड़ा सचमुच चंगाई की प्रक्रिया का हिस्सा है यदि कोई व्यक्ति सीमेंट क फ़र्श पर गिरता है और उसके घुटने की खाल बुरी तरह रगड़ खाती है तो अवश्य ही दर्द होगा. अगले दिन दर्द शायद और ज़्यादा हो जब वो घाव ताज़ा है और उस समय जब घाव पर पपड़ी आने लगती है, तो ये संकेत है कि शरीर चंगाई की प्रक्रिया में जुता है. हालांकि अब वो सुरक्षित पपड़ी से ढका है ये घाव अब भी जलन और कम्पन पैदा कर रहा है, क्योंकि उस स्थान पर ज़्यादा लहू तेज़ी से आ रहा है प्रभावित क्षेत्र को चंगा करने के लिए.

शुरुआती घाव दर्द लाता है, पर अक्सर चंगाई उससे भी बुरी पीड़ा देती है. फिर भी दोनो क़िस्म की पीड़ा एक जैसी नहीं. ना ही उनका परिणाम एक जैसा है. कुछ लोगों के भावनात्मक घाव बहुत देर तक नज़र अंदाज़ कर दिए गए है कि अब उनमें ज़हर फैल गया है. इस तरह की पीड़ा चंगाई की पीड़ा से बिल्कुल अलग होती है एक से बचना है और दूसरे का स्वागत करना है.

बिना पीड़ा कुछ हासिल नहीं.

व्यक्तिगत अनुभव द्वारा मुझे समझदारी का ये महत्वपूर्ण भाग हासिल हुआ. पीड़ा से डरो नहीं. चाहे ये कितनी भी अजीब क्यों न लगे. जितना आप चंगाई की पीड़ा से डरेंगे और उसका विरोध करेंगे, आप स्वयं पर दर्द के प्रभाव को और ज़्यादा बढ़ा देंगे.

इस सच्चाई का उदाहरण कुछ वर्ष पहले घटित हुआ. जब जीवन में पहली बार मैंने उपवास रखा. परमेश्वर ने मुझे अठ्ठाईस दिन केवल जूस पीकर उपवास पर रहेने को कहा. शुरुआत में मुझे सचमुच बहुत कठिनाई हुई मुझे बहुत-बहुत ज़्यादा भूख लगती असल में, मैं इतनी निढाल हो जाती मैं सचमुच पीड़ा महसूस करती. जब मैंने परमेश्वर को पुकारा ये शिक़ायत करते हुए कि अब मैं ये पीड़ा और नहीं सह सकती. उन्होंने मुझे जवाब दिया. अपने अंदर से मैंने एक छोटी सी आवाज़ सुनी (देखिये १ राजाओं १९:१२) और परमेश्वर ने मुझसे कहा ''पीड़ा से लड़ना बंद करो, इसे अपना काम करने दो'' उस समय का बाद से उपवास और भी आसान हो गया, आनंददाई भी हो गया, क्योंकि मुझे पता था कि हर बार जब मुझे बे आरामी महसूस हो, तो वो प्रगति का चिन्ह है. नियम यही है कि जितना ज़्यादा पीड़ा का विरोध किया जाए उतनी ही गहरी ये और होती है. जब एक गर्भवती महिला को प्रसव पीड़ा होती है, तो उसके सहायकों द्वारा उसे यही सलाह दी जाती है ''रिलेक्स''. वो जानते है कि जितना ज़्यादा वो पीड़ा से लड़ेगी उतनी ही ये गहरी होगी, और प्रसव की प्रक्रिया लम्बी हो जायेगी.

जब आप कठिन समय से गुज़र रहे होते हैं, जब पीडा इतनी तीव्र हो जाती है तो ऐसा लगता है कि आप इससे ज़्यादा और सहन नहीं कर सकते तो याद रखिये इब्रानियां १२:२ ''विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशु की ओर ताक़ते रहें. (उससे परे देखें जो हमारा ध्यान बटा रहा है) जिसने उस आनंद के लिए जो उसके आगे धरा था लज्जा की कुछ चिंता ना करके क्रूस का दुख सहा (उसने हमारे विश्वास को बढ़ावा दिया और उसे सम्पूर्णता और सिद्धता दी) और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा (जो पुरस्कार प्राप्त किया जो उसके आगे रखा गया था)''

सहनशक्ति आनंद देती है

जब आप पीड़ा का अनुभव करते हैं तो इससे लड़िये मत. इसे अपना मक़सद पूरा करने दीजिए ये वादा रखिये ''जो आंसू बहाते हुए बोते हैं वे जै जै कार करते हुए लवने जायेंगे'' (भजन १२६:७) सहन करना सीखीये जो भी सहन करने की ज़रूरत हो ये जानते हुए दूसरी ओर आनंद है

चंगाई शायद पीड़ा दाई हो. पर आपको कुछ खोना नहीं पड़ता. दुखी तो आप पहले से ही हैं. बेहतर है आप अपने दुख भोगने का पूरा फ़ायदा उठायें. जब तक आप

अतीत के शोषण को स्वयं को बांधे रहने देते हैं. आप लगातार पीड़ा में जीयेंगे. कम से कम चंगाई की पीड़ा सकारात्मक परिणाम तो लाती है– दुख की बजाय ख़ुशी.

आप अपनी पीड़ा को स्वयं को बंधनमुक्त करने के लिए इस्तेमाल करें, ना कि उसमें डूबते चले जाएं. धर्मानुसार बात करें चाहे ये मुश्किल हो. परमेश्वर की आज्ञा मानें और पवित्र आत्मा की अंगुवाई का अनुसरण करें ये जानते हुए कि ''कदाचित रात को रोना पड़े परंतु सवेरे आनंद पहुंचेगा (भजन ३०:५)

८

निकलने का एक ही रास्ता है

हमारी अपनी एक मीटिंग में एक महिला आगे आई और हमसे कहा कि हम प्रार्थना करें कि उसके जीवन का एक कोई बन्धन टूट जाए. जैसे ही मैंने प्रार्थना शुरु उसने रोना शुरु कर दिया. तक़रीबन तुरंत ही मुझे एक दृश्य नज़र आया कि वो ट्रैक पर खड़ी है जैसे वो रेस में दौड़ने को तैयार हो. जैसे मैंने देखा, मैंने देखा हर बार जब रेस शुरु होती, और वो फ़िनिशिंग लाईन की ओर बढ़ना शुरु करती, वह आधे रास्ते जाती और फिर मुड़ती और वापिस स्टार्टिंग लाइन पर आ जाती.

कुछ देर बाद वो फिर ये प्रक्रिया दोहराती. ये बार-बार हुआ. मैंने उसे बताया जो मैं देख रही थी और मैंने उससे कहा कि मेरा मानना हैं कि परमेश्वर उससे ये कह रहे हैं. ''इस बार तुम्हें ज़रुरत है कि तुम अंत तक जाओ''. जब मैंने ये संदेश उसे बताया, वो तुरंत मान गई कि परमेश्वर उससे बात कर रहे थे. उसकी समस्या ये थी कि अक्सर उसने कई बार भावनात्मक चंगाई की और प्रगति की, दबाव में आकर उसने हमेशा हार मानी. अब उसने दृढ़ निश्चय किया कि वो इस प्रक्रिया को पूरा करेगी और विजय हासिल करेगी.

हमेशा शुरू करने से कहीं ज़्यादा कठिन होता है समाप्त करना भावनात्मक चंगाई के लिए सचमुच कोई ''जल्दी वाले तरीक़े नहीं'' २ कुरिन्थिओ ३:१८ में प्रेरित पौलूस मसीहीओं के परिवर्तन के बारे में कुछ यूं कहते हैं ''हम उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश करके बदलते जाते है.'' यदि आप भावनात्मक चंगाई की कठिन प्रक्रिया से गुज़र रहे हैं. मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि अंश-अंश में प्राप्त इस तेज़का आनंद ले जो आप इस समय महसूस कर रहे हैं. अगले पड़ाव तक जाने से पहले.

बहुत से लोग भावनात्मक चंगाई या ऐसी कठिन परीक्षा बना देते हैं कि वह इसके किसी भी पक्ष का आनंद नहीं ले पाते. आप इस परीक्षा में ना पड़ें कि आप को उस और ध्यान लगाना पड़ें कि आपको कितनी दूर जाना है. बजाय इसके आप देखें कि कितनी दूर आ चुके हैं.

याद रखिए आपको एक जीवन जीना है जब आप चंगाई पा रहे हो: इसे अपने रवैये के रूप में अपना लें: मैं वहां नहीं हूँ जहां मुझे होना चाहिए, पर धन्यवाद परमेश्वर, मैं वहां नहीं जहां हुआ करता था. मैं ठीक हूँ और अपनी राह पर हूँ.

सहन करना

कुछ पहलुओं से, आत्मिक वृद्धि की तुलना शारीरिक वृद्धि से की जा सकती है. कुछ अवस्थायें हैं जिनसे गुज़रना ही पड़ता है बड़े होने के लिए मेरे ख्याल से ये कहना सुरक्षित रहेगा कि बहुत से लोग अपने बच्चों को आनंद नहीं उठाते जब वे उन्हें पाल रहे होते हैं. वृद्धि की हर अवस्था में, माता-पिता सोचते हैं काश, हमारा बच्चा अगली अवस्था में हो यदि बच्चा घुटनों क बल चल रहा हो तो वो चाहते हैं कि काश वो चले, लंगोटों से छुटकारा मिले, स्कूल जाये, स्नातक बने, शादी करे, उन्हें नाती-पोते थे, और यही सब कुछ हमें जीवन की हर अवस्था का आनंद लेना सीखना चाहिए जैसे-जैसे वो आती है. क्योंकि प्रत्येक का अपना ही आनंद और कठिनाईयां है.

मसीही होने के नाते हम अपने जीवन भर बड़े होते रहते हैं. हम कभी भी उन्नति करना बंद नहीं करते. इसी समय ये फ़ैसला करें कि आपको आनंद उठाना है इस समय जब कि आप विजय के अगले पड़ाव तक जाने का संघर्ष कर रहे हैं. व्यवस्था विवरण २:२२ में मूसा इस्राईल की संतान को बताता है कि परमेश्वर उनके आगे से उनके शत्रुओं को ''धीरे-धीरे'' निकाल देंगे अपने जीवन की हर विजय के बीच के अंतराल में, प्रतीक्षा का समय आता है. इस समय के दौरान पवित्र आत्मा हमसे निपट रहा होता है, नये प्रकाश हमारे सामने प्रकट कर रहा होता है, हमारी मदद कर रहा होता है, कि हम और भी महान सच्चाईओं का सामना करें, प्रतीक्षा अक्सर हम में से बहुतों के लिए कठिन होती है क्यों हमेशा हमारे अंदर बेसब्री मौजूद रहती है जो असंतुष्टि को जन्म देती है. हमे हर चीज़ अभी ही चाहिए.

सब वादे की फ़सल देता है

बहुत से लोग आशीष चाहते हैं, पर वो उसके लिए तैयार नहीं होना चाहते. युहन्ना बपतिस्मा देने वाला बियाबान में आया ये पुकारते हुए ''प्रभु का मार्ग तैयार करो'' (मत्ती ३:३) वे चाहते थे किलोग मार्ग जाने कि यीशु उनके जीवनों में कार्य करने के लिए आ रहे है, पर उन्हें तैयारी करने की ज़रूरत है.

बाईबिल में लिखा है, ''जो आँख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुना, और जो बातें मनुष्य के चित में नहीं चढ़ी वे वहीं है, जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखने वालों के लिए तैयार की हैं (बनाई हैं और तैयार रखीं है उनके लिए जो उनके प्रति प्रेम दिखाते है उनमें श्रद्धा रखते

हैं. आज्ञा मानते हैं, और आभारी मन से उन लाभों को स्वीकारते हैं जो उसने उन्हें दिए) (१ कुरिन्थिओं २:९)

इस विश्वास में कि परमेश्वर ने हमारे लिए अच्छी योजना सोची है कठिनाईओं से गुज़रने के लिए आत्मिक सिद्धता की ज़रूरत होती है. पर हमें ये समझने की ज़रूरत है कि इसे सहन करना ही अक्सर एक मात्र राह होती है.

हमें ज़रूरत है विश्वास, सब्र और सहनशक्ति की उसका अंतिम फल पा सकें. जिसका वादा परमेश्वर ने किया है कि हम पायेंगे इब्रानियों का ये भाग यही समझता है ''सो अपना हियाव ना छोड़ों क्योंकि उसका प्रतिफल बड़ा है.

क्योंकि तुम्हें धीरज धरना अवश्य है ताकि परमेश्वर की इच्छा पूरी करके तुम प्रतिज्ञा का फल पाओ (और उसका पूरी तरह आनंद उठाओ)

क्योंकि अब बहुत ही थोड़ा समय रह गया है (सचमुच बहुत ही थोड़ा) जब कि आने वाला आयेगा और देर ना करेगा'' (इब्रानियों १०:२५:३७)

इब्रानियों ६:११ में पढ़ते हैं. पर हम बहुत चाहते हैं (पूरे मन से और इमानदारी से) कि तुम में से हर एक जन अन्तर तक पूरी आशा के लिए ऐसा ही प्रयत्न करता रहे''

यशायाह ४३:१/२ में परमेश्वर लोगों का डर ये कह कर दूर करते हैं ''मत डर क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है (मैंने तुझे छुड़ाने के लिए एक बड़ा हर्ज़ाना दिया है बजाय इसके कि तुझे बन्दी रहने देता) मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है तू मेरा ही है.

जब तू जल में होकर जाये, मैं तेरे संग संग रहूंगा, और जब तू नदियों में हो कर चले, तब वो तुझे डुबा ना सकेंगी, जब तू आग में चले तो तुझपे आंचना लगेगी और उसकी लौ तुझे ना जला सकेगी''

दाऊद ने प्रभु से कहा, ''चाहे मैं, घोर अंधकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तो भी हानि से ना डरूंगा क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे (मुझे बचाने के लिए) और तेरी लाठी (मेरा मार्गदर्शन करने के लिए) से मुझे शांति मिलती है. (भजन २३:४)

अक्सर वो व्यक्ति जो शोषण में जड़ पकड़े है वो अन्त में अपने शरीर और मन में कुछ ऐसे गढ़ बना लेता है कि उसे इन्हें मौतकी वादी से गुज़ारने की ज़रूरत होती है यदि इन गढ़ों को गिराना और तबाह करना है.

पौलूस समझाते हैं कि हम शत्रु के विरूद्ध युद्ध करते हैं. यदि हम अपने उन विचारों को क़ैद जो उससे मेल नहीं खाते जो मसीह ने कहा था और उन्हें उसके अधीन करें जो वचन में लिखा हैं कि हमें करना है और उस पर विश्वास करें, ''क्योंकि यह यद्धपि हम शरीर में चलते-फ़िरते हैं तो भी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते.''

> क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं (मांस और लहू वाले हथियार नहीं) पर गढ़ों को ढा देने के लिए सामर्थी है. (जितना भी चाहें हम) सो हम कल्पनाओं को, और हर एक ऊंची बात को जो परमेश्वर की पहचान के विरोध में उठती है खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को क़ैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं (मसीह यानी मसीदा और अभिषिक्त) (२ कुरिन्थिओ १०:३-५)

उदाहरण के लिए, ज़्यादा समय तक शोषण होने का परिणाम ये हुआ, कि मैंने एक आज़ाद व्यक्तित्व अपना लिया. मैं किसी पर विश्वास नहीं करती थी. जीवन में बहुत पहले ही मैं इस नतीजे पर पहुंची कि यदि मैंने स्वयं की देखभाल कर ली और कभी किसी से कुछ नहीं मांगा, तब मुझे कम ठेस पहुंचेगी. जब परमेश्वर ने मुझे ये दिखाना शुरु किया कि मेरा आज़ाद रवैया आत्मिक नहीं था, मुझे ''मौत की वादी से ग़ुज़रना पड़ा'' दूसरे शब्दों में मुझे अपने पुराने स्वभाव को (जो पुरानी जॉयस का हिस्सा था) क्रूस पर ले जाकर मारना पड़ा.

परीक्षा यही होती है कि समस्या से भागा जाये, परंतु प्रभु कहते हैं कि हमें इनमे ग़ुज़रना पड़ता है. ख़ुशख़बरी ये है कि उन्होंने वचन दिया है कि हम कभी अकेले इससे नहीं गुज़रेंगे. वे हमेशा हमारे साथ वहां होंगे हर तरीके से हमारी मदद करने को उन्होंने हमसे कहा है ''डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ''

इन बातों को सहने से ही परमेश्वर के साथ हमारा विश्वास उनमें सुदृढ़ होता है मुझे शद्रक, मेशाक और अबेदनगो की कहानी बहुत पसंद है जो दानिय्येल के अध्याय ३ में मिलती है राजा ने उन्हें चेतावनी दी थी कि वे उसके सामने दण्डवत करें और उसकी उपासना करें वरना वो उन्हें धदकते हुए भट्ठे में डाल देगा.

उन्होंने ने कहा ''ख़ैर हमारा परमेश्वर जिसकी हम उपासना करते हैं वह हमें तेरे हाथों से भी छुड़ा सकता है. यदि नहीं तो भी हम तेरी उपासना नहीं करेंगे ना ही दण्डवत करेंगे.'' वे जानते थे कि परमेश्वर उन्हें बचाने की समर्था रखता, परंतु यदि उसकी ये योजना नहीं है तो भी वो अपनी श्रद्धा में क़ायम रहेंगे. और परमेश्वर की उपासन नहीं छोड़ेंगे. हम सबको इसी दृढ़ निश्चय के साथ परमेश्वर के आगे वचनबद्ध होने की ज़रूरत है.

इसलिए ये तीनों आदमी धधकते हुए भट्ठे में डाल दिए गए और राजा ने भट्टे को सात गुना अधिक धध का दिया. इससे मुझे याद आ रहे हैं वो समय जब हम तो सही फ़ैसला करते हैं. पर ऐसा लगता है कि हमारे कष्ट कई गुना बढ़ गए.

मुझे ये कहानी पंसद है, क्योंकि इसमें लिखा है कि शद्रक, मिशाक और अबेदनेगो को बांधकर आग में डाल दिया गया पर जब राजा ने उस भट्टे में झांककर देखा तो वो बांधे हुए व्यक्ति खुले थे. कई बार हम भी समस्याओं में पूरी तरह बांधकर डाल दिए जाते हैं, पर समस्या में रहकर ही, बातों को सहकर ही, हम खोले जाते हैं और मुक्त होते है. राजा ने उनके साथ एक चौथे आदमी को आग में देखा– याद करो यीशुने कहा था ''डरो मत मैं तुम्हारे साथ हूँ''

जब शद्रम, मेशाक और अबेदनेगो बाहर निकाले गए तो उनमें ज़रा भी आग का प्रभाव नहीं था ना ही जलने की बू आ रही थी. मुझे इन आदमियों से समानता दिखती है मुझमें. क्योंकि शैतान ने मुझे तबाह करने की कोशिश की. अपने जीवन के शोषण के कारण मैं इतनी पीड़ा से गुजरी और जब मैंने इससे आज़ाद होने की कोशिश की तो मुझे और पीड़ा मिली और मैं समझ न सकी. फिर परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि कैसे हमें उन बातों से गुज़रना पड़ता है जिन्होंने हमे
बंधक बनाया, पर उनसे बाहर निकलने के लिए भी हमें उन्हीं बातों से गुज़रना पड़ता है.

जब हम परमेश्वर के साथ सम्पूर्णता की अपनी यात्रा शुरु करते हैं, तो हम ज़्यादातर भयद्वारा पूरी तरह गांठों में जकड़े होते हैं. डर आत्मविश्वास का शत्रु है. लोग बहुत सी चीज़ों से भयभीत हो सकते हैं गाडीयां चलाने से, अकेले रहने से या भीतर गहराई में छिपी किसी मनोग्रन्थी द्वारा.

मेरे ख्याल से मैं डर के बारे में ये धारण रखती हूँ कि ये झूठा सबूत है जो सच्चा दिखता है. यदि शैतान हमें डरा सकता है. तब हम उस पर ज़्यादा विश्वास कर रहे हैं. जो वह कहता है बजाय उस कि जो परमेश्वर कहते हैं. डर महसूस करना एक बात है पर डर हम पर नियंत्रण करेगा. यदि हम अपनी ज़मीन पर स्थिर ना रहे और अपने 'डरों' का सामना ना किया.

एक महिला मुझे बता रही थी कि कैसे डर उसे वो करने नहीं देता जो उसके लिए बहुत ज़रूरी है. इसलिए उसकी मित्र ने कहा ''कोई बात नहीं डरते-डरते करो'' मेरे लिए ये जीवन बदलने वाली सलाह थी. कई बार हमें अपने डरों का सामना करना पड़ता है और हम ये करें चाहे ''डरते-डरते करें''

जब हम परमेश्वर को ऐसा करने देते हैं, वो हमारे जीवन का सीधा करना शुरु करते हैं खोलते हुए ''भय की एक-एक गांठ एक-एक समय'' वो हमारी मदद करते हैं कि हम कठिन समय से गुज़रे और पायें कि उनके वादे सच्चे हैं. हम अपना पूरा जीवन उससे भागते नहीं गुज़ार सकते जिससे हम डरते हैं.

कुछ लोगों में लिफ़्ट में चढ़ने का डर बैठा होता है वो ऐसी नौकरी से भी इंकार कर देते हैं. जो बिल्डिंग की ऊपर की मंज़िल में स्थित हो. यदि आपको नौकरी चाहिए, तो उन्हें लिफ़्ट में चढ़ने की ज़रूरत होगी, प्रार्थना करें, कुछ मंज़िल चढ़ें, बाहर निकलें, सांस लें, और यही प्रक्रिया दौहरायें जब तक कि वो अपने डर पर विजय नहीं पा लेते. हमें अपने उन डरो पर

विजय पानी है जो हममें हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की संपूर्ण इच्छा पूरी करने में बाधक बनते हैं.

बाइबिल ऐसे शास्त्र वचनों से भरी हुई जो कहते हैं ''डरो मत'' क्योंकि परमेश्वर जानते हैं कि शैतान हमारे डर इस्तेमाल करने की कोशिश करेगा ताकि उनके लोगों को रोक सके कि उनमें वह अपना भाग्य पूरा कर सकें.

अपने कुछ शिष्योंसे यीशु ने कहा था ''मार्ग मैं हूँ मेरे पीछे आओ'' जब आप यीशु के पीछे चलने का फैसला करते हैं तो आप जल्द ही जान जायेंगे कि वह कभी भयभीत होकर पलटते नहीं उनका रास्ता बिल्कुल सीधा अन्तिम रेखा तक जाता है. हमारी प्रार्थना कतार में लगी उस महिला की तरह ना बनिये. जो रेस में आधे रास्ते पहुंचकर मुड़ जाती थी. चाहे ये कितना ही मुश्किल क्यों ना लगे रेस में बने रहने का फ़ैसला कीजिए और इसे पूरा कीजिए.

९

अतीत को भुला दो

मैं लोगों को उत्साहित करती हूं कि वे अपने अतीत को भुला दें, पर कभी भी इससे भागें नहीं. केवल एक ही तरीका है अपने अतीत की पीड़ा पर विजय पाने का कि परमेश्वर को अपने साथ लेकर वापस उस पीड़ा के दरवाज़े से गुज़र कर विजय में आयें. कोई और हमारे लिये विजय हासिल नहीं कर सकता; हमें अपने उद्धार के लिये स्वयं कार्य करना है. पौलुस ने ये सच्चाई अपने पत्र में फिलिप्पियों की कलीसिया को समझाई ये कह कर:

''सो हे मेरे प्यारो... जिस प्रकार से तुम सदा से आज्ञा मानते आये हो, वैसे ही अब भी न केवल साथ रहते हुये पर विशेष करके अब मेरे दूर रहने पर भी डरते और कांपते हुये अपने अपने उद्धार का कार्य पूरा करते जाओ (इस कार्य को बढ़ाओ उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचाओ और पूरी तरह से मुक़म्मल करो, इससे ध्यान रखो कि खुद पर भरोसा ना रख कर बहुत सचेत रह कर, आत्मा की पूरी सच्चाई द्वारा, परीक्षा से बच कर, और उस हर बात से दूर हट कर जो परमेश्वर को नाराज़ करे और मसीह के नाम पर बट्टा लगाये.)

(अपने बलबूते पर नहीं) क्योंकि परमेश्वर ही है, जिसने अपनी सुइच्छा निमित्त तुम्हारे मन में इच्छा और काम दोनों बातों को करने का प्रभाव डाला है. (तुममें शक्ति देकर और उस समर्था और इच्छा को उत्पन्न करके) (फिलिप्पियों २:१२-१३)

हमें परमेश्वर को ये करने देना है कि वह हमें इन बातों से गुज़ारे और हम पर कार्य करने दे ताकि हमारी गड़बड़ी हमारा संदेश बन जाये. अतीत में जो कठिनाइयां हमने झेली हैं वे हमें भविष्य की आशीष के लिये तैयार करतीं हैं.

यीशु को भी अपने भविष्य के लिये प्रशिक्षण के समय से गुज़रना पड़ा, इब्रानियों ५:८-९ में लिखा है ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठा कर आज्ञा माननी सीखी (आज्ञाकारी होकर उसने दुख झेलने का अनुभव लिया) और सिद्ध बन कर अपने सब आज्ञा मानने वालों के लिये सदा काल के उद्धार का कारण हो गया.''

यीशु के जीवन का भी एक काल था जिसके बारे में हमें कुछ नही बताया गया कि उन्हें क्या हो रहा था उस समय. हम यही जानते हैं कि वह बड़े हो रहे थे. हममें भी बढ़ने का समय होता है जिसके बारे में शायद किसी को बताने लायक़ हमारे पास कुछ न हो. वृद्धि के इस गहरे काल में हमें सहन करना है. शायद हमारे भीतर कुछ बातें हो रही हो जो हम समझ नहीं पाते. पर जब हम अंत में उस मुक़ाम तक आते है जहा परमेश्वर चाहते हैं कि हम हों, हम देखेंगे कि कैसे हमारे अतीत ने हमें तैयार किया उसके लिये जो परमेश्वर हमसे हमेशा से चाहते थे

मुझे इस दम्पति की कहानी बहुत पसंद है जो एक एंटीक शॉप में गये एक दिन और वहां एक शेल्फ़ पर रखा बहुत खूबसूरत प्याला उन्हें मिला उन्होंने उसे शेल्फ़ से उतारा, ताकि वें उसे और क़रीब से देख सकते और कहा ''हम सचमुच इस लाजवाब प्याले को ख़रीदना चाहते हैं''

एकदम अचानक उस प्याले ने बोलना शुरू कर दिया ये कहते हुये, ''मैं हमेशा ऐसा नहीं था, एक समय था जब मैं सख्त, ठंडा, बेरंग मिट्टी को लौंदा था. एक दिन मेरे मालिक ने मुझे उठाया और कहा ''इससे मैं कुछ कर सकता हूं'' फिर उसने मुझे थपथपाना शुरू किया और गूंधना और बेलना और मेरा आकार बदलना.

मैंने कहा, ''ये क्या कर रहे हो तुम? दर्द होता है. मुझे नहीं मालूम कि मैं ऐसा लगना चाहता हूं कि नहीं ! रूको!'' पर उसने कहा 'अभी नहीं'.

फिर उसने मुझे एक चक्के पर रखा और घुमाना शुरू किया गोल और गोल और गोल जब तक कि मैं चिल्ला नहीं उठा ''उतारो मुझे, मुझे चक्कर आ रहे हैं'' ''अभी नही'' उसने कहा.

''फिर उसने मुझे प्याले का आकार दिया और मुझे गर्म भट्ठी में डाल दिया, 'रोया, ''बाहर निकालो मुझे! यहां बहुत गर्म है मेरा सांस रूक रहा है'' पर उसने बस मुझे उस छोटी-सी शीशे की खिड़की से देखा और मुस्करा कर कहा 'अभी नहीं.

जब उसने मुझे बाहर निकाला मैने सोचा कि मेरे उपर उसका काम बस ख़त्म हो गया है. पर फिर उसने मुझे रंगना शुरू किया. मुझे यक़ीन नहीं आया इसके बाद जो उसने किया उसने दुबारा मुझे मट्टी में डाला और मैने कहा, ''मेरा विश्वास करो, मैं ये और नहीं सह सकता! कृपया मुझे बाहर निकालो'' पर उसने कहा ''अभी नहीं''

''अंत में, उसने मुझे मट्टी से निकाला और मुझे एक शेल्फ़ पर रख दिया जहां मैंने सोचा कि वह मुझे भूल गया है. फिर एक दिन उसने मुझे शेल्फ़ से उतारा और मुझे एक आईने के सामने पकड़ा. मैं अपनी आंखो पर विश्वास न कर सका. मैं एक बहुत ही ख़ूबसूरत प्याला बन गया था, जिसे हर कोई ख़रीदना चाहता था.''

ख़ुद को कुम्हार के हाथों में सौंप दो

परमेश्वर की आपके जीवन के लिये अद्भुत योजना है, और कई बार वह इतनी तेज़ी से चीज़े बदलनी शुरु कर देते हैं कि हमें चक्कर आने लगते हैं हम बेचैन हो जाते हैं, जैसे कुम्हार के चक्के पर वो मिट्टी का लौंदा पर हमें विश्वास करना होगा कि वह हमें उत्तम बनाने में सक्रिय हैं (देखिये रोमियो ८:२८) हमें बस बहाव के साथ बहना है और उन्हें हमें खूबसूरत चीज़ बनाने देना है यशायाह ये प्रक्रिया समझ गया था जब उसने लिखा ''तूने हमसे अपना मुह छिपा लिया है.... तो भी हे यहोवा तू हमारा पिता है, देख हम तो मिट्टी है; और तू हमारा कुम्हार है; हम सबके सब तेरे हाथ के काम है'' (यशायाह ६४:७-८)

एक विजयी मसीही ज़िंदगी जीने के लिये हमें अपने अतीत को भूल जाना है, स्वयं के लिये मर जाना है, उन्हें क्षमा करना है. जिन्होंने हमें ठेस पहुंचाई और परमेश्वर को हमें उन आशीषों की ओर ले जाने देना है. जिसके लिये उन्होंने हमें तैयार किया है. कोई ये वादा नहीं कर सकता कि हर बात जो हम अपने जीवन में अलग चाहते है वह उसमें परिवर्तित हो जायेगी जो हम चाहते हैं. कुछ चीज़े शायद कभी न बदलें. जैसा हम उन्हें चाहते हैं, पर परमेश्वर हमें इतना बदल देंगे कि हम उनकी परवाह नहीं करेंगे.

हमारा सुख मसीह में ही होना चाहिये. हमें उसे भूलने की ज़रुरत हैं जो दूसरे हमारे बारे में सोचते हैं, या अतीत में जो लोगों ने हमारे साथ किया है. हमें अपना उस पर केंद्रित करना है जो परमेश्वर हम में करना चाहते हैं. हमारे साथ करना चाहते है, और हमारे लिये करना चाहते हैं, पौलुस ने लिखा ''क्योंकि उसी में हम जीवित रहते, और चलते फिरते और स्थिर रहते हैं'' (प्रेरितों का काम १७:२८)

अतीत को भूल जाने का मतलब है भविष्य की ओर नये तरीके से देखना. गलतियों २:२० में पौलुस हमें ऐसा वादा देते हैं कि हम जिन्हें अतीत को भूल जाने की ज़रूरत है. अब स्वीकार कर सकते हैं. ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं (उनके साथ मैंने क्रुस पर चढ़ने का अनुभव लिया है) और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमे जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया (मैं उस विश्वास पर चलता हूं, निर्भर करता हूं और पूरा भरोसा करता हूं)''

हमें ये सीखने की ज़रूरत है कि हम उनकी इच्छा में संतुष्ट रहें. जितना हम इस पर ध्यान देंगे कि हम मसीह में क्या है, उतनाही कम हमारे लिये मायने रखेगा कि हम अतीत में क्या थे, या ये हमें क्या हुआ था. पौलुस ने कहा ''मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहचान की उत्तमता के कारण सब बातों की हानि समझता हूं. (मेरे लिये उसकी क़ीमत बहुत मूल्यवान है, जिसका किसी से मुकाबला नहीं किया जा सकता जो महान लाभ मुझे मिला है) जिसके कारण मैंने

सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूढ़ां समझता हूं, जिससे मैं मसीह से प्राप्त कर सकूं (उन्हें समझ सकूं, पा सकूं और गहराई से जान सकूं) (फिलिप्पियों ३:८)

आगे वो इसमें जोड़ते है, ''(क्यों कि मेरा निश्चित लक्ष्य ये है) और मैं उसको और उसके मृत्युज्जय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानु (कि मैं धीरे धीरे उन्हें और क़रीब से जान सकूं, कल्पना कर सकूं, जान सकूं और उनके व्यक्तित्व के अद्‌भुत रूप और साफ़ और गहराई से समझ सकूं) और उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करू ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचु. (फिलिप्पियों ३:१०:११)

परमेंश्वर में कुछ गहराई वाले काम ढूंढने पड़ते हैं, और मैं भी कुछ ऐसे गहरे स्थान हैं जिन्हें केवल परमेश्वर ही भर सकते हैं, हमें परमेश्वर के पुनुर्उत्थान की समर्था को समझने की ज़रूरत है वो समर्था जो हमें मुर्दों में से उठा सकती है उस समय भी जब हम शरीर में रह रहे हो. बिल्कुल वैसे ही जैसे बाज़ अपने परों को फैलाता है और वायु के धारे पर टिका देता है कि वो उसे ऊपर बादलों से उठा ले जाए , मसीह हमें हमारे जीवनों के तूफ़ानों से ऊपर उठायेगा.

शायद हमारे कोई मक़सद हों पूर्णता की ओर जाने के, पर हम कभी भी उस अवस्था तक नहीं पहुंचेगे. जब तक यीशु दोबारा नहीं आते. हमें स्वयं को स्वीकार करना है, हमें स्वयं को प्रेम करना है और यात्रा का आनंद लेना है क्योंकि हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे भविष्य पर हर समय काम कर रहे हैं.

जो आगे है उसकी ओर बढ़ो

पौलूस आगे लिखते हैं:

'ये मतलब नहीं कि मैं पा चूका हूँ या सिद्ध हो चुका हूँ; उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूँ। जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था. हे भाईओं, मेरी भावना ये नहीं कि मैं पकड़ चुका हूँ परंतु केवल ये एक काम करता हूँ कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलाकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ ताकि वह इनाम पाऊं जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु मे ऊपर बुलाया है'' (फिलिप्पियों ३:१२-१४ विस्तारित बाइबिल)

यदि आप दु:खी महसूस करते रहे हैं उन बातों की वजह से जो आपके साथ अतीत में हुई मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि वो किजिए जो मैंने किया और अपना ध्यान नई दिशा की ओर लगायें. वो बनने का फ़ैसला करें जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप पायें और वो हासिल करने के लिये जिसे दिलाने के लिए यीशु ने अपनी ज़ान दे दी

जब आप परिवर्तन के लिए तैयार हों, कहें ''मैं अब और बंधन में नहीं रहूंगी. मैं अब एक डिब्बे में नहीं जीऊंगी स्वयं की तुलना दूसरों से करते हुए और वो करने की कोशिश करते हुए जो वे कहते हैं कि मुझे होना चाहिए. जो मैंने अतीत में किया उसके बारे में मैं कुछ नहीं कर सकती पर मैं अपने भविष्य के बारे में कुछ कर सकती हूँ. मैं अपने जीवन का आनंद उठाऊंगी और पाऊंगी जिसे दिलाने के लिए यीशु मेरे लिए मरे. मैं अतीत को भूल जाऊंगी और इस दिन के बाद परमेश्वर के पीछे चलती रहूंगी.''

अतीत भूला देने के लिए सिद्धता की ज़रूरत होती है, पर एक सिद्ध मसीही परमेश्वर की आशीषों की सम्पूर्णता पाता है, आप पुरानी असफलतायें भूल सकते हैं, पुरानी निराशायें और पुराने सम्बन्ध जो कारग़र नहीं हुए इसकी बजाय आप खोज सकते हैं नई कृपा जो परमेश्वर आपको हर दिन देने के लिए तैयार है उस वाचा के कारण जो उन्होंने आपसे बांधी, जब आप उनके पुत्र यीशु मसीह में अपना विश्वास रखते हैं अपने उद्धार के लिए.

राजा दाऊद ने अपने से पूर्व राजा शाऊल के रिश्तेदारों की खोज की क्यों वो उन्हें आशीष देना चाहता था, सिर्फ़ इसलिए क्यों कि उसने राजा शाऊल के बेटे योनातान से मित्रता की वाचा बांधी थी. शमुएल २ अध्याय ९ में ये कहानी हैं की कैसे दाऊद ने योनातान के अपाहिज बच्चे को ढूंढा जिसका नाम था मपी बोशेत, और उसे शाही महल में लाया जहां वो उसकी देखभाल कर सकता. मपीबोशेत और उसे शाही महल में लाया जहां वो उसकी देखभाल कर सकता मपीबोशेतने ऐसा कुछ नहीं किया था कि वह इस सुरक्षा और देखभाल का हक़दार होता, सिवाय इसके कि वो उसका रिश्तेदार था जिससे दाऊद नें वाचा बांधी थी.

यही एक चित्र हैं कि क्यों परमेश्वर हमारी परवाह करते हैं वे हमें आशीष देते हैं क्यों कि एक विश्वासी होने के नाते उनके पुत्र से हमारा रिश्ता है. हम आशीष पाने के हक़दार नहीं, हम आशीष कमाते भी नहीं. शायद हम भावनात्मक रूप अपाहिज हों अपने अतीत की किसी भी घटना के कारण परंतु परमेश्वर हमें उठाते हैं और हमें अपनी शांति के राज्य में हमारे हक़ की जगह पर हमें पुन:स्थापित करते है.

परमेश्वर ये प्रतीक्षा नहीं कर रहे कि हम सब धर्मी बातें करें तभी हमें आशीष दें असल में, सबसे अभिषिक्त प्रार्थना जो हम कभी कर सकते हैं वो ये है ''प्रभु मेरी मदद करें''

परमेश्वर के अलावा हम सम्पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकते. हमें उन पर पूरी तरह निर्भर रहना होगा. ताकि हमारे जीवनों में वे अपने वादे पूरे कर सकें. हमें 'विश्वासी' कहा जाता है वरना हम कहलाते ''उपलब्धि'' पाने वाले.

यीशु के शिष्यो ने पूछा ''परमेश्वर के कार्य करने के लिए हम क्या करें'' (हमें क्या करना होगा कि जो कार्य परमेश्वर चाहते हैं वो कर सकें) (युहन्ना ६:२८) यीशु ने उत्तर दिया ''परमेश्वर का कार्य ये हैं कि तुम उस पर जिसे उसने भेजा है विश्वास करो (यानी मसीह पर पूरा भरोसा रखो, निर्भर रहो, संपूर्ण विश्वास उसी पर डालो) (वचन २९)

वचन १ से १२ तक भजन संहिता ५१ हमें एक बहुत ही शक्तिशाली प्रार्थना सुझाता है जो हम कर सकते हैं:

''हे परमेश्वर अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे,''

''मुझे भली भांति धोकर मेरा अधर्भ दूर कर, और मेरा पाप छुड़ाकर मुझे शुद्ध करें.

मैं तो अपने अपराधों को जानता हूं और मेरी निरंतर दृष्टि में रहता है, मैंने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो तेरी दृष्टि में बुरा है वही किया, ताकि तू बोलने में धर्मी और न्याय करने में निष्कलंक ठहरे.

देख मैं अधर्म के साथ उत्पन्न हुआ और पाप के साथ अपनी माता के गर्भ में पड़ा (इसीलिए मैं भी पापी हूँ) दे ख तू हृदय की सच्चाई से प्रसन्न होता है और मेरे मन ही में ज्ञान सिखायेगा.

जूफ़ा से मुझे शुद्ध कर तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, और मैं हिम से भी अधिक श्वेत बनूंगा.

मुझे हर्ष और आनंद की बातें सुना, जिससे जो हड्डिया तूने तोड़ डाली हैं वे मग्न हो जाएं.

अपना मुख मेरे पापों की ओर से फेर ले और मेरे सारे अधर्म के काम को मिटा डाल.

हे परमेश्वर मेरे अंदर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे अन्दर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर,

मुझे अपने सामने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझसे अलग न कर.

अपने किये हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे संभाल.''

हम बस परमेश्वर से ये मांगे कि हमारी अतीत की ग़लतियों की पीड़ा से हमारा उद्धार करें और हम में एक स्थिर आत्मा उत्पन्न कर पर जबकि हमें परमेश्वर से उद्धार पाने के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता, हम आशीषों से वंचित रह सकते हैं. यदि हम अपनी समस्यायों से दूर भागे और परमेश्वर को हमें उनसे निपटने न दें.

मूसा ने अपनी समस्याओं का एक आसान मार्ग ढूंढने को कोशिश की थी जब वो परमेश्वर के ठहराये हुए समय से परे हटा उसने एक मिस्री की हत्या की हत्या की ओर इस हत्या का एक गवाह था, इसलिए वो जंगल में भाग गया छुपने के लिए इससे पहले कि परमेश्वर मूसा

को वादे के देश में आगे बढ़ने को कहते, उन्होंने मूसा से कहा कि वापस मिस्र जाये. देखिय निर्गमन ३:१,१० ये कहते हुए ''मैंने अपनी प्रजा के लोग जो मिस्र में है उनके दुख को निश्चय देखा है, और उनकी आह और उनका रोना सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिए उतरा हूँ. अब आ, मैं तुझे मिस्र में भेजूंगा'' (अपने संदेश वाहक के रूप में) (प्रेरितों के काम ७:३४)

परमेश्वर वापस मूसा को उन्हीं लोगों के पास भेज रहे थे जिन्होंने उसे नकारा था और बेदखल किया था (प्रेरितों के काम ७:३५) उसके अपने लोगों ने उसका मज़ाक उड़ाया था और कहा था ''तुझे किसने हम पर हाक़िम और न्यायी ठहराया है '' (देखिये निर्गमन २:१४) मूसा शायद वापस आने को उत्साहित नहीं था कि जा कर मिस्र में अपनी उन समस्याओं का सामना करता.

परमेश्वर हमेशा हमें शारीरिक रूप से उस जगह जाने के लिए नहीं बुलाते. जहां हम जा चुके है पर यदि, उदाहरण के लिए हमें कठिनाईयां आ रही है किसी बॉस की अधीनता स्वीकार करने में जिसका एक विशेष व्यक्तित्व है, परमेश्वर शायद हमें किसी और के साथ काम करते रहने का बुलावा दें. जिसका भी वैसा ही व्यक्तित्व है जब तक कि परमेश्वरीय तरीके से हम उस स्थिति पर क़ाबू न पा लें. परमेश्वर नहीं चाहते कि हम भागते रहें. वो चाहते हैं कि उनमें शांति पाने के लिए हम अपने भयों और निराशाओं का सामना करें.

१ राजाओं १९ में एलिय्याह भाग रहा था जब परमेश्वर ने उससे कहा कि जाओ वो काम ख़त्म करों जो उन्होंने ख़त्म करने को कहा था. जब योना अपनी समस्याओं से भाग रहा था, तो उसने अपने आपको व्हेल मछली के पेट में पाया, जब परमेश्वर ने उसे व्हेल मछली के पेट से छुड़ाया, तो उसे कहा कि वापिस वह निनवे जाये और लोगों का उनका प्रचार करे (देखिये योना अध्याय १-३)

यदि हम अपनी ख़ुद की समस्यायें बिना परमेश्वर से अनुमति मांगे सुलझाना चाहें, तो हम और बड़े कबाड़े में पड़ सकते हैं. साराह ने यही किया जब उस ने अपने पति इब्राहिम को मना लिया कि वह उसकी लौंडी हाजिरा से बच्चा उत्पन्न करे बजाय इसके कि उस बच्चे की प्रतीक्षा करे जिसका वादा परमेश्वर ने उनसे लिया था (देखिये उत्पत्ति १६) अंत में हाजिरा भाग खड़ी हुई बर्ताव के कारण जो साराह उससे कर रही थी पर परमेश्वर के दूत ने उससे कहा ''अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और उसके वश में रह'' (वचन ९) और उसने उससे वादा किया कि यदि उसने आज्ञा मानी तो वो उसके वंश को बहुत बढ़ायेगा और आशीष देगा (वचन १०)

परमेश्वर शायद आपसे भी कह रहें हों कि अपनी निराश और पीड़ा वाले स्थान पर वापस जाओ और उस द्वारा से उन्हें तुम्हें ग़ुज़ारने दो विजयी जीवन की ओर ले जाने दों. भावनात्मक चंगाई के उनके न्योते से भागीये नहीं.

जिन तरीक़ों से लोग अपनी समस्याओं से भागते है.

लोगों का अपनी समस्या से भागना आम बात है, क्योंकि वह अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहते. ज़्यादातर लोग आसान मार्ग की तलाश में रहते हैं बजाय सही चुनाव ढूंढने के कुछ लोग शारीरिक तौर पर अपनी समस्याओं से भागते हैं, एक शादी से दूसरी शादी पर, या एक नौकरी से दूसरी नौकरी. कुछ लोग मानसिक तौर पर अपनी समस्याओं से भागते हैं. ड्रग्स और शराब के इस्तेमाल द्वारा पर समस्यायें उन्हें टालनें से ग़ायब नहीं होतीं.

हर चुनाव जो हम करते हैं उसके नतीजे होते हैं. यदि हम चुने कि कभी घर साफ़ नहीं करना, अन्त में इसमें की हर चीज़ बर्बाद हो जायेगी. अगर हम चुने कि हमें राशन की दुकान नहीं जाना, तो कभी न कभी हमारे पास खाने को कुछ नहीं बचेगा. समस्या यही है हम ग़लत चुनाव करते हैं. और सही नतीजे पाना चाहते हैं. पर ये बात काम नहीं करती हम हमेशा वही काटते हैं जो हम बोते हैं. (देखिये गलतियां ६:७-८)

यदि हम धार्मिकता का रास्ता चुनें, तो हम इसके नतीज़े तन हम उन समस्याओं का चक्र तोड़ सकेंगे जो हमारे विरूद्ध आती हैं. कुछ लोग बहाने बनाकर समस्याओं से भागते हैं. जब परमेश्वर उनसे किसी चीज़ का जवाब मांगने की कोशिश करते हैं, वे बहाने बनाते हैं. ये कहते हुए, खैर ''मैं यह व्यवहार इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि थका हूँ'' या ''मैं ये व्यवहार इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मेरे पूरे जीवन भर मुझसे दुरव्यवहार हुआ.'' एक बहाना एक ऐसा कारण हैं जो झूठ से भरा होता है. बहानों से समस्या यही है कि जब तक हम उनका सहारा लेते रहेंगे, हमें परिवर्तन नहीं मिलेगा.

यीशु ने एक ऐसे व्यक्ति की कहानी सुनाई. जिसने एक महाभोज की तैयारी की थी और बहुत से मेहमानों का आने का न्योता दिया था (देखिये लूका १४:१६-२४) पर एक के बाद एक वो बहाने बनाते गए कि वो क्यों नहीं आ सकते पहले वाले ने कहा कि वो इतना व्यस्त है अपनी ज़मीन के कामों में जो उसने अभी अभी ख़रीदी है. दूसरे ने बहाना बनाया कि उसने बैल ख़रीदा है जिसकी जांच होनी ज़रूरी है एक और ने कहा कि वो इसलिए नहीं आ सकता क्योंकि अभी अभी उसका विवाह हुआ है इसलिए उस व्यक्ति ने बुला लिया सभी ग़रीबों अपाहिजो अंधों और लूले लंगड़े लोगों को जो सड़कों पर थे और अपना घर ऐसे लोगों से भर दिया जो आशीष पाने को राज़ी थे. वो जो बहाने बना रहे थे उन्हे कभी उस महाभोज को चखने का मौका नहीं मिला जो उनके लिए बना था.

एक और तरीका है कि कैसे लोग समस्याओं से भागते हैं वो ये कि हर चीज़ जो ग़लत है वो दूसरों का दोष है. आदम ने हव्वा पर दोष लगाया उस वर्जित फल को खाने के लिए; उसने परमेश्वर पर भी दोष लगाया कि उन्होंने ये स्त्री उसे दी, जब कि हव्वा ने सांप पर दोष लगाया कि उसने उसे भटकाया (देखिये उत्पत्ति ३) इस्राएलियों ने मूसा पर

दोष लगाया अपनी उस मुसीबत के लिए कि वो उन्हें वहां जंगल में मरने को ले आया और-वापस मिस्र जाने की विनती की जहां ग़ुलामी में रहते थे (देखिये निर्गमन १४:१०-१२)

मुझे याद है जब मैंने दूसरी को अपनी समस्याओं के लिए दोषी ठहराना शुरू किया. हर बात डेव की ग़लती थी या मेरे पालन पोषण का दोष था. मुझे ये देखना पड़ा कि असली समस्या मेरी मैं स्वयं थी.

यीशु ने कहा ''तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता,'' (मत्ती ७:३)

मुझे यहां बहुत ज़्यादा आज़ादी मिली हुई है, पर ये आई अपने स्वयं के बारे में सच्चाई का सामना करने से, परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि मेरा रवैया ख़राब है, और मेरी समस्यायें सुलझेंगी नहीं जब तक मैं बदलूंगी नहीं. बदलने में दुख होता है, पर मुझे उसका सामना करना जो परमेश्वर ने मेरे सामने प्रकट किया था.

हम तभी मुक्त हो सकते हैं जब सच्चाई सुनें और वो करें. जो परमेश्वर हमसे करने को कह रहे होते हैं. उदाहरण के लिए यदि परमेश्वर आपसे कहते हैं, कि तुम में ईर्ष्या की समस्या है, यदि तुम इससे नहीं निपटोगे तो तुम लगातार आशीषों से वंचित रहते रहोगे. आपको ख़ुशिया मनानी शुरू करनी हैं जब दूसरे लोगों के साथ अच्छी बातें होतीं हैं. वो जो भी कुछ है जो आपको बंधन में बांधे है उसका सामना सच्चाई से करना है इससे पहले कि आगे बढ़ो.

लोग अपनी समस्याओं से ये कह कर भी भागते कि वो व्यस्त हैं, हम इतने व्यस्त हो जाते हैं कि चर्च का काम भी नहीं करते और परमेश्वर की ओर से सुनने के लिए भी समय नहीं निकालते मैं पूरे कार्यकाल की सेवकाई में थी, लोगों की समस्यओ में उनकी मदद करती, जब परमेश्वरने मुझसे बात की और कहा ''जॉयस तुम मेरे लिए काम करने में इतनी व्यस्त हो कि तुम मेरे साथ कभी कोई समय नहीं बिताती'' मुझे अपनी ओर ईमानदारी से देखना पड़ा और बहुत सी उन बातों को बंद करना पड़ा जो फल नहीं ला रहीं थीं. व्यस्त रहना मेरी मदद कर रहा था कि मैं उन मुद्दों को टाल सकती जिनसे निपटना ज़रूरी था.

पौलूस ने प्रार्थना की कि हम कलीसिया उस बात का अनुमान लगा सकें जो महत्वपूर्ण है:

> ''ओर मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाये. (ताकि तुम्हारा प्रेम उस गम्भीरता को प्रकट करें जो तुम्हें अपने बन्धुओं से करनी है)
>
> यहां तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो (और पहचानो कि उत्तम क्या है और उच्च क्या है और उनका वैतिक फ़र्क़ समझ सको) और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो और ठोकर ना खाओ (ताकि तुम्हारे हृदय निष्ठावान रहें और पवित्र

और दोषरहित हृदयों से तुम परमेश्वर के आगे आओ, न ख़ुद ठोकर खाओ न दूसरों की ठोकर का कारण बनों (फिलिप्पियों १:८-१०)

हमें ये जानना ज़रूरी है कि किसे हां कहनी है और किसे इन्कार करना है. मुझे सीखना पड़ा कि ना कैसे कहनी है, क्योंकि मैं चाहती हूँ हर दिन का फ़ायदा उठाऊं जो इस जीवन में अब बाक़ी रहा है कई बार जो अच्छा दिखता है वो उस बेहतर बात का शत्रु है जो आने वालीं हैं.

उदाहरण के लिए परमेश्वर ने एक महिला के बारे में मुझे बताया कि उसे दूसरे लोगों की मदद में इतना समय बिताना रोकना है बजाय अपने ही बच्चे के साथ समय बिताने है हमें जानने की ज़रूरत है कि परमेश्वर क्या चाहते हैं कि हम आपने समय के साथ करें, कि वो क्या चाहते हैं यदि हम प्रार्थना में उनके साथ समय बितायें यदि परमेश्वर की बात सुनना आपके लिए मुश्किल है, तो मैं आपको प्रोत्सहित करूंगी कि आप मेरी किताब शीर्षक'' हाऊ टू हीयर फॉम गॉड'' पढ़ें उसमें मैंने बताये हैं वो विभिन्न तरीके जिनके द्वारा परमेश्वर हमसे सम्पर्क करते हैं और कैसे हमेशा ये हमें उनके वचन की ओर ले जाते है और हमे शांति की ओर अग्रसर करते हैं.

विलम्ब करना एक और आम तरीका है समस्या से भागने का. हम बहाने बनाते हैं, दूसरों पर दोष देते हैं, और कहते हैं. कि हम बहुत व्यस्त है और इस तरह हम कुछ चीज़े टाल देते हैं जो परमेश्वर ने हमसे कहीं. हम सोचते हैं कि हम इन्हें बाद में करेंगे पर वो बाद कभी नहीं आता ''हम विलम्ब करते हैं या कान नहीं धरते'' वैसे ही जैसे यशायाह ने हमें चेतावनी दी है अध्याय एक वचन तेईस में.

हाग्गै १:२-७ हमें बताता है कि उनका क्या हुआ जिन्होंने उस बात को टाला जो परमेश्वर ने उनसे करने को कही थी:

''सेनाओं का यहोवा यूं कहता है कि ये लोग कहते हैं कि यहोवा का भवन बनाने का समय नहीं आया है. (हालांकि साईरस ने इसे बनाने का हुक़्म अठारह साल पहले दिया था)

फिर यहोवा का ये वचन हाग्गै भविष्यवक्ता के द्वारा पहुंचा.

क्या तुम्हारे लिए अपने छत वाले घरों में रहने का समय है, जब कि ये भवन (प्रभु का भवन) उजाड़ पड़ा है?

इसलिए अब सेनाओ का यहोवा यूं कहता है, अपनी-अपनी चाल-चालन पर ध्यान करो.

तुमने बहुत बोया परंतु थोड़ा काटा; तुम खाते हो परंतु पेट नहीं भरता; तुम पीते हो परंतु प्यास नहीं बुझती; तुम कपड़े पहनते हो परंतु गर्मा ते नहीं और जो मज़दूरी कमाता है, वह अपनी मज़दूरी की कमाई का छेद वाली थैली में रखता है.

सेनाओं का यहोवा तुम से यूं कहता है कि अपने चाल-चलन पर सोचो (अपने अतीत और वर्तमान के व्यवहार पर)''

हमें अपने आप को प्रेरित करना है कि वो करें जो परमेश्वर हमसे करने को कहते है तब करें जब वे हमसे करने को कहते हैं. सुलेमान ने लिखा हैं ''जो वायु को ताकता रहेगा (यानी परिस्थितिओं के बदलने का इंतज़ार करेगा) वह बीज न बोने पायेगा और जो बादलों को देखता रहेगा वह लवने न पायेगा'' (सभोपदेशक ११:४)

यदि आप अपनी परिस्थितिओं को ही देखते रहें, तो आप उसे टालते जायेंगे जो परमेश्वर आपसे करने को कह रहे हैं. शायद वो समय बहुत ही ख़राब समय लगे उसे करने को जो परमेश्वर कह रहे है. पर इस पर ''अब'' अभिषेक हैं यदि परमेश्वर ने ये आपसे करने को कहा हैं.

आपनी समस्याओं से भागने में ही समय गवाना अच्छा नहीं है. हमें ज़रूरत है कि हम थोड़ा रूकें, पता लगायें जो महत्वपूर्ण है, अपने कामों की ज़िम्मेदारी ले, और अगर ज़रूरत हो तो बस ये कहें ''मैं ग़लत था मुझे क्षमा कर दें'' विलम्ब को परमेश्वर की आशीष हमसे छीनने ना दें.

यदि आप उसका आनंद लेना चाहतें हैं जो उत्तमता परमेश्वर ने हमारे जीवनों के लिए रखी है, हमें बहाने बनाना बंद करना है, दूसरों पर दोष लगाना बंद करना है, ज़्यादा व्यस्त रहना बंद करना है ताकि वो कर सकें जो परमेश्वर करने को कहते हैं. शायद वो हम से कहें कि दो, मदद करो, प्रार्थना करो, क्षमा करो, क्षमा मांगो, या कुछ और पर जो कुछ भी हो पर हमें सीखना है कि हम कैसे ''अब वाले इंसान'' बनें जो परमेश्वर को सुनते हैं और जल्द अमल करें जब वे हम से बात करें.

१०

मुक्त हुये और धर्मी बने

यीशु मसीह ने अपना जीवन दे दिया ताकि हमें धार्मिकता मिल सके... या जैसा मैं लिखना चाहूंगी धर्मी पन. धार्मिकता उन सबके लिये है जो यह विश्वास रखते है ''जो यीशु मसीह में विश्वास करने से सब विश्वास करने वालों के लिये है.'' (रोमियो ३:२२)

यीशु के बारे में बताते हुये, पतरस ने लिखा ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये क्रूस पर चढ़ गया (इसे वेदी बनाकर अपनी बलि दे दी) जिससे हम पापों के लिये मर कर के (पाप करना त्याग के) धार्मिकता के लिये जीवन बितायें.''

हम पररमेश्वर द्वारा रचे गये ताकि अपने बारे में धर्मी और अच्छा महसूस कर सकें, पर शैतान चाहता है कि सब अपने विषय में खराब महसूस करें; वह चाहता है कि हम शर्म, दोष और दण्डित महसूस करें. क्योंकि संसार में पाप का अस्तित्व है, और ये पाप के स्वभाव हमें मानव की गिरावट के कारण मिला है, हम हर बात सही नहीं कर सकते.

शैतान के लालच का प्रतिरोध करने और बजाय लगातार विजयी रहने के हमेशा लगातार ग्लानि महसूस करने के लिये हमें परमेश्वर के वचन की सत्यता जाननी चाहिये. जब यीशु को अपना उद्धारकर्त्ता स्वीकार करते हैं, हम परमेश्वर के साथ धर्मी ठहराये जाते हैं. क्योंकि वह हमें धार्मिकता का उपहार प्रदान करते हैं और हम ये विश्वास पाते हैं. हम अपनी संपूर्णता और भले कामों के कारण परमेश्वर में धर्मी नहीं ठहराये जाते; हम धर्मी समझे जाते हैं क्योंकि हम यीशु मसीह में विश्वास करते हैं.

२ कुरिन्थियों ५:२१ में प्रेरित पौलुस हमें बताते हैं कि परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया, ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (कि हम उसके साथ जोड़े जाये, धार्मिकता के उदाहरण बने, जो हमें बनना चाहिये, परमेश्वर से सही रिश्ता रखकर उसकी मान्यता और स्वीकृति पायें, उनकी भलाई की कृपा से)''

परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा हमारा उद्धार करने को (कि वह हमें शैतान से वापस खरीद सके जिसे हमने अपने आप बेच दिया था और पाप के दास बन गये थे) हमें दुबारा स्थापित करने (हमें वैसा बनाने जैसे हम आरम्भ में थे.) हमें परमेश्वर द्वारा बनाये और मुक्त किये गये धार्मिकता के लिये, शर्म, दोष और दण्ड के लिये नहीं.

मसीह में कोई दण्ड नहीं.

यदि हम परमेश्वर का वचन पढ़ें और समझें, हम अपने स्वयं के बारे में खराब विचारों से आज़ाद हो सकते हैं. पौलुस ने रोमियों ८:१ में लिखा है ''सो अब (यानी अब से) जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं (उन्हें दोषी या ग़लत क़रार नहीं दिया जा सकता) क्योंकि वे शरीर के अनुसार नहीं वरन् आत्मा के अनुसार चलते हैं.''

बेशक, अगर हम पवित्र आत्मा के निर्देश अनुसार चलें तो हम कभी कुछ ग़लत करेंगे ही नहीं. इसलिये दोष को हममें जड़ पकड़ने के लिये जगह ही नहीं मिलेगी. फिर भी, क्योंकि हम इंसान हैं. हममें से कोई भी ग़लती न करने की क्षमता नहीं रखता जैसा कि हमारे प्रभु ने हमें बताया ''आत्मा तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है.'' (मत्ती २६:४१)

हम कभी संपूर्णता से काम कर ही नहीं सकते, चाहे हम ऐसा करना चाहते हों, पर हम दोष मुक्त होकर आज़ाद रह सकते हैं यदि हम आत्मा में चलें, परमेश्वर हमसे वादा करते है कि वह हमें जीवन में मार्ग दिखायेंगे, यदि हम उनकी सुनें और उनकी आज्ञा मानें. ''मैंने तो उनको ये आज्ञा दी कि मेरे वचन की मानो, तब मैं तुम्हारा परमेश्वर हुंगा, और तुम मेरी प्रजा ठहरोगें; और जिस मार्ग की मैं तुम्हें आज्ञा दूँ उसी में चलो, तब तुम्हारा भला होगा.'' (यिर्मयाह ७:२३)

हम पाप करते हैं जब हम वह करना छोड़ देते है जिसका मार्गदर्शन पवित्र आत्मा ने किया होता है. दोषी और दण्डित भावना उस पापा के परिणाम का ही फल होती है, क्योंकि शैतान ये मौका देखता है और तुरंत परमेश्वर की कृपा पर हमारे आत्मविश्वास पर डाका डालने पहुंच जाता है.'' यदि हम कभी भी दोषी भावना से मुक्त रहने की उम्मीद रखते हैं, तब हमें पाप में पड़ने के लालच से जैसे ही इसके प्रति सचेत हों निपटें तुरंत ही.

यदि आप लालच में पड़ भी जाते हैं या पाप करते हैं, जो बजाये स्वयं अपने बलबूते पर सुधार करने की कोशिश यानी भलाई के कामों द्वारा जो शरीर के पीछे जाना ही हुआ (आपका इंसानी स्वभाव जो ठहरा), आप परमेश्वर से मांगे कि वह आपको क्षमा कर दें और पवित्र आत्मा की ओर मुड़ना चुनें. आप पाप करते है क्योंकि आपने पवित्र आत्मा से निर्देश पाना छोड़ दिया, यदि आप शरीर की ही मानते रहें तो आप और ज़्यादा से ज़्यादा मुसीबत और उलझनों

में फंस जायेंगे, इसके बजाय, जल्द ही वापस पवित्र आत्मा की ओर मुड़ें, उसे आपकी परिस्थिति सुधारने के लिये नेतृत्व और मार्गदर्शन करने दें.

आत्मा के पास हमेशा हर समस्या का सही जवाब होता है – और वह आपको दण्डित नहीं करेगा जब आप उसके पास लौटेंगे. ये लिखा है, ''क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिये नहीं (उन्होंने उसे इस लिये नहीं चुना कि हमें दण्डित करें) परन्तु इसलिये ठहराया कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें. (१ थिस्सलुनीकियों ५:९)

उदाहरण के लिये, आत्मा हमें ले जायेगी पछतावे की ओर, जो परमेश्वर द्वारा क्षमा दिलाता है: ''यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है. (वह अपने स्वभाव और वचन में सच्चा है और हमारी उदण्डता नज़रांदाज़ करता है वह हमें वो देता हैं. उस सबसे उनके मक़सद, विचारों और कार्यों के अनुसार न होकर अधर्म हो.) (१ युहन्ना १:९)

शरीर का अनुसरण और भलाई के काम करना ये सोचकर कि इससे हम परमेश्वर का अनुग्रह पा सकेंगे. पर शरीर हमेशा गलतियों का हर्जाना भरने की कोशिश करता है बजाय उस परमेश्वर की कृपा के उपहार यानी क्षमा और सुधार पाने के.

दोष से निपटना

परमेश्वर ने एक बार मुझे दोषी भावना के लिए एक महान प्रकाश दिया.जहां तक मुझे याद है मैं हमेशा दोषी महसूस करती रही हूँ. दोष मेरा सदा का साथी था. हम सब जगह साथ-साथ जाते. पाप के प्रति ये सचेतना मेरे बचपन की शुरूआत में ही शुरू हुई जब मेरा यौन शोषण हो रहा था. हालांकि मेरे पिता ने मुझे बताया था कि वो जो मेरे साथ कर रहे हैं, वो ग़लत नहीं है, पर ये मुझे गंदा दोषी महसूस कराता. बेशक़ जब मैं बड़ी हुई और सचेत हुई कि ये ग़लत काम था पर मैं किसी भी तरह इसे रोक नहीं सकती थी. दोष बढ़ता गया, लगातार चलता गया.

मैंने खुद व्यक्तिगत अनुभव से सीखा है कि दोष का बोझ असहनीय होता है, इसका वज़न हमारी आत्मा को दबा देता है. दोष हर बात को अंधेरा दिखाता है और हमें थका और असहाय महसूस कराता है. असल में ये हमारी पूरी शक्ति खींच लेता है और सारी उर्जा चूस लेता है कि हम पाप और शैतान का प्रतिरोध नहीं कर सकते. इसका परिणाम ये होता है कि दोष और दण्डित भावना दरअसल पाप बढ़ा देती है.

मेरा मानना है कि मुझे दोष की लत पड़ गई थी. इससे पहले कि मैंने परमेश्वर की कृपा के बारे में सीखा, मुझे याद नहीं आ रहा कि कभी मैंने दोष मुक्त महसूस किया हो. तब भी

जब मैं कोई विशेष बुराई या पाप ना कर रही होती. मैं कुछ न कुछ ढूंढ लेती जिससे मैं बुरा महसूस कर सकूं.

शैतान हमें दबाना चाहता है. वह उनका शोषण करता है जो मसीह में विश्वास करते हैं क्योंकि वो रात-दिन हमारे परमेश्वर के सामने हम पर दोष लगाया करता है (देखिये प्रकाशित वाक्य १२:१०) पर दाऊद जो भजन लेखक है उसने लिखा, ''हे यहोवा तू मेरे चारों ओर की ढाल है, तू मेरी महिमा और मस्तक का ऊँचा करने वाला हैं'' (भजन संहिता ३:३)

उदाहरण के लिए, एक दिन मैं शॉपिंग कर रही थी, और मेरा हमेशा का साथी दोष मेरे साथ था. मुझे याद नहीं आ रहा कि उस समय मैंने क्या ग़लत किया था; इसका कोई मतलब भी नहीं, हमेशा कुछ ना कुछ तो होता था. मैं अपनी कार से निकलने ही वाली थी और स्टोर में जाने ही वाली थी जब पवित्र आत्मा ने मुझसे कहा ''जॉयस, इस पाप के लिए तू कैसे क्षमा पाने की योजना बनायेगी?''

मुझे सही जवाब मालूम था. मैंने कहा, ''मैं उस बलिदान को स्वीकार करूंगी जो यीशु ने मेरे लिए किया जब वो कलवरी पर मरे.'' हम सही जवाब जान सकते हैं, (मस्तिष्क में ज्ञान द्वारा) और फिर भी हम इसे अपनी परिस्थिति में लागू नहीं करते.

फिर पवित्र आत्मा ने कहना जारी रखा: ''अच्छा जॉयस, तुम यीशु का बलिदान कब स्वीकार करने की योजना बना रही हो?''

एक प्रमुख प्रकाश मेरे सामने चमकने लगा. उस समय मैं जानती थी कि मुझे दो या तीन दिन रूकना पड़ेगा. जब तक कि मैं इतना ज़्यादा दोषी महसूस ना करूं कि परमेश्वर की क्षमा स्वीकार कर सकूं, या तब उसी समय मैं उनकी क्षमा प्राप्त कर सकती थी.

मैंने हमेशा ठीक उसी समय अपने पापों के लिए क्षमा मांगी, पर मैंने कभी इसे स्वीकार नहीं किया जब तक मुझे ये नहीं लगा कि इसका हरज़ाना देने के लिए मैंने पर्याप्त दु:ख भोग लिए है. परमेश्वर ने मेरे सामने प्रकट किया कि मैं क्या कर रही थी. मैं स्वयं को कैसे अनावश्यक पीड़ा पहुंचा रही थी. उन्होंने मुझे ये भी दिखाया कि जो मैं कर रही थी वो यीशु के लिए अपमान था, इस संदर्भ में जो मैं कह रही थी ''प्रभु, आपके जीवन और लहू का बलिदान अच्छा था. मुझे अपना अपराध बोध का अहसास डालकर इसमें वृद्धि करनी चाहिये इससे पहले कि मुझे क्षमा मिलें.

उसी दिन से मुझे अपराध बोध और दण्डित भावना से आज़ादी महसूस होने लगी. मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप भी यही करें. याद रखें: अपराध बोध बिल्कुल अच्छा नहीं. इससे कुछ उपलब्ध नहीं होता सिवाय निम्नलिखित के:

- अपराध बोध आपकी उर्जा निकाल देता है और आपको शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार कर देता है.

- अपराध बोध परमेश्वर से आपका बंधुत्व रोकता है. इब्रानियों ४:१५-१६ में लिखा है, ''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सकें; वरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तो भी निष्पाप निकला. इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हिपाव बांधकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पायें, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करें (पर परमेश्वर ने हम पापीयों के ऊपर अथाह अनुग्रह किया है, कि हम अपनी असफलता के बावजूद सही समय पर मिलती है.)
- अपराध बोध शरीर का कार्य है, इसलिये मांग करता है कि आप अपने पापों का हर्ज़ाना भरें.
- अपराध बोध आपकी आत्मिक उर्जा निकाल देता है. ये आपको दुर्बल और असक्षम बनाता है शत्रु के नये हमले सहने का सफल आत्मिक युद्ध में आपको धार्मिकता का अस्त्र पहनना पड़ता है. (देखिये इफिस्सियों ६:१४) ''सो सत्य की कमर कसकर और धार्मिकता की झिलम पहनकर.'' अपराध बोध आपसे और पाप करवाता है.
- अपराध बोध आप पर इतना ज़्यादा दबाव डालता है और ये सुझाता है कि दूसरों के साथ निभाना कठिन है. अपराध बोध के नीचे दबे रहकर जीना और आत्मा का फल, प्रेम, आनंद, मेल और धीरज पाना असम्भव है. (देखिये ग़लतियों ५:२२-२३)

बेशक़ आप ये सूचि देख सके हैं कि अपराध बोध से छुटकारा पाना अच्छा है. इसे जाने दीजिए, ये शैतान की ओर से है और उसकी मंशा यही है कि आप अपने जीवन का आनंद कभी ना उठायें या कभी भी प्रभु से नाता ना जोड़ पायें.

यदि अपराध बोध के इस क्षेत्र में आपकी गम्भीर समस्यायें हैं, तो शायद आपको किसी से प्रार्थना करने को कहना होगा. यदि आपका विश्वास काफ़ी मज़बूत है तो आप स्वयं प्रार्थना कीजिए. फिर भी, दोष आपका विश्वास चुरा लेता है, यदि आप बहुत लम्बे समय से अपराध बोध के बोझ तले दबे रहे हैं और दण्डित महसूस करते रहे है, आपके विश्वास को मज़बूत होने की ज़रूरत है, जो भी मदद चाहिए वो लीजिए. अब और अपराध बोध और दण्ड भावना के बोझ तले दबे रहने से इंकार कर दीजिए.

शर्म का क्या कहें?

अब जब की हम अपराध बोध को बेहतर समझ सके हैं चलिए अपना ध्यान शर्म के विषय की ओर मोड़ें, एक शर्म होती है जो सामान्य और स्वस्थ होती है. यदि मैं कुछ खो दूं या तोड़ दूं जो किसी और का है, तो मुझे अपनी गलती पर शर्म महसूस होती है कि काश् मैं इतनी लापरवाह और असावधान न होती. मुझे अफ़सोस है, पर मैं क्षमा मांग सकती हूँ और पा सकती

हूँ और फिर अपने जीवन में आगे बढ़ सकती हूँ. स्वस्थ शर्म हमें याद दिलाती है कि हम भी कमज़ोरियों और सीमाओं वाले इंसान हैं.

उत्पत्ति २:२५ में हम पढ़ते हैं कि आदम और हव्वा अदन की वाटिका में नंगे रहते थे और उन्हें शर्म नहीं आती थी. इस सच्चाई के होते हुए कि वो कोई कपड़े नहीं पहने थे, मेरे ख्याल से इस वचन का मतलब है कि वे एक दूसरे के प्रति ईमानदार और खुला दिल रखते थे, वो मुखौटे के पीछे नहीं छुपे थे, ना ही चालें चल रहे थे. वे पूरी तरह आज़ाद थे कि वे जो हैं वो रहें क्योंकि उनमें शर्म का भाव था ही नहीं. एक बार जब उन्होंने पाप कर डाला तब हालांकि, वो गए और ख़ुद को छिपाने लगे (देखिये उत्पत्ति ३:६-८)

लोगों को एक दूसरे से और परमेश्वर से सम्पूर्ण आज़ादी का आनंद लेने के योग्य होना चाहिए, पर बहुत कम ही ऐसा कर पाते हैं. बहुत से लोग दिखावा करते हैं. वे झूठा व्यक्तित्व पेश करते हैं और उसके पीछे छिपते हैं. वो ऐसे नाटक करते हैं जैसे उन्हें ठेस नहीं पहुंची जब कि पहुंची होती है या वो दिखावा करते हैं कि उन्हें किसी की ज़रूरत नहीं जबकि उन्हें होती है.

एक बहुत ही ज़हरीली शर्म होती है जो किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता पर बहुत ज़बरदस्त प्रभाव डालती है. ये तब होता है कि वो व्यक्ति जिसका शोषण हुआ या किसी दुरव्यवहार का शिकार है वो उस शर्म को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर तक प्रचार करना शुरू कर देता है. वो अब जो उसके साथ हुआ उसके प्रति शर्मिंदा नहीं पर वो स्वयं से शर्मिंदा होना शुरू कर देता है क्योंकि उसे जो कुछ भोगना पड़ रहा है उसके कारण.

ऐसा व्यक्ति शर्म को अपने अन्दर ही अपना लेता है और दरअस्ल वो उसके अस्तित्व का मुख्य हिस्सा बन जाती है. उसके जीवन में हर बात उसकी भावनाओं द्वारा ज़हरीली होती जाती है इस हद तक कि वो शर्मसार इंसान बन जाता है.

कभी मैं भी शर्मसार थी, पर मुझे ये नहीं पता था कि मैं अपने आप से शर्मिंदा हूँ मैं शर्म के नतीज़े देख रही थी अपने जीवन में. पर मैं असफल ढंग से कोशिश कर रही थी फल से निपटने की बजाय जड़ से निपटने के लिए.

इस शब्द की विस्तारित परिभाषा जब किंग जेम्स संस्करण से उत्पत्ति २:२५ में अनुवादित की गई तो शर्मिंदा या निराश या विलम्बित या व्याकुल होना था. ये शब्द व्याकुलता का सचमुच मतलब है हताश हो जाना या गड़बड़ी में होना. अंग्रेजी शब्दकोश का वेबस्टर का नया रूपांतर इस क्रिया 'व्याकुल' को कुछ इस तरह परिभाषित करता है.

''उलझाना'' आश्चर्यचकित, ''बेकार'' वेबस्टर डिक्शनरी संज्ञा बेकार को इस तरह परिभाषित करती है ''बदक़िस्मत भाग्य के लिए दण्डित ''समाप्त'' ''ज़बरदस्त आलोचना'', ''तबाही का कारण बनना'', ''असफल बनाना''. यदि आप इन परिभाषाओं का अध्ययन करने

के लिए समय निकालें तो शायद आप पायें कि इन सब समस्याओं की जड़ शायद आपकी शर्म है.

शर्म से निपटना

मेरा जीवन गड़बड़ी से भरा था क्योंकि मैं धार्मिकता के लिए ज़बरदस्त कोशिश कर रही थी (ताकि मैं अच्छा महसूस कर सकूं) पर चाहे मैं कितनी भी ज़्यादा कोशिश करती, मैं हमेशा असफल होती. ऐसा लगता था जैसे मैं असफलता में गिर चुकी हूँ. मैं हर बात में असफल नहीं हुई. हालांकि, मैं कॉरपोरेट संसार में बहुत सफल थी, और कुछ अन्य क्षेत्रों में भी, पर मैं परमेश्वरीय व्यवहार में बिल्कुल असफल थी. मैं हमेशा हारा महसूस करती क्योंकि चाहे मैं बाहर से कोई भी उपलब्धि हासिल कर लूं, मैं भीतर स्वयं के बारे में बुरा महसूस करती.

मैं ख़ुद से शर्मिंदा थी!

मुझे वो पसंद नहीं था जो मैं हूँ. मुझे अपना मूल व्यक्तित्व पसंद नहीं था. मैं लगातार अपने सच्चे व्यक्तित्व को नकार रही थी. और कोशिश कर रही थी कि कोई और बनूं, कुछ और बनूं जो ना मैं कभी थी और ना मैं कभी बन सकती थी. (इस विषय पर मैं विस्तार से चर्चा एक और अध्यन में करूंगी.)

कई हज़ारों गुना मसीही अपना पूरा जीवन इसी दयनीय अवस्था में गुज़ार देते हैं– परमेश्वर के वारिस होने के नाते अपने हक़ स्थिति से कहीं ज़्यादा दूर और कहीं ज़्यादा नीचे जबकि यीशु मसीह के साथ हमें ये विरासत मिली है. मैं जानती हूँ क्यों मैं भी उनमें से एक थी.

पौलूस ने लिखा है कि जो दुख हम भोग रहे हैं वो उस विरासत से मिली महिमा के मुक़ाबले कुछ भी नहीं:

> ''और यदि संतान हैं (प्रभु की संतान) तो (उसके) वारिस भी, बरन् परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठायें कि उसके साथ महिमा भी पाएं.''
>
> (पर इसको क्या कहें?) क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दुख और क्लेश (हमारी वर्तमान ज़िंदगी के) उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रकट होने वाली है कुछ भी नहीं'' (रोमियों ८:१७-१८)

वो एक महान दिन था जब पवित्र आत्मा ने मेरा नेतृत्व किया कि मैं समझ सकूं कि शर्म ही मेरी बहुत सी समस्याओं का स्रोत है. परमेश्वर के वचन में बहुत से वादे हैं. जो हमें यक़ीन दिलाते हैं कि हम शर्म के भाव से मुक्ति पा सकते है. उदाहरण के लिए, यशायाह ६१:७ में

लिखा है ''तुम्हारी नाम धराई की संती दूना भाग मिलेगा; अनादर की संती तुम अपने भाग के कारण जै जैकार करोगे तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे और सदा आनंदित बने रहोगे.''

चलिए इस भाग को ज़रा नज़दीक से देखें जो दुगना हर्ज़ाना दिला रहा है. संती यानी एक इनाम या हर्जाना किसी घाव का. दूसरे शब्दों में, यदि आप परमेश्वर पर विश्वास रखें कि वो अपनी रीति से काम करें, वे देखेंगे कि आप अपने साथ हुए हर अन्याय का दुगना मूल्य प्राप्त करें. आपको उसका दुगना मिलेगा जो आपने खोया या गवाया है, और अनंत आनंद आपको प्राप्त होगा. ये एक अद्भुत वादा है और मैं इसकी सच्चाई की गवाही दे सकती हूँ. परमेश्वर ने यही सब मेरे लिए किया, और वो आपके लिए भी करेंगे.

प्रभु का एक और वादा हमें मिलता है यशायाह ५४:४ में ''मत डर, क्योंकि तेरी आशा फिर नहीं टूटेगी: मत घबरा, क्योंकि तू फिर लज्जित न होगी और तुझ पर सियाही ना छायेगी; क्योंकि तू अपनी जवानी की लज्जा भूल जायेगी, और अपनी विधवापन की नाम धराई को फिर स्मरण ना करेगी.'' कितना प्रेरणात्मक और उत्साह जनक है. ये जानना कि आप अपने अतीत की हानि भूल जाएंगे और कभी भी उन कठिन और मुश्किल भरे दिनों की याद ना रखेंगे. ये ऐसा वादा भी है जो आपका बल बन सकता है जब आपका शोषण या दुरव्यवहार हो रहा हो.

शायद आप महसूस करें कि परमेश्वर ने किसी शाब्दिक या भावनात्मक शोषण को कुछ समय सहने के लिए आपसे कहा हो जबकि वो उस व्यक्ति पर काम कर रहें हों जो आपको ठेस पहुंचा रहा है शर्मसार स्वभाव अपनाने से आप कैसे स्वयं को सुरक्षा दे सकते हैं? भजन लेखन की प्रार्थना आपकी भी हो सकती है, ''मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा; मुझे लज्जित ना होने दें क्योंकि मैं तेरा शरणागत हूँ.'' (भजन संहिता २५:२०)

परमेश्वर आपको शर्म से बचाये रख सकते हैं. मेरा सुझाव है कि हर बार जब आपको शाब्दिक और भावनात्मक दुरव्यवहार सहना पड़े. बस प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि परमेश्वर आपको उस शर्म से बचायें जो आपके अंदर उत्पन्न होती है. भजन २५:२० के इस शब्द का इस्तेमाल शत्रु पर करें. दो धारी तलवार की तरह (इस मामले में शत्रु शर्म है)

नीचे एक उदाहरण दिया है कि कैसे ये दिशा आपके लाभ के लिए कार्य कर सकती है. मैं एक पास्टर की पत्नी को जानती हूँ जिसे अपने पति के साथ यौन, सम्बन्धों में कोई समस्या नहीं थी, हालांकि उसके कई रिश्तेदारों ने सालों इसका यौन शोषण किया. दूसरी ओर अपने यौन शोषण के कारण, मुझे कई-कई समस्याओं से जूझना पड़ा अपने पति के साथ यौन सम्बन्धों को बनाये रखने में.

अन्तर क्या हुआ ? अपनी इस सहेली से प्रश्न पूछते हुए मुझे ये पता चला कि उसने अपने पूरे बचपन के दौरान परमेश्वर में अटूट विश्वास रखा था. उसका शोषण शुरू हुआ जब वो चौदह साल की थी. उस समय तक वह अच्छे मसीह बंधुत्व का कई साल तक आनंद ले चुकी

थी और एक सक्रिय प्रार्थना मयी जीवन जी चुकी थी. वो हर बार प्रार्थना करती जब भी उसका शोषक उसका बलात्कार करता, वह परमेश्वर से प्रार्थना करती कि वे उसे ढांक दें ताकि उसके भावी पति के यौन सम्बन्धों पर कोई असर ना हो. वो जानती थी कि वह एक दिन किसी पास्टर से शादी करेगी क्योंकि प्रभु ने पहले से ही उसके सामने प्रकट कर दिया था. इस क्षेत्र में उसकी प्रार्थनाओं ने उसे शर्म और दासता से बचाया.

मेरे मामले में, मैं परमेश्वर के बारे में काफ़ी नहीं जानती थी कि प्रार्थना द्वारा अपने विश्वास को सक्रिय कर सकूं. इसलिए बेशक़ मुझे शर्म झेलनी पड़ी – जब तक कि मुझे ये पता नहीं चला कि मैं शर्म सार थी और मैंने ख़ुद को मुक्त कराने के परमेश्वर के वादे के बारे में सीखा.

आप भी शर्म से मुक्त हो सकते हैं, जो बहुत ही संगीन और गम्भीर भीतरी समस्याओं की जड़ है :

- अलगाव
- बाधित व्यवहार (ड्रग्स/शराब/पदार्थों का दुरव्यवहार; खान–पान का रोग, पैसे की लत, काम या अन्य तरह की क्रियाओं का व्यसन, यौन विकृति; नियन्त्रण रखने की ज़ोरदार इच्छा; आत्म-नियन्त्रण या आत्म अनुशासन में कमी; चुगली; दोष लगाने वाली आत्मा इत्यादि)
- उदासी
- गहरी हीन भावना (मुझमें ज़रूर कुछ ख़राबी है ये सोचना)
- असफलता का भय
- अकेलेपन को अपनाना
- आत्म विश्वास में कमी
- उन्मादी व्यवहार (उन्मादी व्यक्ति बहुत ज़्यादा ज़िम्मेदारी ओढ लेता है; झगड़े के समय वो स्वयं ही मान लेता है कि ग़लती उसकी है)
- सम्पूर्णता की सनक
- दुर्बलता (हर तरह का भय)
- स्वस्थ सम्बन्ध बनाने और क़ायम रखने में अयोग्यता

उदासी

जो हम अपने बारे में अपने दिल में सोचते हैं. उसका इस पर गहरा प्रभाव पड़ता है कि हम कैसे कार्य करते हैं ''क्योंकि जैसा भी वह अपने मन में विचार करता है वैसा वह आप है.'' (नीतिवचन २३:७)

यदि हम अपने बारे में ख़राब राय रखें तो हम उदास महसूस करेंगे. बहुत ज़्यादा संख्या

में लोग इस भयंकर उदासी के हाल के शिकार होते हैं, जिसके बहुत ही उलझे हुए कारण है, उनमें से एक है शर्म. यदि आप उदासी की ओर आकृष्ट होते हैं तो शायद ये किसी गहरी समस्या का संकेत हो– शर्म की जड़ हो.

वो जो शर्म से प्रभावित होते हैं. वो स्वयं के बारे में हमेशा नकारात्मक सोचते हैं और नकारात्मक बात करते हैं. ऐस ग़लत विचार और बातचीत आत्मा पर भारी बोझ बन जाती है. ये एक मुख्य समस्या है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्यों को बनाया धार्मिकता, प्रेम और स्वीकृति के लिए परमेश्वर हमेशा ये गुण अपने बच्चों पर उँडेलते रहते हैं, और बहुत से उनके बच्चों को मालूम नहीं कि उनको स्वीकार कैसे करना है.

आप परमेश्वर से प्रेम और स्वीकृति पा नहीं सकते यदि आप स्वयं के ही विरूद्ध हैं. यदि इस क्षेत्र में आपको समस्या है, तो बस बैठे ना रहिए और शैतान को स्वयं को बबार्द न करने दें. अपने आत्मिक शत्रु का मुक़ाबला आत्मिक कार्य से करें. अपने विचार और अपनी बोल चाल बदल दें. अपने बारे में जान बूझकर अच्छी बातें कहना और सोचना शुरू कर दें. अपने सर्वोत्तम गुणों की एक सूचि बनायें और उसकी जो संसार आपके बारे में कहता है और दिन में कई बार इसका इक़रार करें.

परमेश्वर के वचन की सत्यता पर ध्यान लगायें जैसे ''जो पाप से अज्ञात था उसीको उसने हमारे लिए पाप ठहराया (उसे हमारे लिए उदाहरण बनाया) कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जायें (जो हमें होना चाहिए वो बने, उस द्वारा मान्यता और स्वीकृति प्राप्त करें और धर्मी सम्बन्ध बनाये और कृपा हासिल करें), (२ कुरिन्थियों ५:२१) फिर कहें, ''मैं यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ.''

ऊँची आवाज़ में कहें कि परमेश्वर मुझे प्रेम करते हैं. जब आप ये पढ़ें, ''कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश ना हो परंतु अनंत जीवन पाये.'' (युहन्ना ३:१६)

पढ़िये रोमियों १२:६-८ ''और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है हमें भिन्न-भिन्न वरदान मिले हैं'' (हुनर, योग्यतायें, शिक्षा और गुण)

तो जिसको भविष्यवाणी का दान मिला हो (बातों का पूर्वानुमान लगाने की शक्ति वह विश्वास के परिणाम के अनुसार भविष्य वाणी को यदि सेवा का दान मिला हो तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखाने वाला हो, तो सिखाने में लगा रहे. जो उपदेशक हो वह उपदेश देने में लगा रहे. दान देने वाला उदारता से दे, जो अगुवाई करें वह उत्साह से करे, जो दया करें वह हर्ष से करें.''

फिर स्वीकार करें ''मेरे पास वरदान हैं और योग्यतायें हैं जो मुझे परमेश्वर द्वारा दी गई.''

अपने मन में प्रभु के वचनों पर ध्यान लगायें जब उन्होंने कहा, ''मेरी दृष्टि में तू अनमोल

और प्रतिष्ठित ठहरा है और मैं तुझसे प्रेम रखता हूँ, इस कारण मैं तेरी संती मनुष्यों को तेरे प्राण के बदले में राज्य राज्य के लोगों को दे दूंगा.'' (यशायाह ४३:४) आनंद मनायें जब आप ये माने ''मैं बहुमूल्य हूँ और परमेश्वर के लिए मूल्यवान हूँ.''

अपने बारे में और सकारात्मक स्वीकृतियाँ खोजने के लिए परमेश्वर के वचन में खोजें.

दूसरा बुद्धिमता का तरीका ये है कि स्वयं की पूरी डॉक्टरी जाँच करवायें ताकि किसी भी सम्भावना को नकारा जा सकें. जो शारीरिक अवस्था के कारण शायद आपके मानसिक और भावनात्मक रवैये पर प्रभाव डाल रही हो. जब तक कि अपकी उदासी का कारण कोई स्वास्थ समस्या नहीं तो अक्सर इसकी जड़ निकलती है नकारात्मक सोच और बातचीत. तब भी जब उदासी किसी शारीरिक स्थिति के कारण हो (हार्मोनल या कैमिकल असंतुलन इत्यादि) शैतान इस स्थिति का लाभ उठायेगा. वो बहुत से नकारात्मक विचार लायेगा और यदि उनपर ध्यान दिया या ग्रहण किया तो वह इस समस्या को कई गुणा ख़राब दिखायेंगे जितनी दरअस्ल वो हैं.

मैं फिरसे कहती हूँ, जब आप उदास महसूस करें, अपने विचारों की जाँच करें. ये परमेश्वर की इच्छा नहीं कि आप उदास हों. अपने विचारों को परमेश्वर के वचन के साथ जोड़ें. यशायाह ६१:३ में लिखा है कि परमेश्वर ने जो, हमें दिया है वो हैं ''उदासी हटाकर यश का ओढना उठाऊं, विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं.'' नहेम्याह ने कहा, ''परमेश्वर का आनंद तुम्हारी शक्ति और गढ़ है'' (८:१०) उस पर विश्वास करें जो वचन में लिखा है कि आप हैं और वहीं आप बनेंगे. उस पर विश्वास करें यदि जो शैतान कहता है कि आप हैं तो आप उस जैसा बन जायेंगे. चुनाव आपके पास है ''इसलिए तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें'' (यवस्था विवरण ३०:१८)

११

आत्म-अस्वीकृति या आत्म-स्वीकृति

शर्म आत्म अस्वीकृति का कारण बन गई है और कुछ मामलों में आत्म घृणा भी. बहुत गम्भीर मामलों में ये आत्मशोषण का रूप भी ले सकती है. जिसमें आत्म विकृति भी शामिल है. मैंने बहुत से लोगों की सेवकाई की है जिन्होंने मुझे अपने शरीर पर के दाग़ दिखाये है जो उत्पन्न हुए उनके स्वयं के काटने, जलाने या दांत काटने से और वो घाव जो स्वयं को मारने और चोट पहुंचाने से हुए और खुद के बाल खींच लेने से उत्पन्न गंजे पन के निशान.

कुछ लोग स्वयं को भूखा रखते है अपने आपको एक क़िस्म की सज़ा देने के लिए. कुछ लोग बहुत ही घृणित तरीक़े से पेश आते हैं. ताकि उन्हें नकारा जाये. क्योंकि उन्होंने स्वयं को नकार दिया है इसलिए उन्हें यक़ीन है कि दूसरे भी उन्हें नकार देंगे इसलिए वो ऐसा व्यवहार प्रकट करते हैं जो उनके बारे में स्वयं उनकी सोच के अनुसार है. होने वाली समस्याओं की सूचि बढ़ती ही चली जाती है मुझे यक़ीन है कि आप समझ ही गये होंगे कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ.

हम अपनी स्वयं के बारे में अपनी राय से आगे नहीं बढ़ सकते चाहे परमेश्वर अपने वचन में हमारे बारे में कितनी ही अच्छी बातें क्यों न कहें. बेमानी हैं परमेश्वर की वो शानदार योजनायें जो शायद उन्होंने आपके जीवन के बारे में बनाई हों, आपके सहयोग के बिना उनमें से कुछ भी कारग़र नहीं होगा.

आपको उस पर विश्वास करना है जो परमेश्वर कहते हैं.

अपने बारे में परमेश्वर की राय स्वीकार करें

यदि आप शोषण से उभरने और स्वस्थ होने की खोज में हैं तो अपने बारे में दूसरे लागों की राय को आप हावी न होने दें, इसका सबूत यही है कि अतीत में उन्होंने आपसे कैसा दूरव्यवहार किया और आपकी क़ीमत को कम आंका. याद रखिये लोग जो बेकार महसूस करते हैं वो हमेशा ये ढूंढने की कोशिश करते हैं कि आपने कोई ख़राबी ढूंढे ताकि वो स्वयं के बारे में कुछ अच्छा महसूस करें. ये बात गांठ बांध ले. ये उनकी समस्या है आपकी नहीं युहन्ना ३:१८ में प्रभु यीशु ये बयान देते हैं कि जो उस पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती यानी वो कभी भी परमेश्वर द्वारा या यीशु द्वारा नकारा नहीं जा सकता यदि अपने पुत्र यीशु मसीह में आपके विश्वास के कारण परमेश्वर आपको स्वीकारते हैं; तब स्वयं को नकारना छोड़ दें और चंगाई की प्रक्रिया होने दें.

ये भी हो सकता है कि आप पूरी तरह स्वयं को नकार नहीं रहे, पर आपके केवल थोड़े से भाग हैं. जो आपको नापसंद है. मेरे अपने मामले में, मैंने अपने व्यक्तित्व को नकारा था. मैंने समझा नहीं था कि मुझे एक परमेश्वरीय बुलावा मिला है जीवन में कि मैं उनकी पूरा समय सेवकाई करूं और ये कि परमेश्वर ने मेरा मूल स्वभाव ही ऐसा बनाया है कि जो वो मुझसे करवाना चाहते हैं करूं.

मेरा व्यक्तित्व दोषपूर्ण था, बेशक़ इसका कारण था सालों का शोषण जो मुझे भोगना पड़ा और मुझे ज़रूरत थी पवित्र आत्मा के सुधार की, पर अभी भी मुख्य व्यक्तित्व ही था जो परमेश्वर ने मेरे लिए चुना था फिर भी, क्यों मैं ये सच्चाई समझ ना सकी, मैंने सोचा कि मुझे पूरी तरह बदलना होगा. मैं लगातार कोई और बनने की कोशिश करती, जो परमेश्वर की इच्छा नहीं थी. मेरे लिए–ना ही उनकी आप के लिए भी ये इच्छा है कि आप किसी और की तरह बनें.

याद रखिये: परमेश्वर आपकी मदद करेंगे वो बनने में जो आप हो सकते है – मुख्य रूप से आपको जो बनने के लिए रचा गया है. पर वे कभी भी आपको किसी और की तरह बनने में सफल नहीं होने देंगे.

आत्मा द्वारा नियन्त्रित स्वभाव

शायद आपने किसी और व्यक्ति किसी दोस्त या किसी आत्मिक अगुवे की ओर गौर किया हो और कहा हो, ''यही तरीक़ा है जैसे लोगों को जीना चाहिए.'' या ''वो सबके द्वारा पसंद की जाती है और स्वीकृत है,'' शायद आपने ऐसे व्यक्ति जैसे बनने की कोशिश भी की हो बिना जाने बिना ऐसी योजना बनाये.

बेशक़, दूसरे लोग हमारे लिए अच्छा उदाहरण हो सकते हैं, पर चाहे हम स्वयं को उनके अच्छे गुणों पर ढाल लें फिर भी उन अच्छी आदातें और चरित्र में हमारा व्यक्तिगत रंग होना चाहिए.

मेरा ख़ुद का निडर, स्पष्टवादी, न्यायी, नियन्त्रण करने वाला व्यक्तित्व है परमेश्वर ने इसतरह का स्वभाव मुझमें इसलिए डाला ताकि मैं अपने जीवन में उनके बुलावे को पूरा कर सकूं. हालांकि कई साल मैंने संघर्ष किया और निराशा में बीती रही क्योंकि मैं कोशिश करती रही और ज़्यादा और ज़्यादा भीरू, विनम्र, सज्जन, खामोश और प्यारा बनने की. मैंने बेचैनी से कोशिश की कि ये उग्र और तेज़ स्वभाव बदल दूं.

सच्चाई तो ये है कि मैंने व्यर्थ ही कोशिश की अपने आपको उन आदर्शों में ढालने की जो ये मेरे पास्टर की पत्नी, मेरे पति, और कई दोस्त जिनका मैं आदर करती थी और प्रशंसक थी. मेरे प्रयासों का नतीजा बढ़ी हुई निराश में ढला, जिसने मुझे लोगों से निभाने में और योग्य बना दिया. मुझे सीखने की ज़रूरत थी कि मैं दूसरों की तरह बनने की कोशिश छोड़ दूं और बस वो बनूं,"जो सबसे उत्तम मैं स्वयं बन सकती थी." हां, मुझे परिवर्तन की ज़रूरत थी. मुझे आत्मा का और फल चाहिए था. ख़ासकर दयालुता, सज्जनता और विनम्रता क्योंकि मैं बहुत ज़्यादा कठोर, तेज़ और ठेस पहुंचाने वाली थी. पर एक बार जब मैंने सीख लिया कि मैं अपने मूल परमेश्वर द्वारा दिए स्वभाव को स्वीकार करूं, फिर मैं इस योग्य हो गई कि पवित्र आत्मा मुझे बदल सकें. उस रूप में जो वो चाहते हैं.

एक बार जब हम दूसरों की तरह लगने का प्रयास छोड़ दें, तब परमेश्वर का आत्मा हमारी उस शक्ति का इस्तेमाल करता है और हमारी कमियों को नियन्त्रित करता है. "फिर हममें विकसित होने लगता है आत्मा द्वारा नियन्त्रित स्वभाव" इस स्वभाव को समझाया गया है गलतिया ५:२२-२५ में "पर आत्मा का फल प्रेम, आनंद, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम हैं. ऐसे ऐस कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं. और जो यीशु मसीह के हैं उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है. यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो आत्माओं के अनुसार चलें भी. हम घमण्डी होकर ना एक दूसरे को छेड़ें ना एक दूसरे से डाह करें (यदि पवित्र आत्मा द्वारा हम परमेश्वर में जीवन पाते है तो चलो उसीके अनुसार आगे बढ़े, हमारे व्यवहार आत्मा द्वारा नियन्त्रित हों)"

बहुत साल ग़ुजरने के बाद अंत में मैंने ये सीखा कि मुझे स्वयं को स्वीकारना और स्वयं से प्रेम करना है ना कि घृणा और स्वयं को नकारना तब से मैंने आत्मा द्वारा नियन्त्रित स्वभाव को विकसित करने का रहस्य खोज लिया है.

भीतरी मुनष्य में सुदृढ़ होना

मेरे स्वाभाविक मनुष्य में अभी भी कमज़ोरियां हैं, फिर भी जब तक मैं परमेश्वर के साथ हूँ, पहले उन्हें तलाशती हूँ, वो लगातार मुझे वो समर्था देते हैं जो मेरी शक्ति बन प्रकट होती है ना कि कमज़ोरी.

प्रेरित पौलूसने प्रार्थना की कि विश्वासी अपने भीतरी मनुष्य में ''सुदृढ़ होंगे ताकि पवित्र आत्मा उनके अन्दर बस सकें और उनके भीतरी व्यक्तित्व में गहरे बस जायें. ''कि वे अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें ये दान दें, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवंत होते जाओ.''

और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़-पकड़कर और नेव डालकर.

सब पवित्र लोगों के साथ (परमेश्वर के श्रद्धालू लोग, उस प्रेम का अनुभव पाते हैं) भलीभांति समझने की शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, ऊँचाइ और गहराई कितनी है.

और मसीह के उस प्रेम को जान सको. जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ (कि तुम्हें उनके परमेश्वरीय अस्तित्व का अनुभव हो, और तुम ऐसा शरीर बन जाओ जो स्वयं परमेश्वर से लबालब भरा है)'' (इफ़िसियों ३:१६-१८)

हमारी सबसे महान ज़रूरत यहीं है कि हम अपने ''भीतरी मनुष्यत्व'' में सुदृढ़ता पायें स्वयं परमेश्वर की उपस्थिति द्वारा. परमेश्वरने पौलूस से कहा था ''मेरा अनुग्रह (मेरा पक्ष और प्रेम पूर्ण दयालुता और कृपा) तेरे लिए बहुत है (वो किसी भी ख़तरे से जूझने के लिए काफ़ी है और किसी भी मुसीबत को मर्दानगी से झेलने में तुझे सक्षम बनाती है) क्योंकि मेरी समर्था निर्बलता में सिद्ध होती है; इसलिए मैं बड़े आनंद से अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा कि मसीह की सामर्थ्य मुझ पर छाया करती है.''

परमेश्वर का सामर्थ्य हमारी दुर्बलता में ही सिद्धता प्राप्त करता है. इसका मतलब ये है कि जब हम किसी क्षेत्र में कमज़ोर होते हैं तो हमें इसके लिए स्वयं से नफ़रत और स्वयं को नकारने की ज़रूरत नहीं. पौलूस की तरह ही, हमें ये महान अधिकार प्राप्त है कि हम अपनी दुर्बलताओं को स्वीकार करें और पवित्र आत्मा से मांगे कि वे उसे नियन्त्रित करें.

मेरे शरीर में अभी भी मुझमें ये आदत है कि मैं तेज़ उद्धण्ड और मूंहफट बनू. प्रभू की कृपा समर्था और शक्ति से फिर भी मैं इस योग्य हो सकी कि आत्मा के फल प्रकट कर सकूं और

दयालू, नेक, समझदार, और संयमी बन सकूं. इसका मतलब ये नहीं कि मैं कभी असफल नहीं होती. दूसरों की तरह ही मैं भी फ़िसलती हूँ गलतियां करती हूँ. पर मैं ये समझ गई हूं कि मुझे प्रभु की स्वीकृति प्रेम और सहायता पाने के लिए संपूर्ण होने की ज़रूरत नहीं और ना ही तुम्हें.

परमेश्वर आपके लिए है. वो आपके लिए वहां होना चाहते हैं शैतान आपके विरूद्ध है और वो आपके विरूद्ध होना चाहता है.

क्या आप स्वयं के पक्ष में है या स्वयं के विरूद्ध? क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की योजना के लिए सहयोग कर रहे हैं या शैतान की योजना से? क्या आप परमेश्वर से सहमति बनाये हैं या शत्रु से.

प्रिय के रूप में स्वीकृत

परमेश्वर ने हमें चुना अपने प्रिय, अपने लेपालक पुत्र के रूप में और हमें अपना कर अलग किया: ''जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों (उन्होंने सचमुच हमें अपना बनाने के लिए चुना और हमें पवित्र बनाकर अलग किया)

और अपनी इच्छा की सहमति के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसे लेपालक पुत्र हों.

कि उसके अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यार में सेत मेंत दिया. (इफ़िसियों १:४-६)

निर्गमन १९:५ में परमेश्वर अपने लोगों से कहते हैं हम सब लोग उनका निज धन है. और यही वचन आज भी लागू होता है उतना ही जितान इस्राएल की संतान पर हुआ युहन्ना ३:१ में यीशु ने निकोद्रदमस से कहा कि जो उन पर विश्वास करता है उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती (नकारे नहीं जाते)

आप शायद महसूस करे कि आप उनका निजधन नहीं है या स्वीकृत नहीं है, पर आप है. इफ़िसियों १:६ में पौलूस कहते हैं कि हम सब जो मसीह में विश्वास करते हैं ''उसमे प्रेम में सेंत मेंत दिए गए'' इसके द्वारा व्यक्तिगत कीमत और मूल्यवान होने का भाव तो प्राप्त होना चाहिए.

मुझे याद है प्रार्थना की कतार में खड़े हुए मैंने अपने आगे खड़ी हुई महिला को पास्टर से ये कहते हुए सुना जो सेवकाई कर रहे थे उसके लिए कि वो स्वयं से कितनी घृणा और नफ़रत करती है. पास्टर उसके साथ बहुत सख्त हो गए और उसे सख्ती से डांटा भी ये कहेत हुए ''तुम क्या समझती हो ख़ुद को? तुम्हे स्वयं से घृणा करने का कोई हक़ नहीं. परमेश्वर ने तुम्हारे लिए और तुम्हारी आज़ादी के लिए एक बड़ी कीमत चुकाई है. उसने तुमसे इतना प्रेम किया कि अपना इकलौता पुत्र भेजा कि तुम्हारे लिए मरे. तुम्हारी जगह दुख भोगे.'' तुम्हें कोई हक़ नहीं है स्वयं से घृणा करने काऔर नकारने का तुम्हारा ज़िम्मा है कि तुम वो स्वीकारो जिसे देने के लिए यीशु मरे''

वो महिला हक़्की-बक्की रह गई. मैं भी सकते मैं थी, बस सुनकर ही फिर भी कभी-कभी ऐसे ही कठोर शब्द लगते हैं. किसी को ये महसूस कराने के लिए कि वो कौन-सा जाल है जो शैतान ने हमारे लिए बिछाया है.

आत्म अस्वीकृति और आत्मघृणा कुछ हद तक बहुत पावन लगने लगते हैं. वो एक तरीक़ा सा बन जाते हैं. हमारे लिए कि हम अपनी ग़लतियों और असफलताओं और योग्यताओं के लिए स्वयं को सज़ा दे सकें. हम सम्पूर्ण नहीं हो सकते इसलिए हम स्वयं को नकारते हैं और घृणा करते हैं.

मैं चाहूंगी की आप यशायाह के इन प्रकाशदायी वचनों पर ग़ौर करें यशायाह ५३:३ जिसमें प्रभु यीशु मसीह का वर्णन किया गया है: ''वो तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुखी पुरूष था रोग से उसकी जान पहचान थी, लोग उससे मुख फेर लेते थे. वह तुच्छ जाना गया और हमने उसका मूल्य न जाना.''

आप क्या अपने मूल्य और योग्यता की प्रशंसा करने में असमर्थ रहते हैं? बेशक़ आप मूल्यवान हैं; वरना आपके स्वर्गीय पिता ने आपके उद्धार के लिए इतनी भारी क़ीमत ना चुकाई होती.

यशायाह ५३:४-५ बाद में और भी बताता जाता है कि मसीह ने ''निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया (हमारे रोग दुर्बलतायें और कठिनाईयां) और हमारे ही दुखों को उठा लिया (स्वयं सज़ा पाई) तो भी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दर्दुशा में पड़ा हुआ समझा

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी शांति के लिए उस पर ताड़ ना पड़ी, कि उसके कौड़े खाने से हम लोग चंगे हों जायें''

चंगाई का ''सामान'' जो यीशु ने हमारे लिए खरीदा अपना लहू देकर वो सबके लिए उपलब्ध है जो उस पर विश्वास करते हैं और उसे स्वीकार करते हैं. उस सामान में शामिल

है भावनात्मक चंगाई साथ ही साथ शारीरिक चंगाई भी. यदि किसी व्यक्ति ने ग़लती की है, न्याय की मांग है अस्वीकृति, घृणा और दण्ड. तभी तो यीशु ने ये सब हमारे लिए झेला, बिल्कुल वैसे ही जैसे हमारे पाप उन्होंने उठा लिए. कितना महिमामयी सत्य है.

क्योंकि यीशु हमारे पाप क्रूस पर उठाये उस सभी घृणा, नकारात्मकता और दण्ड के साथ जिसके हमारे पाप अधिकारी थे, इसलिए अब आपको स्वयं को नक़ारने और घृणा करने की ज़रूरत नहीं. जिस दिन मैंने अपनी सेवकाई शुरु की मैंने परमेश्वर से पूछा ''आप क्या चाहते हैं कि मैं अपनी पहली सभा मैं सिखाऊँ''? उन्होंने कहा ''मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे लोगों को बताओ कि मैं उन्हें प्रेम करता हूँ''

मैंने बहस की ''ओह, मैं शक्ति का संदेश देना चाहती हूँ'' यही तो मैंने भी कहा, मैं उस समय परमेश्वर की समर्था प्राप्त महिला कहलाना चाहती थी. मैं कुछ ऐसा चाहती थी जो बस लोगों को चौका दे. इक महान प्रकाश से एक महान ज्ञानबोध से मैंने कहा ''सभी जानते हैं कि आप उनसे प्रेम करते हैं, मैं युहन्ना ३:१६ का प्रचार करने नहीं जाना चाहती.''

उन्होंने कहा ''नहीं. बहुत कम लोग ये जानते हैं कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ. यदि जानते होते तो वो इससे बिल्कुल विपरीत व्यवहार करते जो वो इस समय कर रहे हैं''

बाईबल में लिखा है ''प्रेम में भय नहीं (भयका अस्तित्व ही नहीं) वरन् सिद्ध प्रेम (सम्पूर्ण प्रेम, मुकम्मल प्रेम) भय को दूर कर देता है क्योंकि भय से कष्ट होता है और जो भय करता है वह प्रेम से सिद्ध नहीं हुआ (अभी तक प्रेम की सम्पूर्णता में विकसित नहीं हुआ) हम इसलिए प्रेम करते है कि पहले उसने हमसे प्रेम किया (१ युहन्ना ४:१८-१९) मैं समझ गई कि यदि परमेश्वर के लोग ये जानते कि वो उनसे कितना प्रेम करते हैं, तो भय नहीं करते यदि वे परमेश्वर का प्रेम जानते तो वो इससे दूर नहीं भागते, बल्कि उसकी तरफ़ भागते.

इसलिए पहले प्रचार के एक साल बाद मैंने परमेश्वर के प्रेम पर ध्यान लगाया. मैं अपनी कार चलाते हुए यह कहती ''परमेश्वर मुझे प्रेम करते हैं, परमेश्वर मुझे प्रेम करते है. वे मुझसे मुझसे प्रेम करते हैं सृष्टि को रचने वाले मुझसे प्रेम करते हैं'' पहली किताब जो मैंने लिखी वो इसी साल को गुज़ारने का नतीज़ा थी जब मैंने परमेश्वर प्रेम पर ध्यान केन्द्रित किया ''टेल देम आई लव देम''

एक बार आप समझ लें कि परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं, तो आप भी एक संतुलित रूप से स्वयं से प्रेम कर सकते हैं. अपने आपको आईने में देखिये और अपने आपसे कहिए ''परमेश्वर तुम्हें प्रेम करते हैं'' स्वयं को स्वीकारो और मानो स्वयं को अक्सर कहो ''मैं तुम्हे स्वीकारती हूँ''

ये कहने के बाद कि ''तू अपने प्रभु परमेश्वर से प्रेम रखना'' यीशुने आगे जोड़ा ''तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना. इन आज्ञाओं से बड़ी और कोई आज्ञा नहीं'' (मरकुस १२:३०-३१) यदि आप स्वयं से निबाह नहीं सकते, तो आप पायेंगे कितना मुश्किल होता है दूसरों से निबहना और दूसरों को प्रेम करना. परमेश्वर के प्रेम की चंगाई को अपने जीवन में काम करने दें.

कभी-कभी आप स्वयं का ही अलिंगन करें, बस सिर्फ़ ये याद रखने के लिए कि परमेश्वर तुमसे प्रेम करते है, इसलिए आप प्रेम करने योग्य है अपने गिर्द अपनी बाहें लपेटिये और कहिए ''मैं अब और ज़्यादा स्वयं को नहीं नकारुंगा. इसकी बजाय मैं स्वयं को मसीह में स्वीकारूंगा मैं स्वयं से प्रेम करता हूँ स्वार्थ से नहीं. परंतु एक संतुलित तरीके से. मैं सम्पूर्ण नहीं, परंतु प्रभु की मदद से मैं दिन-ब-दिन सुधर रहा हूँ''

दूसरों द्वारा नकारे जाने को क्या कहें?

सम्भव है आज नहीं तो कल आप किसी न किसी तरह की अस्वीकृति से ग़ुज़रेंगे. हर कोई आपको पसंद नहीं करेगा. कुछ लोग तो शायद आपको उग्र भाव से ना पसंद करें. इसमें बहुत सहायता मिलेगी कि आप इस क्षेत्र में सिद्ध रवैया अपनाये.

हम जानते हैं कि ''यीशु बुद्धि और डील-डौल में और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढता गया'' (देखिये लूका २:५२) मेरे अपने ही मामले में मैं परमेश्वर से उनका अनुग्रह और लोगों का अनुग्रह मांगती हूं, और मेरा विश्वास है कि वह ये उपलब्ध करांते हैं. मेरा सुझाव है कि आप भी ऐसा ही करे. यहां एक प्रार्थना है जो स्वीकृत रवैया पाने में आपकी मदद करेगी.

''आज प्रभु मैं अपनी सर्वोत्तम क्षमता से कार्य करूंगा, आपकी सहायता द्वारा, और महिमा के लिए. मैं जान गया हूँ कि संसार में बहुत ही विभिन्न प्रकार के लोग हैं जिनकी कई प्रकार की उम्मीदे और विभिन्न प्रकार की सहमति और असहमति है. शायद मैं उन सब को सारा समय प्रसन्न ना कर सकूं. मैं परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला बनने में ध्यान लगाऊंगा और ना स्वयं को प्रसन्न करने वाला ना मनुष्यों को प्रसन्न करने वाला बनूंगा. बाकी मैं आपके हाथ में छोडता हूँ प्रभु आप मुझे अपने साथ और मनुष्यों के साथ अनुग्रह प्राप्त करायें, और लगातार मुझे अपने प्रिय पुत्र के रूप में बदलते जायें. धन्यवाद, प्रभु''

किसी को अस्वीकृति में आनंद नहीं मिलता, पर हम सब सीख जाते हैं कि कैसे अस्वीकृति से निपटना है और जीवन में आगे बढ़ना है यदि हम याद करें कि यीशु भी नकारे गये और उनसे घृणा की गई. उन्होंने अस्वीकृति पर विजय पाई अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को वफ़ादारी से पूर्ण करने के द्वारा.

अन्य लोगों द्वारा नकारे जाने से हमारी भावनायें घायल होती है. बेशक़ इससे ठेव लगती है, पर फिर भी अपने ही लिए हमें हमेशा ये याद रखना है कि यदि हम पुनर्जिवित है तो सहायक (पवित्र आत्मा) हममें बसता है और हमें मज़बूत बनाता है, बल देता है और सुख-चैन देता है.

मेरे ख़्याल से हम बहुत ही मूल्यवान समय और ऊर्जा नकारे जाने से बचने में गवां देता हैं और हम बन जाते हैं. ''मनुष्यों को प्रसन्न करने वाले'' (देखिये इफिसियों ६:६, कुलूस्सियों ३:२२)

आखिर हम ये बहस करते हैं, कि यदि हम हर किसी को प्रसन्न रखेंगे तो वे हमें नकारेंगे नहीं.

पीड़ा से बचने के लिए हममें से कुछ ने अपने आस-पास दीवारें खड़ी कर ली है. ताकि हम ठेस ना खायें, पर ये निरर्थक बात है. परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि इस संसार में जीना असंभव है यदि हम ठेस खाने को तैयार नहीं. सभी लोग सम्पूर्ण और सिद्ध नहीं. होते इसलिए वे हमे ठेस और निराशा पहुंचाते है, बिल्कुल, वैसे जैसे दूसरों को ठेस और निराशा पहुंचात है. मेरे पति बहुत ही शानदार इंसान है, पर कई बार उन्होंने मुझे ठेस पहुंचाई है, क्योंकि मैं ऐसे पीड़ादायी माहौल से ताल्लुक रखती हूँ कि जैसे ही उस प्रकार की बात हुई; मैं अपने आस-पास खुदको बचाने के लिए दीवारें खड़ी कर लेती. आखिर कार मेरा कहना होता, कि कोई ठेस नहीं पहुंचा सकता. अगर मैं किसी को नज़दीक ना आने दूं. हालांकि मैंने ये सीखा कि अगर मैं दूसरों को दीवारों से बाहर रखती हूँ तो ख़ुद भी दीवारों के अंदर क़ैद होती हूं.

परमेश्वर ने मुझे दिखाया है कि वो मेरे रक्षक बनना चाहते हैं, पर वो ऐसा नहीं कर सकते यदि मैं स्वयं रक्षा की कोशिश में ही व्यस्त रक्षा की कोशिश में ही व्यस्त रहूँ. उन्होंने ये वादा नहीं किया कि मैं कभी ठेस नहीं खाऊंगी. पर उन्होंने चंगाई का वादा किया है यदि मैं उनके पास आऊं तो वे चंगाई देंगे बजाय हर बात स्वयं करने का प्रयास करते हुए.

यदि भय के कारण आप अपने आस-पास दीवारें बना लेते हैं, तब आपको विश्वास द्वारा उन्हें गिरा देना चाहिए यीशु के पास जाईये. अपने हर पुरान घाव के साथ और उनकी कृपा द्वारा चंगाई पाईय. जब कोई आपको ठेस पहुंचात है, तो वो नया घाव भी यीशु के पास लाईये.

उसे सड़ने ना दे. उसे प्रभु तक लायें और वो अपने तरीके से उससे निपटेंगे आपकी तरीक़े से नहीं.

इस शास्त्र वचन को परमेश्वर के व्यक्तिगत वादे के रूप में स्वीकार करें ''मैं तेरा इलाज़ करके तेरे घावों को चंगा करूंगा,यहोवा की ये वाणी है; क्योंकि तेरा नाम ठुकराई हुई पड़ा है : वह तो सिय्योन है, उसकी चिंता कौन करता है'' (यिर्मयाह ३०:१७) भजन लेखक के साथ ये स्वीकार करें ''मेरे माता-पिता ने मुझे छोड़ दिया, परंतु यहोवा मुझे संभाल लेगा (अपना लेपालक पुत्र बना लेगा)'' (भजनसंहिता २७:१०)

प्रभु की सहायता से आप अस्वीकृति सह सकते हैं और प्रभु में संपूर्णता प्राप्त कर सकते हैं.

१२

अस्वीकृति का सम्बधों पर प्रभाव

वह व्यक्ति जिसके जीवन में अस्वीकृति की जड़ हो वह अक्सर संबंधों में अपाहिज हो जाता है. स्वस्थ, प्रेमपूर्वक, स्थाई संबंधों को बनाये रखने में किसी व्यक्ति में अस्वीकृति का भय नहीं होना चाहिये. जब भय जीवन में किसी व्यक्ति के लिये प्रमुख पहलू बन जाता है जो वह अपना सारा समय अस्वीकृति टालने में ही लगा देगा बजाय स्वस्थ संबंधों के निर्माण में समय लगाने के.

कोई भी जीवन में पूरी तरह अस्वीकृति से बच नहीं सकता. हर एक को किसी न किसी प्रकार की अस्वीकृति झेलनी पड़ती है. लेकिन, अगर इनकी संख्या इतनी बढ़ जाये कि मन पर निशान छोड़ जायें तो ऐसा व्यक्ति न केवल दूसरों से अपने संबंधों में असामान्य व्यवहार करेगा, पर यहीं वह परमेश्वर के साथ अपने संबंधों में भी करेगा.

वह शायद इन ग़लतफ़हमी में रहे कि उसे बिना शर्त प्रेम मिल रहा है. ये महसूस करते हुए कि उसे दूसरे लोगों का प्रेम अर्जित करना पड़ेगा वह शायद अपना प्रेम वापस खींच लेंगे, उसे नकारेंगे या छोड़ देंगे.

ऐसे अनुभवों को याद करने की पीड़ा अक्सर व्यक्तिगत संबंधों की आज़ादी में बाधा बनती है. लोग जो अस्वीकृति से डरते हैं और उससे उत्पन्न होने वाले अकेलेपन और तिरस्कार से, अक्सर अन्य लोगों द्वारा नियंत्रित किये जाने और उनकी चालाकी का शिकार होते हैं : क्योंकि वह ये मानते हैं कि स्वीकृति उनके काम करने पर आधारित है वह काम की सनक में लग जाते है बजाय स्वयं के व्यक्तित्व को क़ायम रखने के क्योंकि वे बस डरते हैं जो वे हैं वे होने से. वह अपना जीवन दिखावे में गुज़ार देते हैं – उन लोगों को पसंद करने का दिखावा जिनसे वे नफ़रत करते हैं; दिखावा करते है कि वह कुछ जगहों पर जाने और कुछ बातें करने का आनंद ले रहे है जबकि वास्तव में वे उनसे नफ़रत करते हैं, दिखावा करते हैं कि सब कुछ

ठीक ठाक है जबकि वो होती नहीं. ऐसे लोग लगातार दुख में डूबे रहते हैं क्योंकि वे जीवन के असली मुद्दों का सामना करने से डरते हैं.

दिखावा! दिखावा! दिखावा!

क्योंकि जो लोग अस्वीकृति से भयभीत है वे ये नहीं मानते कि वे स्वयं प्रेम योग्य हैं, अक्सर वो संसार के मापदण्ड इस्तेमाल करते हैं (पैसा, ओहदा, कपड़े, स्वाभाविक हुनर इत्यादि) स्वयं को और अन्य लोगों के सामने ये सिद्ध करने के लिए कि वे मूल्यवान हैं. वो दूख में डूबी ज़िंदगी ग़ुजारते है, हमेशा ये सिद्ध करने की कोशिश कि उनकी हैसियत है और क़ीमत है.

चाहे ऐसा व्यक्ति बाहरी कितनी भी सफलतायें पा ले, वो सच में सफल नहीं. जब तक वो ये नहीं जानता कि वो मसीह में क्या है. फिलिप्पियों ३:३ हमें प्रेरित करता है कि, ''खतनावाले हम ही हैं जो परमेश्वर का आत्मा के अगुवाई से उपासना करते हैं. और मसीह यीशु पर घमण्ड करते हैं और शरीर पर भरोसा नहीं रखते. (यानी उसपर भरोसा करते हैं बजाय बाहरी रूप और सहूलियतों के)'' ये याद रखना महत्वपूर्ण है कि बाहर रूप वो है जो हम देखते हैं, पर वो नहीं जो सचमुच हम हैं.

कोई व्यक्ति जो अस्वीकृति से प्रभावित हो वह प्रेम पाने के योग्य नहीं हो सकता. जब उसे ये मुफ़्त में मिल रहा हो. यदि वो प्रेम स्वीकार करेगा भी, तब जब उसे विश्वास हो जाए कि उसने उसे कमाया है सही व्यवहार करके मुझे याद है एक औरत जो कभी मेरे पति और मेरे लिए काम करती थी. वह ऐसे माहौल में पली बड़ी जहां स्वीकृति कार्यशीलता पर आधारित थी. जब वह स्कूल में अच्छा कार्य करती, उसके पिता उससे प्रेम दर्शाते; जब उनकी उम्मीद के अनुसार वह अच्छा ना कर पाती, तो वे अपना प्यार वापस खींच लेते. वे ऐसा बर्ताव न केवल अपनी बेटी से करते बल्कि अपने परिवार के बाक़ी सदस्यों के साथ भी यही करते; इसलिए उसने सीखा कि प्रेम सम्पूर्ण कारगुज़ारी के लिए इनाम के रूप में मिलता है, और ग़लतियों की सज़ा के रूप में रोक दिया जाता है.

बहुत से लोगों की तरह, वो पली बड़ी ये कभी ना जानते हुए कि उसकी भावनाओं और विचारधारा में ख़राबी है. उसने ये मान लिया कि सभी सम्बन्ध इसीतरह निभाये जाते हैं. क्योंकि वो हमारी सेवकाई में एक कर्मचारी थी, कई बार मौके आते जब मैं उससे पूछती कि उसका काम कैसा चल रहा है, क्या सबकुछ ठीक-ठाक है, या कोई ऐसा काम है जो उसे दिया गया है. वो उसे पूरा कर करने में असमर्थ है.

मैंने ये ग़ौर करना शुरू किया कि जब भी मैं इस महिला से किसी भी बात के बारे में पूछती और वो उसने अभी तक पूरी नहीं की होती; तो वो बहुत अजीब व्यवहार करने लगती. वो मुझसे दूर हो जाती, और मुझसे बात करने से कतराती और लगता जैसे वो पागलपन के वेग से काम कर रही है–इन सब बातों से मुझे बहुत असहजता महसूस होती. दरअसल, मैं अस्वीकृत महसूस करती.

मैं जानती थी कि उसके अधिकारी के रूप में मुझे ये हक़ था कि मैं उसके काम के बोझ के बारे में पता करूं. बिना हर बार इस तरह की मानसिक परीक्षा के गुज़रने के. इसलिए अन्त में मैंने इस स्थिति के लिए उसका सामना किया, इससे हमारे सम्बन्ध और भी उलझ गए और खट्टे हो गए. ये ज़ाहिर था कि हममें से कोई भी सचमुच समस्या की जड़ को समझ नहीं पा रहा था.

ये औरत सचमुच प्रभु से प्रेम करती थी. वह प्रभु से अपने रिश्ते के बारे में बहुत गंभीर थी, इसलिए इस स्थिति ने उसे उकसाया कि वो प्रार्थना करें और अपने व्यवहार के बारे में परमेश्वर से जवाब मांगे. अक्सर हम अपने बुरे व्यवहार का दोष किसी और पर लगाते हैं. बजाय परमेश्वर से ये मांगने कि वो समस्या की जड़ तक पहुंचे.

इस महिला को परमेश्वर से जो ज्ञान बोध हुआ उसने उसका जीवन ही बदल दिया. प्रभुने उसे बताया कि क्योंकि उसके पिता ने उसे नकारा था. जब वह सम्पूर्णता से कार्य नहीं कर सकी थी. उसने गलतफ़हमी में ये विश्वास कर लिया कि बाक़ी सब लोग भी वैसे है. यदि उसका कोई काम त्य समय के अनुसार पूरा नहीं होता और उस समय मैं उससे पूछ लेती, उसे यक़ीन था कि मैं उसे नकार रही हूँ क्योंकि अब मैं उससे प्रेम नहीं करती, इसलिए वोमुझसे दूर पीछे हट गई. मैंने उसे प्रेम करना नहीं छोड़ा था, पर उसने मेरा प्रेम स्वीकार करना छोड़ दिया था और इसलिए मैं भी नकारा महसूस करने लगी.

हम अक्सर यहीं बात परमेश्वर के साथ भी करते हैं. उनका प्रेम ऐसी किसी बात पर आधारित नहीं जो हम करते हैं या नहीं करते. रोमियों ५:८ में, पौलूस हमें बताते हैं, कि जब हम अभी पाप ही में थे तभी से परमेश्वर ने हमें प्रेम किया; वो ये कि जब उन्हें बिल्कुल जानते भी नहीं थे या उनकी परवाह भी नहीं करते थे.

परमेश्वर का प्रेम उन सबके लिए बह रहा है जो इसे स्वीकार करेंगे. पर इस कर्मचारी की तरह जो मेरा प्रेम स्वीकार न कर सकी, हम अक़्सर परमेश्वर का प्रेम अस्वीकार कर देते हैं. जब हम महसूस करते हैं कि हम इसके अधिकारी नहीं क्योंकि हमारी कारगुजारी सम्पूर्णता से कम हैं.

अस्वीकृत किये जाने का भय दूसरों की अस्वीकृति का कारण बनता है

यदि आप ये विश्वास नहीं कर सकते कि मूल रूप से आप प्रेम योग्य हैं, एक बहुमूल्य इंसान हैं. तो आप अन्य लोगों पर विश्वास नहीं करेंगे जो आपसे प्रेम करने का दावा करते हैं. यदि आप ये विश्वास करते हैं कि प्रेम और स्वीकृति के योग्य होने के लिए आपको सम्पूर्ण और सिद्ध होना चाहिए, तब आप एक दुखी जीवन के उम्मीदवार है, क्योंकि आप कभी भी सम्पूर्ण और सिद्ध नहीं हो सकते. जब तक आप इस सांसारिक शरीर में है.

आपका हृदय सम्पूर्ण हो सकता है, उसमें ये इच्छा हो सकती है कि आप हर बात के लिए परमेश्वर को प्रसन्न करें, पर आपकी करनी कभी भी आपके हृदय की इच्छा से मेल नहीं खायेगी. जब तक कि आप स्वर्ग नहीं चले जाते. आप हमेशा सुधर सकते हैं और सम्पूर्ण के स्तर तक बढ़ सकते हैं, पर आपको हमेशा यीशु की ज़रूरत पड़ेगी जब तक आप इस धरती पर है. कभी भी ऐसा समय नहीं आयेगा जब आपको उनकी क्षमा और उनके पाप धोने वाले लहू की ज़रूरत ना पड़े.

जब तक कि आप अपनी क़ीमत और हैसियत को मसीह में विश्वास के द्वारा स्वीकार नहीं करते, आप हमेशा असुरक्षित रहेंगे और उनपर विश्वास करने में अयोग्य रहेंग जो आपसे प्रेम करते हैं. लोग जिनमें विश्वास की क्षमता नहीं वो दूसरों की मंशा पर शक़ करते हैं. मैं जानती हूँ ये सच है क्योंकि इसी क्षेत्र में मेरी भी असली समस्या यही थी. तब भी जब दूसरे लोगों ने मुझसे कहा कि वो मुझे प्रेम करते हैं, मैं हमेशा उनके द्वारा ठेस लगने का इंतज़ार करती कि वे मुझे निराश करें, मुझे असफल करें या मेरा शोषण करें. मैं सोचती कि वो ज़रूर किसी चीज़ के पीछे हैं; वरना वो मुझसे इतने अच्छे ना होते. मैं बस ये विश्वास नहीं कर पा रही थी कि कोई मुझे चाहेगा सिर्फ़ मेरे लिए. कोई न कोई कारण तो होना ही चाहिए.

मैं स्वयं के बारे में इतना बुरा महसूस करती. भरी रही शर्म से, दण्डित भावना, आत्मघृणा और आत्म अस्वीकृति से, कि जब भी कभी कोई मुझसे प्रेम या स्वीकृति दिखाता, मैं अपने मन में सोचती ख़ैर यदि ये व्यक्ति इस समय मुझे पसंद कर रहा है, तो मुझे तब पसंद नहीं करेगा जब मेरी असलीयत जानेगा. इसलिए मैं दूसरे लोगों से प्रेम नहीं पाती या परमेश्वर से भी. ये मेरे व्यवहार में झलकता, जो और ज़्यादा भद्दा होता जा रहा था. जब मैं सभी को ये सिद्ध करने की कोशिश कर रही थी कि मैं प्रेम योग्य नहीं जैसा कि मैं स्वयं के बारे में सोचती थी.

आप अपने बारे में जो भी कुछ विश्वास करें पर जो अंदर है वही प्रकट होकर बाहर आयेगा. यदि आप महसूस करें कि आप प्रेम योग्य और प्रेम करने वाले नहीं, तो ऐसा ही आप व्यवहार

करेंगे. अपने संदर्भ में, मैंने माना कि मैं प्रेम योग्य नहीं हूँ, इसलिए वैसा ही व्यवहार मैं करती. मेरा लोगों के साथ निबाह बहुत कठिन था. मैं मानती कि दूसरे लोग अंत में मुझे नकार देंगे और इसीलिए वो ऐसा करते क्योंकि मेरा रवैया मेरे कार्यों में प्रकट हो जाता. मैं स्वस्थ प्यारे और टिकने वाले रिश्ते निबाह नहीं सकती थी. (सिद्ध करो कि तुम मुझसे प्रेम करते हो वाला रवैयां, जब भी कभी किसीने मुझे प्रेम करने की कोशिश की तो मैंने उस व्यक्ति पर इतना दबाव डाल दिया कि वह मुझे लगातार ये सिद्ध करके दिखाये. मुझे हर रोज़ सकारात्मक थपकियों की ज़रूरत होती. जिसमें मैं स्वयं के बारे में अच्छा महसूस कर पाती. मुझे हमेशा हर बात के लिए प्रशंसा की ज़रूरत होती वरना् मैं अस्वीकृत महसूस करती.

यदि मुझे वो बल ना मिलता जो मैं चाहती तो मुझे प्रेम रहित महसूस होता.

मुझे हर बात में अपनी मर्ज़ी भी चाहिए होती. जब तक लोग मुझसे सहमत होते और मेरी इच्छाओं के आगे झुकते मुझे अच्छा महसूस होता यदि कभी, कोई मुझसे असहमत होता या मेरे अनुरोध को ठुकरा देता, चाहे थोड़ी-सी मात्रा में भी, तो मुझमें एक भावनात्मक प्रतिक्रिया उभरती जो मुझे अस्वीकृत और प्रेमरहित महसूस कराती.

जो लोग मुझसे प्रेम करते मैं उनके सामने असंभव मांगे रखती थी. मैं उन्हें हताश कर देती थी मैं उससे कभी भी संतुष्ट नहीं होती जो वो मुझे दे रहे होते. मैं उन्हें कभी भी मेरे प्रति ईमानदार रहने और मेरा सामना करने की अनुमति नहीं देती. मेरा पूरा ध्यान स्वयं पर ही केन्द्रित रहता और मैं यही उम्मीद करती कि सब भी मुझपर केन्द्रित रहें. मैं दरअसल लोगों को अपनी क़ीमत अनुभव कराने के भाव से देखती, जो ऐसी चीज़ है जो केवल परमेश्वर ही दे सकते हैं.

तब मैंने सीखा है कि मेरी हैसियत और क़ीमत का भाव मसीह में है, ना कि अन्य चीज़ों और अन्य लोगों में. जब तक मैंने ये सच्चाई नहीं जान ली, तब तक मैं बहुत ही दुखी थी और स्वस्थ रिश्ते बनाये रखने में पूरी तरह अयोग्य थी.

परमेश्वर का प्रेम प्राप्त करना भावनात्मक चंगाई का प्रमुख पहलू है, जैसा कि मैंने पहले के अध्यायों में कहा है. एक बार जब कोई व्यक्ति परमेश्वर में सचमुच विश्वास करने लगता है, जो सम्पूर्ण है, और वह उससे प्रेम करते हैं उसकी असम्पूर्णताओं सहित. फिर वो ये विश्वास करना शुरू करता है कि शायद दूसरे लोग भी उससे प्रेम करें. विश्वास बढ़ना शुरू होता है, और वह उस प्रेम को स्वीकार करने योग्य होता है जो उसे दिया जा रहा है. जब से मैंने परमेश्वर पर विश्वास करना और स्वयं के लिए उनका प्रेम पाना शुरू किया है मेरी सबसे मौलिक ज़रूरत

प्रेम और आत्ममूल्य का भाव पूरा हो गया. मुझे अब और लोगों की ज़रूरत नहीं थी जो मुझे हमेशा उत्साहित रख सकते और मुझे सुरक्षित महसूस कराते. दूसरों की तरह मेरी भी ज़रूरतें है जो मैं चाहती हूँ लोग पूरी करें, हम सबको ज़रूरत है उत्साह सम्मान और आदर की पर अब मुझे अपनी क़ीमत जानने के लिए दूसरों की ओर देखने की ज़रूरत नहीं.

अब यदि मेरे पति किसी ऐसी बात के लिए जो मैंने की है मेरी प्रशंसा करना भूल जाएं तो शायद मैं निराश होऊं पर टूटूंगी नहीं. क्योंकि मैं जानती हूँ कि मेरी अपनी क़ीमत है उससे अलग जो मैं करती हूँ. हर व्यक्ति प्रशंसा पाना और जो वह करता है उसके लिए पहचाना जाना पसंद करता है. पर ये बहुत अच्छा लगता है अगर टूटने से बच सकूं. अगर मुझे वो मान्यता और प्रशंसा ना प्राप्त हो. एक बार जब मैं अपनी क़ीमत और मूल्य पहचना गई कि ये उस पर आधारित नहीं कि मैं क्या करती हूँ उस पर कि मैं मसीह में क्या हूँ? मुझे अब बिल्कुल महसूस नहीं होता कि मुझे लोगों के लिए कुछ करके दिखाना है. मैंने फ़ैसला किया है कि दोनों ही तरह जो मैं हूँ उसके लिए या तो मुझसे प्रेम करेंगे या नहीं करेंगे. दोनों ही तरह, मैं इस ज़ानकारी में ज़्यादा सुरक्षित हूँ कि परमेश्वर अभी भी मुझसे प्रेम करते हैं.

ये बहुत महत्वपूर्ण है कि हम प्रेम पायें. उसके लिए जो हम हैं ना कि उसके लिए जो हम करते हैं. जब हम ये जान जाते हैं कि हमारी क़ीमत हमारी पहचान में हैं ना कि हमारे व्यवहार और अपनी ध्यान हटा सकते हैं कि लोग मेरे बारे में क्या सोच रहे हैं. हम उनकी ज़रूरतों और उनपर ध्यान दे सकते हैं. बजाय उनसे ये उम्मीद करने के कि वो हमेशा हमारी और ज़रूरतों की ओर ध्यान दें. यही आधार है स्वास्थ प्रेमपूर्ण और चिरस्थाई रिश्तों का.

१३

आत्मविश्वास आत्म-अनुभूति का

आत्मविश्वास की परिभाषा ये दी गई है कि वह सुनिश्चितता का गुण है जो किसी को कुछ करने की ओर ले जाता है, विश्वास कि कोई सक्षम है और कोई स्वीकृत है, वो सुनिश्चितता जो किसी को स्पष्ट निडर और सरल बनाती है. यदि आप सोचते है कि ये त्रिकोणी परिभाषा है आप देखेंगे कि क्यों शैतान उस पर हमला करता है जो ज़रा भी आत्मविश्वास दिखाये.

लोग जिनका शोषण हुआ, नकारे गए या त्यागे गए उनमें अक्सर आत्मविश्वास की कमी होती है. जैसा कि हमने पहले अध्यायों में कहा है कि ऐसे व्यक्ति शर्म और आत्मग्लानि से भरे होते हैं और उनकी आत्मछवि ख़राब होती है.

शैतान व्यक्तिगत आत्म विश्वास पर अपना हमला शुरू करता है जब भी कभी और जहां भी कभी उसे कोई प्रवेश मिले, ख़ासकर बचपन के संवेदनशील दिनों में. तब भी जब बच्चा अभी कोख में ही हो शैतान अपना अंतिम उद्देश्य शुरू कर देता हैं जो है उस व्यक्ति की संपूर्ण तबाही. सीधी सी वजह है. ऐसा व्यक्ति जिसमें आत्मविश्वास नहीं वो कभी भी बढ़कर ऐसा काम नहीं करेगा जो परमेश्वर के राज्य को महिमा मण्डित करें या ऐसी बात जो शैतान के राज्य के लिए घातक हो, और इसलिए ऐसा व्यक्ति कभी भी अपने जीवन के लिए परमेश्वर की योजना को सम्पूर्ण नहीं कर पायेगा.

सम्भावित असफलता + असफलता का डर = असफलता

शैतान ये नहीं चाहता कि आप अपने जीवन में परमेश्वर की योजना को सम्पूर्ण करें क्योंकि वह जानता है कि आप उसकी अंतिम हार का एक भाग है. यदि वो आपको ये विश्वास दिला सके और आपमें ये सोच डाल सके कि आप अयोग्य हैं, फिर आप कोई भी उपलब्धि पाने की

कोशिश ही नहीं करेंगे. चाहे आप एक प्रयास भी करें असफलता का आपका डर आपकी हार निश्चित करेगा. जो आपके आत्म विश्वास की कमी के कारण, शायद आप पहले से ही सोच रहे हों. इसीको अक्सर कहा जाता है ''असफलता का उपलक्षण''

चाहे परमेश्वर के मन में आपके लिए कितनी ही अद्भुत योजनायें क्यों न हों एक बात आपके लिए जानना ज़रूरी है; परमेश्वर की क्षमता कि आपके जीवन में वो अपनी इच्छा पूरी कर सकें उनमें आपके विश्वास और उनके वचन में आपके विश्वास पर निर्भर है यदि आप सचमुच खुश और सफल होना चाहते हैं, तब आपको ये विश्वास करना शुरू कर देना चाहिए कि परमेश्वर की आपके जीवन के लिए एक योजना है और वे आपके लिए अच्छी बाते करनी शुरू कर देंगे जैसे आप उन पर अपना विश्वास करते हैं.

शैतान चाहता है कि आप और मैं अपने बारे में इतना खराब महससू करें कि हममें कोई आत्म विश्वास ही न रहे. पर यहां एक शुभसमाचार है: हमें स्वयं में आत्मविश्वास की ज़रूरत नहीं– हमें यीशु में आत्मविश्वास की ज़रूरत है.

मुझमें आत्मविश्वास है सिर्फ़ इसलिए कि मैं जानता हूँ कि मसीह मुझमें है, हमेशा मौजूद हैं और हर बात में मेरी मदद के लिए तैयार हैं जो भी मैं उनके लिए करने की कोशिश करूंगा. बिना आत्मविश्वास के एक विश्वासी कि जेम्बो जेट के सामान है जो हवाई पट्टी पर खड़ा है बिना इंधन के; बाहर से वह अच्छा लागता है, पर उसके अन्दर कोई शक्ति नहीं. यीशु हमारे भीतर हों, तो हम में वो सब करने की समर्था आ जाती है जो हम अपने बलबुते पर कभी नहीं कर सकते.

यीशु हमारी दुर्बलताओं और योग्यताओं के लिए मरे, और वे हमें अपनी समर्था और योग्यता देने के लिए राज़ी है यदि हम अपना विश्वास उनमें रखें. युहन्ना १५:५ में, वो हमें बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत सिखाते है ''मुझसे अलग होकर (मुझसे कटकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते.)''

एक बार आप ये सच्चाई जान लें, तो जब शैतान आपसे ये झूठ बोलता और कहता है ''तुम कोई भी काम सही नहीं कर सकते'' तो आपकी प्रतिक्रिया उसके प्रति ये हो सकती है ''शायद नहीं, पर यीशु जो मुझमें हैं ये कर सकते हैं; और वो करेंगे क्योंकि मैं उनपर भरोसा करता हूँ और अपने पर नहीं, वो हर चीज़ में, हर बात में मुझे सफलता दिलायेंगे मैं जो भी हाथ में लूंगा'' (यहोशू १:७)

या शत्रु आपसे ये कहे ''तुम यह करने के योग्य नहीं हो इसलिए कोशिश भी मत करो, क्योंकि तुम फिर असफल होगे जैसे तुम अतीत में असफल होते रहे हो, आपकी प्रतिक्रिया यह

हो सकती है यह सच है कि बिना यीशु के मैं एक भी काम करने के योग्य नहीं पर उनके साथ और उनमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ'' (देखिये फिलिप्पियों ४:१३)

जब भी शैतान आपको आपके अतीत का स्मरण कराये आप उसे उसका भविष्य याद दिलायें. यदि आप अंत तक बाईबल पढ़ें तो आप देखेंगे कि शैतान का भविष्य कितना अंधियारा है. दरअसल वो पहले ही एक हारा हुआ शत्रु है कुलुस्सियों २:१५ में लिखा है ''उसने (परमेश्वर ने प्राधनताओं और अधिकारों को अपने ऊपर से उतारकर, उनका खुल्लम खुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के कारण उन पर जै जै कार की ध्वनि सुनाई'' आप डेर में जीने की शैतान की परीक्षा का प्रतिरोध कर सकते हैं क्योंकि यीशु ने उसकी सभी योजनाओं को हराकर जीत हासिल की है और उसकी हार का सार्वजनिक प्रदर्शन किया है आत्मा की सच्चाई में. शैतान जानता है कि उसका थोड़ा ही समय बाक़ी है, और वो ये बात किसीसे भी बेहतर जानता है (देखिये प्रकाशित वाक्य १२:१२) सिर्फ़ हमारे विरूद्ध इस्तेमाल करने के लिए उसके पास केवल एक ही शक्ति है जो हम उसे देते हैं उसके झुठों पर विश्वास करके.

हमेशा याद रखिये ''शैतान एक झूठा है यीशु ने शैतान के विषय में ये कहा'' वो तो आरम्भ से हत्यारा है और सत्य पर स्थिर न रहा, क्योंकि सत्य उसमें है ही नहीं: जब वह झूठ बोलता तो अपने स्वभाव से बोलता है क्योंकि वह झूठा है बरन् झूठ का पिता है (युहन्ना ८:४४)

आत्मविश्वास के बारे में झूठ

हर कोई आत्मविश्वास के बारे में बात करता है कितनी क़िस्म के सेमिनार आत्मविश्वास पर किए जाते हैं कलीसियाओं और धर्म निर्पेक्ष संसार में आत्मविश्वास को अक्सर स्वयं पर आत्मविश्वास के रूप में लिया जाता है क्योंकि हम सब जानते हैं कि हमें स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करने की ज़रूरत है यदि हमें जीवन में कभी भी कुछ पाना है. हमें सिखाया गया है कि सभी लोगों में मूलभूत आवश्यकता ये होती है कि वे स्वयंपर विश्वास रखें. हालांकि ये ग़लत धारणा है.

दरअस्ल, हमें स्वयं में विश्वास रखने की ज़रूरत नहीं– हमें स्वयं में यीशु में विश्वास रखने की ज़रूरत है. उनसे अलग होकर हमें स्वयं अच्छा महसूस करने की हिम्मत भी नहीं करनी चाहिए. जब प्रेरित पौलूस हमें निर्देश देते हैं ''शरीर पर भरोसा ना रखो'' (देखिये फिलिप्पियों ३:३) वो जो कहते हैं उसका मतलब यही है कि ख़ुद पर भरोसा ना रखो, या कोई भी ऐसी बात जो आप यीशु से अलग होकर करते हैं.

हमें आत्मविश्वास की ज़रूरत नहीं, हमें ज़रूरत है परमेश्वर के विश्वास की. बहुत से लोग अपना पूरा जीवन सफलता की सीढ़ी पर चढ़ते-चढ़ते गुज़ार देते हैं लेकिन जब वो ऊपर

पहुंचते हैं तो पाते हैं कि उनकी सीढ़ी ग़लत इमारत पर लगी थी. अन्य संघर्ष करते हैं. ऐसा व्यवहार करने की कोशिश में कि वो कुछ मात्रा में स्वयं में आत्मविश्वास उत्पन्न कर सकें, केवल बार-बार असफलता हाथ लगती है. ये दोनें ही किया यें एक ही नतीजे पर पहुंचती हैं: खालीपन और दुख.

मैंने पाया है कि ज़्यादातर लोग दो श्रेणियों में डाले जा सकते हैं (१) जो कभी भी कोई उपलब्धि हासिल नहीं करते, चाहे वो कितना ही कठिन प्रयास क्यों न करें और अन्त में स्वयं से नफ़रत करने लगते हैं उपलब्धि की कमी के कारण या (२) उनमें प्रर्याप्त स्वाभाविक योग्यतायें होती है कि वो महान उपलब्धियां हासिल कर सकें पर वो सब उपलब्धियों श्रेय स्वयं लेते हैं, जिससे उनमें घमण्ड भर जाता है. दोनों ही तरह से वो असफल है– परमेश्वर की नज़र में.

केवल वही व्यक्ति सच में परमेश्वर की नज़र में सफल है जो ये जानता है कि वह स्वयं में कुछ नहीं, मसीह में ही सब कुछ है हमारा घमण्ड और हमारा बड़ बोला पन केवल मसीह यीशु में ही होना चाहिए, और केवल उन्हें ही पूरी महिमा (श्रेय) मिलना चाहिए चाहे जो भी उपलब्धि हम हासिल करें हक़ीक़त में, हर व्यक्ति में भरोसा, (विश्वास होता है) बाइबिल इस सत्य को मान्यता देती है रोमियो १२:३ में कि परमेश्वर ने हर एक को परिणाम के अनुसार विश्वास दिया है; महत्वपूर्ण बात ये है कि हम इसे कहां लगाते हैं. कुछ अपना विश्वास स्वयं में डालते हैं और कुछ अन्य लोगों या कुछ चीज़ों में– और फिर कुछ वो भीलोग है जो सचमुच अपना विश्वास परमेश्वर में रखते हैं.

अपने बारे में चिंता ना करो, अपनी दुर्बलतायें या अपनी शक्ति स्वयं से अपनी आंखे हटा लो और प्रभु पर लगाओ. यदि तुम कमज़ोर हो वो तुम्हें बल दे सकते हैं. यदि आप में बल है, तो वो इसलिए कि उन्होंने हो आपको दिया. इसलिए दोनों ही तरह से, आपकी नज़रे उनपर होनी चाहिए अपने आप पर नहीं.

बिना सच्चे भरोसे के (यीशु में) आप अपने लिए बहुत-सी उलझी समस्यायें उत्पन्न कर लेंगे. यहां थोड़ी-सी सूचि दी गई है:

- आप कभी भी मसीह में सम्पूर्ण योग्यता हासिल नहीं कर पायेंगे (हमने इसे विस्तार में दिया है)
- आपका जीवन भय द्वारा निमन्त्रिता होगा और आप दुख से भर जायेंगे
- आप कभी भी सच्चा आनंद, परिपूर्णता या संतुष्टि नहीं जान पायेंगे. आप पवित्त आत्मा को निराश करेंगे जिसे आपसे जीवन में परमेश्वर की योजना पूरी करने के लिए लाया गया है पर वो आपके सहयोग के बिना कभी भी ऐसा नहीं कर पायेगा.

- आप अपने लिए दुख के बहुत से दरवाज़े खोल देंगे जैसे आत्मघृणा, दण्डित भावना, अस्वीकृति का डर, असफलता का डर, मनुष्य का डर, सम्पूर्णता की सनक, लोगों को प्रसन्न करने की ललक, (जो परमेश्वर को प्रसन्न करने की सम्भावनायें निकाल देती है) दूसरों द्वारा नियन्त्रित और चालाकी में फसना इत्यादि.
- आप स्वयं के व्यक्तित्व को भूल जायेंगे यानी स्वयं के हक़ से वंचित हो जाएंगे.

अंतिम ख़तरा वो है जिसकी मैं अब जांच करूंगी पुस्तक के पहले हिस्से में कुछ हद तक हमनें अन्य मुददों पर नज़र डाली, पर ये वाला बहुत महत्वपूर्ण है और इसे ज़्यादा ध्यान की ज़रूरत है.

अपने व्यक्तित्व पर भरोसा

१ कुरिन्थिओं ३:१६-१७ और रोमियों १२:४-६ में पौलूस हमें सिखाते हैं कि हम सब एक देह हैं क्योंकि जैसे एक देह में बहुत से अंग होते हैं और सब अंगो का एक-सा ही काम नहीं. इसलिए हमारा व्यक्तित्व एक देह होते हुए भी अलग-अलग हैं ये सत्य बहुत ही महत्व पूर्ण है क्योंकि अगर हम ना समझें तो स्वयं को दुखी कर सकते और अपने अंदर छुपी परमेश्वर की समर्था का गला घौंट सकते हैं जब हम कुछ ऐसा करने की कोशिश करते हैं या कुछ ऐसा बनने की कोशिश करते हैं जिसके लिए हमें रचा नहीं गया.

हमने अक़्सर ये कथन सुना है कि हम सब अलग-अलग सांचों में ढलकर बनें है, जिसका मतलब है कि हममें से कोई भी दो एक जैसे नहीं. एक दूसरे से अलग-अलग होने में कोई ख़राबी नहीं. हम सबको विभिन्न बनाने में परमेश्वर का कोई उद्देश्य है. यदि वे हम सबको एक जैसा बनाना चाहते तो उनके लिए मुश्किल नहीं था. इसके विपरीत हमारा अनौखापन उनके लिए महत्वपूर्ण था और वो इस हद तक पहुंचे कि हम हममें से हर एक को अलग ही फिंगर प्रिंट्स दिए हैं.

अलग होना बुरा नहीं है ये परमेश्वर की योजना है. हम सब एक ही योजना के अंग है, परमेश्वर की योजना. फिर भी हम में से हर एक का कार्य अलग-अलग है क्यों कि हम में से हर एक अलग-अलग व्यक्तित्व रखता है.

मैं व्यक्तित्व की परिभाषा कुछ इसतरह देती हूँ प्रथक, विशेष गुणों द्वारा पहचाने जाना या पहचान के विशेष गुण, विशेष या अनौखा. कई साल तक मैंने सोचा कि मैं विचित्र थी– अब मैं जान गई हूँ कि मैं अनौखी. इसमें बहुत बड़ा अंतर है यदि मैं विचित्र होती तो ये इस

ओर इशारा करता कि मेरे अंदर कुछ ख़राबी है पर कुछ ऐसा नहीं हुआ जो होना चाहिए था; जब कि मेरा अनौखा होना ये इशारा करता है कि मुझ जैसा कोई और दूसरा नहीं, और इसलिए मेरी खास क़ीमत है. आपको विश्वास करना चाहिए कि आप अनौखे हैं, विशेष और मूल्यवान हैं.

कोई और बनने की कोशिश ना करें

मेरी पहचान का एक अनौखा गुण है मेरी आवाज. ज़्यादातर औरतों की धीमी और मधुर आवाज़ होती है पर मेरी गहरी और सख्त आवाज़ है कई बार कोई जो मुझे नहीं जानता यदि मेरे घर पर फ़ोन करता है तो वह सोचता है कि घर के किसी मर्द ने फ़ोन उठाया है मैं हमेशा इस अनौखी विशेषता से सहज नहीं थी; वास्तव मैं इसे काफ़ी असुरक्षित थी. मैं सोचती थी कि मेरी आवाज़-सी है.

जब परमेश्वर ने मुझे अपना वचन सिखाने के लिए बुलाया और मैंने महसूस करना शुरू किया कि एक दिन मैं पब्लिक एड्रस सिस्टम पर (लाऊड स्पीकर्स पर) बोल रही होऊंगी और मेरी अपनी रेडियों और टेलीविज़न वाली सेवकाई ली होगी मैं घबरा गई. मैंने सोचा मैं ज़रूर नकार दे जाऊंगी क्योंकि मैं बहुत ही अलग आवाज़ रखती थी उससे जो मेरे विचार में किसी महिला की होनी चाहिए. मैं स्वयं की तुलना उससे कर रही थी जो मेरी धारणा में सामान्य था.

क्या कभी आपने स्वयं की तुलना किसी और से की है? इससे आपको कैसा महसूस हुआ हमें स्वयं की तुलना दूसरों से नहीं करनी पर यीशु को अपना उदाहरण बनने देना है और सीखना है कि कैसे परमेश्वर की उपस्थिति और व्यक्तित्व की प्रकट करना है जो हममें रहता है.

हीरे के बहुत से कोण होते हैं परमेश्वर एक दोषरहित हीरा है और हममें से हर एक उनके विभिन्न कोणो को दर्शाता है. उन्होंने अपना भाव हममें से हर एक में डाला है और हम मिलकर उनकी देह बनते हैं. क्या होता यदि हमारे शरीर पूरे बने होते मूंह या कान, टांगेया बांहे? शायद हमें बोलने या सुनने, उठाने या चलने में कोई तक़लीफ़ ना होती, पर बाक़ी कामों का क्या होता? हम कितना गंदा दिखते यदि परमेश्वर की ये मंशा होती कि हम सबको हूबहूं एक जैसा बनाये.

ऐसा क्यों है कि हम किसी और की तरह दिखने की कोशिश में इतना संघर्ष करते हैं, बजाय इसके कि जो हम हैं उसका आनंद लें? क्योंकि हम शैतान के झूठों पर विश्वास करते

हैं. हम उसपर विश्वास करते हैं. वो यो कि जब तक हम परमेश्वर के वचन का सत्य ना जान लें और वही सत्य है जो हमें आज़ाद करायेगा.

परमेश्वर की कृपा कोई और व्यक्ति बनने से आपको उपलब्ध नहीं होगी. प्रभु ने आपको रचा आप बनने के लिए जितना सर्वोत्तम आप बन सकें. किसी और की तरह बनने की कोशिश भूल जाईयें. वो हमेशा एक भूल होती है क्योंकि अक्सर जिस व्यक्ति की तरह बनना आपने चुना है. वो व्यक्ति जिसमें आपके अनुसार सबकुछ एक साथ है दरअस्ल वो व्यक्ति स्वयं वैसा नहीं है जैसा आप सोचते हैं. मैं आपको कुछ उदाहरण दे रही हूँ.

उदाहरण १

अपने जीवन के एक मुक़ाम पर मैंने फ़ैसला किया कि मेरे पास्टर की पत्नी ही एक ''आदर्श महिला'' है वह अभी भी एक बहुत ही प्यारी औरत है, नाज़ुक ख़ुबसूरत भूरे बालों वाली, धीमी आवाज़ वाली, सभ्य विनम्र और उसे दया का वरदान भी मिला था. मैं दूसरी और मेरी भारी आवाज़ और स्पष्ट वादिता, तीखा व्यक्तित्व, ज़्यादा मधुर नहीं लग रहा था ना ही सहज विनम्र या दयावान. मैंने वैसा बनने की भरपूर कोशिश की बिना सफलता के. मैंने सचमुच कोशिश की अपनी आवाज़ का स्तर धीमा करने की और अपनी आवाज़ बदलने की ताकि मैं और ज़्यादा स्त्री सुलभ लगू पर मैं बतीजतन मैं नकली आवाज़ वाली लगने लगी.

ये महिला और मैं आपस में ख़ास मित्र नही थे हालांकि हमने कोशिश की और चाहते थे कि हम मित्र हों, पर बस ये हो नहीं पा रहा था. अन्ततः हम दोनों के आमने-सामने ने ये प्रकट किया कि मैं सचमुच उस जैसा होने में आनंद नहीं ले रही थी क्योंकि उसकी मौजूदगी हमेशा मुझपर दबाव डालती थी कि उस जैसा बनूं और सचमुच एक और दिलचस्प बात जो हम दोनों को पता लगी वो ये थी कि शैतान ने झूठों का यही पुलिंदा उसको भी दे रखा था जो मैं थामें हुए थी, वो मेरी तरह बनने का संघर्ष कर रही थी. वो कोशिश कर रही थी कि कम नाज़ुक और ज़्यादा प्रभावी बने, और लोगों और बातों से सीधे निपटे ज़्यादा निडरत्ता से. अब इसमें कोई हैरानी नहीं कि क्यों हम एक सफल रिश्ता क़ायम न कर सके-हम दोनों ही एक दूसरे पर दबाव डाल रहे थे ये याद रखिये कि परमेश्वर ने कहा था ''तू लालच ना करना'' (निर्गमन २०:१७) इसमें किसी दूसरे का व्यक्तित्व भी शामिल है.

उदाहरण-२

मेरी साथ वाली पड़ोसन एक बहुत ही प्यारी लड़की थी जिसे अलग-अलग तरह की योग्यताएं मिली थी. वो माहिर थी सिलाई में उसका बाग़ था और सब्ज़ियां डिब्बों में बचा सकती थी, गिटार बजाती और गाती, विभिन्न प्रकार की वालायों और हस्त कलाओं में माहिर थी,

वॉल पेपर लगाती पेंट करती, गाने लिखती- संक्षेप में वो सब बातें जो मैं नहीं कर सकती थी. क्योंकि मैंने सोचा था कि मैं तो विचित्र हूँ ही और जो योग्यताएं मुझमें थी उसकी मैं क़द्र नहीं कर रही थी. मैं सिर्फ़ उसके बारे में सोच रही थी कि मुझमें किन-किन योग्यताओं की कमी है और कौन-कौन-सी चीजें है जो मैं नहीं कर सकती.

क्योंकि मुझे परमेश्वर का बुलावा मिला था उसके वचन के प्रचार और शिक्षा के लिए इसलिये मेरी इच्छायें बहुत-सी मेरी परीचित महिलाओं से अलग थीं. जब कि वो गृह-सज्जा की पार्टीओं में जा रही थी, मैं घर पर प्रार्थना कर रही होती. मैं हर बात के प्रति बहुत गम्भीर थी. मुझे लगता जैसे मेरी अन्दर कुछ बहुत वज़नदार चीज़ चल रही है जबकि दूसरी औरतें मज़े करती और खूब आनंद उठाती, मैं लगातार अपनी तुलना उनसे करती, हमेशा ये महसूस करती कि मुझमें ही ख़राबी है. इसतरह की भावना तब उत्पन्न होती है जब लोग शर्मसार हों और असुरक्षित हो कि वे मसीह में क्या हैं.

मुझे अवश्य ये सीखने की ज़रूरत थी कि कुछ सहज अनुभव करूं और थोड़ा मज़ा ले सकूं, पर परमेश्वर मेरे अंदर कुछ कर रहे थे जिसे करने की ज़रूरत थी. ये मुझे दिखा रहे थे कि कुछ लोगों के जीवनों में कितनी गड़बड़ियां हैं और मुझे बुला रहे थे कि उनके वचन के ज़रिये उस गड़बड़ी से निकलने में उनकी मदद करूं. मेरी ज़रूरत ये थी कि मैं दूसरे लोगों की समस्याओं की गम्भीरता और वज़न से प्रभावित हो सकूं.

मैं एक प्रतीणा के दौर में थी जिस दौरान परमेश्वर मेरा इस्तेमाल नहीं कर रहे थे; ये तैयारी का समय था, पलने और बढ़ने का समय था जो एक पूरे साल चला. इस साल के दौरान मैंने फ़ैसला किया कि समय आ गया है कि मैं एक ''सामान्य स्त्री' बनूं. मैंने एक सिलाई की मशीन ख़रीदी और सिलाई के कुछ सबक लिए मुझे इनसे नफ़रत थी पर मैंने इन्हें जारी रखने के लिए ख़ुद को मजबूर किया. सिलाई भी कुछ ऐसी चीज नहीं थी जिसमें मैं कभी माहिर हो सकी. जब कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में योग्यताहीन है, तो वो बस उसमें बिल्कुल सही होगा ही नहीं.

सिलाई मेरे लिए इतना बड़ा संघर्ष थी. मैं लगातार ग़लतियां करती रही जिसने मुझे स्वयं से और निराश किया और में स्वयं के बारे में बुरा महससू करती रही. अन्ततः मैंने इतने सिलाई के सबक तो सीख लिए कि मैं अपने परिवार के लिए कुछ कपड़ा सी सकती जो उन्होंने कर्त्तव्य परायण भाव से पहने मैंने ये भी फ़ैसला किया कि मुझे टमाटर उगाने चाहिए और उन्हें डिब्बों में बन्द करना चाहिए. वो बस अच्छे लगने शुरू हो गए थे और वो तैयार थे कि उन्हें तोड़ा जाए, जब एक रात में कीड़ों के झुण्ड ने आक्रमण किया और उनमें बड़े-बड़े काले, छेद छोड़ गये. पर मैं टमाटरों को डिब्बे में बन्द करने का निश्चय कर चुकी थी पर मैंने डिब्बे बंद करने के सारे यन्त्र भी ख़रीद लिए थे. इसलिए मैं किसानों के हाट में गई और टमाटरों की एक टोकरी

ख़रीद लाई. मैंने काम किया और पसीना बहाया, पसीना बहाया और काम किया जब तक कि अन्त में मैंने उन टमाटरों को डिब्बे में बन्द नहीं कर दिया एक बार फिर हर क्षण में इससें नफ़रत कर रही थी. पर मैंने सोचा कि मैं ये सिद्ध कर रही हूँ कि मैं भी ''सामान्य'' हूँ.

इन पीड़ादायी अनुभवों से गुज़रने के बाद मैंने सीखा कि मैं इसलिए तक़लीफ़ में हूँ क्योंकि परमेश्वर मेरी मदद नहीं करेंगे उसके लिए जिसके लिए उन्होंने मुझे बनाया नहीं. मुझे किसी और की तरह नहीं बनना– मैं जैसी हूँ वैसा ही मुझे रहना है, बिल्कुल वैसे ही आपको आप बनकर रहना है.

अपना आप बनिये

आपको अपना आप बननें का अधिकार है. शैतान को वो अधिकार चुराने न दें.

यदि आप किसी ऐसे को जानते हैं जो एक अच्छा मसीही उदाहरण है और परमेश्वर का चरित्र प्रकट कर रहा है या पवित्र आत्मा का फल शायद आप उसके उदाहरण पर चलना चाहें. प्रेरित पौलूस ने कहा है ''तुम मेरी-सी चाल चलो (मेरा उदाहरण लो) जैसा मैं मसीह-सी चाल चलता हूँ'' (१ कुरिन्थओं ११:१) किसी व्यक्ति का उदाहरण लेना बिल्कुल अलग है किसी व्यक्ति की तरह बनने की कोशिश करना उसके व्यक्तित्व या वरदानों के लिए.

मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप इसपर सोचें. क्या आप इस सत्य को स्वीकार करते है कि आप बाक़ी दूसरों की तरह नहीं बनाये गये, कि आप एक अनौखे व्यक्ति हैं? क्या आप अपने अनौखेपन का आनंद ले रहें है, या आप स्वयं से ही झगड़ रहे हैं जैसा मैं कर रही थी?

कितने सारे लोग अपने अंदर ही अंदर एक व्यक्तिगत युद्ध में मग्न हैं, स्वयं की तुलना हर उस व्यक्ति से करते जिसके भी वो करीब आयें जिससें वे स्वयं का न्याय या दूसरे व्यक्ति का न्याय करने लगते हैं. वो ये नतीजा निकालते हैं कि उन्हें इस दूसरे व्यक्ति की तरह होना चाहिए, या दूसरों को उनकी तरह होना चाहिए.

झूठ!

हममें से किसीकी भी किसी और की तरह नहीं होना चाहिए हममें से हर एक को प्रभु का एक अंग बनना है जो वो चाहते हैं हम बनें– अनौखे व्यक्तित्व वाले व्यक्ति– ताकि मिलकर हम परमेश्वर की योजना को सम्पूर्ण करें और उसको महिमामयी बनायें.

१४

क्षमा आपको मुक्त करा के दोबारा जीने देती है

बीटी गलतियों और पापों के लिये क्षमा प्राप्त करना, और दूसरों को उनकी गलतियों और पापों के लिए क्षमा करना, दो सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं भावनात्मक चंगाई के क्षमा उन्हें दिया एक उपहार है जो इसके हक़दार नहीं.

परमेश्वर चाहते हैं कि हम क्षमा की प्रकिया शुरू करें उनके लिए जिन्होंने हमें ठेस पहुंचाई है हमें पहले स्वयं क्षमा का दान देकर. जब हम उनके आगे अपने पाप स्वीकार करते हैं वे हमारे पाप क्षमा कर देते हैं, और उनसे इतना दूर कर देते हैं जितना पूर्व से पश्चिम हो और फिर उन्हें कभी याद नहीं करते.

जब आप पीछे देखने के मोह में पड़ते हैं, याद कीजिए वो वादे जो उन्होंने शास्त्रवचन में किए हैं ''यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है. (चाहे हमारे सभी कार्य उनकी इच्छा अनुसार ना हों तो भी) (१ यूहन्न १:९)

''अदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है.''

जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवाइयों पर दया करता है. क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; और उसको स्मरण रहता है कि हम मिट्टी ही है:''
(भजनसंहिता १०३:१२-१४)

''पर वह व्यक्ति तो पापों के बदलों एक ही बलिदान सदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर दाहिने जा बैठा और उसी समय से इसकी बात जोह रहा है कि उसके बैरी उसके पांच के नीजे की पीढ़ी बनें.

क्योंकि उसने एक ही चढ़ाने के द्वारा उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सर्वदा के लिए सिद्ध किया.

और पवित्र आत्मा भी हमें यही गवाही देता है; क्योंकि उसने पहलें कहा था, कि प्रभु कहता हैं; कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद उनसे बांधूंगा वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्थाओं को उनके हृदय पर लिखूंगा और मैं उनके विवेक में डालूंगा.

फिर वह यह कहता है कि मैं उनके पापों को और उनके अधर्म के कामों को कभी स्मरण ना करूंगा'' (इब्रानियों १०:१२-१७)

पर यदि हमें परमेश्वर के वादे वाली क्षमा का लाभ लेना है, तो हमें इसीको विश्वास में ग्रहण करना होगा.

बहुत साल पहले जब मैं पहले-पहल प्रभू से अपना रिश्ता क़ायम कर रही थी, हर रात मैं उनसे क्षमा मांगती अपने पिछले पापों के लिए. एक शाम जब मैं. अपने बिस्तर पर घुटने टेके थी, मैंने सुना कि प्रभु ने मुझसे कहा ''जॉयस, मैंने पहली बार ही तुम्हें माफ़ कर दिया था पर तुम मेरी क्षमा का उपहार प्राप्त नहीं कर सकी क्योंकि तुमने स्वयं को माफ़ नहीं किया''

क्या आपने परमेश्वर का क्षमा का उपहार पाया है? यदि नहीं; और आप ऐसा करने को तैयार हैं, तो परमेश्वर से मांगिये कि वो आपके सारे पाप इसी क्षण माफ़ कर दें. फिर ये प्रार्थना ऊंचे स्वर मे कहें; (मैं आपकी क्षमा स्वीकार करता हूँ प्रभु उस पाप के लिए (पाप का वर्णन) शायद ये कठिन हो कि आप अपनी ग़लतियां और अतीत के पाप शब्दों में बयान कर पायें पर उन्हें ऊंची आवाज़ में बोलने से आपको मदद मिलती है कि आप वो मुक्ति पायें जो आपको चाहिए.

एक बार मैं प्रार्थना कर रही थी मैंने परमेश्वर से कहा मुझे क्षमा करें क्योंकि ''मैंने उसे गंवा दिया''

''क्या गंवाया?'' उन्होंने पूछा. ''ख़ैर, आप तो जानते हैं प्रभु'' मैने जवाब दिया, ''आप जानते हैं मैंने क्या किया.''

बेशक वो जानतो थे पर मेरे लिए ये बात स्पष्ट की गई कि मुझे अपने पापों को शब्दों में बयान करने की ज़रूरत है. प्रभुने मुझे दिखाया कि ज़बान एक फावड़ा है जो हमारे भीतर के कयें मे गहराई तक पहुंचता है और बाहर लाता है जो भी कुछ वहां नीचे पड़ा है. एक बार जब आप स्पष्ट रूप से क्षमा का उपहार मांग ले, तो उसे स्वीकार करके ऊंचे शब्दों में 'दोहरायें':

प्रभु, मैं आपकी क्षमा स्वीकार करती हूँ (पाप का वर्णन) के लिए, यीशु मसीह हमें मैं स्वयं का क्षमा करती हूँ और आपको क्षमा का उपहार अपना बना कर स्वीकार करती हूँ मैं विश्वास करती हूँ कि आपने मेरा ये पाप मुझसे पूरीतरह दूर कर दिया, उसे इतनी दूरी पर पहुंचा दिया

जहां से वो कभी भी वापस नहीं मिल सकता- जैसे पूर्व पश्चिम से दूर है, और मैं विश्वास करती हूँ, प्रभु कि आप इसे कभी याद नहीं रखेंगे.

आप पायेंगे कि ऊंचे स्वर में बोलना हमेशा सहायक होता है क्योंकि ऐसा करने से आप परमेश्वर वचन के प्रति अपनी सहमति की घोषणा कर रहें हैं. शैतान आपका मन नहीं पढ सकता पर अवश्य ही वह आपके शब्द समझ सकता है सभी प्राधानताओं, शक्तिओं और अंधकार के शासकों के सामने घोषणा करो (देखिये इफिसियों ६:१२) कि मसीह ने आपको आज़ाद किया आर आप उस आज़ादी में चलने की मंशा रखता है.

जब आप बोले तो ऐसा सुनाई दे कि आप सचमुच इसके प्रति गम्भीर है, यदि शैतान आपके मन में उस पाप को दोबारा लाने की कोशिश करता हूँ. अपराधभाव और दण्डित भावना के रूप में तो अपनी ये घोषणा फिर से दोहरायें उसे बतायें ''मैं उस पाप के लिए क्षमा कर दी गई. उससे निपट लिया गया इसलिए मैं अब इसकी परवाह नहीं करती'' शैतान क़ानून बघारने वाला है, इसलिए यदि आप चाहें तो आप उस तारीख का हवाला भी दे सकते हैं जब आपने परमेश्वर से मांगा और उसके वायदे वाली क्षमा प्राप्त की.

बैठे रहकर शैतान के झूठ और आरोप ना सुनें: उसे पलटकर जवाब देना सीखें.

आपनी ग़लतियां एक दूसरे के आगे स्वीकारें

याकूब अध्याय ५ में वो तरीक़ा बताया गया है कि चंगाई और इलाज के लिए क्या ज़रूरी है ''यदि तुम में कोई दुखी हो (दुरव्यवहार और बुराई झेल रहा हो) तो वह प्रार्थना करें:

यदि आनंदित हो तो वह स्तुति के भजन गाये (परमेश्वर की स्तुति) यदि तुम में कोई रोगी हो तो कलीसिया के प्राचीनों (आत्मिक अगुवों) को बुलाये, और वह प्रभु के नाम से उस पर तेल मलकर उसके लिए प्रार्थना करें.

और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जायेगा और प्रभु उसको उठाकर खड़ा करेगा; यदि उसने पाप भी किये हो, तो उसकी भी क्षमा हो जायेगी.

इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने अपने पापों को मान लों (अपनी ग़लतियां, अपने ग़लत क़दम, अपने अपराध अपने पाप) और एक दूसरे के लिए प्रार्थना करो, जिससे चंगे हो जाओ (आत्मिक मन और हृदय में) धर्मी जन की प्रार्थना से बहुत कुछ हो जाता है (वचन १३-१६) हमें एक दूसरे के आगे अपने दोष मानने चाहिए. पर इसका ये मतलब नहीं कि हर बार जब हम पाप करें हमें किसी और व्यक्ति के आगे स्वीकार करने की ज़रूरत है हम जानते हैं कि यीशु हमारा महायाचक है हमें परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने के लिए लोगों के पास जाने की ज़रूरत नहीं. ऐसा पुरानी वाचा के अर्न्तगत होता था, पर नई वाचा में नहीं होता.

याक़ूब ५:१६ को व्यवहारिक तौरपर कैसे लागू किया जा सकता है? मेरा मानना है कि हमें केवल परमेश्वर का वचन जानने की ज़रूरत नहीं, पर उसे अपने दैनिक जीवनों मैं कैसे व्यवहारिक बनाना है. किसी व्यक्ति के ख़ून निकल रहा हो उसके पास एक पट्टी है, पर यदि उसे यहै नहीं पता कि पट्टी कैसे बांधनी है तो ख़ून बहने से वह मर भी सकता है. बहुत से लोगों के पास परमेश्वर का वचन है फिर भी वो ''ख़ून बहने से मर रहे हैं'' (अत्याचार में जी रहे हैं) क्योंकि वो नहीं जानते कि हर दिन की परिस्थिति में वचन को कैसे लागू करना है.

मेरा मानना है कि याक़ूब ५:१६ को कुछ इस तरीक़े से लागू करना चाहिए. पहले, ये यक़ीन कर लें कि आप जानते हैं कि मनुष्य पाप क्षमा नहीं कर सकता- कि ये परमेश्वर का काम है. फिर भी मनुष्य परमेश्वर की क्षमा को आपके सामने घोषित कर सकता है बता सकता है. कोई आपके पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना भी कर सकता है (देखिये युहन्ना ५:१६) वैसे ही जैसे यीशु ने प्रार्थना की थी जब वो क्रूस पर थे कि जिन्होंने उन्हें दण्डित किया है उन्हें क्षमाकर दिया जाए.

इस भाग के कब व्यवहार में लाने की ज़रूरत? मेरा मानना है कि यहूदा ५:१६ को व्यवहार में लाने का समय तब होता है जब आप अपने अतीत के पापों के कारण दुख भोग रहे हैं. अंदर से ज़हर होने के कारण आप चंगे नहीं हो सकते- शारीरिक, मानसिक, आत्मिक या भावनात्मक तौरपर.

एक बार प्रकाश में आ जाने पर, वो चीज़े जो अंधकार में छुपी थी वो अपनी शक्ति खो देती हैं. लोग डर के कारण चीज़े छुपाते है शैतान उनके मनों में कुटकुटकर ये विचार भरता है, 'कि लोग क्या कहेंगे यदि उन्हें पता चले कि मेरा शोषण हुआ? सभी ये समझेंगे कि मैं घृणित हूँ. मैं अस्वीकार की जाऊंगी इत्यादि' मेरी समाओं में बहुत से लोग आये है प्रार्थना के लिए जो मुझसे अपनी मनकी बात कहते हैं ''मैंने ये किसीको नहीं बताया, परमुझे लगता है कि मुझे इसे अपने सिस्टम से बाहर निकालने की ज़रूर है मेरा शोषण हुआ था'' वो बेकाबू होकर रोते हैं. इस रोने से अक्सर उन्हें वो मुक्ति मिलती है जिसकी उन्हें सख्त ज़रूरत थी. ठेस खाये लोग मेरे साथ सुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि वे जानतें है कि कभी मेरा भी शोषण हुआ था.

अब, कृपा ये समझ ले कि मैं ये नहीं कह रही कि सबको ये स्वीकार करने की ज़रूरत कि उनका शोषण हुआ और चंगाई की प्रार्थना का वो अनुरोध करें. यदि आप शोषण के प्रभावों का दुख भोग रहे हैं, तो पवित्र आत्मा की अगुवाई में आयें, ना केवल ये फ़ैसला करने के लिए कि आपको किसी के सामने पाप स्वीकृति को ज़रूरत है या नहीं, पर ये भी फ़ैसला करने के लिए कि किसके आगे आपको पाप स्वीकार करने चाहिए. ऐसा व्यक्ति बहुत सावधानी से चुना जाना चाहिए. मेरा सुझाव है कि ये कोई सिद्ध मसीही हो जिस पर आप भरोसा कर

सकते हैं. यदि आप विवाहित है और आपका जीवन साथी इन मापदण्डों पर खरा उतरता है पहले उसी को ओर ध्यान दें.

आपको ये जानना चाहिए कि अक़्सर जब जीवन साथी को इस स्थिति के बारे में पता चलता है, तो वह शोषण करने वाले के प्रति गुस्से से प्रतिक्रिया करता है. इसलिए इससे पहले कि आप ये पाप स्वीकृति करें आप इस बात का ध्यान रखें कि आपका जीवन साथी आत्मा के नियन्त्रण में है और परमेश्वर के निर्देशों पर चलने को तैयार है बजाय व्यक्तिगत भावनाओं के.

आपका जीवन साथी शायद आपसे कुछ सवाल पूछे, जिससे शायद आपको आसानी से ग़लत-फ़हमी हो सकती है यदि उनके लिए तैयार नहीं है. उदाहरण के लिए जब मैंने अपने पति को अपने पिता द्वारा इतने सालों से यौन शौषण के बारे में बताया, उन्होंने मुझसे पुछा ''क्या तुमने उन्हें कभी रोकने की कोशिश नहीं की? ''और'' तुमने किसीको क्यों नहीं बताया''? इस बात का ध्यान रखें शायद आपका जीवन साथी आपकी परिस्थितियों और भावनाओं को ना समझता हो और शायद उसे कुछ जवाबों की ज़रूरत हो मेरे मामले में, जैसे ही मैंने अपने पति को बताया कि मैं डर से नियन्त्रित थी, वे समझ गये.

एक दूसरे के आगे अपनी ग़लतियां स्वीकार करने का तरीक़ा और प्रार्थना स्वीकार करना बहुत ही शक्तिशाली यन्त्र है दासता की बेड़ियां तोडने का. मैं कुछ समय तक एक विशेष क्षेत्र में ईर्ष्या के कारण दुख भोग रही थी, और अवश्य ही मैं नहीं चाहती थी कि कोई इस बारे में जाने, इसलिए मैंने इसके लिए प्रार्थना नहीं मांगी इसके बजाय, मैंने अकेले लड़ने की बनी, और परिणाम स्वरूप कोई प्रगति नहीं कर पाई जब परमेश्वर ने मुझे ज्ञान बोध दिया याकूब ५:१६ में ''इसलिए तुम आपस में एक दूसरे के सामने अपने-अपने पापों को मान लो'' मुझे ये महसूस हुआ कि मेरे जीवन में भी कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जो मुझ पर नियन्त्रण रखे हुए है, सिर्फ इसलिए क्योंकि मैं उन्हें छिपा रही थी और उन्हें बाहरताने के लिए बहुत घमण्ड महसूस कर रही थी.

डर हमसे बातें छुपवाता है, पर, घमण्ड भी यही कर सकता है मैंने स्वयं को विनम्र किया और अपनी समस्यायें अपने पति को बताईं और उन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की. इसके बाद, इस क्षेत्र में मैने मुक्ति का अनुभव करना शुरू कर दिया.

सावधान रहिये

कईबार लोग किसी समस्या से स्वयं को मुक्त करा लेते हैं, और इसी प्रक्रिया में, ये समस्या किसी और की दे देते हैं. सत्य के महत्व के बारे में मेरी शिक्षा सुनने पर, कि कैसे बाते छुपाना समस्या उत्पन्न कर सकता है, एक महिला जो मेरी सभा में शामिल हुई थी, मेरे पास ये स्वीकार

करने के लिए आई कि वो हमेशा मुझे बहुत ज़्यादा ना पसंद करती रही थी, और वो मेरे बारे में, चुगली भी कर रही थी और अफ़वों फैला रही थी फिर उसने मुझसे क्षमा याचना की, जो बेशक़ मैं देने को तैयार थी. वो बहुत ही उत्तेजित होकर गई क्योंकि उसे अपनी समस्याओं से छुटकारा मिल गया पर मैं पीछे रही होगी, किस-किस से बात कर रही होगी, क्या उन्होंने उसका विश्वास किया होगा और ये सबे कितने अर्से से चल रहा था.

संतुलन बुद्धिमता और प्रेम बाईबिल में प्रमुख शब्द है, इन्ही गुणों पर कार्य करने से आपकी प्रगति में तेज़ी आयेगी. एक व्यक्ति जो बुद्धिमता और प्रेम से भरा है वो बात पर सोचेंगा. परमेश्वर से दिशा निर्देश मांगेगा, और परिस्थिति को संकलित ढंग से संभालेगा.

भाग दो

—

पर अब मैं मुक़्त हूँ

''सो यदि पुत्र तुम्हें स्वतन्त्र करेगा,
तो सचमुच तुम स्वतन्त्र हो जाओगे''

यूहन्ना ८:३६

१७

अपने शोषणकर्ता को क्षमा करना

बहुत से लोगों के लिए उसे क्षमा करना जिसने उनका शोषण किया हो. भावनात्मक चंगाई का सबसे कठिन भाग होता है. ये वो बाधा भी बन सकता है जो चंगाई को रोक. वो जिन्हें दूसरों द्वारा बुरी तरह ठेस पहुंची हो वो जानते हैं कि बहुत आसान है कह देना 'क्षमा करो' बजाय इसे करने के.

मैंने बहुत अधिक मात्रा में समय बिताया है इस समस्या का अध्यन करने और इस पर प्रार्थना करने में प्रभु से इसके लिए व्यवहारिक जवाब मागंते हुए. मैं प्रार्थना करती हूँ इस विषय पर जो मैं आपको बताने वाली हूँ. वो इस महत्वपूर्ण मुद्दे के लिए एक ताज़ी दिशा बने. जिससे निपटना ज़रूरी है, पहले, मैं कहना चाहूंगी कि अच्छी भावनात्मक सेहत के लिए कड़ुवाहट पाले रखनी, क्रोध और क्षमा ना करने की भावना का होना ठीक नहीं. क्षमा ना करने की भावना पालना ज़हर पीने की तरह है इस उम्मीद में कि आपका शत्रु मरेगा. क्षमा न करने की भावना किसी में भी ज़हर डालती है जो उसे रखता है और उसे और कड़वा बनाती है. और ये असंभव है एक साथ चंगे होना और कड़ुवे बने रहना.

यदि आप शोषण के शिकार हैं, आपको एक चुनाव करना होगा. आप हर ठेस या समस्या को या बेहतर बना सकते हैं या बत्तर. फैसला आपका है.

कैसे एक ठेस या समस्या आपको बेहतर इंसान बनाती है? परमेश्वर आपको ठेस या घाव नहीं पहुंचाते, पर एक बार ये आप पर लग जाएं, तो वे इसे आपके लाभ में परिवर्तित कर सकते हैं. यदि ऐसा करने के लिए आप उनपर भरासा करें.

परमेश्वर ग़लतियों को चमत्कार में बदल सकते है. शैतान की मंशा है कि आपको तबाह करें पर परमेश्वर जो भी शैतान आपके विरूद्ध भेजता है उसे लेकर आपकी भलाई में परिवर्तित कर सकते हैं. आपको इस पर विश्वास करना होगा. या आप दुख में डूबे रहेंगे. जैसा कि एक भजन लेखक ने बहुत पहले लिखा, ''यदि मुझे विश्वास ना होता, (तो मेरा क्या होता?) कि जीवितों की पृथ्वीपर यहोवा की भलाई को देखूंगा.'' (भजनसंहिता २७:१३)

हालही में मैंने एक औरत का खत पाया जिसने लिखा ''मैं जानती हूँ कि परमेश्वर तुम्हारे शोषण का कारण नहीं थे, पर यदि तुम्हारा शोषण ना हुआ होता, तो तुम मेरी मदद नहीं कर सकती थी.'' वह आगे लिखती ''कृपया इसके बारे में बुरा ना सोचना क्योंकि परमेश्वर तुम्हारी पीड़ा का इस्तेमाल कर रहे हैं. दूसरों को आज़ाद करने के लिए.''

बहुत साल पहले मेरे आगे एक चुनाव था. मैं चुन सकती थी कि कड़ुवाहट में भरी रहूँ, घृणा और आत्म दया में डूबी रहूं, उन लोगों से क्रोधित रहू जिन्होंने मुझे ठेस पहुंचाई. साथ-साथ उनसे भी जो अच्छी सामान्य ज़िंदगी का आनंद उठा रहे हैं. वो जिन्हें मेरी तरह कभी ठेस नहीं पहुंची. या मैं परमेश्वर का मार्ग चुन सकती थी. और उन्हें स्वयं को अच्छा व्यक्ति बनाने देती क्यों जो कुछ मैंने सहा था उसके वाबज़ूद मैं उनका धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे वो कृपा दी कि मैंने उनका मार्ग चुना बजाय शैतान का मार्ग चुनने के.

परमेश्वर का मार्ग है क्षमा.

मुझे याद है जब मैंने पहले पहल परमेश्वर के साथ चलना शुरू किया था एक शाम मैंने महसूस किया कि एक ही समय मैं प्रेम और घृणा दोनों से भरी नहीं रह सकती. इसलिए मैंने परमेश्वर से कहा कि घृणा को मुझसे दूर कर दें. जो इतने लम्बे समय से वहां थी. ऐसा लगा जैसे वो मेरे भीतर गहरे में गये और इसे खरोंचकर बाहर निकाल दिया. इस अनुभव के बाद, मैंने दोबारा कभी अपने पिता से घृणा नहीं की पर मैं अभी भी उनसे नाराज़ थी. उन्हें नापसंद करती थी, और बहुत ही असहज महसूस करती जब मैं उनके आप-पास होती थी. मैं चाहती थी कि आपसी कड़ुवाहट भरी भावनाओं और अन्दर के बुरे रवैये से मुक्त हो जाऊं, पर ''कैसे'' यहीं मेरे लिए बहुत बड़ा प्रश्न था.

जब मैंने परमेश्वर के वचन का अध्यन और उसपर ध्यान लगाना शुरू किया और पवित्र आत्मा से बंधुत्व स्थापित किया तब परमेश्वरने मुझे बहुत सी बातें सिखाई जो मैं आपको बताना चाहूंगी कि मैंने सम्पूर्ण चंगाई की ओर बढ़ते हुए कैसे धीरे-धीरे कई सालों में इलाज पाया.

भावनात्मक चंगाई के क़दम

पहले आपको परमेश्वर की क्षमा का मार्ग चुनना होगा. वह इसको आप पार लादेंगे. यदि आप एक विजय जीवन जीना चाहते हैं और भावनात्मक सेहतमंदी का आनंद उठाना चाहते हैं. तो आपको ये विश्वास करना होगा कि परमेश्वर का मार्ग ही सबसे उत्तम है, इसपर चलने को चुने. ये कारग़र होता है.

अगला, परमेश्वर की कृपा के बारे में सीखें. कृपा पवित्र आत्मा की वो समर्था है जो हमें प्राप्त होती है परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए. याकूब परमेश्वर के बारे में कहता है, ''वह तो और भी अनुग्रह देता है (पवित्र आत्मा की शक्ति कि बुराई की सभी आदतों से पूरीतरह

बूझ सकें) इस कारण ये लिखा है कि परमेश्वर अभिमानियों से विरोध करता है और दोनों पर अनुग्रह करता है (वो जो विनम्रता से उसे स्वीकार करते हैं)'' (याकूब ४:६)

आप शायद क्षमा करना चुनें, और फिर भी आपको हताशा से जूझना पड़े क्योंकि आप अपने बलबूते पर क्षमा करने की कोशिश कर रहे हैं. जबकि आपको परमेश्वर की शक्ति की ज़रूरत होती है. भविष्यवक्ता जकयहि हमें बोलता हैं ''ना तो बल से, और ना शक्ति से परंतु मेरे आत्मा के द्वारा होगा... सेनाओं के यहोवा का यहीं बचन है.'' (जकर्याह ४:६)

ये आपके लिए बहुत ज़रूरी है कि आप अपने शोषण करने वाले के आमने सामने हों ताकि आप अपने दिल में उन्हें पूरी तरह क्षमा करने का लाभ पा सकें. दरअसल चाहे जिन्होंने आपका शोषण किया हो वो जीवित ना हों, आप फिर भी महान मुक्ति का आनंद उठायेंगे यदि आपने उन्हें आपके साथ किये हुए पाप से मुक्त किया.

क्षमा करना चुनने के बाद, और ये महसूस करने के बाद कि आप परमेश्वर की मदद के बिना क्षमा नहीं कर सकते, प्रार्थना करें और हर एक व्यक्ति जिसने आपको ठेस पहुंचाई मुक्त करें. इस प्रार्थना को ऊंचे शब्दों में दोहरायें:

मैं क्षमा करता हूं ———————————— (नाम) को ———————— (जो भी उसने आपके साथ किया हो) के लिए. मैं आपके मार्ग पर चलना चुनता हूँ प्रभु. मैं आपसे प्रेम करता हूँ, और ये परिस्थिति आपके हाथ सौंपता हूँ. मैं अपनी चिंता आप पर डालता हूँ, और मैं अपने पूरे इलाज के लिए आप पर विश्वास करता हूँ. मेरी सहायता करें प्रभु, मुझे उन सभी घावों से चंगाई दें जो मुझपर लगाये गये.

बहुत से शास्त्रवचन हैं जो हमें बताते हैं कि हमारा प्रतिशोध परमेश्वर लेते हैं. (देखें यशायाह ५४:१७) परमेश्वर ही वो हैं जो हमें हर्ज़ाना देते है, वो हमारा इनाम है. (देखिये यशायाह ३५:४) वो न्याय के परमेश्वर हैं, और केवल वहीं न्याय दिला सकते हैं. केवल वहीं आपको पहुंचाई ठेस के बदले आपकी भरपाई कर सकते हैं और केवल वहीं आपके इंसानी या मानवी शत्रुओं से निपटने में सक्षम हैं.

बाईबल विश्वासियों को प्रोत्साहित करती कि एक दूसरे के साथ मेल मिलाप से रहे और अपनी देखभाल के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें: ''हे प्रियो अपना पल्टा ना लेना: परंतु क्रोध को अवसर दो (परमेश्वर के क्रोध को) क्योंकि लिखा है, पल्टा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला लूंगा.'' (रोमियों १२:१८)

''क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा कि पल्टा लेना मेरा काम है (बदला लेना और पूरा न्याय दिलाना मेरे वश में है) मैं ही बदला दूंगा (मैं तुम्हारी भरपाई करूंगा) और फिर ये कि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा.''

''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है.''
(इब्रानियों १०:३०-३१)

एक मुख्य सच्चाई जो परमेश्वर ने मुझे बताई जब मैं शमा के विषय से निपट रही थी वो ये थी; ''ठेस खाये लोग ठेस पहुंचाते है'' बहुत अधिक संख्या में शोषणकर्ता स्वयं किसी न किसी तरीके से शोषित हुए थे अक्सर वो जो खण्डित परिवारों में पले बड़े वो अपने परिवारों में भी खण्डित माहौल उत्पन्न कर देते हैं.

जब मैं अपने जीवन की ओर देखती हूँ मुझे यही रूप रेखा दिखती है. मैं एक खण्डित परिवार में पली बड़ी, इसलिए मैं अपने ही घर में ऐसा बिखरा माहौल पैदा कर रही थी मुझे व्यवहार का कोई और तरीका मालूम ही नहीं था. इस बांध ने मेरी बहुत ज़्यादा मदद की.

ठेस खाये लोग ठेस पहुंचाते हैं

मैं सचमुच ये विश्वास नहीं करती कि मेरे पिता ने समझा होगा कि वह मेरे साथ जो व्यवहार कर रहे हैं उसका भावनात्मक असर क्या है, ना ही मैं इस पर विश्वास करती हूँ कि उन्होंने महसूस किया हो कि वो मेरे लिए एक ऐसी समस्या उत्पन्न कर रहे हैं. जिससे मैं अपना पूरा जीवन निपटती रहूंगी. जब मैंने सबसे पहले अपने पिता का सामान किया इस विषय पर कि उन्होंने मेरे साथ क्या किया था, तो उन्होंने ऐसा व्यवहार किया कि जैसे उनका ये काम सामान्य हो. बचपन में उनका भी शोषण हुआ था और बलात्कार की आत्मा उन्हें ऐसा करने के लिए उकसा रही थी. जो उन्होंने अन्य परिवार के सदस्यों को करते देखा था. मैं लगभग ५० साल की थी जब परमेश्वर ने मुझे निर्देश दिया कि मैं अपने माता-पिता से उस शोषण के बारे में बात करूं जिस मैंने झेला था. मैं सचमुच उनसे इस बारे में बात करना नहीं चाहती थी, पर परमेश्वर ने कहा कि ऐसा करने का समय आ गया है. पहली बार सामना करने पर मेरे पिता ने कोई भी पछतावा ज़ाहित नहीं किया, और मुझे स्पष्ट लगने लगा कि वो वहीं कर रहे थे. जो बहुत से लोग करते हैं वो पुनर्जिवित नहीं होते – स्वार्थी जीवन जीते अपनी ही विकृतियों की तृप्ति करते और शैतानी इच्छाओं के वश में होते, और अपने कामों के नतीजों की कोई परवाह नहीं करते. मेरे पिता फ़ैसला कर चुके थे कि वो चाहते है वो पाकर रहेंगे. चाहे इसका मुझपर या किसी और पर कोई भी असर दो.

उस समय अपने माता-पिता से बात करते हुए मैंने महसूस किया कि इससे कोर्स फ़र्क नहीं पड़ता यदि मेरे पिता को अफ़सोस नहीं पर ये अभी भी मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था कि उन्हें बताऊं कि मैंने उन्हें क्षमा किया. उन्हें क्षमा करने में मुझे आगे बढ़ने के लिए मुक्त किया.

हमें याद रखना चाहिए जो यीशु ने कहा जब वो क्रूस पर लटके थे उन बातों के लिए दुख भोगते हुए जो उनका दोष नहीं था पर दूसरों का दोष था, उनमें वो भी शामिल थे. जो उनपर हो रहे इस अत्याचार के जिम्मेदार थे. उन्होंने कहा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं.'' (लूका २३:३४)

न्याय करना बहुत आसान है पर बाईबिल हमें बताती है ''दया न्याय पर जयवन्त होती है'' (याकूब २:१३) मेरा कहने का ये मतलब नहीं है कि शोषण कर्ता अपने पापों के लिए ज़िम्मेदार नहीं – हम सबको अपनी ग़लतियों के लिए ज़िम्मेदार होने के लिए तैयार होना चाहिए. परमेश्वर ने मुझे बताया कि कृपा द्वारा हम ''क्यो'' के पीछे का ''क्या'' देख सकते हैं. कृप और दया केवल ग़लतियों पर ही ध्यान नहीं देती; वो उससे कहीं परे देखते हैं कि उस व्यक्ति के बचपन में क्या ख़राबी थी, उसका स्वभाव और उस व्यक्ति का पूरा जीवन कैसा था. हमें ये ज़रूर याद रखना चाहिए कि परमेश्वर पा से नफ़रत करते है परंतुपापी से प्रेम करते हैं.

मुझे मेरे जीवन में अपने व्यक्तित्व से इतनी समस्यायें थी. जिस कारण बहुत से लोग मेरा न्याय करते और मुझे नकार देते. यीशु ने कभी मुझे नहीं नकारा, ना ही उन्होंने मेरा न्याय किया. मेरे पाप को जो वो है उसी आधार पर जांचा गया, पर परमोवर मेरा हृदय जानते थे. पाप पाप है, और मेरे कार्य ग़लत थे. चाहे उनका कारण कोई भीरहा हो. पर परमेश्वर जानते थे कि अपने बचपन से लेकर १५ साल तक शोषण का शिकार हुई एक महिला के रूप में, मैंने अपने घावों को ही कार्य रूप दे रही थी – और उन्होंने मुझपर दया की यशायाह ने मसीह के आने की भविष्यवाणी की थी. ''वह मूंह देखा न्याय ना करेगा और ना अपने के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा.'' (यशायाह १२:३)

अक्सर अपनी शिक्षाओं में मैं लोगों को एक चित्र दिखाती हूँ. ये पत्थर मज़बूत बदसूरत और बाहर से खुरदरा है पर बहुत ख़ूबसूरत ढंग से भीतर नीले और ऐमेथिस्ट क्रिस्टल्स से भरा है.

पत्थर का बाहरी खुरदरापन

पत्थर की अंदरूनी सुंदरता

उसके बाहरी ओर से देखने पर कौन कल्पना कर सकता था कि सतह के नीचे इतनी अद्भुत ख़ूबसूरती छिपी है. ऐसे ही लोग भी होते है. परमेश्वर हमें भीतर से देखते हैं. वे हम में सम्भावनायें देखते है वे आत्मा में देखते हैं. बाकी सब लोग बाहर का मनुष्यत्व देखते हैं. जब तक कि हमें परमेश्वर द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त नहीं होता कि हमें जो स्वाभाविक नज़र से दिखता है उससे परे की कल्पना कर सकें. हम हमेशा अपने दिलों में न्यायी भावना लेकर जीयेंगे याद रखें ठेस खाये लोग ठेस पहुंचाते हैं.

१६

अपने शत्रुओं को आशीष देना

यीशु बहुत स्पष्ट थे कि हमें उनके साथ क्या करना है:

> जो हमें ठेस पहुंचाते हैं ''परंतु मैं तुमसे ये कहता हूँ कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रेम रखो'' (मत्ती ५:४४)

> ''जो तुम्हें श्राप दें उसको आशीष दो, जो तुम्हारा अपमान करें उसके लिए प्रार्थना करो, जो तेरे एक गाल पर थप्पड़ मारे उसकी ओर दूसरा भी फ़ेर दें; और जो तेरी दोहर छीन ले उसको कुर्ता लेने से भी ना रोक (लूका ६:२८-२९)

''अपने सताने वालों को आशीष दो (यानी वो जिनका आपके प्रति रवैया क्रूर है) आशीष दो श्राप ना दो (रोमियों १२:१४)

जब मैंने लोगों की सेवाकई शुरू की मैंने ग़ौर किया कि अक़्सर वो अपनी दिली इच्छा ज़ाहिर करते अपने शत्रुओं को क्षमा करने की. पर वो ये भी स्वीकारते कि वो ऐसा करने में असमर्थ थे. मैं परमेश्वर के समुख गई. उनके लिए इसका जवाब मांगा, और उन्होंने मुझे ये संदेश दिया: ''मेरे लोग क्षमा करना चाहते हैं, पर वो क्षमा से सम्बन्धित शास्त्रवचन की आज्ञा नहीं मान रहे.'' प्रभु मुझे प्रार्थना करने और अपने शत्रुओं को आशीष देने के संदर्भ में बहुत से शास्त्रवचन के भागों की ओर ले गए.

बहुत से लोग अपने शत्रुओं को क्षमा करने का दावा करते हैं, पर करते नहीं या उनके लिए प्रार्थना नहीं करते जिन्होंने उनको ठेस पहुंचाई. उनके लिए प्रार्थना करना जिन्होंने हमारे साथ बुरा किया. उन्हें पश्चाताप् के मुक़ाम तक लाता है और उन्हें सच में अनुभव कराता है कि वो दूसरों को कितना नुकसान पहुंचा रहे थे. ऐसी प्रार्थना के बिना वे शायद धोखे में ही रहें.

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे आपके शत्रुओं को आशीष दें, वे जिन्होंने आपका शोषण मज़ाक और ग़लत इस्तेमाल किया. आप नकली तौर पर प्रार्थना नहीं कर रहे कि उनके कार्यों को आशीष मिलें, पर ये कि एक व्यक्ति के रूप में उन्हें आशीष मिलें.

यीशु को जाने बिना किसी के लिए भी सच्ची आशीष पाना असंभव है. शोषण का शिकार होते हुए, यदि आप अपने शोषणकर्ता के लिए प्रार्थना करेंगे तो आप रोमियों १२:२१ के कथन को साकार करेंगे ''बुराई से ना हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो'' परमेश्वर से मांगे कि वो आपको दया दिखायें ना कि न्याय करना, अपने शोषण कर्ता के प्रति. याद रखिये मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटता है यदि आप दया बोयेंगे तो दया काटेंगे (देखिये गलतियों ६:७) क्षमा की प्रक्रिया का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है अपने शत्रुओं को आशीष देना ना कि श्राप देना. शब्द आशीष की एक परिभाषा ये भी है, उनके विषय में अच्छा बोलना, और क़र्ज का मतलब होता है उनकी बुराई करना.

ज़ुबान और क्षमा

जब आपके साथ दुरव्यवहार हुआ हो, तो जो आपके साथ हुआ है उसे अन्य लोगों को बताने का लालच बहुत बुरा होता है. परमेश्वर द्वारा अभिषेक प्राप्त सलाह के मक़सद से इसतरह का आपसी मशवरा ज़रूरी होता है. चंगाई पाने के लिए चैन दिलाने वाली प्रार्थना के लिए, ये भी ज़रूरी होता है कि आप खुलकर बतायें कि दूसरों के द्वारा आप पर क्या अत्याचार हुआ है. पर उनके बारे में बुराई फैलाना और उनकी इज़्ज़त पर बट्टा लगाना. परमेश्वर के वचन के विरूद्ध है. बाईबल हमें सिखाती है कि अफ़वाहें ना फैलायें, ग़लतफ़हमियां ना फैलायें और न चुगली करें. नीतिवचन का लेखक १७:९ में कहता है ''जों दूसरों के अपराध को ढांप देता है वह प्रेम का खोजी ठहरता है, परंतु जो बात की चर्चा बार-बार करता है, वह परम् मित्रों में भी फूट करा देता है.''

बहुत बार हम अपनी ठेस के लिए चंगाई पाने के लिए हम विश्वास का सहारा लेते हैं, और साथ ही साथ हम प्रेम का शाही नियम पालना भूल जाते हैं. गलतियों ५:६ में प्रेरित पौलूस हमें बताते हैं कि विश्वास के कार्य प्रेम द्वारा ही ऊर्जा पाते हैं: ''प्रेम अनेक पापों को ढांप देता है'' (१ पतरस ४:८) हम, जो हमारे साथ हुआ है उसके बारे में परमेश्वर से बात कर सकते हैं. हम उनके सामने भी ये बात प्रकट कर सकते हैं किसी कारण यदि ये आवश्यक हो. और यदि हम क्षमा करके और अपनी ठेस और घावों से स्वस्थ होना चाहते हैं, हमें सरसरी तौर पर इस समस्या के बारे में बात नहीं करनी चाहिए. या उस व्यक्ति के बारे में कोई बात जो उसका कारण हो. बाईबल हमें चेतावनी देती है ऐसी निकम्मी

बातों के विषय में (देखिये मत्ती १२:३६) जब तक कि अपनी समस्या को बताने के पीछे कोई परमेश्वरीय मक़सद ना हो, हमें स्वयं पर अनुशासन रखना होगा कि इसे ख़ामोशी से सहें, विश्वास करें कि अपने वचन का आदर करने के लिए परमेश्वर हमें खुलकर इनाम देंगे.

मुझे याद आ रहा है एक महिला का क़िस्सा जिसके ३० साल से भी ज़्यादा के वैवाहिक जीवन के बाद उसका पति उसी की परम मित्र से इश्क़ लड़ाने लगा. वो उस औरत के साथ ग़ायब हो गया और परिवार की जमा पूंजी ले उड़ा. ये एक मसीही परिवार था. बेशक़ व्यभिचार और बेवफ़ाई बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जा सकती थी और सबको चौकाने वाली थी.

दुखी पत्नी अपने पति और सहेली के बारे में चर्चा करने के जाल में फंस गई, जो शुरूआत में उसके लिए अस्वाभाविक बात नहीं थी. तो भी ३ साल बाद अपने पति से तलाक पाने के बाद जिसने उसकी सहेली से शादी कर ली थी, ये महिला अब तक उस दर्द से उभर नहीं पाई थी. वो जिसके अनुभव से गुज़री थी उसने भी एक बहुत भले व्यक्ति से शादी की जो उसके साथ बहुत ही अच्छा था और उसने कहा कि वो अतीत को भूलकर वो अपने जीवन में आगे बढ़ना चाहती है पर वो भूलकर आगे बढ़ने में सफल ना थी.

मेरी शिक्षा टेपों की एक श्रृंखला. जो इसी विषय पर थी कि मूंह और शब्दों की शक्ति क्या है उसने सुनी और महसूस किया कि वो चंगी नहीं हो पा रही. क्योंकि वो लगातार किसी से भी जो सुनने को तैयार होता ये चर्चा किए जा रही थी कि उसके साथ क्या हुआ था. बार-बार उसे विस्तार से दोहराते हुए, वह हमेशा उन दर्दनाक यादों को वापिस बुला रही थी.

परमेश्वर ने मुझे दिखाया कि कुछ लोग चंगाई के लिए प्रार्थना करते हैं. और ये भी कहते हैं कि ''मैं उन्हें क्षमा करती हूँ जिन्होंने मुझे ठेस पहुंचाई.'' इसलिए वो चंगाई की प्रक्रिया का काम शुरू करते हैं. पर वे परमेश्वर को अपना काम पूरा ही नहीं करने देते क्योंकि वे बार-बार उसी घाव को क़ुरदते रहते हैं.

जब एक शारीरिक घाव चंगा होना शुरू होता है, एक पपड़ी जमने लगती है, पर यदि उसे बार-बार लगाता कुरेदा जाए तो घाव कभी नहीं भरेगा. शायद उसमें ज़हर भी फैले और एक दाग़ छोड़ जाए. यहीं भावनात्मक घावों के बारे में भी सच है. ठेस के बारे में और जिसने उसे पहुंचाया है उस व्यक्ति के बारे में बात करना पपड़ी उखाड़ने जैसा है. बार-बार घाव खुलता है और खून रिसना शुरू हो जाता है.

एक सबसे मददगार बात जो परमेश्वर ने मुझे बताई वो ये सच्चाई थी कि क्षमा को ज़ुबान के अनुशासन की ज़रूरत होती है. शरीर हमेशा चाहता है कि वो बार-बार वही मुद्दा दोहरायें. पर अपराध को ढांपने से अच्छे फल मिलते हैं.

यदि आप अपनी समस्या के बारे में बात करना चाहते हैं. सलाह मशवरे प्रार्थना या किसी और उद्देश्य के लिए, तो आप इसे सकारात्मक ढंग से भी कर सकते हैं. उदाहरण: कौन-सा ज़्यादा पेमेश्वरीय लगता है ''१५ साल तक मेरे पिता ने लगातार मेरा यौन शोषण किया, मेरी मां ये जानती थी पर उसने कुछ नहीं किया'' या १५ साल तक मेरे पिता ने मेरा यौन शोषण किया. परमेश्वर मुझे चंगाई दे रहे हैं. मैं अपने पिता के लिए प्रार्थना कर रही हूँ. मुझे ज्ञात हुआ कि उनके अतीत में उन्हें ठेस पहुंची थी और वे शैतानी शक्तिओं के वश में थे. मेरी मां जानती थी कि वो मेरे साथ क्या कर रहे हैं और उन्हें मेरी मदद करनी चाहिए थी, पर वे डर और असुरक्षा से स्तब्ध थीं. जैसे लकवा हो गया हो. शायद उन्हें पता नहीं था कि इस परिस्थिति का सामना कैसे करना है इसलिए वे इससे छिप गईं.''

मुझे यक़ीन है कि आप सहमत होंगे कि दूसरा उदाहरण ज़्यादा अच्छा लगता है अच्छे से कुछ शब्दों का चुनाव पूरे बयान का रंग ही बदल देता है. याद रखिये यदि आप बेहतर होना चाहते हैं. आप कड़ुवाहट में भरे नहीं रह सकते. यदि आपमें किसी भी तरह की कड़ुवाहट है तो बहुत सम्भव है कि आपकी बातचीत में उभरकर आयेगी. आपकी आवाज़ का सुर और शब्दों का चुनाव आपके बारे में बहुत कुछ कह सकता है, यदि आप ईमानदार बनने को तैयार हैं तो मत्ती १२:३४ में यीशु कहते हैं, ''क्योंकि जो मन में भरा है वहीं मूंह पर आता है.''

यदि आप किसी समस्या से छुटकारा चाहते हैं तो इसके बारे में बात करना बंद करें. आपका मन आपके मूंह को प्रमाणित करता है, और आपका मूंह आपके मन को. किसी स्थिति के बारे में बोलना बंद करना बहुत मुश्किल होत है जब तक कि आप इसके बारे में सोचना बन्द न करें. सोचना बन्द करना भी कठिन होता है यदि आप लगातार इसकी चर्चा करते रहें.

वो करना चुने जो आप कर सकते हैं. और परमेश्वर वो करने में आपकी मदद करेंगे. जो आप नहीं कर सकते. अपना पूरा यत्न करें, परमेश्वर पर भरोसा करें और बाक़ी सब काम वो करेंगे. अपनी ज़ुबान को पूरीतरह अनुशाषित करने में शायद आपको कुछ समय लगे. शुरूआत कीजिए पवित्र आत्मा के इशारों की आज्ञा मानने से. यदि वे आपको सुझाते हैं कि, ख़ामोश रहो, आज्ञा मानो और तुम्हें हर बार ऐसा करने पर थोड़ी और आज़ादी मिलेगी. इस बात के प्रति भी सचेत रहें कि इस क्षेत्र में शैतान आपको ललचायेगा. वह वचन की शक्ति को जानता है. वचन शक्ति के बर्तन हैं. मूंह वो हथियार है जिसे आप शैतान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं. या उसके विरोध में. इसलिए आपको अपने शब्द बहुत सावधानी से सुनने चाहिएं. शैतान आपका भला चाहने वाले प्रेम भरे दोस्तों को भी इस्तेमाल करेगा ताकि आपकी समस्या बातचीत में उभरे बुद्धिमत्ता और होशियारी इस्तेमाल करें. ऐसे जाल में न फंसे कि वो आपका घाव दोबारा खोल दें और उसमें से लहू बहने लगें.

अपनी भावनायें बदलने के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखें.

संवेदनाये (भावनायें) चंगाई की प्रक्रिया में मुख्य हिस्सा हैं और क्षमता के विषय में भी. आप सभी सही फ़ैसले कर सकते हैं और लम्बे समय तक शायद आप कोई फ़र्क महसूस ना करें. जब तक कि आप प्रभु की आज्ञा मानने का फ़ैसला ना करें. इसीलिए यहां विश्वास की ज़रूरत होती है जो आपकी मदद करें.

आपने अपना हिस्सा कर लिया और आप परमेश्वर की प्रतीक्षा में कि वे अपना हिस्सा करें. उनका हिस्सा ये है कि आपकी भावनाओं को चंगाई दें. आपको सही और स्वस्थ महसूस करायें, घायल नहीं. केवल परमेश्वर प्रति आपकी भावनायें बदलें जिसने आपको ठेस पहुंचाई. अंदरूनी चंगाई केवल परमेश्वर ही दिला सकते हैं, क्योंकि वह पवित्र आत्मा की समर्था द्वारा आपमें रहते हैं. (यदि आप पुनर्जीवित हुये) और केवल वहीं आपके भीतरी मुनष्यत्व को चंगाई दें सकते हैं.

क्यों परमेश्वर चंगाई के लिये हमें प्रतीक्षा करवाते हैं? प्रतीक्षा ही कठिन भाग है. हम कितने अच्छे से प्रतीक्षा करते वो प्रकट करता है कि हमारा परमेश्वर में कितना विश्वास है. इब्रानियों ६:१२ के अनुसार विश्वास और सब्र द्वारा परमोवर के वादे विरासत में मिलते हैं. गलतियों ५:५ में प्रेरित पौलुस कहते हैं कि आत्मा के कारण, हम विश्वास से आशा की हुई धार्मिकता की बाट जोहते हैं (अपने लक्ष्य, विचार और कार्यों में हम उनकी इच्छा को मान्यता देते हैं)''

जब हम शरीर का अनुसरण करते है हमें फल की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती. जो हमें ठेस पहुंचाये उनसे स्वाभाविक ढंग से निबटना कभी भी अच्छा फल नहीं देता. परमेश्वर की राह कारगर होती है, पर वो उस सिद्धांत पर काम करती है कि बीज बोओ और फिर सब्र से प्रतीक्षा करो फसल काटने के लिये, उनकी योजना को आज्ञाकारी मन से मान कर हम अच्छा बीज बोते हैं जो है:

- *परमेश्वर की क्षमा पाना (और स्वयं से प्रेम करना).*
- *उन्हें क्षमा करना और मुक्त करना चुने जो आपको ठेस पहुंचायें.*
- *अपने शत्रुओं के लिए प्रार्थना करो.*
- *उन्हें आशीष दो जो ठेस पहुंचायें.*
- *भरोसा करो कि परमेश्वर आपकी भावनाओं को चंगाई दे रहे हैं.*
- *प्रतीक्षा करो.*

आत्मिक संसार में प्रतीक्षा द्वारा ही युद्ध जीता जाता है. प्रतीक्षा करना और अपनी नज़र परमेश्वर पर गढ़ाये रखना उन शैतानी शक्तियों पर दबाव डालता है जिन्होंने समस्या की शुरूआत की, और उन्हें जो ज़मीन वापिस करनी होगी जो उन्होंने हथियाई है जब आप परमेश्वर पर अपनी नज़र गढ़ाते है तब वे शत्रु को आपके क्षेत्र से बाहर खदेड़ते हैं:

> ''जो परम् प्रधान के छाये हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्व शक्तिमान की छाया में ठिकाना पायेगा (जिसकी शक्ति के आगे शत्रु टिक नहीं सकता वह सर्व शक्तिमान)
>
> मैं यहोवा के विषय में कहूंगा, कि वह मेरा शरण स्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है मैं उस पर भरोसा रखूंगा. (पूरे आत्म विश्वास से) भजनसंहिता ९१:१-२)

जब आप बाकी का भजन ९१ पढ़ते है, आप पायेंगे कि वो महान वादों से भरा है कि कैसे शत्रु आपको हरा नहीं सकता. विस्तारित बाईबल में जन ९१ की समीक्षा में लिखा है, ''इस पूरे अध्याय के भरपूर वादे उसपर निर्भर हैं कि कैसे कोई पहले दो वचनों की शर्तें निभा पाता है दूसरे शब्दों में; ये उन लोगों के लिए अच्छा होगा जो परमेश्वर के गुप्त स्थान में रहते हैं कि वे परमेश्वर के बारे में ये घोषणा करें कि वहीं उनके शरण स्थान और गढ है, वो जो उनपर भरोसा करते हैं स्वयं को पूरीतरह उनपर आश्रित कर देते हैं.

यहां मैं एक अनुभव का लेखा दे रही हूँ. जिससे मुझे गुज़रना पड़ा. जो मेरे कथन को स्पष्ट करने में सहायक होगा. एक मित्र, कोई जिससे मैं बहुत प्रेम करती थी, विश्वास करती थी और बहुत-सी स्थितियों में उसने मदद की थी. उसीने मुझे बहुत बुरी तरह से ठेस पहुंचाई मेरे बारे में झूठ फैलाये गए जिसने मेरे जीवन में बहुत तक़लीफ़ और दुख पहुंचाया. इनमें शामिल था न्याय देना और अफ़वाहें, और वो महिला जो इस गड़बड़ी की मुख्य सूत्रधार थी ये सब अच्छी तरह जानती थी.

ये विशेष स्थिति शायद मेरे लिए अपनी सेवकाई में सबसे महान भावनात्मक ठेस थी, क्योंकि इसका कारण मसीह में मेरी एक सहकर्मी थी. इसपर मैं भरोसा करती थी और जिसपर मैंने काम किया था. मैं जानती थी कि मुझे उसे क्षमा करना पड़ेगा वरना मेरी क्षमा हीनता मेरे और मेरी सेवकाई के लिए ज़हर बन जायेगी.

मैंने छ: क़दमों वाली प्रक्रिया शुरू की जिसके बारे में मैं आपको समझा रही हूँ, पहला क़दम, माफ़ करना चुनों, ये मुश्किल नहीं थी. अगला, मैंने क्षमा करने की प्रार्थना की, ये भी कठिन नहीं था. तीसरा क़दम, उस औरत के लिए प्रार्थना करना, ज़रा ज़्यादा मुश्किल था. पर चौथा क़दम, उसे आशीष देना और उसके बारे में बात न करना शायद सबसे कठिन था.

दरअस्ल ऐसा लग रहा था कि वो बिना कोई प्रतिरोध पाये इससे बच निकली. जबकि मेरी भावनाओं में तूफ़ान उमड़ रहा था. अन्त में मैंने उस मुक़ाम तक प्रगति की. जहाँ मैं मानने लगी कि उसे शैतान ने धोखा दिया था, और ये कि वो दरअस्ल ये सोच रही थी कि वो परमेश्वर की आज्ञाकारी बन रही है जब उसने मेरे साथ ये किया.

हालांकि मैं पांचवा क़दम लागू करने की कोशिश कर रही थी. ये विश्वास करके कि मेरी भावनाएं चंगाई पा रहीं है, इस औरत के प्रति छ: महिने तक मेरी भावनायें नहीं बदलीं. क़दम छ: परमेश्वर की प्रतीक्षा, ख़ासकर ये मेरे लिए बहुत मुश्किल था. क्योंकि सारा समय मुझे इस औरत के आस-पास ही रहना होता. उसने कभी अपने कामों के लिए क्षमा नहीं मांगी. या ऐसा संकेत दिया हो कि उसने कोई ग़लती है. कई बार तो मुझे इतना ज़्यादा दुख होता कि मैंने सोचा कि मैं अब एक और दिन ये सब नहीं सह सकती.

मैं परमेश्वर से कहती, ''मैंने अपना ज़िम्मा निभा दिया. मैं आप पर भरोसा कर रही हूँ कि मेरी भावनायें बदलें'' मैंने ये सीखा कि, इस प्रक्रिया को कारग़र बनाने के लिए, आपको अपने पक्षपर डटे रहना चाहिए और हारना नहीं चाहिए.

तक़रीबन छ: महिने बीत गए. कई बार जब मैं इस औरत को देखती, मेरा फट पड़ने और दफ़ा करने को जी चाहता. मैं बस यही करती कि परमेश्वर से मांगती कि स्वयं पर संयंम रखने में मेरी मदद करें, उन छ: महिनों में मैं भावनाओं के कई पड़ावों से गुज़री. कई बार मैं दूसरे समस्यों से ज़्यादा समझदारी बरतती. एक रविवार की सुबह चर्च सर्विस के दौरान, मुझे पता था कि परमेश्वर चाहते थे कि मैं इस महिला के पास जाऊं, और गले लगाऊं और बताऊं कि मैं उसे प्रेम करती हूँ. ईमानदारी से कहूँ तो मेरा शरीर ऐंठ रहा था. मैंने सोचा 'ओह, नहीं प्रभु ये नहीं! यक़ीनन आप ये नहीं चाहेंगे कि मैं उसके पास जाऊं बल्कि उसे मेरे पास आना चाहिए था. क्या हो अगर मेरे जाने से वो ये सोचे कि मैं अपनी ग़लती स्वीकार कर रहीं हूँ?

मैं चाहती थी कि वो औरत आये और मुझसे क्षमा मांगे, और फिर भी मैंने ये हल्का-सा दबाव महसूस किया कि मैं उस तक जाऊं. पवित्र आत्मा मुझे पिता परमेश्वर की उस आशीष की ओर ले जा रहा था जो मेरे जीवन के लिए सहेजी गई थी. कई बार प्रभु हमें ये दिखाने की कोशिश करते है कि हमें किससे आशीष मिलेगी और कभी भी हम वो आशीष पाते नहीं क्योंकि हम जो वो हमें करने को कह रहे हैं बस उसे करने में ढिठाई दिखाते हैं.

अंत में मैं उस महिला की और बढ़ी, इस हर क्षण को नफ़रत करते हुए, पर मैं परमेश्वर की आज्ञाकारी बनना चाहती थी. जब मैंने उसकी ओर बढ़ना शुरू किया, वो मेरी ओर बढ़ी लगता है गैसे परमेश्वर उससे भी बात कर रहे थे.

जब हम मिलें, मैंने बस उसे गले लगाया औ कहा ''मैं तुमसे प्रेम करती हूँ.'' और उसने भी ठीक वही किया और इससे इस किस्से का अंत हो गया. अभी तक उसने कभी मुझसे क्षमा नहीं मांगी, ना ही इसका ज़िक्र किया कि क्या हुआ था; तो भी उनकी अगुवाई की आज्ञाकारिता के कारण, परमेश्वर ने दासता का वो जुआ तोड़ दिया जहां तक मेरा सवाल था, ये पूरी घटना ख़त्म हो चुकी थी कम से कम इसका ज़्यादातर हिस्सा. कभी कभी मुझे इस दर्द की टीस महसूस होती. जब मैं इस औरत को देखती, या कोई उसके नाम का ज़िक्र करता. पर उस दिन के बाद से मुझे कभी भी भावनात्मक अत्याचार महसूस नहीं हुआ.

क्या आप कुछ क़दम आगे जाने को तैयार हैं.

एक समय ऐसा आया जब परमेश्वर ने मेरे माता-पिता को आदर देने और आशीष देने के विषय में मुझसे निपटना शुरू किया. ये मेरे लिए बहुत कठिन था क्योंकि उन दोनों में से किसीने भी पश्चाताप ज़ाहिर नहीं किया था उन बातों के लिए जो मेरे साथ हुई थी. मैं जानती थी कि मुझे वो लगातार करते जाना है. जो परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता है, हालांकि ऐसा करने को मेरा जी नहीं चाहता था. याद कीजिए, क्षमा इसपर आधारित नहीं कि जिस व्यक्ति को क्षमा दी जा रही है वो इसका हक़दार है या नहीं. क्षमा एक चुनाव है जो परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता के लिए किया जाता है.

एक बार जब मेरे पिता बहुत बीमार थे और अस्पताल में थे, उन्होंने सोचा कि वो मरने वाले है; इसलिए उन्होंने मुझे और डेव को कहा कि हम आकर उनके लिए प्रार्थना करें. हमने उनसे पूछा क्या वो उद्धार पाना चहते हैं, और उन्होंने कहा हाँ, पर जब हमने उनके साथ प्रार्थना की, उन्होंने बस यहीं कहा, ''मैं बस अंदर से मुर्दा महसूस कर रहा हूँ.''

उन्होंने कहा, ''वहां बस कुछ भी नहीं है.'' वह उद्धार पाना चाहते थे, पर वे अभी तक उसके लिए शर्मिंदा नहीं थे. जो उन्होंने किया था. हमने उनसे इसपर बात की थी कि उन्होंने मेरे साथ क्या किया था, और अब उन्होंने बहुत ही दिलचस्प बयान दिया. उन्होंने कहा, ''मुझे अफ़सोस है जो मैंने किया उससे तुम्हें दुख पहुंचा, पर मैं सचमुच ये नहीं कह सकता, कि जो मैंने किया उसके लिए मुझे अफ़सोस है.''

मैं देख सकती थी कि मेरे पिता पश्चाताप नहीं कर रहे थे, और वह उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते थे. जब तक कि सचमुच उन्हें पछतावा नहीं होता, मैं ये भी साफ़-साफ़ देख सकती थी कि पछतावा एक वरदान है; जब कोई व्यक्ति उस चीज़ के बारे में बुरा महसूस करता है. जो उसने की तो ये वरदान परमेश्वर से मिलता है. पर मेरे पिता का दिल इतना सख्त था,

कि वो अपने घमण्ड को एक ओर रखकर अपने पाप स्वीकार करने के लिए विनम्र नहीं हो सकते थे.

अन्त में परमेश्वर ने हमे निर्देशित किया और हमने अपने माता-पिता को सेंट लूईस में बसाया ताकि वो हमारे क़रीब रह सकते और हम उनकी देखभाल कर सकते. ये करना मेरे लिए बहुत कठिन था. क्योंकि उनके साथ मेरा रिश्ता एक औपचारिक छुट्टिओं में मिलेंगे वाला था. अब मेरे दिल में और ग़ुस्सा और कड़ुवाहट नहीं थी, पर मैं उनकी रोज़ाना की ज़रूरतों की देखभाल करने के लिए कुछ क़दम आगे जाने को तैयार नहीं थी.

पर उन्हें ले आना कुछ ऐसा था जो ख़ास परमेश्वर ने मेरे मन में डाला था. मैं किसी और को ऐसा करने का सुझाव नहीं देती सिर्फ़ इसलिए परमेश्वर ने मुझे ऐसा करने को कहा था. ज़ाहिर है किसी को अभी भी शोषण का ख़तरा है, तो मैं ये विश्वास नहीं करती कि परमेश्वर उस औरत या मर्द को यही करने को कहेंगे. जो मैंने किया. पर मेरे पिता बूढ़े हो गये थे उन्हें देखभाल की ज़रूरत थी जो केवल हम ही कर सकते थे.

जब परमेश्वरने हमसे उनके लिए घर ख़रीदने को कहा, मैंने सोचा हम बस उनके लिए एक सस्ता-सा घर ख़रीद देंगे पर परमेश्वरने कहा उनके लिए अच्छा-सा घर खरीदों. इसलिए हमने उन्हें एक अच्छे से घर में रखा जो हमारे घर से दस मिनट की दूरी पर था. हमने उनके लिए फर्नीचर खरीदा, कार ख़रीदी मुख्यत: हर चीज़ जिसकी उन्हें ज़रूरत थी.

एक बार फिर मुझे स्वीकार करना पड़ेगा कि मेरे लिए ये आसान नहीं थी, पर मैं जानती थी कि परमेश्वर मुझसे ये करने को कह रहे हैं. मुझे पता नहीं कि क्या होता यदि मैंने उनकी आज्ञा नहीं मानी होती, पर मैं जानती थी कि परमेश्वर ने मुझे आशीष दी है कुछ विशेष तरीकों से और मुझे वो आशीषे ना मिलती यदि मैं वो करने को राज़ी ना होती. जो उन्होंने मुझसे कहा था. परमेश्वर ने हमारी सेवकाई पर भी आशीष थी कुछ इस तरह कि वो आशीष अन्यथा सम्भव ना होती, क्योंकि मैंने वफ़ादारी से वो किया जो उन्होंने मुझे मेरे माता-पिता के विषय में करने को कहा था. हालांकि ये मुश्किल था. ये बहुत महत्वपूर्ण है समझना कि कई बार परमेश्वर अवश्य ही हमें कठिन चीज़े करने को कहते हैं.

पहले ३ साल उसके बाद से जब मेरे माता-पिता हमारे क़रीब आ बसे थे, मैंने अपने पिता में किसी भी तरह का परिवर्तन नहीं देखा. वह अब मेरा शोषण करने की कोशिश नहीं कर रहे थे पर अभी भी वो वैसे ही थे. स्वार्ती घृणायोग्य और कड़ुवाहट भरे हमेशा जीवन का उत्तर उसी बुरे रवैये से देते हुए. उनके हाव-भाव मुझमें ऐंठन उत्पन्न कर देते क्योंकि वो बहुत मुसीबत में लग रहे थे. वे अभी भी मेरी मां से दुरव्यवहार कर रहे थे. पर हमने उन्हें प्रेम और दया देनी जारी रखी.

हम अपने माता-पिता के लिए कई साल तक बहुत सी अच्छी चीज़े करते रहे इससे पहले कि उनसे ये कहते बनता ''धन्यवाद, मैं इसके लिए आभारी हूँ तुम लोग हमारे लिए कितने अच्छे हो.''

मुझे लगा कि हम जो कुछ कर सकते थे वो हमने मेरे पिता के लिए किया. अब हमें बस प्रतीक्षा करनी होगी. एक महत्वपूर्ण बात याद रखिये कि जब आप प्रतीक्षा कर रहे हैं, कि परमेश्वर किसी के जीवन में परिवर्तन लायेंगे, या आपके अपने जीवन में, तो बेहतर यहीं होगा कि आप वो करते रहें. जो आप जानते हैं कि धार्मिका है.

कुछ अच्छी सलाह जो मुझे अपने अनुभव से मिली है वो ये है: परमेश्वर की आज्ञा मानो और उनके अनुसार काम करो. शायद कई बार ऐसा करना कठिन हो, पर दासता (ग़ुलामी) में बने रहना और भी कठिन है. हमेशा ये बयान याद रखें चाहे मुक्त होने में दु:खहो, पर बंधन में बंधे रहने से और भी दुख होता है.

१७

बदला परमेश्वर लेंगे

कभी भी जब आप किसी अन्य व्यक्ति द्वारा ठेस खाते हैं तो हमेशा ये भावना-सी बन जाती है कि वह आपका ऋणी है. इसी तरह, जब आप किसी को ठेस पहुंचाते हैं तो शायद आपको भी ऐसा लगे कि आपको उस व्यक्ति को हर्जाना देना है या किसी न किसी तरह से भरपाई करनी है अन्यायी व्यवहार, किसी भी तरह का शोषण पीछे छोड़ जाता है एक ''ना चुकाया ऋण'' आत्मा की दृष्टि से. इसलिए ये ऋण मन में और भावनाओं में महसूस किए जाते हैं. यदि एक बदले की भावना उभरती है उससे जो दूसरों को आपको देना है, या जो आपको दूसरों को देना है, यदि ये बहुत भारी हो जाती है या बहुत देर तक आपके दिल में घर कर जाती है तो शायद आप अपने शरीर में भी अस्वस्थ लक्षण देंखे.

यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करनी सिखाई ''और हमारे ऋण क्षमा कर, जैसे हमने भी किए हैं (छोड़ दिए है, भर दिए हैं और ऋण भूल गए है, और उसके विरूद्ध अपना गुस्सा भूल गए हैं)'' हमारे ऋणी (मत्ती ६:१२) वो परमेश्वर से हमारे पापों को माफ करने के बारे में बात कर रहे थे, और यहां उन्होंने इसे ''ऋण'' कहा. एक ऋण ऐसी चीज़ है जो एक व्यक्ति को दूसरे को देना होता है. यीशु ने कहा कि परमेश्वर ने हमारे सब ऋण क्षमा कर दिए – छोड़ दिए और जूले दिए; और हमारी ओर यूं व्यवहार किया जैसे हमें उन्हें कुछ भी नहीं देना.

उन्होंने हमें ये भी आदेश दिया कि हम इसी तरह दूसरों से भी ऐसा व्यवहार करें जो हमारे ऋणी है. एक बार फिर मैं ये कहना चाहुंगा ये शायद कठिन लगे, पर किसी को घृणा करते जाना और अपनी ज़िदंगी उस ऋण को उघाने में ही गुज़ार देना जो वो व्यक्ति कभी अदा ही नहीं कर सकता, और भी ज़्यादा मुश्किल है.

बाईबल में लिखा है कि परमेश्वर हमारी भरपाई करेंगे (देखिये यशायाह ६१:७-८) मैंने कभी भी इस शास्त्रवचन की ओर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था लेकिन कुछ साल पहले, जब मैं क्षमा और ऋण छोड़ देने के विषय पर अध्ययन कर रही थी. प्रतिफल एक मुख्य शब्द है उसके लिए जिसे ठेस पहुंची हो. जब बाईबल कहती है कि परमेश्वर हमारा प्रतिफल देंगे, इसका दरअसल मतलब है कि परमेश्वर स्वयं हमें वो वापिस करेंगे जो हमारा ऋण बनता है.

इन शास्त्रवचनों को याद कर लीजिए जो परमेश्वर के प्रतिफल के विषय में है ''तुम्हारी नामधराई की संती दूना भाग मिलेगा, अनादर की संती तुम अपने भाग के कारण जैजैकार करोगे. तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होंगे और सदा आनंदित बने रहोगे.

''क्योंकि मैं यहोवा न्याय-सी प्रीति रखता हूँ, और अन्याय और डकैती से घृणा करता हूँ, इसलिए मैं उनका प्रतिफल सच्चाई से दूंगा, और उनके साथ सदा की वाचा बांधूंगा.''

बाद मैं अन्य अध्यायों में हम इस पूनी आशीष के बारे में बात करेंगे. कुछ अन्य शास्त्रवचन कहते हैं परमेश्वर भरपाई करने वाले परमेश्वर है और बदला वे लेते हैं. यशायाह ४९:४ एक ऐसा वचन है जिसे पवित्र आत्मा ने मेरे जीवन में लागू किया ''तब मैने कहा, मैंने तो व्यर्थ परिश्रम किया, मैने व्यर्थ ही अपना बल खो दिया हैं, तो भी निश्चय मेरा न्याय यहोवा के पास है और मेरे परिश्रम का फल मेरे परमेश्वर के हाथ में है''

बदला लेने का मतलब है उन लोगों से हर्ज़ाना महसूस करना जिन्होंने आपको कोई हानि पहुंचाई है. समस्या ये है कि बदला हमेशा व्यर्थ – ये वो ठेस दूर नहीं करता या हानि भरता नहीं. दरअसल ये और ज़्यादा पीड़ा और हानि का कारण बनता है बेशक मैने भी कई साल व्यर्थ में परिश्रम किया शब्द व्यर्थ का मतलब है ''बेकार'' यदि आप व्यर्थ में परिश्रम करते हैं आपके प्रयास बेकार है. ये आपको शारीरिक मानसिक और भावनात्मक तौर पर थका देंगे, यदि आप उन सबको जिन्हें आपने ठेस पहुंचाई है वापस हर्ज़ाना देना चाहते हैं या जिन्होंने आपको ठेस पहुंचाई है उनसे लेना चाहते है.

बहुत बार जिनसे आप घृणा करते हैं और बदला लेने की कोशिश करते हैं वो लोग बाहर जाकर मज़े कर रहे होते हैं, ना ये जानते हैं ना परवाह करते है कि आप कैसा महसूस कर रहे हैं. प्रिय दुख उठाने वालों ये व्यर्थ की मेहनत है. जैसा कि शास्त्रवचन में लिखा है मैंने सभी प्रयास व्यर्थ ही अपनी पूरी शक्ति गवा दी थी मेरे सभी प्रयास व्यर्थ और खोखले थे जब तक कि मैंने परमेश्वर की ओर नहीं देखा कि मेरे परिश्रम का फल उनके हाथ है.

प्रतिफल शब्द से मिलता जुलता एक और शब्द है मजदूरों के लिए मुआवजा. यदि आप काम करते समय किसी तरह की चोट खाते हैं ख़ासकर परमेश्वर के लिए काम करते हुए तो आपको वो मुआवज़ा देते है . प्रतिफल का मतलब इनाम भी है. बाईबल के अनुसार, स्वयं परमेश्वर हमारा इनाम है (देखिये उत्पत्ति १५:१) पर वह हमारे लिए खास बातें करके भी हमें इनाम देते हैं''वर्णन से बाहर आनंद'' (१ पतरस १:८) और वह शांति देते हैं जो ''जो समझ से बिल्कुल परे है'' (फिलि. ४:७) परमेश्वर ने मेरे जीवन को इतनी मात्रा में आशीष दी है दरअसल ये विश्वास करना कठिन हो जाता है कि ये मैं ही हूँ जो इतना अच्छा आशीषित महसूस कर रही हूँ.

लम्बे अर्से तक मैं घृणा और नाराजगी से भरी हुई थी. मैं कड़ुवाहट से भरी थी, मन में भ्रम पाले थी और स्वयं के लिए अफ़सोस महसूस करती थी. अपनी यही भावनायें मैं दूसरों पर उंडेल देती खासकर उन पर जो मुझे प्रेम करने की कोशिश कर रहे हाते.

आपको ये याद रखना चाहिए कि जिससे आप भरे हैं वही आपको भी निगलना पड़ता है जब आप गुस्से, कड़ुवाहट और नाराज़गी से भरे होते हैं तब ना केवल दूसरों से आपके सम्बन्धों में ज़हर घुलता है, पर आप खुद में भी ज़हर उंडेलते हैं जो आपके दिल में है वो बाहर आ जाता है आपकी बातचीत से आपके रवैये से, यहां तक कि आपके शारीरिक हावभाव से और आपकी सख्ती से.

यदि आप ज़हरीले विचारों और रवैों से भरे हैं, तो किसी भी तरह आप उन्हें अपने पूरे जीवन पर हावी होने से नहीं रोक सकते. ऋण वसूलने का काम आप परमेश्वर को सौंप दीजिए. केवल वही हैं जो ये काम बेहतर तरीके से कर सकते हैं. स्वयं को उनके तरीकों से जोड़ लें और वह आपका क़र्ज वसूल करेंगे और आपके अतीत के सभी दुखों के लिए आपको हर्ज़ाना देंगे. ये सचमुच बहुत ही तेजस्वी बात है उन्हें ऐसा करते हुए जब हम देखते हैं.

मैं राज़ी हू, पर कैसे?

वह सभी ऋण लिखिये जो आपको देने है और वो सभी जिन्हें आपको वसूलना है. मैं आत्मिक दृष्टि से ऋणों की बात कर रही हूँ ना कि आर्थिक ऋण. उन सबको लिखिये और ऊपर लिख दीजिए रद्द हुए. ऊँची आवाज़ में कहें ''किसी भी व्यक्ति को मुझसे कुछ देना नहीं और ना ही मैंने किसी व्यक्ति को कुछ देना है. मै सारे ऋण रद्द करके उन्हे यीशु को सौंप रहा हूँ. ये उनके हाथ है कि वापस करें जो मुझे पाना है''

यदि आपने किसी को ठेस पहुंचाई, आप बेशक उस व्यक्ति से कह सकते हैं कि आपको उसके लिए अफ़सोस है और आप उससे क्षमा मांग सकते है. कृपया अपना पूरा जीवन लोगों को ऋण चुकाने में ना लगा दीजिए जो आपने उनके लिए किया है उसके लिए जो बेकार है. केवल परमेश्वर ही उनकी भरपाई कर सकते है; यहां एक व्यवहारिक उदाहरण है.

जब मैं अपने बच्चों को पाल-पोस रही थी तब भी मैं अपने अतीत के शोषण के कारण बहुत से भावनात्मक उतार चढ़ाव झेल रही थी. ठेस खाकर पर अभी भी ये ना जानते हुए कि परमेश्वर किस तरह कार्य करते है, मैं अपने ही बच्चों को ठेस पहुंचाने लगी. मैं बहुत चीखती चिल्लाती और गुस्सा करती. मेरा मिजाज़ बहुत ख़राब था, मुझमें सब्र नाम की कोई चीज़ नहीं थी. मुझसे निबाहना सचमुच बहुत मुश्किल था और मुझे संतुष्ट करना मुश्किल था.

मैंने बच्चों के लिए बहुत से नियम बना रखे थे. जब वे नियम पर चलते उन्हें मेरा प्रेम और स्वीकृति मिलती और जब वो ऐसा नहीं करते मैं क्राधित हो जाती. मैं दयाशील नहीं थी.मैंने

ये महसूस नहीं किया कि मैं अपने बच्चों से वैसा ही व्यवहार कर री हूँ जैसा बचपन में मुझे मिला ज़्यादा तर लोग जिनका शोषण हुआयही करते हैं.

सालों युद्ध क्षेत्र में रहने का नतीजा ये हुआ. कि मेरे बड़े बेटे को कुछ भावनात्मक असुरक्षा और व्यक्तित्व से जुड़ी समस्यायें हुईं हम दोनो के बीच हमेशा एक झगड़े की आत्मा मौजूद रहती, और आमतौर पर हमारी एक दूसरे से बनती ही नहीं थी. बेशक , पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के बाद और परमेश्वर के वचन का अध्यन करने के बाद, मैं उस हानि को ठीक करना चाहती थी जो मैंने पहुंचाई. मैं अपने बेटे को इसका हर्ज़ाना देना चाहती थी जिस तरह मैंने उससे व्यवहार किया आप कह सकते हैं कि जो ठेस मैंने उसे पहुंचाई थी मैं उसका मुआवज़ा देना चाहती थी.

सच्चाई से कहूँ ता, मुझे मालूम ही नहीं था कि उस हानि की मरम्मत कैसे करनी है जो मैने पहुंचाई. मैंने क्षमा माँग, पर मुझे पता नहीं था कि और क्या करूं. कुछ देर तक तो मैं सोच के उस जाल में फंस गई कि मुझे उसे सब कुछ देना चाहिए जो वो चाहता है; आख़िरकार अब मैं उसकी ऋणी थी. मेरे बेटे का बहुत ही सशक्त व्यक्तित्व है, और उस समय वह परमेश्वर के साथ नहीं चल रहा था उसने बहुत जल्द सीख लिया कि कैसे वो मुझे दोषी महसूस करवाये. वो भावनात्मक बल पर मुझे नियन्त्रित कर रहा था चाल चल रहा था, यही नहीं वो परमेश्वर से स्थापित मेरे रिश्ते को भी अपने लाभ के लिए इस्तेमाल कर रहा था.

एक दिन जब मैं उसे उसके किसी व्यवहार के लिए टोकने की कोशिश कर रही थी, उसने ये जवाब दिया ''खैर, मैं ऐसा ना होता अगर तुमने मुझसे सही व्यवहार किया होता. उस समय तो मेरी प्रतिक्रिया सामान्य रही, मैं दूसरे कमरे में चली गई और अपने बारे में दुखी महसूस करने लगी, लेकिन इस बार परमेश्वरने मुझे कुछ दिखाया. उन्होंने कहा, ''जॉयस तुम्हारे बेटे को अपनी समस्या से उभरने का वैसा ही अवसर मिला है जैसा तुम्हें मिला, तुमने उसे ठेस पहुंचाई क्योंकि किसी और ने तुम्हें ठेस पहुंचाई. तुम्हें अफ़सोस हुआ और तुमने पश्चाताप किया; इससे ज़्यादा तुम और कुछ नहीं कर सकती. तुम अपनी पूरी ज़िंदगी इसमें ही नहीं लगा सकती जो हो चुका है उसे सही करने की कोशिश करो. मैं उसकी मदद करूंगा यदि वह मुझे करने दे.

मैं जानती थी कि मुझे अपने बेटे को बताना होगा जो परमेश्वर ने मुझसे कहा था. मैंने ये किया और मैंने एक फ़ैसला किया कि मैं भरपाई करना अब बंद कर दूंगी. कुछ साल उसके कठिन गुज़रे, पर अंत में वो परमेश्वर के प्रति गंभीर हुआ और स्वयं अपनी चंगाई और सिद्धता के रास्ते पर चल पड़ा. अब वो हमारी सेवकाई की संसार भर के मिशनस् का डायरेक्टर है और मेरा सबसे क़रीबी दोस्त, मेरा बेटा और मसीह में सहकर्मी है.

मैं सचमुच आपको उत्साहित करूंगी कि आप अपने जीवन के इस क्षेत्र की जांच करें और परमेश्वर को आपके लिए भरपाई करने दें. उनका इनाम महान है. जहां तक परमेश्वर

की बातों का सवाल है वहां हमेशा प्रतीक्षा का कुछ समय रहता है पर यदि आप वो करते रहे जो परमेश्वर आपको करने को कह रहे हैं तो आपको सफलता मिलेगी. आप गलतियां करेंगे, जब ऐसा करें बस पश्चाताप करें और आगे बढ़ें.

जब एक बच्चा चलना शुरू करता है, तो वह ऐसा नहीं कर पाता बिना कई बार गिरे. वो बस फिर से खड़ा हो जाता है और अपने गन्तव्य की ओर फिर से बढ़ता है. यीशु के पास आईये एक छोटे बच्चे की तरह. वह अपनी बाहें आपकी ओर फैलाये हैं– उनकी दिशा में बढ़िये चाहे आप बार-बार गिरें भी उठिये और फिर से चलिए.

इससे पहले कि अध्याय खत्म हो मैं एक मुद्दे पर फिर से ज़ोर डालना चाहुंगी: लोगों को वापस उनका प्रतिफल देने के लिए जिन्होंने हमें ठेस पहुंचाई है हम ना केवल एक जाल में फंस जाते है, पर कई बार हम अपनी ठेस दूसरों पर उतारते हैं जिनका दरअसल इस ठेस से कोई लेना देना नहीं था.

सालों तक मैंने अपने पति से अपने भावनात्मक ऋण वसूल करने चाहे, सिर्फ़ इस लिए कि वो एक मर्द थ, और मैं उनके साथ रिस्ता बांध चुकी थी. ये समस्या बहुत व्यापक है. कुछ औरतें सभी आदमियों से नफ़रत करती हैं क्योंकि किसी एक ने उन्हें ठेस पहुंचाई. एक बच्चा जिसे उसकी मां ने ठेस पहुंचाई हो शायद बड़ा होकर अपना बाकी का व्यस्क जीवन औरतों से घृणा करने और उनका शोषण करने में लगा दे. ये एक क़िस्म का ऋण वसूलना है. कृपया जान लीजिए कि ऐसा बर्ताव समस्या हल नहीं करता और ना ही कभी भीतर से संतुष्टि दिलाता है कि अंत में इस ऋण की भरपाई हो चुकी. एक ही तरीका है ऋण को रद्द करने का वो है परमेश्वर का मार्ग.

१८

दूसरों के साथ आनन्दित होने से मुक्त हो जायेंगे

भावनात्मक चंगाई का सच्चा संकेत तब प्रकट होता है जब वो जिसका शोषण हुआ है आनंद उठा सकें तब दूसरे आशीषित होते हैं. पिछले अध्यायों में हमनें उस सिद्धांत पर चर्चा की जो हमें रोमियों १२:१४ में सिखाया गया. जिसमें लिखा था ''अपने सताने वालों को आशीष दो (जिनका रवैया तुम्हारे प्रति क्रूर है) आशीष दो श्राप ना दो'' पर परमेश्वर का वचन हमें ये भी सिखाता है ''आनंद करने वालों के साथ आनंद करो (दूसरों के आनंद में हिस्सा लो) और रोनें वालों के साथ रोओ (दूसरों के दु:ख बांटो)'' (रोमियों १२:१५)

शोषित लोगों के लिए बहुत आसान होता है उनसे ईर्ष्या करना जिन्हें कभी इस प्रकार का दुख नहीं पहुंचा. पर मैं समझती हूँ कि ये बहुत महत्वपूर्ण है कि उन लोगों को उत्साहित किया जाएं जिनका शोषण हुआ है कि वे ईर्ष्या और जलन से छुटकारा पायें ताकि सम्पूर्ण भावनात्मक चंगाई का आनंद ले सकें.

परमेश्वरने इस ज़रूरत की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया जब मैं बहुत से लोगों को एक सभा में उत्साहित करने की सेवकाई कर रही थी. अचानक मेरे पति मंच पर आ गये क्योंकि परमेश्वरने उनके हृदय में ऐसा वचन डाला जो उन्हें लगा कि उन्हें सबको बताना चाहिए. डेव ने कहा, ''पांच या छ: लोगों ने अभी-अभी परमेश्वर से व्यक्तिगत संदेश प्राप्त किया है जॉयस की सेवकाई द्वारा पर अभी भी इस कमरे में लोग भरे पड़े हैं. जो मन में ईर्ष्या रखकर ये सोच रहे हैं कि काश् ऐसा मेरे लिए होता.''

और वो आगे बात जारी रखते हैं, ''परमेश्वरने स्पष्ट रूप से मेरे हृदय में ये कहा और आदेश दिया कि आपको बताऊं, जब तक कि आप उनके लिए ख़ुश नहीं होते जो आशीषित हुए हैं, तो ये बातें आपके साथ कभी भी नहीं होंगी'' इसने सचमुच लोगों पर बहुत प्रभाव डाला कि

वो देख सकें कि उनमें ईर्ष्या थी सिर्फ़ इसके लिए कि परमेश्वर ने उत्साह के वचनों को संदेश किसी और को दिया था.

किसी और व्यक्ति को जो आत्मिक वरदान प्राप्त है हम उससे भी ईर्ष्या करते हैं. मैं इच्छा करती कि काश् मैं गा सकती, इसलिए मैं उन लोगों को सुना करती जिनकी बहुत अच्छी आवाज़ें है और सोचती ''काश् मेरी भी ऐसी आवाज़ होती.''

एक दिन परमेश्वर ने कहा, ''मैं जानता हूँ, मैंने दूसरे लोगों को वरदान दिए हैं तुम्हारे आनंद के लिए, इसलिए नहीं कि तुम उनसे ईर्ष्या करो कि जो उनके पास है काश् तुम्हारे पास होता'' उन्होंने कहा, ''मैंने ये वरदान उन्हें उनके लिए नहीं दिया, मैंने ये वरदान उन्हें दिया है तुम्हारे लिए.''

इसीतरह, परमेश्वर के वरदान जो मुझमें हैं वो अन्य लोगों के लिए हैं. मेरे वरदान मुझपर ज़िम्मेदारी डालते हैं कि मैं मेहनत करूं पर वो जो अन्य लोगों को देते हैं वो है आनंद. इसलिए हमें एक दूसरे के वरदानों का आनंद लेना है ना कि ईर्ष्या करनी है. परमेश्वर ने मुझमें कुछ डाला है आपके लिए, पर उन्होंने आपमें भी कछ डाला है मेरे लिए, इसलिए हमें एक दूसरे से ईर्ष्या करने की ज़रूरत ही नहीं.

मेरा मानना है कि ईर्ष्या का एक प्रमुख कारण असुरक्षा ही है जो इस ज्ञान की कभी है कि हम मसीह में क्या हैं.

शैतान हमसे झूठ बोलता है और बताता है कि दूसरे लोग हमसे बेहतर हैं. वो नकारात्मक विचारों द्वारा हमें धोखा देने में सफल हो जाता है जैसे: 'यदि जो उसके पास है वो मेरे पास होता, या यदि मैं उसकी तरह होती या काश् मैं वो कर सकती जो वो कर सकतके हैं' हमारा ख़्याल है यदि हम दूसरों की तरह होते तो हम उतने ही अच्छे होते जितने वो हैं. ये एक ग़लत सोच है जो हममें ईर्ष्या और जलन भर देती है. इस आज्ञाओं में एक आज्ञा ये भी है, ''तू किसी के घर का लालच ना करना; ना तो किसी की स्त्री का लालच करना और ना किसी के दास दासी बैल गधे का, ना किसीकी वस्तु का लालच करना'' (निर्गमन २०:१७)

लालच करने का मतलब है, ''ईर्ष्या ईर्ष्यालू ढंग से इच्छा करना'' ईर्ष्या की परिभाषा है'' पीड़ादायी और क्रोध उत्पन्न करने वाली सचेतना उस लाभ के प्रति जिसका आनंद कोई और उठा रहा है और साथ वही लाभ पाने की इच्छा ''किसी से जलन रखने का मतलब'' असहनशीलता वाली शत्रुता या प्रतिद्वंदी के प्रति हिंसकता या उसके प्रति जो लाभ का आनंद उठाता दिखाता है. एक ईर्ष्यालू व्यक्ति ये भी नहीं चाहता कि दूसरों के पास हो जो उसके पास है. दूसरे शब्दों में, ईर्ष्यालू व्यक्ति के लिए दूसरों जैसा होना भी काफ़ी नहीं. इससे उसको संतुष्टि नहीं मिलती, वो दूसरे व्यक्ति से बेहतर होना चाहता है.

नियम नियम में ये नियम था कि किसी व्यक्ति को परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए और प्रसन्न करने के लिए संपूर्णता और अपनी अपूर्णता के बदले लगातार बलि देने की आवश्यकता थी. ये संभव था यदिलोग संघर्ष करें और मेहनत करें तो हो सकता है कि वो पहली नौ आशायें पाल सकें पर ये दसवीं आज्ञा ''तू लालच ना करना'' – वो कभी पाल नहीं सकें, क्योंकि इसका सम्बन्ध था व्यक्ति के दिल और इच्छा के साथ.

निय के मापदण्डों के अनुसार धर्मी होने के लिए किसी व्यक्ति को सभी नियम सम्पूर्णता से पालने की आवश्यकता होती है. कुछ नियम पालना काफ़ी नहीं था. इसलिए सभी लोग आज्ञाओं में फंसे थे कि अपने पड़ोसी के घर उसके सेवक या किसी भी चीज़ का लालच नहीं करना है. सिर्फ़ यहीं आज्ञा स्पष्ट बताती है कि मानवता को एक उद्धार कर्ता की कितनी ज़्यादा ज़रूरत थी. हम इंसानी लोगों को मदद की ज़रूरत थी. वरना हम परमेश्वर के सामने साफ़ खड़े रहने की उम्मीद भी नहीं कर सकते थे.

नई वाचा के अनुसार हर व्यक्ति की क़ीमत और स्थान ''मसीह में'' बने रहने पर आधारित है कि उनपर पूरी तरह विश्वास किया जाए और हर बात के लिए विश्वास किया जाए जो किसी व्यक्ति की आवश्यकता है. मसीह हमारी धार्मिकता हैं. हम धर्मी बनाये गए उस द्वारा नहीं जो किसी और के पास है, पर यीशु में विश्वास द्वारा इस सच्चाई को समझने पर सुरक्षा की ऐसी अनुभूति प्राप्त होती है जो ईर्ष्या और जलन को पूरी तरह हटा देती है.

एक ही शरीर के अंग

परमेश्वरने एक सबसे उत्तम उदाहरण जो मुझे दिया एक बात समझाने को एक दिन जब मैं ईर्ष्या के बारे में शिक्षा दे रही थी. अपनी कल्पना का इस्तेमाल करो और इस बारे में सोचो: हमारा एक शरीर है, पर वो अलग-अलग अंगों से बना है. मेरे भौतिक शरीर का हर अंग अलग तरह का है और इसके कार्य बनावट और क्षमतायें भी अलग - अलग है. कुछ अंग बाहर से दिखते हैं जब कि कुछ छिपे रहते हैं और बहुत कम ही दिखने में आते हैं. (१ कुरिन्थिओं १२ में प्रेरित पौलूस यहीं उदाहरण देते हैं जब वो मसीह की देह यानी कलीसिया की तुलना हमारे भौतिक शरीर से करते हैं)

मेरी ऊंगली को अंगूठी पहनने को मिलती है, और मेरी आंखों को देखने का आनंद मिलता है कि उंगली ने अंगूठी पहनी है. हालांकि आंख को अंगूठी पहनने को नहीं मिलती. अब अगर आंख को ईर्ष्या करनी होती और वो शिक़ायत करनी शुरू करती वो भी अपनी अंगूठी पहनना चाहती है, और यदि ईर्ष्यालू आंख को ख़ुश करने के लिए परमेश्वर को फ़ैसला करना पड़ता और उसकी इच्छा पूरी करनी पड़ती. तो ज़रा सोचिए मेरा शरीर किस हाल में होता.

यदि आप उंगली से अंगूठी उतारें और उसे आंख पर पहनने की कोशिश करें, तो आप ये संदेश तुरंत समझ जायेंगे. यदि आंख को अंगूठी पहननी होतो तो सिर को ऊपर की ओर ऐसे मुड़ना पड़ता की आंख बाक़ी शरीर को मार्गदर्शन दें ही ना पाती क्योंकि वो देख ही नहीं सकती.

इसलिए जो बात समझाने की मैं कोशिश कर रही हूँ, वो ये कि परमेश्वर की कभी ये इच्छा नहीं थी. कि हम सब एक-से हो, इससे मसीह के शरीर में हम जो कार्य हमें दिए गए है उसमें असमर्थ रहते. और ये भी कि यदि आंख अंगूठी पहनने की कोशिश करती तो उसे ऊंगली द्वारा पहनी अंगूठी को देखने का आनंद ना मिलता. जो परमेश्वरने आंख के लिए उपलब्ध कराया था. याद रखिये ऊंगली को अंगूठी पहनने को मिलती है और आंख को अंगूठी देखने को मिलती है. आंख को रचा गया कि वो देखने का आनंद ले. जो बाक़ी के शरीर को दिया गया है.

दूसरी बात स्पष्ट है : जब कोई व्यक्ति वो बनने की कोशिश करे जो उसे बनाया ही नहीं गया, तो इससे उसके उस आनंद में भी रूकावट आती है जो उसका हो सकता था यदि वह अपने शरीर में सही स्थान ग्रहण करता और उस ज़िम्मे को पूरा करने में संतुष्ट होता जो परमेश्वरने उसके लिए रखा है. मेरा निजी विश्वास यह है कि एक कारण यही है कि लोग जो स्वर्ग जाने वाले हैं वो स्वर्ग की इस यात्रा का आनंद ही नहीं ले रहे.

जैसा कि मैंने कहा था, परमेश्वरने ये उदाहरण मेरे हृदय में तब डाला जब मैं शिक्षा दे रही थी. उन्होंने इसको और विस्त्रित किया हाथों और पांव का चित्र सुझा कर. ज़रा सोचिए, इस बारे में : जब मेरे पैरों को नये जूते मिलते हैं, मेरे हाथ बहुत ख़ुश होते है. और यदि मेरे पांव बिना किसी मदद के जूता ना पहन पा रहे हों तो मेरे हाथ मदद करते हैं कि पांव अपने नये जूतों में जा सकें.

और इसीतरह शरीर को व्यवहार करना होता है – किसी एक अंग किसी दूसरे अंग से न ईर्ष्या करनी है न जलना है. हर अंग जानता है कि परमेश्वरने उसे किसी ख़ास मक़सद के लिए अनौखा बनाया है. शरीर में रहकर हर अंग उस कार्य का आनंद लेता है जो उसे दिया गया है; ये जानते हुए परमेश्वर की दृष्टि में कोई एक अंग दूसरे से बेहतर नहीं हैं.

अलग-अलग काम करने पर भी कोई एक अंग दूसरे से नीचा नहीं हो जाता हर हिस्सा आज़ाद है. अपने स्थान और अपने ज़िम्मे का आनंद लेने के लिए और बिना हिचकिचाहट दूसरे अंगों की मदद करने के लिए जब भी ज़रूरत हो. हाथ पांव से ये नहीं कहता, ''खैर, अगर तुम सोचते कि इन नये जूतों में जाने के लिए तुम सोचते कि इन नये जूतों में जाने के लिए मैं तुम्हारी मदद करूंगा, तो बात यहीं नहीं रूकती दरअस्ल मेरे ख्याल से मेरे पास भी जूते

होने चाहिए; मैं तंग आ गया हूँ. दस्तानेऔर अंगूठियां पहनते पहनते. मुझे मेरे अपने जूते चाहिए ताकि मैं तुम्हारी तरह हो सकूं.''

नहीं, हाथ ऐसी प्रतिक्रिया कभी नहीं करते जब पांव को नये जूते मिलते हैं और उन्हें पहनने के लिए मदद की ज़रूरत होती है. और इसीतरह हमें भी प्रतिक्रिया नहीं करनी. जब हमारे किसी परिचित को मदद की ज़रूरत हो हमें दूसरों को हर मदद देने को तैयार रहना चाहिए. ये देखने के लिए कि वो भी अपना ज़िम्मा निभा सकें और वो सब आशीषें पा सकें. जो परमेश्वर उन्हें देना चाहते हैं. स्वयं से पूछिये ''क्या मैंने अपनी अंगूठी आंख पर पहनी है या अपने जूते हाथ पर?'' अगर आप ऐसा किए हुए हैं तो इसमें कोई शक़ नहीं कि आप क्यों इतने दुखी और आनंद रहित हैं.

युहन्ना की अंजील के तीसरे अध्याय में, युहन्ना बपतिस्मा देने वाले का एक शिष्य आकर उसे ख़बर देता है कि यीशु ने वैसे ही बपतिस्मा देना शुरू कर दिया है जैसे युहन्ना दे रहा था. और अब ज़्यादा से ज़्यादा लोग यीशु के पास जा रहे हैं उसके मुक़ाबले में जितने युहन्ना के पास आते थे. युहन्ना के पास ये संदेश एक बुरी मंशा से ले जाया गया था, इसका मतलब था कि उसमें ईर्ष्या उत्पन्न की जाएं. ज़ाहिर है जो शिष्ट ये ख़बर लाये थे वो असुरक्षित थे और शैतान द्वारा इस्तेमाल किये जा रहे थे कि युहन्ना में यीशु के प्रति ग़लत भावनायें उत्पन्न की जाएं

युहन्ना ने जवाब दिया, ''जब तक मनुष्य जो स्वर्ग से ना दिया जाए (वह किसी बात का दावा नहीं कर सकता वह ख़ुद कुछ भी हासिल नहीं कर सकता) तब तक वह कुछ नहीं पा सकता. (मनुष्य को जा वरदान स्वर्ग से मिले हैं उसी में उसे संतुष्ट रहना चाहिए, अन्य कोई स्रोत नहीं)'' (युहन्ना ३:२७)

युहन्ना अपने शिष्यों से यह कह रहा था कि जो कुछ भी यीशु कर रहे थे वो इसलिए था क्योंकि उन्हें ये वरदान स्वर्ग से मिला था. युहन्ना जानता था कि परमेश्वर ने उसे किसलिए बुलाया है. और ये भी जानता था कि कोई भी व्यक्ति अपने बुलावे और वरदानों से बाहर नहीं जा सकता. युहन्ना अपने शिष्यों से कह रहा था, ''संतुष्ट रहो.'' वो जानता था कि परमेश्वर ने उसे यीशु से पहले यीशु का मार्ग तैयार करने के लिए बुलाया है, और जब समय आयेगा कि यीशु मुख्य भूमिका में हों, तो उसे लोगों के सामने और कम से कम दिखना था.

ये थे युहन्ना के वचन अपने शिष्यों के लिए उस बयान के जवाब में जहां उसे बताया गया कि भीड़ यीशु के आसपास जुट रही है: ''अवश्य है कि वह बड़े और मैं घटूं (उसे और प्रमुख दिखना है और मुझे कम होते जाना है)'' (युहन्ना ३:३०) कितनी महान आज़ादी युहन्ना जी रहा था. मसीह में सुरक्षित होने का अनुभव भी उतना ही लाजवाब है कि हमें किसी से साथ प्रतिस्पर्धा की ज़रूरत नहीं हैं.

प्रतिस्पर्धा से आज़ादी

प्रेरित पौलूस ने लिखा है ''हम घमण्डी होकर ना एक दूसरे को छेड़े और ना एक दूसरे से डाह करे'' (हम एक दूसरे से ईर्ष्या ना करें और स्वयं पर घमण्ड ना करें)'' (गलतियों ५:२६)

इसकी बजाय, पौलूस हमें प्रेरित करते हैं कि हम प्रभु में इतना बढ़ें जब तक हम उस मुक़ाम तक ना आ जायें. जहां हम ऐसा व्यवहार करें ''हर एक अपने ही काम को जांच ले और तब एक दूसरे के विषय में नहीं परंतु अपने ही विषय में उसको घमण्ड करने का अवसर होगा'' (गलतियों ६:४)

धन्यवाद प्रभु का एक बार हम जान जायें कि हम मसीह में क्या थे? तो हम प्रतिस्पर्धा और तुलना के तनाव से आज़ाद हो जाते हैं. हम जानते हैं कि हमारी क़ीमत और हैसियत हमारे काम और उपलब्धियों से अलग है. इसलिए हमें परमेश्वर की महिमा के लिए पूरा ज़ोर लगा देना चाहिए बजाय किसी और से बेहतर होने की कोशिश करने के.

कई बार लोग मेरे पति से या मुझसे पुछते हैं कि डेव को कैसा लगता है ऐसी औरत से विवाहित होना जो वो सब कर रही है जो मैं कर रही हूँ. मैं रेडियो पर आवाज़ हूँ, टेलिविज़न पर एक चेहरा हूँ, मैं ही हूँ जो मंच पर खड़ी होती हूँ. लोगों के सामने मैं ही हूँ जो सबसे दिखती या चर्चित होती है दूसरे शब्दों में मैं केन्द्र बिन्दु हूँ अपनी सेवकाई का. डेव व्यवस्थापक है, जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य है, पर पृष्ठभूमि में रहने वाला पद है. उसका काम परदे के पीछे होता है, ना कि सामने जैसे मेरा.

हमारी परिस्थिति अनोखी है क्योंकि अक्सर इससे विपरीत होता है. ज़्यादातर किसी भी सामूहिक प्रयास में, आदमी है जो केन्द्र बिन्दु के स्थान पर होता है, जबकि उसकी पत्नी पर्दे के पीछे काम करती है उसकी मदद के लिए मेरे पति इतने सुरक्षित हैं कि उनकी हैसियत और क़ीमत की धारणा इससे प्रभावित नहीं होती कि वो क्या करते हैं और क्या नहीं करते. असल में वे इतने सुरक्षित है (प्रभु की आज्ञाकारिता में) कि उन्होंने मेरी मदद की है कि जो मैं हूँ और जो मैं प्रभु में बन सकती हूँ, उसे पाने में वो इसीमें संतुष्ट है कि मैं अपने जीवन में परमेश्वर के बुलावे को पूरा कर सकूं, और इसी प्रक्रिया में वे अपने जीवन में परमेश्वर के मक़सद को निभा रहे हैं.

डेव का बुलावा और उनकी हैसियत नि:संदेह मुझ जैसी ही महत्वपूर्ण हैं. वो लोगों के सामने शायद इतनी ज़ाहिर ना होती हो. एक सेवकाई के व्यवस्थापक के रूप में, वो आर्थिक मामले देखते हैं, रेडियो और टेलीविज़न स्टेशन्स् जो हमारे लाईफ इन द वर्ल्ड प्रसारण में रूचि रखते हैं. उन्हें ढूंढना और उनसे क़रार करना, वो सावधानीपूर्वक उन सभी स्टेशनों को देखते हैं

जो हमारे प्रसारण कर रहे हैं. इस बात का ध्यान रखने के लिए कि वो अच्चा फल लायें, और वो हमारे यात्राओं के सभी प्रबन्ध करते हैं.

हमारी मीटिंगों में, डेव को पसंद है पीछे उस टेबल पर काम करना जहां हमारे शिक्षा टेप रखे गए हैं, लोगों से बात करना उनकी सेवकाई करना. मैंने उसने कई बार कहा है कि वो मंच पर मेरे साथ खड़े हों, और उनका जवाब हमेशा एक ही रहा है, ''मंच वो जगह नहीं जहां मुझे होना चाहिए. मैं अपनी जगह जानता हूँ और मैं वहीं रहनेवाला हूँ'' ये बयान है एक सिद्ध और सुरक्षित व्यक्ति का.

लोगों में ये आदत होती है कि डेव को पूछें, ''क्या तुम जॉयस के पति हो?'' वो अक्सर यहीं जवाब देते है, ''नहीं, जॉयस मेरी पत्नी है'' डेव हमारी सेवकाई में कई, कई बहुत से महत्वपूर्ण ज़िम्मे निभाते हैं. पर अपनी भूमिका की समीक्षा में वो अक्सर यहीं कहते हैं ''मुझे परमेश्वर ने बुलाया है जॉयस की ढाल बनने को, और उसे वहां ले जाने का जहां परमेश्वर चाहते हैं कि वो पहुंचे. मैं इस बात का ध्यान रखता हूँ कि उसे कोई ठेस ना पहुंचे और देखता हूँ कि वह किसी क़िस्म की मुसीबत में ना पड़े.''

कई बारी मैं कुछ ऐसी बाते करना चाहती हूँ जिनकी अनुमति डेव नहीं देते क्योंकि वे महसूस करते हैं कि या तो ये ना समझी है या उनका समय ग़लत है. मैं ये नहीं कह सकती कि उनकी इच्छा के आगे घुटने टेकना आसान है. ख़ासकर जबकि वो मेरी इच्छायें हों, पर मैंने ये सीख लिया है कि उसकी योग्यतायें संतुलन लाती है हमारे जीवनों में और हमारी सांझी सेवकाई में.

पहले पहल कुछ वर्षों तक डेव को हमारी इस परिस्थिति से डेव को काफ़ी संघर्ष करना पड़ा था. असल में वो सेवकाई में रहना ही नहीं चाहता था. फिर भी, परमेश्वर ने उसे दिखाया कि उन्होंने मुझे अपने वचन की शिक्षा का वरदान दिया है. डेव कहते हैं, ''परमेश्वरने मुझसे अपनी पत्नी के अधीन रहने को नहीं कहा, पर उसने कहा है कि मैं उस वरदान के अधीन रहूँ जो उसमें डाला है.'' वो कहते हैं कि वो वरदान भी उनका है ऐसा परमेश्वर ने उन्हें दिखाया और उस वरदान के सामने समर्पित होकर और जो बुलावा मुझे मिला है उसे करते रहने पर, डेव स्वयं प्रभु के सामने समर्पित हो रहे थे.

डेव ना केवल मुझे वो करने देते हैं जिसके लिए परमेश्वरने मुझे बुलाया है बल्कि इसे करने में मेरी मदद करते हैं. डेव मायर की विवाहित होना मेरे लिए एक महान सौभाग्य है. जहां तक मेरा सवाल है मेरे ख्याल से वो एक महानतम व्यक्ति हैं. वो सबसे ख़ुश मिजाज़ और सबसे संतुष्ट व्यक्ति भी है.

जब मैं कहती हूँ कि डेव हमेशा ख़ुश हैं, तो मेरा मतलब है कि वो सचमुच ख़ुश है. वे जीवन का भरपूर आनंद उठाते हैं. मैं मानती हूँ, और ऐसा डेव भी मानते हैं कि ये आनंद परमेश्वर के सम्मुख समर्पण का नतीज़ा है ना कि इसका कि वो करने की कोशिश करता रहे जिसके लिए परमेश्वर ने उसे नहीं बुलाया. वो किसीसे प्रतिस्पर्धा नहीं कर रहे वो किसीको कुछ सिद्ध नहीं कर रहे.

सुरक्षित ज़मीन में जड़ पकड़ना

इस किताब की शुरूआत से ही आपके लिए मेरी यहीं प्रार्थना थी कि ''विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ (परमेश्वर के श्रद्धालु लोग प्रेम का अनुभव) भलीभांति समझने की शक्ति पाओं कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊँचाई और गहराई कितनी है.'' (इफ़िसियों ३:१७-१८)

जब हम एक दूसरे से और लोगों से स्पर्धा करने की ज़रूरत से मुक़्त हो जाते हैं. हम, हम उनकी सफलता में मदद करने के लिए आज़ाद हो जाते है. जब हम सचमुच जान जाते है कि हम कौन हैं, हमें अपना पूरा जीवन इसी में गुज़ारने में नहीं लगाना कि स्वयं को और अन्य लोगों को अपनी क़ीमत और हैसियत सिद्ध करने की कोशिश. डेव जानते हैं कि वो परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं. इसलिए संसार मेरी तुलना में उनकी हैसियत के बारे में कुछ भी सोचे उन्हें इसकी परवाह नहीं. मेरा मानना है कि डेव का फ़ैसला और जीवन बहुत लोगों के लिए गवाही हो सकता है. परमेश्वर के राज्य में बहुत कुछ करने की ज़रूरत है, और ये तभी बेहतर पूरा होगा यदि हम सब मिलकर इसमें काम करें अपनी-अपनी व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार जो परमेश्वरने हमें प्रदान की हैं.

चले हम एक ओर रख दें अपनी ईर्ष्यायें, जलन, प्रतिस्पर्धायें और तुलनायें. याद रखिये, इन समस्याओं की जड़ असुरक्षा में है.

ख़ुशख़बरी ये है कि हम असुरक्षा से आज़ाद हो सकते हैं और इसतरह उस समस्या से आज़ाद जो इसे उत्पन्न हुई है. यशायाह ७४:१७ में लिखा है कि ''यहोवा के दासों का यहीं भाग होगा (शांति, धार्मिकता, सुरक्षा, विरोध पर जीत) और वो मेरे ही कारण धर्मी ठरेंगे'' इसका मतलब ये है क परमेश्वर के पुत्र और पुत्री होने के नाते हमें सुरक्षा विरासत में मिली है. अब इस विरासत का इस्तेमाल करो.

दूसरों के लिए आनंदित हो और संतुष्टि का आनंद लो, आनंद लो शांति तृप्ति और ख़ुशी का जो परमेश्वर के जानने से मिलती है कि वह आपसे प्यार करते हैं और आपको धर्मी और क़ीमती जानते हैं. अपने पुत्र यीशु मसीह में विश्वास के ज़रिए इस विश्वास में जड़ पकड़ लो और अपने लिए उनके प्रेम द्वारा सुरक्षा की नींव डालो.

१९

भावनात्मक स्थिरता

इस किताब में पहले मैंने एक कथन के बारे में कहा है ''व्यसनी व्यवहार वो विभिन्न व्यवहार दर्शाने के लिए जो एक शोषित व्यक्ति और वो व्यक्ति जिसका शर्मसार रवैया हो अपना सकता है इस भाग में मैं ''ख़ासकर इसी भावनात्मक लत'' से निपटना चाहूंगी और ये कि भावनात्मक स्थिरता पाने के लिए इनसे कैसे निपटना है.

इस संदर्भ में एक लत की परिभाषा हो सकती है अनिवार्य व्यवहार, अक्सर जो किसी सवेंदना के कारण उत्पन्न हो बिना होश और सोच के लोग जिन्हें ठेस पहुंची होती है वो क्रिया की बजाय प्रतिक्रिया करते हैं. मेरे कहने का मतलब है कि वो अपनी घायल भावनाओ के अनुसार प्रतिक्रिया करते हैं बजाय इसके कि परमेश्वर के वचन और समझदारी के अनुसार कार्य करें. बहुत साल तक जब भी मुझे किसी ऐसे व्यक्ति या स्थिति का सामना करना पड़ता जो मेरे अतीत की याद दिलाती तो. मैं एक भावनात्मक प्रतिक्रिया करती डर से प्रेरति होकर बजाय विश्वास में कार्य करने के. इस तरह की घटनायें घायल पीड़ित के लिए बहुत उलझन पैदा कर देती हैं कि सब कुछ इतना जल्दी हो जाता है कि वो वास्तव में समझ नहीं पाता कि वो ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है.

उदाहरण के लिए वो व्यक्ति जिसने मेरा शोषण किया उसका व्यक्तित्व बहुत ही हावी होने वाला था. अपने बचपन के दौरान मुझे बहुत सी जोड़ तोड़ और चालाकी और नियन्त्रण का सामना करना पड़ा. मैंने फ़ैसला किया और बार-बार ख़ुद से ये प्रतिज्ञा की कि जब मैं घर छोड़ ने के क़ाबिल बड़ी हो जाऊंगी और अपने बलबूते पर रह सकूंगी, तो कभी भी कोई मुझ पर नियन्त्रण नहीं रखेगा.

आगे के सालों में अधिकार के बारे में मेरा नज़रिया भी चौपट था. मैंने हर अधिकारी छवि को अपने शत्रुके रूप में देखा. मैं नियन्त्रित किए जाने और चालबाज़ी से इतनी भयभीत थी कि जब मेरे जीवन में किसी भी व्यक्ति ने मुझसे कुछ करवाने की कोशिश की मैं ये नहीं करना चाहती थी मेरी प्रतिक्रिया ग़ुस्से वाली या पीछे हटने वाली होती. अक़्सर ये घटनाये बहुत

मामूली होती. यहां तक कि किसी का सुझाव भी यदि मेरी इच्छा के अनुसार नहीं होता तो मेरे व्यवहार अजीब सा हो जाता. किसी और की तरह मुझे ख़ुद अपने काम समझ नहीं आते. वास्तव में, मैं जानती थी कि मैं बुरा व्यवहार कर रही हूँ. मैं वैसा व्यवहार करना नहीं चाहती थी पर लगता था में बदलने में असमर्थ हूँ.

परमेश्वर मुझे भावनात्मक व्यसनों के बारे में सिखाने लगे, मुझे दिखाया कि इसी तरही कैसे लोग व्यसनों के शिकार हो जाते हैं और अपने शरीरों में कुछ रसायनिक पदार्थ डालने के लिए मजबूर रहते हैं (ड्रग्स शराब, निकोटिन, कैफ़ीन, चीनी) वो मानसिक और भावनात्मक व्यसन (लतें) भी पाल लेते है. याद रखिये एक व्यसन (लत) एक अनिवार्य व्यवहार है जो बिना सोचे किया जाता है. मेरे हिंसक प्रतिक्रियायें मुख्यत:. लोगों को बताने का मेरा तरीका थी (तुम मुझ पर नियन्त्रण नहीं रखोगे)

मैं क़ाबू किए जाने से इतनी भयभीत थी कि मैंने हर स्थिति के लिए ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दिखाई जब कि वहां असल में कोई समस्या थी ही नहीं. ये मैंने स्वयं को बचाने के लिए किया. ग़ुस्सा कहता था'' मैं तुम्हें मुझे क़ाबू नहीं करने दूंगा.'' और पीछे हटना कहता था ''मै तुमसे ताल्लुक़ नहीं रखना चाहती'' एक व्यक्ति ठेस नहीं खाता यदि वो ताल्लुक़ ना रखे. इसलिए जब भी कोई दर्दनाक बात मेरे सम्बन्धों में घटती या तो मैं इस पर झपट पड़ती या इससे निपटने से भी इंकार कर देती. इस तरह के दोनों व्यवहार संतुलन से बाहर हैं और शास्त्रवचन के अनुसार नहीं है. वो व्यसन की समस्या को और बढ़ा देते हैं क्योंकि वो इसे सींचते हैं. यदि कोई व्यक्ति जिसे ड्रग्स की लत हो तब जितनी ज़्यादा ड्रग्स वो लेता है, उतनी और ज़्यादा की ज़रूरत उसे होती है. जितनी ज़्यादा देर वो अपने व्यसन के वश में रहता है उतना ही ज़्यादा वो व्यसन उसपर हावी होता है अंत में वे उसे खा जाता है ये लता और व्यसन तोड़े जाने चाहिए और इसका मतलब है शरीर को इन पदार्थों से वंचित करना जिसका वो आदी हो गया ही, और इनके हटने की क्रिया से हुए दर्द से निपटना आज़ाद होने के लिए. यही सिद्धांत लागू होता है मानसिक और भावनात्मक लतों पर.

चिंता और तर्क की लत

मेरी एक मानसिक लत थी चिंता में चिंता करती चिंता करती चिंती करती. ''यहां तक कि जब चिंता करने को कुछ ना होता मैं चिंता करने को कुछ न कुछ ढूंढ लेती. मैंने एक ज़िम्मेदारी की ग़लत सी अनुभूति अपना ली थी हमेशा समस्यायें सुलझानो को कोशिश जिसके प्रति न मेरी ज़िम्मेदारी थी न हल. मैं तर्क करती अनुमान लगाती पर हमेशा गड़बड़ी में जीती.

नतीजा ये, मेरा मन लगातार चिंता और तर्क से भरा रहता. हालांकि इसने मुझे शारीरिक और मानसिक तौर पर थका दिया आर जीवन से हर क़िस्म का आनंद चुरा लिया, मैं इसे क़ाबू

में ना कर पाती. किसी भी समस्या का ख़ुदब ख़ुद जवाब मेरे लिए चिंता और तर्क ही होता. हालांकि मेरा व्यवहार असमान्य था, पर मेरे लिए ये सामान्य था क्योंकि समस्याओं का जवाब देने का मेरा यही एक तरीक़ा था.

परमेश्वर का वचन कहता है ''प्रभु में विश्वास करो (उन पर आश्रित हो भरोसा करो और आत्मविश्वास रखो)'' (भजनसंहिता ३७:६) फिर भी, विश्वास आसान चीज़ नहीं है यदि आपका शोषण हुआ हो. जिन लोगों पर आपने आपनी देखभाल के लिए विश्वास किया उन्होंने ऐसा नहीं किया; इसकी बजाय आपका शोषण किया. उन्होंने आपको भयंकर दुख पहुंचाया, तो आप स्वयं से ये वादा कर लाते हैं कि लिए कोई दोबारा आपको ठेस नहीं पहुंचायेगा. आप ये देखने के लिए इंतज़ार नहीं करते कि दूसरे आपको ठेस पहुंचायेगे या नहीं, आप बस अपने आस पास सुरक्षा की दीवारें खड़ीकर लेते हैं स्वयं को हानि से बचाने के लिए.

एक तरीका ये है जिससे आप स्वयं को बचाने की कोशिश करते हैं वो है हर चीज़ का अंदाज़ा लगाने की कोशिश. यदि आप ऐसा कर लेते हैं तो समझते हैं कि सबकुछ आपके नियन्त्रण में है और आपको परेशान करने के लिए कुछ भी अकस्मात नहीं होगा. जब परमेश्वर ने मेरे जीवन में कार्य करना शुरू किया तो उन्होंने मुझ साफ़-साफ़ दिखाया कि मुझ में चिंता और तर्क की लत थी जिसे मुझ छोड़ना पड़ेंगा. यदि मरे जीवन में कोई समस्या होती, और मैं उसे हल करने की कोशिश ना कर रही होती तब मुझे महसूस होता कि भीतर में मैं पूरी तरह बेक़ाब हूँ आपको याद करना चाहिए कि मैं उस हर चीज़ को अपने नियन्त्रण में रखना चाहती थी जो मेरे आस-पास हो इस तरह मैंनें सोचा कि मैं ठेस नहीं खाऊंगी.

मैंने माना कि मैं अपनी बहुत अच्छी देखभाल कर सकूंगी पर मैंने इस पर विश्वास नहीं किया कि कोई और भी मेरी देखभाल कर सकता हैं.

स्वयं से इन्कार करो

यीशुने कहा यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो स्वयं का इंकार करे (भूल जाये, नज़र अंदाज़ करे बेदखल करे, स्वयं पर से ध्यान हटा ले और अपने हितों को भूल जाये) और.... मेरे पीछे आये (हमेशा मेरे साथ सुदृढता से चले)'' (मरकूस ८:३४)

जैसे जैसे परमेश्वरने अपने संयमी तरीक़ो से मेरे साथ काम करना शुरू किया, उन्होंने मुझे सिखाया कि मैं उनपर भरोसा कर सकती हूँ और मैं इस पर विश्वास कर सकती हूँ कि वो मेरी समस्या पर कार्य कर रहे हैं. तब भी जब मैं ऐसा नहीं करती. मेरी भूमिका थी कि मैं विश्वास में आगे बढ़ू और चिंता और तर्क से इंकार करूं. जिस व्यसनी व्यवहार की मैं आदी हो चुकी थी उसे अपने मन से निकालना पड़ा, जैसे जैसे मैंने ऐसा किया, अन्त में मैं इससे पूरी तरह आज़ाद हो गई.

मुझमें हटने के लक्षण भी नहीं दिखें-डर का अनुभव, बेक़ाब होना और कभी कभी बेवक़ूफ़ी करना. (किसी व्यक्ति को अपनी दासता में रखने के लिए शैताने कोई भी कोशिश करेगा यहां तक कि वो मूर्खता का भी अहसास दिलायेगा)

मरकुस ८:३४ में यीशु हमे सिखाते है कि उनके पीछे चलने के लिए हमें स्वयं का इंकार करना होगा और अपने मार्ग को छोड़कर उनके मार्ग को चुनना होगा. मेरा मार्ग था कि मैं अपनी देखभाल ख़ुदकरूं हमारे लिए उनका मार्ग है कि हम स्वयं को उनके हाथों में सौंप दें और अनुभव से सीखें कि वे न कभी हमें छोड़ेगे न त्यागेंगे (देखिये इब्रानियों १३:५). इस सच्चाई को जानने के लिए पहले मुझे अपना मार्ग त्यागना पड़ा.

एक दूध छुड़ाये जानेवाले बच्चे की तरह

भजन लेखक को अवश्य इस विषय के बारे में ज़रूर पता होगा जिस पर हम इस अध्याय में चर्चा कर रहे हैं जो है व्यसनो को तोड़ना जब उसने ये लिखा ''निश्चय मैंने अपने मन को शांत और चुपकर दिया है, जैसे दूध छुड़ाया हुआ लड़का अपनी मां की गोद में रहता है, वैसे ही दूध छुड़ाये हुए लड़के के समान मेरा मन भी रहता हैं (भजनसंहिता १३१:२) वो ये भी कहता है कि उसकी आत्मा दूध छुड़ाये बच्चे के समान है.

आत्मा को अक़्सर कहा जाता है मन, इच्छा, और भावनायें इस शास्त्र वचन से हम देखते हैं कि यही क्षेत्र शायद किसी ख़ास क़िस्म के व्यवहार की लत में पड़ जाये बिल्कुल वैसे ही जैसे शरीर किसी विशेष प्रकार के पदार्थ का व्यसनी हो जाता है.

अपने मन को चिंता और तर्क से वंचित कर मैं अपनी मानसिक लतों से वंचित की गई बिल्कुल वैस ही जैसे एक बच्चे से उसकी दुध की बोतल या चूसनी छुड़ाई जाती है. और जैसे बच्चा ऐसे समय खूब रोता चिल्लाता है और कई तरह की हरक़तें करता है कि उसे वो बोतल या चूसनी वापस मिले, मुझे भी दौरे पड़े ग़ुस्से, रोने और आत्म ग्लानि के कई बार मुझ पर डर के हमले भी हुए, पर मैं परमेशावर के मार्ग पर स्वयं को रखे रही जब तक कि मैं अपने मार्ग यानी अपनी आदतों से पूरी तरह मुक़्त नहीं हो गई.

यीशु ने कहा कि के बंधूओं को छुड़ाने आये है (देखिये लूका ४:१८) और वो जिसे पुत्र मुक़्त होता है (देखिये युहन्ना ८:३६)

२०

निकटता और विश्वास

ऐसे व्यक्ति के लिए जिस का शोषण हुआ, निकटता हमेशा बहुत कठिन होती है. निकटात की ज़रूरत है विश्वास, और एक बार यदि ये विश्वास टूट जाये तो इसे दोबारा बनाना जरूरी है इससे पहले कि निकटता सहज हो सके.

क्योंकि लोग हमेशा लोगों को दुख पहुंचाते हैं, हम कभी भी दूसरों पर निर्भर नहीं रह सकते कि वो हमें दुख नहीं पहुंचायेंगे. मैं आपसे ये नहीं कह सकती ''बस लोगों पर विश्वास करो, वे कभी तुम्हे दुख नहीं पहुंचायेंगे''. शायद आपको दुख पहुंचाने की उनकी मंशा ना हो, पर हमें इस सच्चाई का सामना करना होगा कि लोग ही लोगों को दुख पहुंचाते है.

जैसा कि मैंने बताया था, मेरे पति एक बहुत ही शानदार, दयालु और सहज स्वभाव वाले व्यक्ति है; फिर भी, ऐसे पल भी आते हैं जब वे मुझे दुख पहुंचाते हैं, बस वैसे ही कुछ समय ऐसे होते हैं जब मैं उन्हें दुख पहुंचाती हूँ. वो लोग भी जो एक दूसरे से बहुत प्रेम करते हैं. कई बार दुख पहुंचाते हैं और एक दूसरे को निराश करते हैं. मुझे बहुत साल लगे इससे पहले कि मैं अपने पति की निकटता में सहजता महसूस करती और ईमानदारी से कह सकती कि मैंने अपने यौन सम्बन्धों का आनंद लिया. मैं चोट खाने और अपना इस्तेमाल किए जाने से इतनी भयभीत थी कि मैं सहज नहीं हो सकती थी मेरा मूल रवैया यही था ''यदि तुम्हें ये करना ही है, तो फिर चलो खत्म करो ये बात, ताकि मैं इसे भूल जाऊं और कुछ और करने को आगे बढ़ूं'' और बेशक़ मेरे पति मेरे इस रवैये को समझ गये थे. हालांकि मैंने अपनी सच्ची भावनायें छुपाने की बहुत कोशित की थी और दिखावा किया था कि मुझे अपने यौन सम्बन्धों में आनंद मिलता है.

मेरे इस रवैये ने डेव को अस्वीकृत महसूस कराया यदि वो एक सिद्ध मसीही ना होता जिसे प्रभु से ही ये समझ मिली थी कि मेरे अंदर क्या हो रहा था, मेरे रवैये से मर्द होने के नाते उसकी धारणा को ज़बरदस्त हानि हो सकती थी, पति की तो बात छोड़िये, एक बार उन्होंने मुझसे

कहा ''यदि मुझे तुम पर निर्भर रहना पड़ता ये बताने को कि मैं किस तरह का आदमी हूँ, तो मैं मुसीबत में पड़ जाता''.

मैं आभारी हूँ कि प्रभु ने मुझे मेरे पति के रूप में एक सिद्ध मसीही इंसान दिया मैं आभारी हूँ कि मैंने उन्हें तबाह नहीं किया जब मैं स्वयं चंगाई पा रही थी. बहुत बार मुसीबत में पड़े लोग शादी करते हैं. मुसीबत में पड़े लोगों से एक दूसरे को तबाह कर लेने के बाद उनकी समस्यायें उनके बच्चों पर स्थानांतरित कर दी जाती हैं. जो ख़ुद बाद में मुसीबतज़दा और सतायें लोगों की अलगी पीढ़ी बन जाते हैं.

बहुत साल तक मैंने इस मुद्दे को टाला अपने भीतर गहरे ही मुझे मालूम था कि निकटता और यौन सम्बन्धों के विषय में मुझे अपने रवैये से निपटना होगा और मैंने महिने दर महिने साल दर साल इसे टाले रखा. क्या आप में भी यही आदत है कि आप उन बातों को टालते रहे. जबकि परमेश्वर कोशिश कर रहे हैं कि आप उनसे निपटे? हम ऐसा इसलिए करते हैं कि कुछ मुद्दे इतने पीड़ा दायी होते हैं कि उनका सोचा भी ना जा सके उनसे गुज़रना तो दूर.

अंत में मैंने फ़ैसला किया कि मैं टालमटोल बंद करूं और सत्य का सामना करूं इस स्थिति में सत्य निम्नलिखित था: (१) समस्या मेरी थी पर मैं इसके लिए डेव को सज़ा दे रही थी (२) वो मेरे साथ बहुत संयम बरत रहे थे पर अब मेरे लिए समय आ गया था कि मैं अपनी समस्या से निपटूं (३) जब तक मैं अपना ये व्यवहार जारी रखूंगी शैतान मुझे हराना जारी रखेगा क्यों कि मैं अपने अतीत को अपने वर्तमान और भविष्य पर हावी होने दे रही थी (४) समस्याओं से निपटने को टालना पवित्र आत्मा की आज्ञा न पालने समान होता.

बेशक़ मैं बहुत ज़्यादा भयभीत थी; मुझे ये भी नहीं पता थी कैंसे शुरु करूं. मुझे याद है ''मैंने परमेश्वर को पुकारा पर मैं डेव पर कैसे भरोसा कर सकूं? क्या हो अगर वो मेरा फ़ायदा उठाना शुरु कर दें या क्या यदि... ''शैतान कभी भी अपने क्या हो यदि'' नहीं छोड़ता. मुझे ख़ासकर याद है कि प्रभु ने मुझसे कहा था ''मैं तुमसे ये नहीं कह रहा कि डेव पर भरोसा करो; मैं कह रहा हूँ कि मुझ पर भरोसा करो''. इसने तो स्थिति का दृष्टिकोण ही बदल दिया है. मेरे लिए लोगों के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करना आसान था, इसलिए मैंने वहीं से शुरुआत की.

मैंने बस वचनबद्धता अपना ली कि जो परमेश्वर ने मुझे अपने हृदय में दिखाया है वो मुझे करना ही होगा और अपनी भावनाओं के लिए मुझे उन पर भरोसा करना होगा. उदाहरण के लिए: मैं हमेशा चाहती थी कि बत्तियां बुझा दी जाएं डेव और मेरे प्रणय सम्बंधों के दौरन.

मुझे याद आ रहा है कि अपने दिल में मैंने महसूस किया कि हमें बत्तियां जलती रखनी चाहिए और हमने ऐसे ही किया. वो मुश्किल था, पर एक बार कुछ समय ऐसा करने के बाद आसान और आसान होता गया. अब मैं आज़ाद हूँ कि बत्तियां जलाये रखूं या बुझा दूं; अब इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि मैं किसी चीज़ से छुप नहीं रही.

एक और उदाहरण: मैं कभी डेव से पहल ना करती. ये दिलचस्पी दिखाने में कि मुझमे प्रणय इच्छा है. कई बार ऐसा होता जब मुझे उनकी इच्छा होती; मेरे भौतिक शरीर की एक इच्छा थी, पर मैं कभी उनके पास ना जाती. मैंने ये महसूस करना शुरु किया कि जब मुझे ऐसा महसूस होता था कि मुझे उनकी ज़रूरत है, तो मुझे भी ज़रूरत थी कि मुझे कुछ ऐसा करूं कि उन्हें बता सकूं. ख़ासकर ये मेरे लिए बहुत ही कठिन था क्योंकि मैं हमेशा यौन को ग़लत और गंदा समझती थी. क्योंकि इसी तरह तो ये शुरुआत में मेरे सामने पेश किया गया मेरे बचपन में.

मेरे पहले यौन अनुभव विकृत थे, इसलिए यौन के प्रति मेरा रवैया विकृत था. मानसिक तौर पर मुझे पता था कि यौन परमेश्वर की परिकल्पना है, पर मैं अपनी भावनाओं से आगे बढ़ नहीं पाती थी. एक बार फिर (आज्ञाकारी क़दम) आज्ञाकारी कदम उठाने ने दासता की बेड़ियाँ तोड़ी और अब इस क्षेत्र में भी मैं आज़ाद हूँ. कृप्या समझ लीजिए जब पवित्र आत्मा कुछ करने के लिए आपको आदेश दे रही है तो वह ये कर रहे हैं, आपकी मदद करने के लिए आपको आशीष देने के लिए और आपको किसी बंधन से छुड़ाने के लिए. पवित्र आत्मा एक सहायक है और उसके मन में आपकी भलाई ही है. लोग शायद, आपको दुख पहुंचाये पर परमेश्वर नहीं पहुंचायेंगे, कुछ बातें जिनसे वो आपको गुज़ाराना चाहते हैं शायद कुछ समय के लिए दुख पहुंचायें पर परमेश्वर अंत मे उसे आपकी भलाई के लिए मोड़ देंगे.

जब मैंने जो परमेश्वर मुझे दिखा रहे थे वो चुनने की प्रक्रिया अपनाई, मुझे धीरे-धीरे आज़ादी का आनंद मिला. और ऐसा ही आपके लिए होगा. बहुत सी ऐसी घटनाये है जिन सबका जिक्र नहीं किया जा सकता. पर मेरे ख्याल से आप समझ गये होंगे कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ. आपको अपनी स्थिति से ख़ुद निपटना है और पवित्र आत्मा आपके साथ चलकर निकटता और विश्वास की चंगाई प्रक्रिया में सहायता करेगा. अपना बाक़ी जीवन शक़ और डर की जेल में गुज़ारने से इंकार करो.

प्रभु पर भरोसा करो

मैं जानती हूँ कि मैंने ये इस किताब मे और भी कई स्थानों पर कहा है, पर मुझे लगता है कि मैं ये बात फिर कहूँ एक मुख्य बात जिसने भरोसे के क्षेत्र में मेरी मदद की है, और दूसरे क्षेत्रों में भी, कि मैं बस जान लूं कि परमेश्वर मुझसे लोगों पर भरोसा करने को नहीं कह रहे पर ख़ुद पर भरोसा करने को कह रहे हैं.

हम लोगों पर भी संतुलित ढंग से भरोसा रखना सीख सकते है. यदि हम संतुलन से डगमगाये तो हम ठेस खा सकते हैं. अक्सर परमेश्वर इन परिस्थितियों का इस्तेमाल करतेहैं कि हमें सम्बन्धों को संतुलित रखने की समझदारी सिखा सकें.

इस मुद्दे से निपटने के लिए मैं अक्सर यिर्मयाह १७ की ओर देखती हूँ ''यहोवा यूं कहता है, श्रापित है वो पुरुष जो मनुष्य पर भरोसा करता है, और उसका सहारा लेता है. जिसका मन यहोवा से मटक जाता है. वह निर्जल देश के अधमुये पेड़ के समान होगा जो कभी भलाई ना देखेगा वह निर्जल और निर्जन तथा लोंछाई भूमि पर बसेगा'' (वचन ५-६)

इन वचनों के बारे में सोचिए. वो कितना स्पषट कहते हैं कि हमें श्राप (मुसीबत) मिलेगा यदि हम मनुष्य को वह भरोसा दें जिसका असली हक़दार प्रभु है. यहां जिस शारीरिक सहारे का ज़िक्र है वो ये दर्शाता है कि ना ख़ुद पर भरोसा करो ना दूसरों पर.

जब मैं स्वयं की ओर अपनी ज़रूरते पूरी करने को देखती हूँ , मैं असफल होती हूँ; जब मैं दूसरों की ओर अपनी ज़रूरतें पूरी करने को देखती हूँ वे मुझे निराश करते हैं प्रभु ये चाहते हैं कि हम अपनी ज़रूरते उन्हें पूरी करने दें. जब हम परमेश्वर की ओर देखते हैं, तो वे अक्सर हमारी ज़रूरतें पूरी करने के लिए लोगों का इस्तेमाल करते है और हम उन पर भरोसा करते हैं.-उन पर नहीं जिनके जरिये वो कार्य कर रहे हैं- और यही संतुलन वो हमसे चाहते हैं और अब अच्छी ख़बर है ''धन्य है वह पुरुष जो यहोवा पर भरोसा रखता है जिसने परमेश्वर को अपना आधार माना हो (वचन ७)

अतीत में कुछ ऐसे समय आये जब मैं निराश अनुभव करती थी और अपने आसपास के लोगों पर क्रोधित हो जाती क्योंकि वो मुझे वो उत्साह नहीं दिलवा रहे थे जिसकी मुझे ज़रूरत थी. नतीजा ये, मेरा रवैया नाराज़गी भरा आत्मदया वाला होता जिसे मेरे परिवार वाले और अन्य लोग ना समझ पाते. बेशक़ इसने मेरी मांगे पूरी करने का काम नहीं किया क्यों कि मैं लोगों की ओर ताँक रही थी जब कि मुझे परमेश्वर की ओर देखना चाहिए था.

परमेश्वर ने मुझे सिखाया कि जब मुझे उत्साह की ज़रूरत हो मुझे ये उनसे मांगना चाहिए. जब मैंने ऐसा करना सीख लिया मैंने पाया कि वो ज़रूरत का उत्साह दिलाने को स्वयं ही, किसी माध्यम को चुनेंगे, मैंने सीखा कि मेरे लिए ये ज़रूरी नहीं कि सम्बन्धों पर दबाव डालूं लोगों से वो प्राप्त करने के प्रयास में जो केवल परमेश्वर ही मुझे दे सकते हैं. इस भाग में अगला वचन भी उस आशा की घोषणा करता है जो हमें परमेश्वर पर भरोसा रखने से प्राप्त होती हैं: ''वह उस वृक्ष के समान होगा जो नदी के तीर पर लगा हो और उसकी जड़ जल के पास, फैली हो; जब घाम होगा तब उसको ना लगेगा, उसके पत्ते हरे रहेंगे, और सूखे वर्ष में भी उनके विषय में कुछ चिंता ना होगी. क्यों वह तब भी फलता रहेगा (वचन ९)

ये वचन हमें तसल्ली दिलाता है कि यदि हम परमेश्वर पर भरोसा रखें बजाय शरीर के दुर्बल सहारे के, हम स्थिरता पायेंगे मैं इस शर्त पर ज़ोर देती हूँ क्यों ये हमारी चर्चा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. बिना स्थिरता की अनुभूति के जीवन में कभी सच्चा आनंद नहीं मिलता.

इन वचनों द्वारा आपको उत्साह मिले कि आप अपना भरोसा परमेश्वर पर रखें लोगों पर नहीं. अपनी ज़रूरते पूरी करने के लिए दूसरों की ओर ना देखिये परमेश्वर को देखिये. लोग चाहे आपके साथ कुछ भी करे. परमेश्वर उसे ठीक कर सकते हैं.

निकटता के विषय में एक आख़िरी विचार परमेश्वर ने हम सब को कुछ इस तरह रचा है कि हम एक दूसरे का आनंद ले. ख़ासकर बाईबल पति और पत्नी के बारे में कहती है कि उन्हें एक दूसरे का आनंद लेना चाहिए जैसा कि नीतिवचन ५:१८ में लिखा है ''तेरा सोता धन्य रहे. इंसानी जीवन धन्य रहे और अपनी जवानी की पत्नी के साथ आनंदित रहे.''

अपने जीवन साथी और अपने वैवाहिक जीवन का आनंद लेने के लिए निकटता का आनंद प्रमुख है. विश्वास में क़दम बढ़ाईये और जान लीजिए कि ठेस खाने का डर आपको और ज़्यादा ठेस पहुंचा रहा है बजाय डर का मुक़ाबला करने और आज़ादी पाने के अपने जीवन के लोगों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करो. शायद आप उनसे निपट ना सकें. पर वो सक्षम है.

सम्बन्धों में संतुलन का महत्व

स्वयं से प्रश्न कीजिए कि क्या आपका कोई ऐसा संबंध है जो असंतुलित है क्या आपके जीवन में कोई ऐसा है जिस पर आप बहुत ज़्यादा निर्भर है? जब आपको समस्या आये तो क्या आप फ़ोन की ओर भागते है या सिंहासन की ओर? क्या आप लोगों पर निर्भर रहेते है कि वो आपको ख़ुशी दे यां आप प्रभु पर निर्भर रहते हैं.

मुझे एक समय याद आ रहा है जब मुझे ये ख़ौफ था कि मेरे पति को शायद कुछ हो जायेगा. मैने सोचना शुरू किया मैं क्या करूंगी यदि डेव मर गए ये एक आतंकित करने वाली सोच थी, जो मेरे लिए बहुत असामान्य थी. मैंने कभी परवाह ही नहीं की थी कि मैं क्या करूंगी यदि डेव मुझसे पहले मर गए बहुत सी महिलाओं की तरह जिनके अच्छे वैवाहिक जीवन हैं; मैं भी अपने पति पर बहुत निर्भर करती हूँ. डेव मेरे लिए बहुत अच्छे हैं, और जब मैंने वो सब बाते सोची जो वो मेरे लिए करते है तब मैं और ज़्यादा भयभीत हो गई.

फिर परमेश्वर ने मुझसे बात की मेरे दिल की गहराईयों मे. ''जॉयस यदि डेव मर गये तो तुम वही करती रहोगी जो तुम अब कर रही हो. ये डेव नहीं जो तुम्हें सहारा दिए हुए है और तुमसे वो करवा रहा है जो तुम कर रही हो, ये मै हूँ. इसलिए अपना भरोसा मुझ पर रखो जहां उसे होना चाहिए. डेव पर भरोसा रखो पर संतुलन मत खोओ.''

एक अंतिम उदाहरण जो मैं आपको बताना चाहूंगी तो एक विशेष सम्बन्ध के बारे में है और एक दोस्ताना सम्बन्ध के बारे में है जो मेरी काम काजी ज़िंदगी से सम्बन्धित है. यौन निकटता ही केवल ऐसी निकटता नहीं जिसमें शोषित लोगों को सुधारने की ज़रूरत होती है वो जिनका शोषण हुआ हो अक्सर किसी भी तरह का रिश्ता बनाये रखने में कठिनाई अनुभव करते हैं. उनका वैवाहिक सम्बन्ध प्रभावित होता है. और शैतान उनके दुख और निराश को इस्तेमाल करता है. उनके सारे निकटम रिश्तों को तबाह करने के लिए.

दुनिया के बहुत से अन्य लोगों की तरह, न केवल घर पर ही बचपन में, मेरा शोषण हुआ, पर उस स्थिति से छूटने के बाद भी तक़रीबन मैं हर किसी सम्पर्क मे आये व्यक्ति से आसानी से ठेस खाती. जब अंत में मेरा विवाह हुआ और मैं कलीसिया में शामिल हुई मैंने सोचा यक़ीनन कलीसिया के लोग तो मुझे नहीं ठेस पहुंचायेंगे. मुझे जल्दी ही पता लग गया कि मेरे कलीसिया का मेम्बर बनने से मेरी पीड़ा रुक नही गई. असल में, कुछ किस्सों में तो, ये और ज़्यादां भयंकर हो गई. मेरे लिए इसका नतीजा ये था कि मैं आदमियों पर भरोसा नहीं करती थी क्योंकि आदमी ने मुझे ठेस पहुंचाई थी, जिससे मेरी विवाहित निकटता पर असर पड़ा भिन्न-भिन्न समय पर मेरे दोस्तों और रिश्तेदारों ने भी मुझे गम्भीर दुख पहुंचाया, इसलिए मैं किसी पर भी भरोसा करने से डरती थी. जैसे जैसे साल गुज़रते गए डेव और मैं पूर्णकाल की सेवकाई में जुट गए. एक दम्पत्ति हमारे लिए काम करने आया जिसे अवश्य स्वयं प्रभु ने भेजा था. परमेश्वर ने उनका अभिषेक किया था हमारी ढाल बनने के लिए जिसका मतलब ये है कि उन्होंने हमारे लिए नियमित रूप से प्रार्थना की. उन्होंने कदम से कदम मिलाकर हमारे साथ काम किया, और जिस जिस की भी ज़रुरत रही उसके लिए वो हमेशा उपलब्ध रहे जब भी जो कुछ भी किया जाना होता. वो हमारे साथ बहुत अच्छे थे, और उन्होंने हमारा जीवन और सहज बना दिया.

हमारी सेवाकाई का दायरा बहुत अलग होगा अगर हमारा साथ ये शानदार दम्पत्ति ना होता या इन जैसा कोई हमारी मदद को ना होता. क्योंकि सालों ठेस खाये जाना का अनुभव पाने के बाद मैं अपना दिल इतनी आसानी से नहीं खोलती, पर जैसे समय गुज़रता गया, मैं इन लोगों पर बहुत ज़्यादा भरोसा करने लगी और इन पर बहुत ज़्यादा निर्भर रहने लगी.

एक दिन मैंने एक शास्त्रवचन पढ़ा जिसमें भजन लेखक कह रहा था ''मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था (जिसपर मैं भरोसा करता था वो मेरा राज़दार था) जो मेरी रोटी खाता था उसने ही मेरे विरुद्ध लात उठाई'' (भजन ४१:९) मैं जान गई कि ये वचन मुझ पर लागू होता है और सोचने लगी कि प्रभु किसके बारे में मुझे चेतावनी दे रह हैं. मैं जान गई कि वो मुझे कुछ दिखाने की कोशिश कर रहे हैं, क्योंकि बार-बार यही शास्त्र वचन खुलकर आता. मुझे यकीन हो गया कि परमेश्वर कुछ कह रहे है. मैं सोचने लगी कि क्या वो मुझे ये दिखा रहे हैं कि ये दम्पत्ति मुझे ठेस पहुंचायेगा.

अंत में, प्रभु ने स्वयं को मेरे सामने स्पष्ट किया कि मैं बस समझ लूं कि वो मुझे चेतावनी दे रहे हैं कि मैं अपने सम्बन्धों को असंतुलित ना होने दें. उन्होंने मुझे सिखाया मैं करीबी रिश्ते रख सकती हूँ, और उनके राज्य के लिए वफ़ादार और निष्ठावान सेवा का आनंद लेते हुए अच्छे फल ला सकती हूँ, पर मुझे खास इसलिए चेतावनी दी जा रही कि मुझे अपना वो भरोसा उन पर नहीं डालना जो सिर्फ परमेश्वर के लिए हैं. उन्होंने मुझे ये दिखा दिखा दिया कि मेरे जीवन में उस दम्पत्ति का वो लाये थे, और वो बेशक़ उन्हें ले जा भी सकते थे, जो वो करेंगे. यदि मैंने हमेशा उनकी ओर मदद के लिए देखा बजाय परमेश्वर में विश्वास करने के.

अच्छे सम्बन्ध में निकटता भी आलौकिक है पर इसे संतुलन से बाहर नहीं जाना चाहिए. बाईबल में लिखा ''योना तन का मन दाऊद पर ऐसा लग गया कि योना तन उसे अपने प्राण के बराबर प्यार करने लगा''(१ शमुएल १९:१) उन्होंने एक दूसरे की मदद की और वाचा वध सम्बन्ध का आनंद उठाया. अच्छी दोस्ती बहुत महत्वपूर्ण है पर संतुलन भी महत्वपूर्ण है.

मैं संतुलन के महत्व पर ज़ोर देती हूँ क्यों कि प्रेरित पोलूस कहते हैं ''सचेत हो और जागते रहो क्योंकि तुम्हरा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की नाई इस सोच में रहता है कि किसको फाड़ खाये'' (१ पतरस ५:७) संतुलन में रहो और शैतान तुम्हारा कुछ न बिगाड़ पायेगा और ना ही दूसरों के साथ तुम्हारे सम्बन्धों का.

२१

मांगो और पाओ

बाईबल में याकूब ४:२ में लिखा है: ''तुम्हें इसलिये नहीं मिलता, कि मांगते नहीं.''

मुझे याद है जब ये महान प्रकाश मुझे मेरे जीवन में प्राप्त हुआ क्योंकि मैं अपने शरीर की उर्जा से ही काम करने की कोशिश कर रही थी. अपनी योजना अनुसार अपने ही कामों के परिणाम अनुसार. मैं स्वयं को बदलने की कोशिश कर रही थी. अपने पति को बदलने की कोशिश कर रही थी. अपने हालात को बदलने की कोशिश कर रही थी. मैं अपने अतीत की सभी बातों से जो मुझे दुख पहुंचा रही थी. छुटकारा पाने की कोशिश कर रही थी. पर मैं परमेश्वर से मदद नहीं मांग रही थी.

जब परमेश्वर ने मुझे बोध कराया कि मैं अच्छी चीज़ों से इसलिएये वंचित थी क्योंकि मैं उनसे मांग ही नहीं रही थी. मैंने उनसे हर चीज़ मांगनी शुरू की जिसकी मुझे इच्छा और ज़रूरत थी.

वचन में लिखा है, ''यहोवा को अपने सुख का मूल जाना और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा'' परमेश्वर ने मेरे मांगने पर मेरे लिये और ज़्यादा करना शुरू किया. मुझपर ये साबित करते हुये कि वह मेरी देखभाल करना चाहते है. उन्होंने मुझे दिखाया कि यदि मैं उनसे मांगू, बस एक नन्हें बच्चे की तरह उनके पास आऊं और मांगू, तब वह मुझे वे देंगे, वह मेरी देखभाल करेंगे, वह मेरी ज़रूरतें पूरी करेंगे.

मेरा मानना है कि आप शायद ये किताब इसलिये पढ़ रहे हों. आपाको शायद परमेश्वर द्वारा अपने टूटे दिल को चंगाई देने की ज़रूरत हो. शायद आप गड़बड़ी रह कर तंग आ गये हों और भीतर से निराश हो गये हो. जैसे मैं थी शायद आपको परमेश्वर से मदद मांगने की ज़रूरत हो यदि ऐसा है, तो बस मांगिये.

'प्रभु मुझे चंगाई दें. मैं आपसे एक चमत्कार मांग रहा हूं. मुझे जवाब दें. मुझे दिशा दिखायें. जहां मुझे जाना हैं. मेरी मदद करें, प्रभु.'

यीशु के नाम पर मांगो

मेरा मानना है कि एक मुद्दा है जो आपको अपने दिल में सही करना है. इससे पहले कि आप विश्वास करें कि परमेश्वर आपकी ज़रूरतें पूरी करेंगे. आपकी उन्नति की महत्वपूर्ण कुंजी युहना १६:२४ में मिलती है. यीशु अपनी क्रूस से पहले अपने शिष्यों से बात कर रहे थे. जब उन्होंने कहा, ''अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा (मुझे वैसे प्रस्तुत करके जो मैं हूं) मांगो तो पाओगे कि तुम्हारा आनंद (खुशी, प्रसन्नता) पूरा हो जाये.''

विस्तारित बाईबल हमें बताती है कि यीशु के नाम पर मांगने का क्या अर्थ है. ये हमें उस चमत्कार की उपलब्धि दिलायेगा जो हमें चाहिये.

यीशु के नाम पर मांगने का अर्थ है कि पिता के सामने यीशु को प्रस्तुत करना जो वो हैं. उस रूप में. इसलिये, जब हम सिंहासन के आगे जाते हैं, तो हम ये नहीं पेश कर रहे जो हम हैं. पर वो अधिकार जो यीशु का है अपने पिता के साथ वाचा के अनुसार.

हम अपने भलाई के कामों के दस्तावेज़ नहीं पेश कर रहे. हम मैं कोई सम्पूर्णता ही नहीं कि पेश करें पर हम पिता के आगे जाते हैं और कहते हैं ''प्रभु, मैं यीशु के नाम से आया हूँ'' जब हम ऐसा कहते हैं, हम दरअस्ल पिता से कहते हैं मैं आपके सामने वो प्रस्तुत कर रहा हूँ जो यीशु है.

जब आप कहीं जाते हैं किसी का नाम लेकर, आप उस व्यक्ति के अधिकार के साथ जाते हैं. उदाहरण के लिए मैं सेंट लूईस के हमारे पास्टर के बहुत क़रीब हूँ. मैं उन्हें अपना अच्छा दोस्त मानती हूँ. मैं उनके ऑफिस में जाकर उनके कर्मचारीओं से कह सकती हूँ. ''बहुत ज़रूरी काम हैं मुझे तुरंत पास्टर से मिलना है'' उनके कर्मचारी मुझे जानते हैं और मुझपर इतना भरोसा करते हैं कि मुझे तुरंत अंदर भेज दें.

पर यदि मैं स्वयं ना जा सकूं, तो शायद मैं किसीको भेजू जिसे पास्टर के ऑफिस में कोई नहीं जानता. यदि ये व्यक्ति जाकर बस ये कहे, ''मुझे बस इसी वक्त पास्टर से मिलना है'' तो पास्टर के कर्मचारी शायद उसे तुरंत अंदर ना जाने दें. पर यदि वे कहें ''मुझे जॉयस मायर ने भेजा है.'' तो कर्मचारी मेरे नाम पर उससे मिलेंगे उसके आधार पर जो सम्बन्ध मेरे पास्टर के हैं.

यही वो तस्वीर है जो बताती है कि यीशु के नाम पर प्रार्थना करने का क्या मतलब; इसीलिए आप अपनी ज़रूरते पूरी करने की उम्मीद कर सकते है जब आप परमेश्वर पिता के पास उनके पुत्र का नाम लेकर जाते हैं – इसलिए नहीं कि आप इसके योग्य थे. मैं इन कुछ पन्नों में आपको यहीं बात समझाने की कोशिश कर रही हूँ, कि हम परमेश्वर से कुछ पाने के योग्य नहीं सिवाय इसके कि मर जायें और अनंत काल तक सज़ा पायें. पर उन्होंने हमारे साथ एक नई वाचा बांधी है हमें वो देने के लिए जिसके हक़दार यीशु हैं. वही वाचा की आशीष जिसके हम अधिकारी नहीं कृपा के संदेश की महिमा है.

हमें किसी चीज़ का भी अधिकार नहीं, पर हम वो पाते हैं जो यीशु ने कमाया और हक़ पाया. और ये मुफ़्त है. मुफ़्त बहुत ही उत्साहित करने वाला शब्द है. हमें अपने भलाई के कामों और अच्छे व्यवहार द्वारा आशीष पाने की कोशिश करने की ज़रूरत नहीं युहन्ना १६:२४ में यीशु ने कहा, ''अब तक तुमने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा (यानि जो मैं मुझे उस रूप में प्रस्तुत करते हुए)'' इसी वचन में, वो हमें एक नया निर्देश देते हैं. ''पर अब'' उन्होंने कहा ''मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनंद पूरा हो जाए'' यीशु ने यहां दो निर्देश दिए है ''बस केवल मांगो ही नहीं, पर मांगो और पाओ ताकि तुम्हारा आनंद पूरा हो सकें''

परमेश्वर की आशीष पाओ

कई लोग बस परमेश्वर से कुछ पाना ही नहीं जानते उदाहरण के लिए वो अपना आधा जीवन परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा की भीख मांगते ही गुज़ार देते हैं, और उन्हें कभी क्षमा प्राप्त नहीं होती. बस वो भिखारी अवस्था में ही पड़े रहते हैं. मैंने कई साल क्षमा मांगी, दरअस्ल हर रात.

जब डेव और मेरी नई-नई शादी हुई थी. मैं परमेश्वर के वचन के बारे में ज़्यादा नहीं जानती थी. हम चर्च जाया करते थे; मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी. मैं पुनर्जीवित थी; पर मुझे ये नहीं पता था कि मैं मसीह में क्या हूँ और अभी भी मेरा दिल टूटा हुआ था. मेरा मानना है कि एक बात जो हमने टूटे दिल के विषय में कहीं वो है टूटा व्यक्तित्व.

हमारे व्यक्तित्व टूटकर बिखर जाते हैं. और फिर हम वैसे काम नहीं करते जैसा परमेश्वर चाहते हैं कि हम कार्य करें हर व्यक्ति के लिए संपूर्ण और संतुलित होना ज़रूरी है पर शैतान हम पर कुछ इसतरह कार्य करता है कि हम अपने व्यक्तित्व में ही टूट जाते हैं. जब ऐसा होता है, शायद हम एक दूसरे से सम्बन्ध रखने की कोशिश करें, पर हमारे सम्बन्ध काम नहीं करते.

जैसा मैंने पहले बताया है कि मैं हर रात अपने बिस्तर के पास घुटने टेककर भीख मांगती, ''ओह, प्रभु मुझे क्षमा कर दें. प्रभु मुझे क्षमा कर दें. प्रभु मुझे क्षमा कर दें.'' हर रात मैं यहीं प्रार्थना दोहराती, ''प्रभु मुझे क्षमा कर दें. ओ प्रभु मुझे क्षमा कर दें'' मैं अभी भी उस दोषी भावना के वज़न की बात कर रही थी. जिसके लिए मैं अपनी किशोर अवस्था से अपनी जवानी के पूरे साल गिड़गिड़ाती रही.

मैं बस यही लगातार दोहराती रही बहुत सालों तक जब तक कि एक दिन मैंने प्रभु को मुझसे ये कहते सुना, ''जॉयस मैंने तुम्हें तभी माफ़ कर दिया था जब तुमने पहली बार मुझसे कहा था. अब तुम्हें खुद को माफ़ करना है'' परमेश्वर की आवाज़ सुनना उन दिनों मेरे लिए आम बात नहीं थी. पर मैं समझ गई जो वह मुझे बता रहे थे कि मुझे उनकी क्षमा ग्रहण करने की ज़रूरत है.

यदि आप किसीसे पीने का पानी मांगे और वह व्यक्ति आपको ये दे देता है, पर आप इसे निगलने से इंकार कर देते हैं तो फिर वो व्यक्ति इंकार कर देता है? तो ये कहना ही बेकार होगा ''मैं प्यासा हूँ, कोई जाकर मेरे लिए पानी लाये क्योंकि मैं प्यासा हूँ'' फिर वो पानी का ग्लास आप बस पकड़े रहें. यदि आप इसे पीकर निगलेंगे नहीं तो आपकी प्यास नहीं बुझेगी.

आपको क्षमा पर शास्त्रवचन मिला हो, पर शायद आपने फ़ैसला किया हो कि अभी इसपर विश्वास नहीं करना. शायद आप इंतज़ार कर रहे हों कि पहले आपाको क्षमा किये जाना महसूस हो. पर आपको कभी भी क्षमा महसूस नहीं होगी जब तक कि आप ये फैसला ना कर लें कि आपको क्षमा मिल गई. आपको विश्वास में ये कहना होगा, ''मुझे क्षमा मिल गई'' और शायद आपको ये कई हफ़्ते कई महिने कहना पड़े इससे पहले कि आपकी भावना और आपके विश्वास का मेल हो.

पूरी बाईबल में हमें निर्देश दिया गया है कि हम परमेश्वर से पायें. पर ऐसा लगता है कि मसीही हमेशा कुछ लेने की कोशिश कर रहे हैं. पौलूस ने कुरिन्थ के शिष्यों से ये नहीं पूछा, ''क्या तुम्हें पवित्र आत्मा मिली?'' उन्होंने उनसे पूछा, ''क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?'' (यीशु मसीह पर विश्वास कि वहीं मसीही हैं) (प्रेरितों के काम १९:२)

बाईबल ये नहीं कहती ''कि जितनों को यीशु मिला उन्हें परमेश्वर के पुत्र होने का सामर्थ्य मिला'' पर लिखा है ''परंतु जितनों ने उसे ग्रहण किया उसने उन्हें परमेश्वर की संतान होने का अधिकार दिया अर्थात उन्हें जो इसके नाम पर विश्वास रखते है'' (युहन्ना १:१२)

यीशु जीवन के एक दरिया के समान है जो जीवन दाईजल उंडेल रहा है, और हमें न्योता मिला है किहम उसे पायें, पायें, पायें. यीशु ने कहा;

''जो मुझपर विश्वास करेगा (जो मेरे साथ बंधा रहेगा मुझपर निर्भर करेगा और भरोसा करेगा) जैसा पवित्रशास्त्र में आया है उसके हृदय में से (लगातार जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी. उसने ये वचन उस आत्मा के विषय में कहा जिसे उसपर विश्वास करने वाले पाने पर थे; क्योंकि (पवित्र) आत्मा अब तक ना उतरा था; क्योंकि यीशु मसीह अब तक अपनी महिमा को ना पहुंचा था (अपने विशेष अधिकार पर) युहन्ना ३७:२८-२९)

मैंने इस विषय पर बहुत शिक्षा दी है परमेश्वर से 'पाना', क्योंकि मुझे यक़ीन हो गया है कि लोग वो आशीष नहीं पा रहे जो परमेश्वर उन्हें दिलाना चाहते हैं. मैं ये देखने का उत्सुक हूँ कि मसीह की देह में हर कोई सिद्ध बने और कहे ''हां, परमेश्वर को वो वादा मेरे लिए है, और मैंने ये पाया है ताकि मैं और दोषी भावना और दण्डित भावना में और ना रहूँ.

परमेश्वर आपको पूरी तरह प्रेम करते हैं.

मैं पूरे सप्ताह अंत की सभा में परमेश्वर के प्रेम के बारे में बात कर सकती हूँ, मैं वो सभी अलग-अलग तरीके दिखा सकती हूँ जिनके द्वारा परमेश्वरने अपना प्रेम हम पर सिद्ध किया है, पर मैं किसीको उनका प्रेम पाने के लिए मज़बूर नहीं कर सकती. ये एक व्यक्तिगत चुनाव है जो हर व्यक्ति को करना है. तब भी जब हम ग़लतियां करते है और हम जानते हैं कि हम परमेश्वर के प्रेम के योग्य नहीं,

हमें फिर भी उनका प्रेम पाना चाहिए ताकि उस सम्पूर्णता का आनंद उठा सकें. जो वो चाहते हैं कि हमें प्राप्त हो.

मैं आपको उत्साहित करना चाहूंगी कि इसे रोज़ की दिनचर्या बनाकर अपना मूंह खोले और ''प्रार्थना'' करें; हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि आप मुझसे प्रेम करते हैं और मैं वो प्रेम पा रहा हूँ. और आज से मैं इसी में चलूंगा. मैं आपके प्रेम में सराबोर होऊंगा क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप मुझसे प्रेम करते हैं हालांकि मैं इसके योग्य भी नहीं और प्रभु, इसी से हर चीज़ बेहतर हो जाती है.''

परमेश्वर का प्रेम आज मसीह की देह के लिए (कलीसिया) सबसे ज़रूरी संदेश है परमेश्वर का प्यार ही सबसे महान मुद्दा है जिसका बोध लोगों को होना चाहिए. लोगों को परमेश्वर के प्रेम के विषय में इतनी ज़्यादा ज़रूरत उपदेश की नहीं जितनी ज़्यादा ज़रूरत है इसका

व्यक्तिगत अनुभव करने की. और ये समझने की कि एक व्यक्ति के नाते परमेश्वर उनसे कितना प्रेम करते हैं.

परमेश्वर का प्रेम आपको विजय की ओर ले जायेगा उस समय जब सभी शक्तियाँ और सिद्धांत आपके विरूद्ध खड़े नज़र आते हैं. परमेश्वर का प्रेम आपका जीवन के तूफ़ानों के पार ले जायेगा और शांत जगह पर जहां शांति है. पर आप कभी भी एक विजेता से अधिक कुछ नहीं हो सकते (देखिये रोमियों ८:३७) यदि आपको ये निश्चित पता ना हो कि आपको परमेश्वर कितना प्रेम कर रहे हैं.

इसलिए हमारे लिए ये जानना ज़रूरी है कि परमेश्वर हमसे तब भी प्रेम करते हैं जब हम ग़लतियां करते और असफल होते है उनका प्रेम उन दिनों तक सीमित नहीं जब हम सोचते हैं कि हमने अच्छा काम किया. हमें उनके प्रेम का भरोसा होना चाहिए. ख़ासकर तब जब हम पर परीक्षायें आयें, और जब शैतान हमारा मज़ाक उड़ा रहा हो और दोष लगा रहा हो, ''हां तुमने ही कुछ ग़लत किया होगा'' जब दोष लगाने वाला आये तो हमें पता होना चाहिए कि परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं.

चाहे हमने कुछ ग़लत भी किया हो चाहे हमने शैतान के लिए प्रवेश द्वार भी खोला हो चाहे हमने अज्ञानता में कार्य किया हो परमेश्वर हमसे फिर भी प्रेम करते हैं परमेश्वर हमारी ओर हैं (देखिये रोमियो ८:२८) और वो हमें दिखायेंगे कि जिस गड़बड़ी में हमने ख़ुदको डाल लिया है उसमें से ख़ुद को बाहर निकालने के लिए हमें क्या करना है पर शैतान हमें परमेश्वर के प्रेम से काटना चाहता है, ताकि हम कभी भी वापस परमेश्वर की कृपा में जाने की राह ना पायें. उसके धर्मी पुत्र और पुत्रियों की तरह जीने के लिए.

परमेश्वर अपना वचन भेजते हैं

जब हम मुसीबत में होते हैं तो परमेश्वर अपने वचन में हमसे वादा करते हैं कि वो हमें इससे छुड़ायेंगे ये लिखा भजनसंहिता १०७:२० में ''वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता है और जिस गढ्ढे में वे पड़े हैं उससे निकालता है'' यीशु ने अपना पवित्र आत्मा हमें वो सिखाने के लिए भेजा जो जानने की हमें ज़रूरत है उन्होंने अपने शिष्यों से कहा था. ''मुझे अभी भी तुम्हें बहुत-सी बातें बतानी है, पर अभी तक तुम उन्हें सहने के योग्य नहीं हो या उन्हें करने के योग्य नहीं या उन्हें समझने के योग्य नहीं'' परंतु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आयेगा (सत्य प्रदान करने वाला आत्मा) तो वह तुम्हें सब सत्य का मार्ग बतायेगा (सम्पूर्ण और पूरा सत्य) क्योंकि वह अपनी ओर से ना कहेगा (अपने अधिकार से) पर जो कुछ सुनेगा वही

करेगा, और आनेवाली बातें बतायेगा (पिता की ओर से जो संदेश दिया गया हैं वही संदेश वह तुम्हें देगा.) और वो सभी बतायेगा जो भविष्य में होने वाली हैं.

वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा (घोषणा करेगा, राज़ खोलेगा, संचार करेगा)

जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है इसलिए वह (आत्मा) मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बतायेगा.'' (युहन्ना १६:१२-१५)

मुझे बहुत खुशी है कि यीशुने वादा किया कि पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करेगा–हमें धकेलेगा या ज़बरदस्ती नहीं करेगा, पर मार्ग दिखायेगा सत्य का. शैतान हम पर दबाव डालना चाहता है और हमसे चालाकी करना चाहता है परंतु पवित्र आत्मा विनम्रता से हमारा मार्गदर्शन करता है. यही एक तरीका है कि हम पहचान सकें कि हम परमेश्वर की आवाज़ सुन रहे हैं या शत्रु की.

यदि आप महसूस करते हैं दबाव उलझन नियन्त्रण या तनाव किसी बात के लिए तो फिर ये परमेश्वर की ओर से नहीं; वह इस तरह कार्य नहीं करते बजाय इसके पवित्र आत्मा तुम्हें बहुत ही सहजता से बतायेगा (घोषणा करेगा, रहस्य को खोलेगा और संचारित करेगा) सत्य को तुम्हें बतायेगा.

पर इस बोध का तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा यदि तुम इसे ग्रहण नहीं करते. हमारे पास टेलीविज़न के बहुत से प्रसारण हैं, पर हमें अपने सैट को चलाना पड़ता है उन संदेशों को पाने के लिए जो हमारी ओर भेजे जा रहे हैं. इसीतरह हमें भी उस सत्य को पाना है जो परमेश्वर हम से कह रहे हैं अपने वचन द्वारा.

यीशु ने उन सभी पर विजय प्राप्त की जिसकी हमें एक विजयी जीवन जीने के लिए ज़रूरत है एक समर्था प्राप्त संघर्षों पर विजय पाता जीवन. जब यीशु ऊपर उठा लिए गये, पवित्र आत्मा ने उसका ज़िम्मा लिया, जो यीशु ने हमारे लिए प्राप्त किया था, और संक्षेप में ऐसा कहा था, ''अब, मैं विश्वासिओं के पास जाऊंगा और उनके साथ कार्य करूंगा उन्हें वो सब दूंगा जो यीशु ने उनके लिए रखा है और हासिल किया है. उन्हें सम्पूर्ण सत्य की ओर ले जाऊंगा और उनका मार्गदर्शन करूंगा.'' ये बहुत दिलचस्प है कि यीशु ने कहा कि और भी बहुत कुछ है जो वो हमें देना चाहते हैं पर वो जानते थे कि हम इसे सह नहीं सकेंगे एक बार में ही. पर उन्होंने वादा किया कि पवित्र आत्मा जो उनका है उसे लेकर हमें पूरे सत्य की ओर ले जायेगा.

पवित्र आत्मा पाना

मैं बहुत पहले पैदा हो चुकी थी. इससे पहले कि मैं अपने जीवन में पवित्र आत्मा के अस्तित्व का आनंद ले सकती. मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी, और यदि मैं मर जाती तो मैं स्वर्ग चली जाती; पर वहां पहुंचते पहुंचते मैं थक कर चूर हुई होती पवित्र आत्मा के बंधुत्व के बिना मैं कभी भी फलदायी मसीही नहीं बन सकती थी.

यहां धरती पर मेरे जीवन ने कभी भी परमेश्वर की महिमा ना की होती. मैं कभी किसी के लिए गवाही ना दे पाती सच तो ये है यदि मैंने पवित्र आत्मा ना पाया होता, और मसीह होने का दावा दरअस्ल मेरे जीवन में परमेश्वर के कार्यों के लिए बाधक होता क्योंकि मैं एक मसीह की तरह व्यवहार नहीं कर रही थी.

मैं आप से बाहर थी और मेरा इसपर वश नहीं चल रहा था. मैंने वो सब किया जो मेरा मानना था कि एक अच्छे मसीह को करना चाहिए, पर मुझे कोई विजय नहीं मिल रही थी. क्योंकि मेरे पास परमेश्वर के वचन का ज्ञान नहीं था. और मेरे पास पवित्र आत्मा का सामर्थ्य नहीं था जो मेरा सत्य की और मार्गदर्शन करता या बताता कि कैसे परमेश्वर का वचन मेरे जीवन में कार्य करने वाला था.

ये एक तेजस्वी दिन था जब मैंने पहले पहले अपने मूंह से ये कहा ''मैं मसीह यीशु में परमेश्वर की धार्मिकता हूँ (देखिये १ कुरिन्थिओं १:३०) मुझे लगा जैसे मेरी आत्मा ने छलांग लगाई हो; सचमुच मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे अंदर कुछ उछला मुझे याद है मैंने सोचा, ये क्या था ? ये एक ऐसा ही अहसास था जो एक गर्भवती मां महसूस करती है जब पहली बार बच्चा उसके अंदर हरक़त करता है – केवल, ये पवित्र आत्मा था.

क्योंकि मैंने पवित्र आत्मा पाया, मुझे ये नहीं पता था कि मैं धर्मी हूँ. मैं सोचती थी कि मैं सड़ी हुई बेक़ार और जीवन भर के लिए कबाड़ा हूँ. मुझे लगा जैसे मेरे लिए कोई उम्मीद नहीं, और यही तो शैतान चाहता है कि हम सब ऐसा विश्वास करें, पर ये एक झूठ है.

यदि आप पवित्र आत्मा के बंधुत्व के बारे में और जानना चाहते हैं तो मैं सुझाव दूंगी कि आप मेरी किताब ''परमेश्वर को क़रीब से जानना ज़रूर पढ़ें.'' मैंने इसमें समझाया है कि कैसे आप जितना आप चाहें उतना परमेश्वर के क़रीब आप हो सकते हैं और कैसे आपको अपने जीवन में पवित्र आत्मा की सम्पूर्णता पानी है. ये बस एक प्रार्थना की तरह ही बहुत आसान है 'प्रभु मैं आपके पवित्र आत्मा को आपके जीवन में ग्रहण करती हूँ अपने अस्तित्व से मुझे भर दें, और मुझे सिखायें कि मैं आपकी आवाज़ स्पष्ट सुन सकूं ताकि मैं अपने जीवन के सभी दिन आपके पीछे चल सकूं.

आप परमेश्वर के लिए बहुमूल्य हैं

आप बहुमूल्य और मूल्यवान है और परमेश्वर की ये योजना है कि वो अपनी भलाई और दयालुता प्रकट कर सकें उसके जरिये जो वो आपसे करवाना चाहते हैं. इसके कोई माईने नहीं कि आपने क्या किया है और आपके साथ क्या हुआ है– अतीत, अतीत ही रहता है. परमेश्वर का आपके लिए महान भविष्य है. आप एक शांत जीवन जी सकते हैं, पर आपको इसे पाना होगा. जैसा कि मैंने कहा है, आपको सहमत होकर ये कहना होगा'' वो मेरे लिए है.

यीशुने पुकारकर हमें बताया कि उनके पास वो है जिसकी हमें ज़रूरत है फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और पुकार कहा, यदि कोई प्यासा हो वो मेरे पास आकर पीये (युहन्ना ७:३७) जो आप स्वयं के लिए नहीं कर सकते वो उन्होंने आपके लिए पहले ही कर दिया है. वे आपको न्योता देते है कि आयें और इसे पायें, इसे पीयें अपने अंदर निकाल लें. आप ये तभी करते हैं जब आप विश्वास करें कि ये आपके लिए है.

आकर पीयें इसकी परिभाषा इस तरह है, ''इसे ग्रहण करें'' या भरपूर रीति से पायें; अपनी अन्तर्आत्मा में उंडेल लें. याद रिखये जो यीशुने कहा, ''मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनंद पूरा हो जाये (मांगो तो तुम पाते रहोगे और तुम्हें प्रसन्नता और खुशी प्राप्त होती रहेगी) (युहन्ना १६:२४) यदि आपने मांगा और पाया तो आपका आनन्द सम्पूर्ण हो जायेगा.

आप कैसे इस हताश और निराश संसार को प्रभावित कर पायेंगे यदि एक विश्वासी के रूप में हम स्वयं इतने निराश हैं उनकी तरह जो बिना मसीह के हैं. परमेश्वर चाहते हैं कि उनके लोग, उनपर की गई उनकी दयालुता को आगे बढ़कर दिखायें. और उसे महिमा मण्डित करें. जब हम परमेश्वर की वस्तुएं ग्रहण करते हैं, हमारा आनंद पूरा हो जाता है, और यही तो कलीसिया का रूप होना चाहिए.

परमेश्वर के आशीष को ग्रहण करने के कार्य कीजिए. उसे पाईये जिसके लिए यीशु ने अपना जीवन देकर क़ीमत चुकाई कि वो आपको मिल सकें. वचन का अध्ययन कीजिए ताकि आप उनके वादों के प्रति निश्चिंत हो सकें. उनसे प्रार्थना करें ये कहते हुए.

मैं यहां हूँ प्रभु, मुझपर उंड़ेलिये; ताकि मैं उसकी सम्पूर्णता को ग्रहण कर सकूं जो आपका पवित्र आत्मा मेरे लिए लाया है.

२२

भीतर से सशक्त होना

इस किताब का उद्देश्य यही है कि आपको अतीत से मुक्ति और आज़ादी मिल सके. चाहे अतीत पांच मिनट पुराना हो या पचास साल पहले का हो, आपको हमेशा इस संदेश की ज़रूरत पड़ेगी– हमेशा ये जरूरी नहीं कि आपका अतीत भयानक हो तभी आप अतीत का पछतावा और मुक्ति पा सकें. यदि आप कल सुबह उठें और परमेश्वरीय बनने की योजना बना रहे हों और फिर नाश्ते से पहले आप अपना आपा खो बैठते हैं, आपको अपने अतीत से मुक्ति की ज़रूरत है.

शैतान चाहता है किसी ग़लती द्वारा जो आपने की है आपको फांसे रखना, या कोई बयान जो आपने दिया है जो आपको नहीं देना चाहिए था या कोई पाप जो आपने किया है, या कोई ऐसा पाप जो किसीने आपके विरुद्ध किया है. परमेश्वर चाहते हैं कि आप मुक्ति पायें उससे जो आपने किया है और उससे जो आपके साथ हुआ है– दोनो ही उनके लिए महत्वपूर्ण है.

हमने पहले ही शास्त्रवचन में पढ़ा है कि यीशु टूटे हृदयों को चंगाई देने आये, हमारे घावों को भरने आये. हमारी खरोचों को चंगा करने आये वो हमें आनंद का तेल देने आये बजाय शोक़ के, मार की बजाय स्तुति का वस्त्र देने, राख की बजाय सुंदरता देने. वो हमें धार्मिकता का वृक्ष बनाने आये, कि हम परमेश्वर द्वारा रोपे जा सकें, ताकि वो महिमा पायें (देखिये यशायाह ६१:३)

यीशुने स्वयं कहा ''प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिए कि उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है (अभिषिक्त या मसीह) और मुझे इसलिए भेजा है कि बंधुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं (वो जो दलित हैं घायल हैं अत्याचर सह रहे हैं और किसी संकट द्वारा टूट चुके हैं)'' (लूका ४:१९) मेरा मानना है कि परमेश्वर ठीक इसी समय आपके साथ यहां है; वो आपको आपके जीवन के इस पल तक इसलिए लाये हैं कि आपको आपके अतीत के किसी पीड़ा दायी अनुभव

से छुटकारा दिला सकें. शायद आपको भावनात्मक घावों से छुटकारे की ज़रूरत हो जो कई साल पहले आप पर लगाये गए, या शायद अभी हाल ही में आपको किसी ने नाराज़ किया हो, और क्षमा ना करने की प्रवृत्ति आपको उससे वंचित कर रही है जो सब परमेश्वर आपको बनाना चाहते हैं. यीशु सभी बंदीओं को छुड़ाने आये. वो जानते थे कि आपको और मुझे हम दोनो को उनकी हर रोज़ ज़रूरत है.

हर बार जब मैं टूटे दिल से मुक्ति पाने का ये संदेश प्रचारित करती हूँ, तो मुझमें उत्साह सा आ जाता है कि मैं जा कर वो सब बनु जो परमेश्वर चाहते हैं कि मैं होऊं. मैं चाहती हूँ कि आप दृढ़ निश्चय कर लें कि आप उससे आधे नहीं होगें जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप हों, या उसका तीन चौथाई जो परमेश्वर चाहते हैं कि आप हों. इफ़िसियों ३:१६ में प्रेरित पौलूस ने प्रार्थना की'' कि वे अपनी महिमा के धन अनुसार तुम्हें ये ज्ञान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ्य पाकर बलवंत होते जाओ. (और वह स्वयं तुम में और तुम्हारे व्यक्तित्व में वास करें)

ये भीतरी मनुष्यत्व है जहां हमें भावनात्मक चंगाई की ज़रूरत होती है. हमारी भावनायें हमारे प्राण का एक अंग हैं. हम एक आत्मा है और हमारा एक प्राण है. हमारा प्राण बना हुआ है. हमारे मन, हमारी इच्छा और हमारी भावनाओं द्वारा हमारा मन हमें बताता है कि हम क्या सोचे. हमारी इच्छा हमें बताती है कि हमें क्या चाहिए और हमारी भावनायें हमें बताती हैं कि हम कैसा महसूस करते है.

शैतान इस दिशा में कार्य करता है कि हमारी भावनाये घायल हों जब दूसरे लोग हमें दुख पहुंचाये. नितीवचन १९:१४ में लिखा है. ''रोग में मनुष्य अपनी आत्मा से संभलता है. परंतु जब आत्मा हार जाती है तब इसे कौन सह सकता है?'' शैतान चाहता है कि आप हमेशा भीतर से टूटे रहें ताकि आप उन मूसीबतों को न सह सकें जो जीवन में हम सभी पर आती है.

पर पवित्र आत्मा हमारे भीतरी मनुष्यत्व और व्यक्तित्व में विचरण करता है और वहां वास करता है कि हमें शक्ति दे सके और समर्था से बलवान बना सके. यह हमें परमेश्वर के वचन की याद दिलाता है ये कहते हुए ''अपना बोझ यहोवा पर डाल दें (यानिअपना भार उन पर लाद दें) वह तुझे संभालेगा; वह धर्मीको कभी टलने न देगा (फिसलने ना देगा, गिरने ना देगा या असफल ना होने देगा)

यदि हमारे में भीतरी शक्ति है तब हम जीवन की समस्याओं से निकट सकते हैं. भीतरी शक्ति के बिना हम ट्रैफ़िक जाम से भी नहीं निपट सकते. मैं पहले भीतर से इतनी गड़बड़ी में थी कि बस में मुश्किल से साधारण सी रोज़मर्रा की समस्याओ से निपट पाती.

हमारे भावनात्मक घाव हमें रोज़ाना की समस्याओं से निपटने नहीं देते. हमें भावनात्मक घावों से छुटकारे की ज़रूरत है ताकि हम निपट सकें किसी सनकी दुकानदार से या जीवन साथी से जिने आत्मिक सिद्धता नहीं मिली.

जब हमारी भीतरी समस्यायें होती है, हमें बाहरी समस्यायें भी आती हैं. पर जब हम भीतर से मज़बूत बन जायें. जब हमें भीतरी मनुष्यत्व की शक्ति और पूरी समर्था का बल मिले, पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा तब हम उन सभी दूसरी बातों से निपट सकते हैं जो हमारी राह में आतीं हैं.

उनकी छवि में बदल जाओ

हर एक में गुण और कमज़ोरीयां होती हैं. मैं और आप इसका अपवाद नहीं. परमेश्वर चाहते हैं कि उन बातों से हमें छुटकारा दिलायें जो हमें पीड़ा की दासता में रखतीं है. वो हमें बल देंगे पवित्र आत्मा द्वारा और हमारा व्यक्तित्व इस तरह गढ़ेंगे कि हमारे मिजाज़ आत्मा द्वारा नियन्त्रित हो.

यदि हम परमेश्वर की सहायता नहीं पाते तो हम अपने व्यक्तित्व के कई पहलूओं में गड़बड़ी के शिकार हो सकते हैं. क्योंकि हमारी आत्मा शरीर के विरोध में और शरीर आत्मा के विरोध लालसा करता है'' (देखिये गलतियों ५:१७) यदि हम अपने ही स्वार्थ पर निर्भर रहें तो बहुत संभव है कि हम वैसी ही रीतियां अपनायें जिनका वर्णन गलतियां ५:१९-२० में है जिनमे ऐसी बातों का शुमार है जैसे झगड़ा ईर्ष्या और क्रोध. फिर शायद हम ऐसे ही गड़बड़ी वाले लोगों से रिश्ता क़ायम कर लें और एक दूसरे को और ज़्यादा दुख पहुंचाये. पर रिश्ते भी जीवन का प्रमुख अंग हैं. और हम लोगों के साथ निबहाने से बच नहीं सकते.

बाईबल पूरी की पूरी परमेश्वर से रिश्ते के बारे में है (सर्वशक्तिमान परमेश्वर) हमारा ख़ुद से रिश्ता, हमारा दूसरों से रिश्ता, जैसा कि मैंने पहले कहा है, यदि हम स्वयं को पसंद नहीं करते, हम कभी भी किसी और से निबाह नहीं पायेंगे. बहुत सी लड़ाईयाँ जो हमारी दूसरे लोगों के साथ होती हैं वो इसलिए क्योंकि हम स्वयं से लड़ रहे है.

पवित्र आत्मा उपलब्ध है कि हमारी मददकर सके, कि हम स्वयं को मसीह की छवि में ढाल सकें. परमेश्वर के बारे में रोमिओ ८:२९ में लिखा है ''क्यों कि जिन्हें उसने पहले से जान लिया है (जिन्हें वो पहले से प्रेम करता था औरजिनके प्रति जागरूक था) उन्हें पहलेसे ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वो बहुत भाईओं में पहलौठा ठहरे''

यदि हम इस सच्चाई को जान लें कि हमें अपने घायल अतीत से छुटकारा चाहिए, तो हमें परमेश्वर की समर्था प्राप्त होगी कि हम अपनें व्यक्तित्व को मसीह की तरह तब्दील कर सकें, और परमेश्वर से अपने सम्बन्ध सुधार सकें. स्वयं अपने से और दूसरों से सम्बन्ध सुधार सकें हम अपने झगड़ों को समझकर दूसरों के प्रति अपने रवैये में चंगाई पा सकते हैं.

शायद अभी भी आप उन शोषणों के लिए स्वयं को दोषी ठहरायें. जिनका आपसे कोई सरोकार नहीं था. शैतान शायद आपको कह रहा हो कि ज़रूर आपमें ही कोई ख़राबी है वरना लोग आपसे ऐसा व्यवहार नहीं करते जैसा उन्होंने किया. यदि आपका यौन शोषण हुआ तो शैतान शायद आपको बता रहा हो कि ज़रूर तुममें ही कोई ख़राबी है, वरना, दूसरा व्यक्ति या दूसरे व्यक्ति आपका इस्तेमाल ना करते इन अनैतिक उद्देश्यों के लिए. पर आपको अनैतिक उद्देश्यों के लिए नहीं बनाया गया. और कोई भी शोषण जो आपने झेला वो अन्याय था.

एक बच्चा जिसका शोषण होता है उसमें ये क्षमता नहीं होती वह अपने शोषक की ओर देख कर कहे, ''तुम्हारी एक समस्या है और मैं तुम्हारी समस्या नहीं तुम मुझे समस्या देने की कोशिश कर रहे हो, पर मैं इसे पा नहीं रहा.''

जब शोषक हमारे विरुद्ध व्यस्कता तक भी शोषण जारी रखता है, तब हमें और भी कठिन लगता है कि हम शैतान के धोखा देने वाले झूठों से स्वयं की सुरक्षा कर सकें. शैतान बार-बार हमारे विचारों में ये रिकॉर्डिंग बजाता रहता है जो यही बात दोहराता है.

''मुझमें क्या ख़राबी है? मुझमें क्या ख़राबी है? ज़रुर मुझमें ही कोई ख़राबी होगी जो मेरे साथ ये हो रहा है. मैं क्या ग़लत कर रही हूँ?

मैं क्या ग़लत कर रही हूँ तुम मुझसे इस तरह से बात क्यों कर रहे हो? मैं क्या ग़लत कर रही हूँ कि तुम कभी मेरे गले में बाहें डालकर ये नहीं कहना चाहते कि तुम मुझसे प्रेम करते हो.

मैं क्या कर रही हूँ कि जब मम्मी और डैडी के पास उनसे एक आलिंगन पाने के लिए जाती हूँ तो मुझे दूर धकेल देते हैं. मैंने क्या किया कि मेरे माता-पिता बिल्कुल चाहते भी नहीं और उन्होंने मुझे दे दिया? मैं क्या कर रही हूँ कि तुम मुझे एक रखैल की तरह रख रहे हो बजाय अपनी बेटी के? मैं क्या कर रही हूँ? मुझमें क्या ख़राबी है?

मैं जिसे भी जानती हूँ किसी के साथ भी ऐसा व्यवहार नहीं हुआ ज़रूर मुझमें ही कुछ ख़राबी होगी?

कुछ लोग आंतरिक पीड़ा के इस रिकॉर्ड को बार-बार सुनते हैं. साल दर साल दर साल, जब तक कि अचानक वो जवान नहीं हो जाते और वो किसी को ढूंढने लगते हैं. जो उन्हें प्रेम दे सकें क्यों कि उन्हें कभी वो प्यार नहीं मिला जिसकी उन्हें ज़रूरत थी और वो इसके हक़दार थे. वो प्यार के इतने भूखे हैं कि वो किसी से भी उस तरह प्यार करने के योग्य नहीं जैसा कि परमेश्वर चाहते हैं कि वह करें.

मैं व्यक्तिगत अनुभव से कह रही हूँ कि यदि अभी तक आप उस तरह की आंतरिक पीड़ा झेल रहे हैं तो शायद आपको बहुत ही मुश्किल हो सामान्य रिश्ते और सामान्य उम्मीदें किसी ओर से स्थापित करने के लिए. शायद आप अपने दोस्त या जीवन साथी से सालों के उस शोषण की भरपाई करवाना चाहें जो आपने झेला था. पर किसी दोस्त या जीवन साथी से ऐसी अस्वाभाविक उम्मीद उन पर बोझ डाल सकती है और हो सकता है उन्हें डरा कर भगा दे. वो शायद आपको वो सब देने की कोशिश कर रहे हों. जो वो देना जानते हैं, पर जब तक आप अपने अतीत के घावों से छुटकारा ना पा लें. तो कोई भी आपके लिए कुछ भी करे वो आपके लिए काफ़ी ना होगा.

मुझे याद है जब मैं इस दौर से गुज़र रही थी जब मैं कभी ख़ुश ना होती. मैं हमेशा चाहती कि डेव कुछ और करें, हमेशा चाहती कि मेरे लिए कुछ और ज़्यादा करें और उन्होंने बड़ी वफ़ादारी से सालों कोशिश की. मेरी पीड़ा के संकट से मुझे उभारने के लिए वे जो कुछ भी कर सकते थे उन्होंने किया.

डेव सचमुच ही बहुत हंसमुख इंसान है, और उन्होंने मुझे ख़ुश करने की इतनी कठिन मेहनती की. पर एक दिन उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा ''हे औरत'' (डेव मुझे तभी ही (हे औरत) कह कर बुलाते हैं. जब वो तंग आ जाते हैं, जो अक्सर बहुत क़म होता है) ''अब ये बात सुन लो, मैंने तुम्हे ख़ुश करने की कोशिश की और तुम जानती हो मैंने ये फ़ैसला किया है कि ऐसा हो नहीं सकता चाहे मैं कुछ भी करूं मैं तुम्हें कभी ख़ुश नहीं कर सकता. फिर उन्होंने कहा, ''इसलिए जानती हो क्या? मैंने कोशिश छोड़ दी''.

परमेश्वर को अपना खाली हृदय भरने दें

शुक्र है परमेश्वर का कि इस संकट के दौरान मुझे बल देने के लिए पवित्र आत्मा मेरे साथ काम कर रहा था. मैंने बस वचन पढ़ना शुरु किया था. और मैंने ये देखना शुरु किया था कि मेरी सभी समस्यायें मेरे सभी वर्तमान दुख किसी ओर की ग़लती नहीं थे-मुझमें ही एक समस्या थी, इसलिए मैंने परमेश्वर के साथ काम करना शुरु किया कि मेरा जीवन बदल सकें.

बहुत से विवाहित लोग तलाक़ पा लेते है जब उन्हें महसूस होता है कि उनका जीवन साथी उन्हें ख़ुश नहीं कर सकता. वे कहते हैं ''यदि तुम मुझे खुश नहीं कर रहे तो में ये रिश्ता तोड़ने वाली हूँ'' इसलिए वो किसी ओर को ढूंढते हैं जो उन्हें ख़ुश कर सके पर उनकी अस्वीकृति की जड़ उनके दिल को टूटा ही बनाये रखती है.

अस्वीकृति की जड़ आपको भी असुरक्षित कर देती है, हीन भावना देकर और आत्मविश्वास छीनकर जब तक कि आप मुक्त नहीं हो जाते, हम हमेशा किसी और से ही उम्मीद करेंगे कि आपको स्वयं आपके बारे में वे अच्छा महसूस करायें मुझे रोज़ाना ही आत्म अनुभूति के लिए जोश की मात्रा चाहिए होती है, बिल्कल वैसे जैसे व्यसनी को ड्रग्स की लत होती है. मुझे हमेशा यकीन दिलाने की ज़रूरत होती: मेरी कमियों का कोई अंत नहीं था पर कई बार जितना ज़्यादा मुझ पर ध्यान दिया जाता उतना ही ज़्यादा मैं उसके लिए तड़पती.

लोग जिनके जीवन में अस्वीकृति जड़ पकड़ लेती है तो प्रेम रहित और असुरक्षित महसूस करते हैं उनकी शास्विसयत, टूट जाती है और वो अंदर से बिखर जाते हैं. नतीजतन वे लगातार किसी ऐसे की तलाश में रहते हैं जो उन्हें ठीक-ठाक महसूस कराये वो सब कुछ आज़माते: एक बेहतर नौकरी, एक पदोन्नति, आत्मिक वरदान, कलीसिया में हैसियात, सही दोस्त, अपने कपड़ों पर सही लेबल, सही क़िस्म की कार चलाने के लिए, सही क़िस्म का घर रहने के लिए, सही सामाजिक गुट हिस्सा बनेने के लिए या कभी ना ख़त्म हाने वाली प्रशंसा, वो हमेशा यूंही कहते हैं मुझे बताओ मैं ठीक हूँ मुझ पर प्रशंसाओं की बौछार करो, मुझे हमेशा सही होने दो'' असुरक्षित लोगों को सुधारा नहीं जा सकता क्योंकि पहले से ही स्वयं के बारे में इतना बुरा महसूस करते हैं.

मैं असुरक्षित लोगों के बारे में ये बातें जानती हूँ क्योंकि मुझमें भी इनमें से हर समस्या थी जब तक कि वो सलाहकार उस पवित्र आत्मा ने मुझे परमेश्वर का वचन नहीं दिया और मुझे दुख के गढ्ढे से नहीं निकाला. राख से सुंदरता नहींथी. केवल पवित्र आत्मा ही एक है जो हमारे भीतर काम करने के लिए बना है वो स्वयं परमेश्वर को हमारे दिलों में भर देता है मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप सावधानीपूर्वक हमें दी गई पौलूस की प्रार्थना पर ग़ौर करें जो ये है ''और मसीह के उस प्रेम को जान सको (व्यवहारिक तौर पर स्वयं अपने अनुभव द्वारा जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक तुम परिपूर्ण हो जाओ) (कि तुम उसके परमेश्वरीय अस्तित्व को इस मात्रा में पाओ कि ऐसा शरीर बनो जो मरकर बह रहा है स्वयं परमेश्वर से) (इफ़िसियो ३:१९)

यदि हम पूरी तरह स्वयं परमेश्वर से भर जायें तो हम दूसरों की सहमति की चिंता नहीं करेंगे हम परमेश्वर के प्यार से इतना भर जायेंगे कि वा उनके हमारे साथ रिश्ते हमारे अपने आपसे रिश्ते और दूसरों के रिश्तों में बहेगा.

यदि आप उन्हें ऐसा करने देंगे, तो परमेश्वर आपके अतीत की पीड़ा से आपको मुक्त कर देंगे. परमेश्वर की चंगाई पायें और पवित्र आत्मा को अपने दिल में मार्ग बनाने दें. वह आपको वो सभी तसल्लीयां दिलायेगा जो आपको जीवन का आनंद लेने के लिए चाहिए. वह आपको सिखायेगा कि कैसे अतीत को पीछे छोड़ना ताकि आप ज़रा भी पीड़ा का अनुभव ना करें जब आप उसे याद करें (सभोपदेशक ५:२० में ये वादा किया गया है कि वो व्यक्ति जो पूरी तरह अपने आपको परमेश्वर को समर्पित कर देता है ''इस जीवन के दिन उसे बहुत स्मरण ना रहेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसकी सुनकर उसे आनंदमय रखता है परमेश्वर का आनंद उसके अंदर छिप गया है.''

२३

अंत में आज़ादी

भावनात्मक चंगाई और अपने जीवन का आनंद उठाने की आज़ादी का मार्ग ज़रूरी नहीं कि इतना आसान हो. तो भी आज़ादी की ओर बढ़ना बेशक़ आसान हो. तो भी आज़ादी की ओर बढ़ना बेशक़ बेहतर है बजाय दासता में बंधे रहने से: ''सो जब मसीह ने शरीर में होकर दुख उठाया तो तुम भी उस ही मनसा का धारण करके हथियार बांध लो क्योंकि जिसने शरीर में दुख उठाया वह पाप से छूट गया.

ताकि भविष्य में अपना शेष शारीरिक जीवन मनुष्यों की अभिलाषाओं के अनुसार नहीं, वरन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यतीत करो (१ पतरस ४:१-२) ध्यान से शास्त्र वचन के इस अंश का अध्यन करें जो हमें बताता है कि हमें स्वयं को हथियारों से लैस करने की ज़रूरत है और वो हथियार हैं सही विचार (मैं बेहतर यही समझूंगी कि मसीह के साथ दुख उठाऊं धार्मिकता के लिए, बजाय इसके कि पाप की दासता में बंधी रहूं.

विजय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि सही विचार धारा हो. जब मैंने पहले-पहल ये जाना कि यीशु कर सकते हैं और उनकी इच्छा है कि मुझे आज़ाद करें, मैं उस आज़ादी के लिए तड़प उठी, पर मेरा रवैया था, ''मैं और दुख नहीं उठाऊंगी, मैंने काफ़ी दुख भोग लिया. मैं किसी भी चीज़ के आगे, समर्पण नहीं करूंगी जो ज़रा भी भावनात्मक पीड़ा सी लगती हो. पवित्र आत्मा मुझे शास्त्रवचन के कई अंशो तक ले गया जिन्होंने मुझे ये समझने में मदद की कि मेरी विचार धारा ग़लत है और मुझे ख़ुद को तैयार करने की ज़रूरत है या सही सोच के हथियार अपनाने हैं.

मैं इस तरह सोचने लगी ''मैं और ज़्यादा दुख नहीं भोगना चाहती थी पर मैं ये करूंगी बजाय ग़ुलामी में रहने के. जब तक मैं ग़ुलामी में हूँ, तब तक तो मैं दुख उठा ही रही हूँ, पर इस तरह का दुख जिसका कोई अंत नहीं. यदि मैं यीशु को मार्गदर्शन करने दूं और वो सब सहने के लिए तैयार हो सकूं जो मुझे आज़ाद कराये तो ये शायद कुछ देर दुख पहुंचाये पर कम से कम ये वो दुख होगा जो विजय तक जाता है. एक नया जीवन जो भावनात्मक पीड़ा से मुक्त है.''

एक अच्छा उदाहरण है शारीरिक कसरत. यदि मेरा शरीर बुरी तरह बेडौल हो जाए बुरी खान-पान की आदतों से या व्यायाम की कमी से तो मैं दुख उठाऊंगी क्यों कि मैं हमेशा थकी थकी ओर बेजान महसूस करूंगी. जब तक मैं अपने इस हाल के बारे में कुछ करूंगी नहीं, तो ये दुख दिन ब दिन चलता ही जायेगा. यदि मैं सुडौल बनने का फ़ैसला कर लूं तो मुझे शुरुआत करनी होगी व्यायाम से, सही भोजन के चुनाव से और ग़लत भोजन से दूर रहने से. कुछ समय तक मैं मांसपेशीओं में सूजन से दुखी होऊंगी, मेरा शरीर शायद विद्रोह कर उठे यदि मैंने उसे उसकी लत अनुसार वही भोजन नहीं दिया, ये भी एक क़िस्म का दुख भोगना है. मुझे अपने समय में से कुछ बचाकर व्यायाम की ओर मुड़ना होगा और इससे शायद एक क़िस्म का दुख पहुंचे क्योंकि मुझे अक़्लमंदी के चुनाव करने होंगे ना कि भावनात्मक चुनाव. हम इस उदाहररण से देख सकते हैं कि बेकार के दुख से आज़ादी पाने के लिए जो हमें मिल रहा है.

शारीरिक अवस्थता से एक व्यक्ति शायद किसी और तरह से दुख उठायें, पर ये एक ऐसा दुख है जो विजय की ओर जाता है और अंत में दुख का अंत करता हैं.

सही दुख भोगना और ग़लत दुख भोगना

निम्नलिखित शास्त्रवचनों पर ध्यान देने से पता चलता है हमें विश्वास से चुनना चाहिये कि जब हम मुश्किल दौर से गुज़र रहे हों तब भी खुश रहें ये जानते हुये कि ''सही दुख भोग'' भी अंत में अच्छा फल दिलायेगा, जो इस संदर्भ में है. सिद्ध चरित्र :

''यही नहीं (चलो हम आनंदित हों) वरन हम क्लेशों में भी घमण्ड करें, यही जान कर कि क्लेश से धीरज.

और धीरज से खरा निकलता और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है.

और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है.'' (रोमियो ५:३-५)

क्योंकि ग़लत मन की धारणा के कारण बहुत से लोग इस तरह हद तक सिद्ध नहीं हो पाते कि वे जीवन का आनंद अनुभव कर सकें. सिद्धता में शामिल है स्थिरता. बिना स्थिरता के हम कभी भी सचमुच शांति और आनंद अनुभव नहीं कर पायेंगे.

एक 'सही दुख भोग' और एक 'गलत दुख भोग' है प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों को प्रेरित किया कि ये निश्चित जान लें कि वे बुरे कर्मों के कारण दुख नहीं भोग रहे और यदि वे दुख भोग रहे हैं तो वे धार्मिकता के कारण हो.

१ पतरस ३:१४ मे वह लिखते हैं. ''और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ तो धन्य हो''

वचन १६ मे वे हमे निर्देशित करते है कि हम इस तरह जीये कि हमारा विवेक (अन्तरात्मा) पूरी तरह शुद्ध हो और वचन १७ मे वह कहते हैं ''क्योंकि यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो, कि तुम भलाई करने के कारण दुख उठाओं, तो यह बुराई करने के कारण दुख उठाने से उत्तम है''

ये बहुत महत्वपूर्ण क्षेत्र है. बहुत से लोग कभी भी आज़ादी का आनदं अनुभव नहीं कर सकते क्योंकि दुख भोगने के प्रति उनकी धारणा गलत है. अपने मसीही जीवन के किसी पड़ाव पर शायद आपने सुना हो कि यीशु आपको आपके पूरे दुख से मुक़्त कराना चाहते हैं, और ये सच है-वह चाहते हैं. तो भी यहां एक बदलाव का दौर है और बदलाव का दौर कभी आसान नहीं होता.

बच्चे के जन्म की प्रक्रिया में एक प्रक्रिया जो प्रसव पीड़ा की सबसे कठिन दौर होता है उसे ''अंतराल'' कहते हैं. तीस साल तक मैं पीड़ा में जीती रही जब मैंने अंत में जाना कि यीशु मुझे पीड़ा से मुक्त कराना चाहते है. मैंने उस अंतराल मे प्रवेश किया. मैं बदली जा रही थी. उसमें परिवर्तित की जा रही थी जो उनकी मेरे प्रति मूल धारण थी इससे पहले कि मैं संसार द्वारा बाधित की जाती. मैंने कुछ और साल दुख भोगा, पर एक अलग तरह का. ये बिन आशा वाला दुख नहीं था पर ऐसा दुख भोगना था दरअसल उत्पन्न करता है आशा, क्योंकि मैं पूरे अंतराल में परिवर्तन देख रही थी.

ये हमेशा ज़्यादा बड़े परिवर्तन नहीं होते, पर परमेश्वर ने हमेशा मुझे हार मानने से दूर रखा. तब जब मैंने सोचा कि अब मैं और अधिक ये पीड़ा नहीं सह सकती, वह एक ख़ास आशीष मुझे दिला देते मुझे ये अहसास दिलाने के लिये कि वह मेरे साथ हर समय थे- मेरी निगरानी करते हुये.

संशोधक की आग

यदि आप समझ सकें तो धर्म का दुख भोग संशोधक आग की तरह काम करता है जब निम्नलिखित वचन अपना विशेष अर्थ रखते है जो हमें महान दिलासा दिलाते है.

''परन्तु उसके आने के दिन को कौन सह सकेगा? और जब वह दिखाई दे तब कौन खड़ा रह सकेगा? क्योंकि वह सोनार की आग और धोनी के साबुन के समान है.

वह रूपे का तानेवाला और शुद्ध करने वाला बनेगा, और लेवियों को शुद्ध करेगा और उनको सोने रूपे की नाई निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाये जायेंगे''

मैं आपको एक कहानी सुनाना चाहूंगी जो मैंने कभी सुनी थी जो इस विषय पर प्रकाश डालती है. युरोप में एक व्यक्ति सुनार की दुकान पर गया और उसे कुछ चीज़े पसंद आई जो वे खरीदना चाहता था. पूरा समय जब वह दूकान के अंदर था, उसने कभी दुकानदार को नहीं देखा. अपनी खरीद्दारी को अंतिम रूप देने के लिये वो मालिक को ढूंढने लगा, और जब उसने ऐसा किया तो पाया कि दुकान के पीछे एक छोटा सा दरवाज़ा है जो बाहर की ओर जाता है. जब वह उस दरवाज़े की चौखट पर खड़ा हुआ तो उसने दुकानदार को देखा जो (वास्तव में संशोधक) आग के पास बैठा था या जिस पर एक बड़ा बर्तन रखा हुआ था. वह उस उबलते बर्तन पर से अपनी नज़रें नहीं हटा रहा था, तब भी जब खरीद्दारी को उत्सुक ग्राहक उससे बात करने की कोशिश कर रहा था कि वह उसकी कुछ चीज़े खरीदना चाहता है.

उस ग्राहक ने पूछा कि क्या वह कुछ समय के लिये जो कर रहा है उसे छोड़ कर अंदर नहीं आ सकता और उसकी खरीद्दारी नहीं निपटा सकता, तो भी, उस संशोधक ने कहा ''नहीं''. उसने बताया कि वह धातु को बर्तन में नहीं छोड़ सकता. एक मिनट के लिये भी नहीं. उसे कुछ इस तरह समझाते हुये.

ये बहुत महत्वपूर्ण है कि यह धातु जो सोना है सख्त न हो जाये जब तक कि सभी अशुद्धियां इसमें से निकल न जायें. मेरा मक़सद है इसे शुद्ध सोना बनाना. यदि आग ज़्यादा गर्म हो जाती है तो वह इसे तबाह कर सकती है और यदि आग ज़्यादा ठंडी हो जाती है, तो सोना जम सकता है अपनी सारी अशुद्धियों के साथ रख कर.

उसने समझाया कि वह उसे छोड़ नहीं सकता, न ही उस पर से एक पल के लिये भी अपनी नज़र हटा सकता है. वह वहां बैठा रहेगा जब तक कि ये काम पूरा नहीं हो जाता. ग्राहक ने पूछा कि ये कब होगा, और संशोधक ने जवाब दिया ''मैं जान लूंगा जब ये पूरा होगा तब जब मै इस धातु में देखूंगा और अपनी छवि इसमें साफ़ देख सकूंगा.''

मेरे लिये, ये इतनी खूबसूरत है क्योंकि यह मुझे बताती है कि परमेश्वर हमेशा मेरे जीवन का मार्गदर्शन कर रहे हैं. और मुसीबतों में भी मुझ पर नज़र रखे हैं और उन परीक्षाओं में भी जो मुझे झेलनी पड़तीं हैं कि वह इतनी कठिन न हो जायें. पर वह इसका भी ध्यान रखते हैं कि पर्याप्त दबाव बना रहे ताकि मुझमें काम होता रहे.

१ कुरिंथियो १०:१३ में पौलुस कहते है कि परमेश्वर कभी भी हम पर इतना अधिक दुख नहीं आने देंगे जो हम सह न सकें. पर इस परीक्षा के साथ वह बाहर निकलने का रास्ता भी देंगे. हम परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं कि हमसे हमारी क्षमता से अधिक सहने की उम्मीद नहीं करते.

मेरी मानिये, परमेश्वर जानते हैं कि आप सक्षम है उससे भी ज़्यादा सहने को जो आप सह रहे हैं. उस पर विश्वास करें, और वह आपको संशोधन की प्रक्रिया से गुज़ार कर बाहर निकालेंगे ताकि आप खरा सोना बन के निकल सकें.

लक्ष्य की ओर बढ़ते जायें

धर्म का दुख भोग सहना आसान हो जायेगा यदि आप समझ लें कि संशोधक कि आग एक जीवनभर की प्रक्रिया है. इस सच्चाई को समझ कर, प्रेरित पौलुस ने लिखा, ''हे भाईयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं (पा चूका हूं)/ परन्तु यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर, आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं. ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है''

अपने लेखों में पौलुस ने अक्सर मसीही जीवन की तुलना दौड़ से की है.

''क्या तुम नहीं जानते, कि दौड़ में तो दौड़ते सभी हैं, परन्तु इनाम एक ही ले जाता है? तुम भी वैसे दौड़ो (अपनी दौड़) कि जीतो (इनाम पाओ).

और हर एक पहलवान सब प्रकार का संयम करता है, वे तो एक मुरझाने वाले मुकुट को पाने के लिये यह सब करते हैं. परन्तु हम तो उस मुकुट को पाने के लिये करते हैं जो मुरझाने का नहीं (यह मुकुट है अनंत आशीषें)

इसलिये मैं तो इस रीति से दौड़ता हूं (अपने निश्चित लक्ष्य की ओर) परन्तु बेठिकाने नहीं. मैं भी इस रीति से मुक्कों से लड़ता हूं. परन्तु उसकी नाई नहीं जो हवा पीटता हुआ लड़ता है.

परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं; ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके, मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं (परीक्षा में अधूरा रहुं, मान्यता प्राप्त न करूं और नकली कह कर नकार दिया जाऊं) (२ कुर्रीथियो ९:२४-२७)

परमेश्वर पर भरोसा करो और वह आपको अंतिम रेखा के पार ले जायेंगे. दृढ़ निश्चय कर लो आगे बढ़ते रहने का और वो पाने का जिसके लिये मसीह ने आपको चुना है. उन्होंने आपको अपनी पकड़ में लिया ताकि आपका उद्धार कर सकें.

आपके उद्धार के साथ शामिल है. इस जीवन के बहुत से लाभ- न कि सिर्फ़ स्वर्ग में घर आपके मरने के बाद. आपका अनंत उद्धार उसी समय शुरु हो गया जब आपने जन्म लिया दुबारा और यह कभी खत्म नहीं होगा. परमेश्वर ने आपको अपनी पकड़ में लिया ताकि आपको दोबारा स्थापित कर सकें और वो दे सकें जो शत्रु ने आपसे चुरा लिया है. पर आपकोये दृढ़ निश्चय करने की ज़रूरत है कि आप इसे दोबारा हासिल करेंगे.

अब निष्क्रय रह कर ये उम्मीद नहीं कर सकते कि विजय खुद ब खुद आप पर गिरेगी. वो जरूर आती है परमेश्वर की कृपा से, और कार्यों से नहीं, पर हमे अवश्य ही सक्रिय हो कर पवित्र आत्मा से हर कदम पर आगे बढ़ते हुये सहयोग करना है.

इस किताब 'दि ग्रेट लवर्स मैनीफेस्टो'' में, डेव ग्रांट बताते हैं कि हम कभी बढ़ नहीं पाते अगर हालात आसान हों. हम बिना मेहनत के व्यर्थ हो जाते हैं. हम इंसान स्वभाव से ही आलसी है और हमेशा आसान राहें तलाशने की कोशिश करते हैं, पर वास्तव में, हमें कुछ तनाव चाहिये ताकि खींचे जा सके बढ़ने के लिये. हम तब तक नहीं बढ़ेंगे. जब तक हम सहमत न हो जायें कि संघर्ष से हमें लाभ होता है और यह कि संघर्ष अच्छा होता है क्योंकि ये हमें गतिशील और जीवित रखता है. पौलुस ने कहा ''आगे बढ़ते जाना'' इस कथन में तनाव और संघर्ष झलकता है. ये दर्शाता है कि मसीही चलन आसान नहीं है.

ग्रांट की इस किताब में, वह ये निम्नलिखित कहानी बताते हैं ''बहुत सी मधुमक्खीयों को अंतरिक्ष की लम्बी उड़ान पर ये देखने के लिये ले जाया गया कि वो भारहीनता का अनुभव कैसे सहती है. भारहीन वातावरण में वे बिना किसी प्रयास के तैरने लगती.'' इस प्रयोग की रिपोर्ट इन शब्दों में ब्यान की गई ''उन्होंने उड़ान का आनंद लिया पर वो मर गई.''

मैं सहमत हूं कि मि. ग्रांट के साथ शत प्रतिशत कि हम अक्सर कम ही किसी फ़ायदेमंद चीज के लिये भटकते हैं.

कठिन समय मे डटे रहो

निम्नलिखित वचनों में, पुराने नियम का भविष्य वक्ता हबक्कूक कठिन समयों के विषय में बात करता है. जिन्हें वह ''ऊंचे स्थान'' वह कर पुकारता है. और कहता है परमेश्वर ने उसे हिरणी के समान पांव दिये हैं ताकि इन कठिन समयों में मज़बूती से पांव जमाये रहे:

''क्योंकि चाहे अंजीर के वृक्षों में फूल न लगें, और न दाखलताओं में फल लगें जलपाई के वृक्ष से केवल धोखा पाया जाये और खेतों में अन्न उपजे भेड़शालाओं में भेड़ बकरियां न रहें, और न थानों में गाय बैल हों.

तो भी मैं यहोवा के कारण आनन्दित और मगन रहूंगा (विजयी रहूंगा) और अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर के द्वारा अति प्रसन्न रहूंगा.

यहोवा परमेश्वर मेरा बलमूल है, वह मेरे पांव हरिणों के समान बना देता है. वह मुझको मेरे ऊंचे स्थानों पर चलाता है. (हबक्कूक ३:१७-१९)

ये शब्द हिरण ऐसे पर्वती हिरण का वर्णन करता है जो फुर्तीला और चुस्त पर्वता रोही जानवर है. चाहे कितनी भी चढ़ाई वाला पर्वत क्यों न हो उसे चढ़ने में कोई कठिनाई नहीं होती और वो एक कगार से दूसरे कगार पर आसानी से छलांग लगाते लांघता चला जाता है. यहीं कदमों की फुर्ती परमेश्वर हमसे चाहते हैं, ताकि जब हमारी राह में मुश्किलें आये तो हम न घबरायें और हारे.

सचमुच विजयी होने के लिये हमें उस मुकाम तक बढ़ना है जब मुश्किलें हमारे लिये चुनौती बनें और डर नहीं इन वचनों में, विस्तारित बाईबल इन स्थानों को कहती है ''ऊंचे स्थान'' जिनकी व्याख्या है ''मुसीबत, दुख या ज़िम्मेदारी'' ये इसलिये क्योंकि इन्हीं समयों में हमारी वृद्धि होती है.

यदि आप पीछे मुड़कर अपने जीवन की ओर देखें, तो आप पायेंगे कि आसान समयों में आप कभी वृद्धि नहीं करते; आप मुश्किल समयों में ही बढ़ते हैं. आसान समय जब आते है तो उस समय आप उसी का आनंद उठाते है जो आपने कठिन समयों द्वारा पाया है. सचमुच यहीं है जीवन का सिद्धांत. ये इसीतरह कार्य करता है.

आप पूरा सप्ताह काम करते है, फिर आपको आपका वेतन मिलता है और आप सप्ताहांत का मज़ा लेते है. आप व्यायाम करते हैं, खाते है और अपनी अच्छी देखभाल करते है. तभी

आप एक स्वस्थ शरीर का आनंद उठा पाते हैं. आप अपना घर साफ़ करते है, या तहखाना या गराज और तभी आप साफ़ सुथरे माहौल का आनंद उठा पाते है हर बार जब आप वहां से गुज़रते हैं.

मुझे याद आ रहा है इब्रानियों १२:२२ ''और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनंद की नहीं, पर शोक की ही बात दिखाई पड़ती है, तो भी जो उसको सहते सहते पक्के हो गये हैं पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है.''

वो व्यक्ति जो परमेश्वर की सेवा करता है उनके प्रति प्रेम के कारण वह धार्मिकता निभाता है क्योंकि यहीं धार्मिकता है. वह ये कुछ पाने के लिये नहीं करता हालांकि अंत में आशीष उसे वंचित न रखेगी. संपूर्ण बनने की ठानो प्रभु की महिमा देने के लिये और अंत में तुम स्वयं उस तेज़ का आनंद पाओगे.

२४

सेतु बनाओ–दीवारें नहीं

दीवारें दर्शाती हैं सुरक्षा हम सबमें ये आदत सी होती है कि अपने आप को चोट खाने से बचाने के लिये हम अपनी ही दीवारें खड़ी कर लेते हैं. जैसा कि मैंने कई बार कहा है, हालांकि मेरे पति बहुत ही दयालु और शानदार इंसान है, तब भी कभी ऐसा समय भी आता है जब वह मुझे ठेस पहुंचाते हैं. मैंने अंत में ये जाना कि जब भी मेरे पति मुझे भावनात्मक पीड़ा पहुंचाते हैं, मैं एक दीवार खड़ी कर लेती हूं. मैं बात कर रही हूँ आत्मिकता की जिसके पीछे मैं छुप सकुं और उन्हें मुझे दुबारा ठेस पहुंचाने से रोक सकूं. पर पवित्र आत्मा ने मुझे दिखाया कि जब मैं दीवारें खड़ी करती हूं दूसरों को बाहर रखने के लिये तो मैं खुद को भी एकांत वास की कैद में डाल लेती हूं.

बहुत से लोग अकेलेपन में जीते हैं, क्योंकि उन्होंने स्वयं ही बनाई हैं दीवारें खुद को सुरक्षित रखने के लिये. क्योंकि वो दीवारें क़ैद खाना बन जातीं हैं और वे कड़ुवाहट और अकेलेपन में जीते है. वो अपने आसपास सुरक्षा की दीवारें बनाते हैं ताकि वो भावनात्मक पीड़ा के अनुभव से बच सकें, पर वे प्रेम करने और प्रेम पाने के योग्य नहीं रहते क्योंकि वे चोट खाने का जोख़िम मोल लेना नहीं चाहते.

अपना पूरा जीवन पीड़ा से बचने की कोशिश करना ज़्यादा पीड़ादाई है बजाय सामान्य जीवन जीने और हर समस्या से जब वो आये तब निपटने के. यीशु चंगाई देने वाले हैं और हमेशा उपलबब्ध रहेंगे दुखदायी स्थितिओं में आपको चैन पहुंचाने के लिए.

मेरा मानना है कि परमेश्वर चाहते हैं कि मैं इसी समय आपको उत्साहित करूं कि आप विश्वास का कदम उठायें और अपनी बनाई दीवारों को ढा दें या गिरा दें. शायद ये विचार ही काफ़ी भयानक लगें, ख़ासकर यदि आप बहुत लम्बे समय से इनके पीछे रहते आये हैं. परमेश्वर वो भावनात्मक दीवारें गिरा सकते हैं. जो आपको दूसरों से अलग करती हैं, वैसे

ही जैसे उन्होंने यरीहो की दीवारों को ढाह दिया था (यहोशू १:२-२१; ६:१-२७) किंग जेम्स संस्करण में इब्रानियों ११:३० में लिखा है कि ''विश्वास द्वारा'' वो दीवारें नीचे आ गईं.

मुझे हर बार विश्वास में एक क़दम उठाना पड़ता है जब यीशु मुझे दिखाते हैं कि दूसरों को बाहर रखने के लिए मैंने दीवारें खड़ी कर ली हैं. मुझे अपने रक्षक के रूप में उनपर विश्वास करना होगा बजाय इसके कि खुद की सुरक्षा का यत्न करूं.

बाईबल में बहुत से शास्त्रवचन हैं जो परमेश्वर की सुरक्षा का वादा करते हैं यशायाह ६०:१८, उनमें से एक है जिसने मेरी मदद की; ''तेरे देश में फिर कभी उपद्रव और तेरे सिवानों के भीतर उत्पात या अंधेर की चर्चा ना सुनाई पड़ेगी; परन्तु तू अपनी शहर पनाह का नाम उद्धार और अपने फाटकों का नाम यश रखेगी.''

ये वचन मुझसे ये कहता है कि यीशु मसीह के द्वारा उद्धार मेरे आस-पास सुरक्षा की दीवार हैं. तो भी, मुझे अपने जीवन में आशीषों को सक्रिय करने के लिए, ये विश्वास करना होगा कि वे मुझपर नज़र रखे हुए हैं. जब तक मैं प्रभु की सुरक्षा को अस्वीकार करना जारी रखूंगी, स्वयं की देखभाल स्वयं करने का प्रयत्न करूंगी, मैं दासता और दुख में जीती रहूंगी.

एक और कमाल का शास्त्रवचन है परमेश्वर की सुरक्षा के विषय में यशायाह ३०:१८ में ''तो भी यहोवा इसलिए विलम्ब करता है (वफ़ादारी से आशा करते हुए, इच्छा करते हुए और इंतज़ार करते हुए) कि तुम पर अनुग्रह करे और इसलिए ऊंचा उठेगा कि तुम पर दया करें. क्योंकि यहोवा न्यायी परमेश्वर है; क्या ही धन्य हैं वे (भाग्यशाली हैं, प्रसन्न हैं और ईर्ष्या योग्य हैं) जो उसपर (वफ़ादारी से) आशा लगाये रहते हैं (उनकी विजय, उनकी कृपा, उनका प्रेम, उनकी शांति, उनका आनंद, उनके अद्वितीय और कभी ना टूटने वाले साथ के लिए)''

इस वचन का ध्यानपूर्वक अध्यन ये बताता है कि वह परमेश्वर ही है जो इस अवसर का इंतज़ार कर रहे हैं कि हमारा भला करें, हमारी परिस्थिति में हमें न्याय दें. हालांकि, ये काम भी वो केवल उन्हीं के लिए कर सकते हैं जो ऐसा करने के लिए उनपर आशा लगाये हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं. ''स्वयं की सुरक्षा'' की मेहनत छोड़ दो और परमेश्वर की ओर आशा लगाओ और उन्हें स्वयं की सुरक्षा सौंप दो.

'परमेश्वर को परमेश्वर बनने दो' और आप जैसे इस नये प्रदेश में विश्वास द्वारा प्रवेश करते हैं, मैं ये तो वादा नहीं कर सकती कि आपको कभी दुख नहीं पहुंचेगा, पर मैं ये वादा कर सकती हूँ कि परमेश्वर ''न्याय के परमेश्वर हैं'' जिसका मतलब है कि अंत में वो संतुलन लायेंगे और उनका मार्ग चुनने के लिए वो आपको इनाम देंगे.

कोई भी व्यक्ति जो अपनी समस्याओं और दुखभरी स्थिति से निपटने के लिए परमेश्वर का मार्ग अपनाता है वो महान उपलब्धिओं की ओर बढ़ रहा है ''जैसा लिखा है, कि तेरे लिए हम दिन भर घात किये जाते हैं; हम बढ़ होने वाली भेड़ों की नाईं गिने गए है. परंतु इन सब बातों में उसके द्वारा जिसने हमसे प्रेम किया है जयवंत से भी बढ़कर हैं.'' (रोमियो ८:३६.३७)

हम कैसे जयवंत से भी बढ़कर हो सकते हैं. जबकि साथ ही साथ हम उस भेड़ की नाईं लग रहे हैं जिसे वध के लिए ले जाया जा रहा है. जवाब आसान-सा है; जब शायद ऐसा दिखे कि हमारा फ़ायदा उठाया जा रहा है, जब ऐसा महसूस होता है कि परमेश्वर हमें बचाने वाले नहीं है, हम जयवंत से भी ज़्यादा हैं क्योंकि इन्हीं सभी गड़बड़ियों के बीच हम ये जानते हैं कि हमारे परमेश्वर ना कभी हमें छोड़ेंगे ना त्यागेंगे, और बिल्कुल सही समय पर हमारी मुक्ति हमें प्राप्त होगी और इनाम मिलेगा.

सेतु बनाना

एक दिन जब मैं प्रार्थना कर रही थी, पवित्र आत्माने मुझे दिखाया कि मेरा जीवन एक पुल बन गया है जिससे अन्य लोग गुजर सकते हैं. और परमेश्वर में अपना स्थान ढूंढ सकते हैं बहुत साल तक मैंने केवल अपने जीवन में दीवारें हीं बनाईं थीं, पर अब जहां पहले दीवारें थी अब उनके बदले वहां सेतु हैं. सभी कठिन बातें और अन्याय जो मेरे साथ हुए अब वो ऐसी सड़कें बन गई हैं. जिनपर से दूसरे गुजर सकते हैं और वो आज़ादी पा सकते हैं जो मैंने पाई.

मैंने दीवारों की बजाय सेतु बनाना सीख लिया जैसे मैंने इस किताब के पांचवे अध्याय में बताया है परमेश्वर व्यक्तिओं का प्रसंशक नहीं (देखिये प्रेरितों के काम १०:३४ में जो वो एक के लिए करते हैं वही वो दूसरे के लिए भी करेंगे. जब तक उनकी धारणा पर चला जाये. यदि आप उन्हीं धारणाओं पर चलें जिनकी रूप रेखा इन पन्नों पर दी गई है, आप वहीं आज़ादी पायेंगे जो मैंने पाई है. फिर आप दूसरों के गुजरने के लिए पुल बन सकते हैं, बजाय एक दीवार के जो उन्हें बाहर रखती है.

इब्रानियों ५:९ में यीशु को कहा गया है ''सदाकाल के उद्धार का कारण'' उन्होंने हमारे लिए परमेश्वर का मार्ग प्रदर्शित किया. वो हमारे लिए द्रुतगामी सड़क बन गए जिससे हम गुजर सकते हैं. ये ऐसा है जैसे कि उनके सामने एक बहुत बड़ा जंगल आया और वो हमारे आगे गए ताकि जब हम वहां से गुजरें तो हम सीधे वहां से निकल सकें. बिना उस घने जंगल के खतरों से जूझते हुए. उन्होंने हमारे लिए स्वयं का बलिदान दिया, और अब जबकि हम उनके बलिदान का लाभ उठा रहे हैं वो हमें एक मौका दे रहे हैं कि हम

भी दूसरों के लिए बलिदान दें ताकि वो भी उन लाभों का आनंद उठा सकें. जोहमें मिले. इब्रानियों १२:२ में लिखा है कि यीशु ने क्रूस का दुख सहा उस पुरस्कार का आनंद पाने के लिए जिसका लक्ष्य उनके सामने रखा गया था. मैं हमेशा ख़ुद को यही याद कराती रहती हूँ जब मार्ग कठिन दिखता हो. मैं स्वयं को बताती हूँ, ''आगे बढ़ती रहो जॉयस, आगे ख़ुशी है.''

एक फ़ैसला करो अपनी दीवारें गिराने का और सेतु बनाने का. बहुत, बहुत से लोग हैं जो अपनी गड़बड़ी में मटक गए हैं और उन्हें ज़रूरत है किसी ऐसे की जो उनके आगे जाएं और उन्हें मार्ग दिखायें. आप उनके लिए ऐसा व्यक्ति क्यों नहीं बनते?

दीवारे या सेतु? चुनाव आपको करना है.

राख से उभरे सुंदरता

परमेश्वर केवल यहीं नहीं चाहते कि आप अपनी दीवारों को सेतु बनायें, पर जैसा कि उन्होंने अपने वचन में वादा किया है वोआपकी राख से सुंदरता उभारकर आपको देना चाहते हैं!

> ''प्रभु यहोवा का आत्मा मुझपर है; क्योंकि यहोवा ने सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया और मुझे इसलिए भेजा है कि खेदित मने के लोगों को शांति दूं; कि बंधूओं के लिए स्वतन्त्रता का और कैदीओं के लिए छुटकारे का प्रचार करूं कि यहोवा के लिए प्रसन्न रहने के वर्ष का और हमारे परमेश्वर के पल्टा लेने के दिन का प्रचार करूं; कि सब विलाप करने वालों को शांति दूं और सिय्योन के विलाप करने वालों की सरपर की राख दूर करके सुंदर पगड़ी बांध दूं, कि उनका विलाप दूर करके हर्ष का तेल लगाऊं और उनकी उदासी हटाकर यश का ओढना उढाऊं; जिससे वह धर्म के बांज वृक्ष और यहोवा के लगाये हुए कहलायें जिससे उसकी महिमा प्रकट हों.'' (यशायाह ६१:१,२,३)

यशायाह ६१ में दीये गये वादे समृद्ध और बहुतायत के हैं. उन्हें पढ़ो और एक फ़ैसला करो कि उनमें से किसी एक से भी वंचित ना रहोगे. मैं आपके साथ सहमत रहूंगी जब आप प्रार्थना करेंगे कि हर व्यक्ति जो यह किताब पढ़ें. वो इन वादों का वारिस होगा.

परमेश्वरने हमें यीशु देकर अपनी भूमिका अदा कर दी है. मैंने अपनी भूमिका अदाकर दी है परमेश्वर के वचन पर चलकर और आज़ादी पाकर फिर से किताब लिखकर ताकि आप

भी ऐसा कर सकें. अब, आपको अपनी भूमिका अदा करनी है ये महत्वपूर्ण निर्णय लेकर कि आप कभी हार नहीं मानेंगे. जब तक कि आप उन्हें ये ना करने दें:

अपने घाव भरने दें;
अपना टूटा दिल जोड़ने दें;
अपने जीवन के हर क्षेत्र में आपको मुक़्त करायें,
आपके क़ैदखाने का दरवाज़ा खोलें;
शोक की बजाय आपको आनंद दें,
भारी बोझ तले दबी आत्मा की बजाय आपको स्तुति का
ओढना उढाये;
और
राख के बदले सुंदरता दिलाये.

२७

कुछ भी व्यर्थ नहीं जायेगा

जीवन का कोई भी अनुभव कभी व्यर्थ नहीं जाता या बेकार नहीं होता यदि आप अपनी सभी चिंतायें प्रभु पर छोड़ दें चाहे आपकी टुकड़े टुकड़े जिंदगी हारा हुआ जंग का मैदन लगे, यीशु आपके अतीत के सभी टुकड़े जोड़कर उसे कुछ सुंदर चीज़ बना सकते हैं.

जब यीशुने पांच हज़ार लोगों को सिर्फ़ कुछ रोटियों और दो मछलिओं से तृप्त कराया उसके बाद उन्होंने अपने शिष्यों से कहा, ''बचे हुए टुकड़े बटोर लो (वो टूटे हुए व्यर्थ टूकड़े जो बच गए थे) कि कुछ फ़ैंका ना जाए. (यानी कुछ व्यर्थ या गंवाया ना जाएं)'' (युहन्ना ६:१२)

शिष्योंने बचे हुए भोजन की बारह टोकरियां भरकर उठाईं उस छोटे से रोटिओं और मछलिओं के दान से कहीं ज़्यादा जो यीशु को अर्पित किया गया था.

परमेश्वरने मुझे डर, असुरक्षा, भावनात्मक व्यसनों और गहरी जड़ पकड़ अस्वीकृति की दासता से मुक्त कराया. फिर उन्होंने मेरी टुकड़े-टुकड़े ज़िंदगी को दोबारा बनाया और मुझे महिमामयी अवसर प्रदान किया कि उनके लोगों को शिक्षा दूं कि कैसे सम्पूर्ण बने; कैसे फलदायी और आनंदित जीवन जीएं और सेवकाईयां चलाये; और कैसे स्वस्थ और प्रेम भरे रिश्तों का आनंद लें. मैंने परमेश्वर से बिना शर्त प्रेम पाना सीख लिया है बिना शर्त प्रेम डेव से और स्वयं अपने से. मेरे पति हमेशा वो नहीं करते जो मैं चाहती हूँ कि वो करें, जैसे मैं चाहती हूँ वो करें, जब मैं चाहती हूँ वो करें; पर अब सब ठीक है, क्योंकि मैंने सीख लिया है कि कैसे उन्हें भी बिना शर्त प्रेम करना है.

जब पहले-पहले हमारी शादी हुई, मुझे बिना शर्त प्रेम के बारे में कुछ भी पता न था. मेरे परिवार को हर बात मेरे अनुसार करनी पड़ती वरना मैं ये समझ लेती कि वे मुझसे प्यार नहीं करते.

जब मुझे टूटे दिल का दुख झेलना पड़ा, हर कोई जो मुझसे सम्बन्धित था उन्हें बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ी. मुझे ख़ुश रखने के प्रयास में. उन्होंने दुख भोगा क्योंकि वे कभी भी मुझसे असली रूप में पेश ना आते थे. वो कभी भी मुझे ईमानदारी से किसी भी चीज़ के बारे में सच्चाई नहीं बताते थे. वो मुझे वहीं बताते थे जो मैं सुनना चाहती थी यदि वो स्वयं कोई चैन चाहते थे.

यदि मैं डेव से कहती, ''चलो चलके कॉफ़ी पीते हैं'' वो ऐसा नहीं कह सकते थे ''ख़ैर मेरे ख़्याल से मैं ऐसा नहीं करना चाहता'' वरना मैं मूंह फुला लेती यहीं मेरा तरीका था. हर बात पर नियन्त्रण रखने का. मैं टूटी हुई थी; बिखरी दलालों वाली, टुकड़े-टुकड़े और बेकार. मेरा शोषण हुआ था, और मैं सभी से अपनी पीड़ा की क़ीमत वसूल रही थी तब भी जब इसका कारण वो नहीं थे.

यदि शोषण द्वारा आपका अंग भंग हुआ है, एक इंसान के नाते आपके अधिकारों का हनन हुआ है, जिससे आप बहुत ही दुख से भर जाते है. शोषण के बहुत से पीड़ित अंत में इस मुक़ाम पर पहुंच जाते है जहां वो कहते हैं ''मैं अब और सह नहीं सकती'' वो दरअस्ल अपनी रोज़मर्रा की ज़िंदगी में अब ये समस्या नहीं झेल रहे; वो टूटे दिल की समस्या से दुखी हैं. हममें से वो जो टूटे परिवारों से आते हैं अक्सर इतने असुरक्षित होते हैं कि हम स्वयं अपना परिवार भी टूटा हुआ बना लेते हैं.

हमें अंदरूनी शक्ति चाहिए ताकि हम बाहरी हालातों को स्वयं पर हावी होने ना दें. हम परमेश्वर को अपने टूटे सपनों को समेटने दें और हमें मसीह की छवि में दोबारा ढालने दें. ऐसा करने के लिए शायद उन्हें कछ हमारे बाक़ी बचे टुकड़ों को पीस कर मुलायम मिट्टी बनना पड़े, अपने वचन से सींचना पड़े. अपने बाकी बचें लौंदे को फिर से आकार देना पड़े और वापस हमें कुम्हार के चक्के पर जाना पड़े. पर वो इतने सक्षम हैं कि वो चमत्कारी ढंग से जो बचा-खुचा उन्हें दिया गया है उसे और भी सुंदर चीज़ में तब्दील कर दें.

यीशु ने हमसे कहा कि संसार में हमें मुसीबतें झेलनी पड़ेंगी ये कहते हुए, ''मैंने ये बाते तुमसे इसलिए कहीं हैं कि तुम्हें शांति मिलें; संसार में बहुत क्लेश होता है परंतु तुम ढांढस बांधो (हौसला रखो, आत्माविश्वास बनाये रखों निश्चित रहो, डटे रहो) मैंने संसार को जीत लिया है'' (युहन्ना १६:३३) कोई भी जीवन में कष्टों और क्लेशों से नहीं बच सकता, पर जो यीशु पर अपना विश्वास रखते हैं वो हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं ''धर्मी पर बहुत-सी विपत्तियां पड़ती तो हैं, पर यहोवा उनको उन सबसे मुक़्त कराता है.'' (भजन संहिता ३४:१९) पर वचन ये नहीं कहता कि परमेश्वर तुरंत हमें मुक़्त कराते हैं. शायद पहले हमें कुछ चीज़ों से हमें गुज़रना पड़े.

जीवन हमेशा मृत्यु पर हावी होता है और प्रकाश हमेशा अंधेरे पर हावी रहताहै. परमेश्वर के वचन के बिना भविष्य शायद अंधकार लगे, पर यीशु ने कहा कि वो हमें अंधकार से मुक्त कराने आये हैं ''मैं जगत में ज्योति होकर आया हूँ ताकि जो कोई मुझपर विश्वास करें (मेरे साथ रहे और भरोसा करे और मुझपर निर्भर करें) वह अंधकार में ना रहे, अंधकार में रहने की बजाय हमें यीशु के पीछे चलते रहना है और उनके जीवन का उदाहरण पूरीतरह अपनाना है (देखिये युहन्ना १२:२६)

हम अपनी टूटी हुई हारी और फीकी ज़िंदगियों से आगे नहीं बढ़ सकते पर अब तक आपने परमेश्वर का काफ़ी वचन ग्रहण कर लिया होगा इस किताब की साक्षी द्वारा और जाना होगा कि यदि आप प्रभु के पीछे चलें तोआप अपने अतीत के बंदी नहीं बने रहेंगे. यीशु ने कहा, ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे (मेरी शिक्षाओं पर चलोगे और उनके अनुसार जीवन जीओगे) तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे. और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा (युहन्ना ८:३१-३२)

प्रभु के पीछे चलते रहो

परमेश्वर लागों के हृदय में सपने बोते हैं. पर बहुत से लोग पूरा रास्ता चलकर अन्त तक नहीं पहुंचते ताकि उनके उनके सपने को पूरा करने के लिए उनके पीछे चल सकें. बहुत से शुरूआत करते हैं और छोड़ देते हैं, वो इसे जारी नहीं रखते क्योंकि उनके टूटे दिल उनकी आशाओं पर हावी हो जाते है. अंत तक उन्हें पहुंचाने के लिए उनके अंदर भीतरी शक्ति नहीं होती.

यीशु आपके घावों को भरेंगे और आपकी खरोंचों को चंगा करेंगे. उनका वचन आपकी आत्मा के लिए औषधी है (देखिये नीतिवचन ४:२०-२२) परमेश्वर का वचन हर दिन पढ़िये चाहे आप दिन का एक वचन ही पढ़ें मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि आप मेरा दैनिक भक्ति कार्यक्रम पढ़ें, ''अपने दिन की सही शुरूआत'' और तब जब आप रात को सोते हैं तो परमेश्वर द्वारा प्रेरित विचार सोचिए जैसे कि: ''मैं यीशु मसीह की धार्मिकता हूँ, परमेश्वर मुझसे प्रेम करते हैं मेरे भविष्य के लिए उनके पास एक अच्छी योजना है'' फिर विश्वास से परिपूर्ण इसतरह की प्रार्थना करें:

''प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि आप मुझसे प्रेम करते हैं और आप मेरे जीवन के सभी टूटे टुकड़े समेटकर मेरी भलाई के लिए उनके द्वारा कुछ अच्छा ही बनायेंगे. रोमियो

८:२८ में आपके वचन में लिखा है 'सभी बातें मिलकर उनके लिए भलाई ही उत्पन्न करती हैं जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जो उनकी इच्छा के अनुसार बुलाये हुए हैं' मैं आपसे प्रेम करती हूँ प्रभु. मैं विश्वास करती हूँ कि आप मुझे क्षमा करते हैं. हे पिता, मैं अपने टूटे दिल के लिए आपकी चंगाई स्वीकार करती हूँ.''

रात कभी सोते समय ये मत सोचिए कि आप कितनी भयानक गड़बड़ी में हैं और आप कभी भी इससे उभर नहीं पायेंगे, या कोई भी चीज़ कभी और बेहतर नहीं होगी, या कैसे कभी कोई फ़र्क नहीं होगा. वचन को अपनी औषधी के रूप में ग्रहण करें. ये औषधी है आपके शरीर, आपके प्राण और आपकी आत्मा के लिए. इसका अध्यन करें ताकि वचन की शक्ति और पवित्र आत्मा एक साथ आपके जीवन में कार्य कर सकें.

जब आप बाईबल का एक वचन पढ़ते हैं और उसे अपने लिए अपनाना चाहते हैं तो इसे अपनी प्रार्थना में जोड़ दीजिए. उदाहरण के लिए भजन ३०:११-१२ आपके सोने के समय की प्रार्थना करते हुए ''तूने मेरे लिए विलाप को नृत्य में बदल डाला; तूने मेरा टाट उतरवाकर मेरी कमर में आनंद का पटुका बांधा है, ताकि मेरी आत्मा तेरा भजन गाती रहें और कभी चुप न हो. हे मेरे परमेश्वर यहोवा मैं सर्वदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा.''

परमेश्वर उत्सुक है अपना आत्मा आपके जीवन में लाने को. बस प्रार्थना करें, ''प्रभु, मेरे जीवन में आयें. आप जो भी करना चाहतें हैं करें. उन लोगों को चंगाई दें जिन्हें मैंने ठेस पहुंचाई और मुझे भी चंगा करें.''

आपकी पीड़ा व्यर्थ नहीं जाएगी

बचपन में मैं कभी भी बेफ़िक्र न हो सकती थी, कभी भी बिना चिंताओं के ना जी सकती थी. कभी भी उठकर खेलने के योग्य नहीं थी. मैंने हमेशा स्वयं के लिए अफ़सोस महसूस किया है क्योंकि लगता था कि जैसे मेरा बचपन और किशोर अवस्ता के साल बस बेकार गये हों और फिर पांच साल तक मैंने बुरी शादी-शुदा ज़िंदगी बिताई और लगा कि वो व्यर्थ थी. व्यस्क होने पर मैंने महसूस किया कि मैंने अपने जीवन के सतने सारे वर्ष बस व्यर्थ गवां दिए. पर परमेश्वर ने उन सब व्यर्थ सालों को इकट्ठा किया और मेरे इन सभी कबाड़ों कोमेरे संदेश में बदल दिया. हर शोक़मयी स्थिति जो मैंने गुज़ारी उन्होंने उसे कीमती बना दिया. आप शायद हैरान हो रहे हों कि कैसे परमेश्वर कभी उससे कुछ भी अच्छा बना सकते हैं जो इतना कबाड़ा मैंने ही उत्पन्न किय? परमेश्वर के कुछ तरीके ऐसे हैं जिनके बारे में हम कुछ नहीं जानते. वे मेरे उन व्यर्थ सालों का इस्तेमाल कर रहैं हैं उन हज़ारों हज़ारों लोगों तक पहुंचने के लिए जो मुझसे कहते है, ''मैं तुम्हें हर रोज़ सुनता हूँ.''

कई बार मैं हैरान होती हूँ कि वो क्या सुन रहे हैं. क्या मुझे यहीं बताते सुनते है कि मैं कितना बड़ा कबाड़ थी और कैसे परमेश्वर ने दोबारा मुझे संपूर्ण बनाया और यहीं संदेश उन्हें आशा और विश्वास दिलाता है कि वे उनके लिए भी ऐसा ही करेंगे. वो मेरे टूटे अस्तित्व को क़ीमती बना रहे हैं उससे अन्य लागों के टूटे अस्तित्व को चंगाई देने के लिए.

शायद आप सोच रहे हों कि अब तक आपने अपना जीवन व्यर्थ गंवाया है. पर इसी बारे में सोचते हुए पूरा समय इसी में गवाते हुए आप नये मुक़ाम तक नहीं पहुंच सकते. यदि आप परमेश्वर पर भरोसा करें तो जो भी समय आपका बाक़ी बचा है तो वो उसमें भी कुछ महिमामयी कार्य कर सकते हैं, चाहे ये बहुत छोटेसे के लिए ही क्यों नहीं. परमेश्वर उस समय को इतना महिमामयी बना देंगे जो बाक़ी बचा है कि आपको लगेगा कि जो कुछ आपने सहा है वो कारगर हुआ ये देखकर कि परमेश्वर इसे कैसे अपने हाथ में लेते हैं और आपमें कुछ ऐसा कर दिखाते हैं जो केवल वहीं कर सकते हैं.

आज जो मैं कर रही हूँ वो मेरे लिए करना असंभव ही था. जब परमेश्वर ने मुझे सेवकाई में बुलाया तो ये कहना कि मैं गड़बड़ से भरी थी उसका सहीं वर्णन नहीं होगा. पर मैं परमेश्वर से प्रेम करती थी. और मैं उसी अवस्था में रहना नहीं चाहती जिसमें उस समय थी और मैं बस ये नहीं जानती थी कि जैसी मैं हूँ उससे कैसे बदलूं और अलग और बेहतर बन जाऊं परमेश्वर को बहुत साल लगे मुझे वहां पहुंचाने में जहां मैं वो बन सकी जैसा वो चाहते थे, पर मेरा मानना है कि इन कुछ आख़िरी दिनों में वो धार्मिकता का कार्य तेज़ी से कर रहे हों.

परमेश्वर वो करेंगे जो असंभव दिखे

चाहे इसमें कई दशक लग जाएं, बेहतर है कि आप अपनी राह में ऊपर की ओर जायें बजाय नीचे की ओर जाने के. प्रार्थना करें : ठीक है प्रभु लीजिए मेरी टूटी हुई ज़िंदगी और इकट्ठे करिए ये सब टुकड़े ताकि कुछ भी व्यर्थ ना जाएं. टूटे बने ना रहिए एक फ़ैसला कीजिए अपने अतीत और अपने भविष्य को प्रभु के हाथ सौंपने के लिए.

आप शायद वैा सही महसूस करें जैसा मर्था ने महसूस किया जब उसका भाई लाज़र मर गया,उसने यीशु से कहा, ''हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई कदापि न मरता'' (युहन्ना ११:२१) यीशु शायद इस स्थान पर पहले पहुंच जाते, पर बाईबल में लिखा है कि उन्होंने जान-बूझकर विलम्ब किया जब तक कि लाज़र मर ना गया और कब्र में नहीं रख दिया गया, उन्होंने इंतज़ार किया जब तक कि परिस्थिति इतनी असंभव ना बन गई कि यदि उसमें से कुछ अच्छाई निकलती, तो हर कोई ये जान जाता कि ये परमेश्वर का कही कार्य था (देखिये युहन्ना ११:१-११)

हमें ये समझने की ज़रूरत है कि जब परमेश्वर हमारी परिस्थिति में गतिशील नहीं होते, या इतनी तेज़ी से काम नहीं करते जितना हम चाहते हैं कि वो करें तो शायद वो किसी उद्देश्य के लिए ही रूके है. बस जब हम सोच रहे होते हैं कि इस गड़बड़ी से निकलने का अब कोई रास्ता नहीं, परमेश्वर हमें साबित कर देंगे कि वो कितने शक्तिशाली और महान है हमारीओर से कार्य करने के लिए (देखिए २ इतिहास १६:६) मैं बहुत साल से परमेश्वर की सेवा करने का प्रयास कर रही थी. उन्होंने इतने साल पवित्र आत्मा की शक्ति द्वारा मुझे छूने के लिए इतना इंतज़ार क्यों किया? उन्होंने ये दो साल पहले क्यों नहीं किया? चार साल पहले? मेरे ख़्याल से वो बस इंतज़ार कर रहे थे कि जब तक इसे साबित करने के लिए एक चमत्कार की ज़रूरत ना हो कि वो मेरे जीवन में कार्य कर रहे हैं. ये हक़ीक़त कि परमेश्वर मेरे जीवन को सेवकाई के लिए इस्तेमाल कर सकें स्वयं एक चमत्कार है.

यदि यीशु ने अपने सभी बारह चुने हुए शिष्यों को व्यक्तित्व की परख से गुज़ारा होता, तो नतीजे ये बताते कि उनमें वो गुण नहीं थे जा एक अच्छी सेवकाई की टीम बनाने के लिए ज़रूरी होते है. विशेषज्ञों ने यीशु को सलाह दी होती कि वो अपने आदमीओं की खोज जारी रखें जो उस कार्य के लिए ज़्यादा योग्य होते जो कार्य यीशु उनसे करवाना चाह रहे थे. उनकी रिपोर्ट शायद ये कहती, ''पतरस भावनात्मक रूप से अस्थिर है और उसे ग़ुस्से के दौरे पड़ते हैं, और थोमा शक़ से भरा है'' एक के बाद एक हर शिष्य को इसीतरह अयोग्य साबित कर दिया जाता.

ये दिलचस्प है नोट करना कि इसे पहले कि यीशुने इन बारह आदमीओं को चुना (देखें लूका ६:१२-१६), उन्होंने पूरी रात प्रार्थना की. मैं सोचती हूँ कि उन्होंने कितनी देर प्रार्थना की होगी आपको और मुझे चुनने से पहले वो करने के लिए जो करने के लिए हम बुलाये गए है. यीशु हममें से हर एक के बारे में सबकुछ जानते है. फिर भी उन्होंने हमें चुना क्यों? वो टूटे दिल वालों को चंगाई देना चाहते हैं वो चाहते हैं कि टुकड़े बटोरें और अपनी सर्मथा दिखा सकें. और जितने कमज़ोर लोग वो चुनते है उतनी ही ज़्यादा उनकी शक्ति इनके द्वारा प्रकट होती है.

जब मैंने पहले पहल परमेश्वर की सेवा शुरू की, मैंने हर सप्ताह का आधा आत्मदया में रोते गुज़ारा. इस सच्चाई के बावजूद कि बाईबल का अध्यन सिखाने के लिए मेरा अभिषेक हुआ था; मैं तब भी उन्हें उतना ही प्रचार कर सकती थी जितना इस समय कर रही हूँ, पर परमेश्वर ने मुझे मेरी ही बैठक के कमरे में कर्स साल तक २५ लोगों के साथ फसायें रखा इससे पहले कि वो संसार भर की सेवकाई की ओ जो आज मेरे पा सहै मुझे ले जाते.

मैंने सीखा कि परमेश्वर मुझे सार्वजनिक सेवकाई के लिए कभी मुक्त नहीं करेंगे जबतक कि मैंने उन्हें अपने सबसे व्यक्तिगत जीवन में कार्य ना करने दिया पर उस पूरे समय छोटी छोटी बातों के प्रति वफ़ादार द्वारा अंश अंश करके मैं तेजस्वी रूप में बदलती ना गई. (२ कुरिन्थिओं ३:१८)

परमेश्वर के बारे में सबसे महान बात ये है कि वो बस ये नहीं देखते कि हम कहां हैं. वो ये भी देखते हैं कि हम कहां जा रहे हैं और इस पूरी यात्रा के दौरान वो अंत को ध्यान में रखकर ही हमारा इलाज करते हैं अपने रिश्ते की शुरूआत से ही वे बिना शर्त प्रेम द्वारा हमें प्रेम करते हैं. हम चाहे किसी भी तरीके से उनका प्रेम हासिल करने की कोशिश करें, पर हमें बस यहीं करना है कि उसे बस स्वीकारें.

कई बार हम बहुत प्रयास करते हैं. परमेश्वर की उपस्थिति में दाखिल होने के लिए, पर सच्चाई ये है कि उनसे दूर जाना असंभव है. वे लगातार हमारी खोज में रहते हैं.

भजनसंहिता १३९:७-१० में भजन लेखक ने परमेश्वर के बारे में यूं लिखा है:

''मैं तेरे आत्मा से भागकर किधर जाऊं? वो तेरे सामने से किधर मागूं?

यदि मैं आकाश पर चढ़ूं तो तू वहां है. यदि मैं अपना बिछौना अधो लोक (मृतकों का स्थान) में बिछाऊं

तो वहां भी तू है यदि मैं मारे की किरणों पर चढ़कर समुद्र के पार जा बसूं, तो वहां भी तू अपने हाथ से मेरी अगुवाई करेगा, और

अपने दाहिने हाथ से मुझे पकड़े रहेगा.''

इसी अध्यान के वचन १६ में, भजन लेखक कहता है, कि हमारे जीवन के सभी दिन ''रचे जाने से पहले तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे'' और वचन १७ और १८ में वह कहता है कि परमेश्वर हर समय हमारे बारे में सोचते हैं ''मेरे लिए तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य है. उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है यदि मैं उन्हें गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते.''

अपने स्वयं का मूल्य इससे ना ठहराईये कि अन्य लोगों ने आपसे कैसा व्यवहार किया है अपना मूल्य और योग्यता उससे आंकिये कि आप मसीह में क्या है?

शायद आप कई बार महसूस करें कि प्रभु निकट नहीं हैं, और इसीलिए तो परमेश्वर के वचन को जानना बहुत महत्वपूर्ण है. भविष्यवक्ता यशायाह प्रभु के सामने एक शिकायत लाये ये बताते हुए कि उनके लोग क्या कह रहे हैं.

''यहोवा ने मुझे त्याग दिया है, मेरा प्रभु मुझे भूल गया है'' (और यहोवा ने जवाब दिया) ''क्या ये हो सकता है कि कोर्स माता अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माये हुए लड़के पर दया ना करें? हाँ, वह ता भूल सकती है पर मैं तुझे नहीं भूल सकता.

देख, मैंने तेरा चित्र अपनी हथेलिओं पर खोदकर बनाया है'' यशायाह ४९:१४-१६)

माता पिता ने ये परिकल्पना शुरू नहीं की कि अपने बच्चों के चित्र पास रखे जायें – परमेश्वर अपने बच्चों के चित्र हर जगह ले जाते हैं. जहां भी वो जाते है. अगली बार जब आप अपने स्वयं के मूल्य पर प्रश्न उठायें, तो याद रखें कि परमेश्वरने अपने हाथ की हथेली पर आपका चित्र खोदकर बनाया है.

२६

आपके कष्टो से दुगना

चाहे आप पर कुछ भी बीता हो, यदि आप परमेश्वर के करीब रहें वे आपको इनाम देंगे वचन में इब्रानियों में लिखा है ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना उसे अनहोना है, क्यों कि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए कि वह है; और अपने खोजने वालो को प्रतिफल देता है''

बहुत से लोग लगता है ये मानते हैं कि परमेश्वर सजा देते हैं. पर ज़ाहिर है वो परमेश्वर को क़रीब से नहीं जानते. परमेश्वर का स्वभाव ही प्रेम है (देखिये १ युहन्ना ४:८) परमेश्वर प्रतिफल देते हैं.

परमेश्वर चाहते हैं कि हम भी प्रतिफल की उम्मीद करे; वो चाहते हैं कि हम विश्वास करें और उनके प्रतिफल की प्रतीक्षा करें. उनका वचन कहता है कि जो उसके पास आते हैं उन्हें विश्वास करना चाहिए कि वो क्या है और ये कि वो प्रतिफल देते हैं. हमें इस पर ध्यान नहीं देना कि हम पर क्या बीती है; हमें उस पर अपने विचार केन्द्रित करने हैं कि परमेश्वर हमारे लिए क्या करने वाले हैं जब हम उनके प्रति निष्ठावान रहते हैं, हमारी गवाही उनकी स्तुति से भरी होनी चाहिए जब हम ये घोषणा करते हैं कि ''मुझे एक प्रतिफल मिलने वाला है''

प्रतिफल की संभावना हम में उम्मीद भर देती है यह मुश्किलों से गुज़रने में हमारी मदद करती है. बाईबल में लिखा है कि हालांकि यीशु क्रूस से घृणा करते थे. उन्होने इसे सह लिया उस इनाम का आनंद पाने के लिए जो इसके दूसरी ओर था. नतीजतन हमें लगातार उस ओर देखना है ''और विश्वास के कर्ता और सिद्ध करने वाले यीशू की ओर ताकते रहें; जिसने उस आनंद के लिए जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिंता ना करके क्रूस का दुख सहा''. (इब्रांनियों १२:२)

कोई भी नौकरी पर जाना नहीं चाहेगा अगर उन्हें ये न लगे कि उन्हें वेतन मिलने वाला है जब सहन शीलता के लिए पुरस्कार हो, तो हम में एक प्रेरणा है जो हमें आगे बढ़ते रहने

का बल देती है. हम कहते हैं ''ठीक है मैं इसे सहलूंगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि इससे मुझे कुछ मिलने वाला है''.

ये बहुत महत्वपूर्ण है कि हम महसूस करें कि परमेश्वर एक प्रेम करने वाला पिता है और वह हमारी देखभाल करने वाला है. हम उनके प्रति निष्ठावान हैं क्यों कि वो हम पर मेहरबान हैं. वो हमें इनाम दिलाते हैं और हमारी ज़िदगीओं में विशेष आशीषें लाते हैं, इसलिए नहीं कि उन्हें हमारा कुछ देना है पर इसलिए क्योंकि उनका स्वभाव ही है कि उनके प्रति अपना प्रेम दर्शायें जो पूरी निष्ठा से उनकी खोज करते हैं.

यदि आप परमेश्वर के बारे में और जानने की खोज पूरी निष्ठा से नहीं कर रहे, तो बहुत पन्ने पहले ही आपने इस संदेश को एक ओर रख दिया होता. पर आप अभी भी यहां हैं, अभी भी पढ़ रहे हैं, परमेश्वर के बारे में कुछ सीखने की चाह में जो आप पहले नहीं जानते थे. ये बताता है कि आप उनसे इनाम पाने के लिए कतार में लगे हैं उस रूप में जो पूरी निष्ठा से प्रभु को खोजता है.

परमेश्वर आप पर नज़र रखे हैं

परमेश्वर आपको देख रहे हैं और जो भी आप करते हैं वो हर बात को देखते हैं भजन लेखक ने उनके बारे में कहा है'' तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूरे से ही समझ लेता है'' (भजनसंहिता १३८:२) और बाइबल में लिखा है ''देख यहो वा की दृष्टि सारी पृथ्वी पर इसलिए फिरती रहती है जिनका मन उसकी ओर निष्कपट रहता है, उनकी सहायता में वह अपना सामर्थ्य दिखाये'' (२ इतिहास १६:८) परमेश्वर उत्सुकता से उन अवसरों को तलाशते हैं कि उनके प्रति आपके विश्वास के लिए वो आपको इनाम दे सकें.

यीशु ने कहा ''देख, में शीघ्र आने वाला हूँ; और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है'' (प्रकशित वाक्य २२:१२) इसका मतलब ये है कि लोग कभी भी उन कामों के लिए जो वो धरती पर करते हैं प्रतिफल पायेंगे. अब, एक तरह से ये उत्साहवर्धक हो सकता है, और दूसरी तरह से डरावना भी. हमें ये समझने की ज़रूरत है कि परमेश्वर हमें देख रहे हैं और कोई भी सचमुच किसी भी चीज़ से बच नहीं सकता.

परमेश्वर ना सोते हैं ना ऊघते (देखिये भजन संहिता १२१:४) वो हर बात जानते हैं जो बन्द दरवाज़ों के पीछे होती है इसलिए हमें ऐसे जीना है जैसे हमें सचमुच विश्वास हो कि परमेश्वर हमारी हर गतिविधी को देख रहे हैं. जब हम बैठकर बातचीत करते हैं, हमें याद रखने की ज़रूरत है कि परमेश्वर एक अदृश्य मेहमान है जो हर बात सुन रहे हैं जो हम कहते हैं.

''सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिए अपने धर्म के काम ना करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल ना पाओगे (जो आरक्षित है और आपके लिए इंतज़ार कर रहा है) इसलिए जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही ना बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलीओं में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि वे अपना फल पा चुके (मत्ती ६:१-२).

यदि हम लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए काम करें, फिर जो सार्वजनिक मान्यता जो हमें दूसरों से प्राप्त होती है वही हमारा इनाम है, और परमेश्वर की ओर से हमें कोई और इनाम नहीं मिलेगा. परमेश्वर के इनाम को लोगों के इनाम से ना बदलो. इंतज़ार करो कि परमेश्वर आपको क्या दे सकते हैं, क्यों कि ये उससे बहुत ही ज़्यादा बेहतर होगा जो इनाम लोग आपको दे सकते है.

यीशु बाद में ये कहते है ''परंतु जब तू दान करे, तो जो तेरा दाहिना हाथ करता है उसे तेरा बायां हाथ ना जानने पाये. ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा'' (मत्ती ६:३-४)

दूसरे शब्दों में पवित्र मक़सद के साथ किये भलाई के काम, पर उनके बारे में अपनी बड़ाई मत करो. जो आप गुप्त रूप से कर सकते हैं, उसके लिए परमेश्वर आपको खुलकर इनाम देंगे यीशु ने हमसे प्रार्थना भी एकांत में करने को कहा है ये कह कर ''परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बंद करके अपने पिता से जो गुप्त रूप में है प्राथना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है तुझे प्रतिफल देगा'' (मत्ती ६:६).

आप शायद महसूस करते हों कि आपकी नौकरी में किसी को आपकी क़द्र नहीं. शायद आपने चर्च की नर्सरी में दस साल तक काम किया हो और केवल माता-पिता से जवाब में बस आपको शिक़ायत ही मिलती है कि आप किस तरह उनके बच्चों की देखभाल कर रहीं हैं. या शायद आप पिछले पांच साल से चर्च में सेवक की भूमिका निभा रहे हैं, और किसी ने ये नहीं कहा कि धन्यवाद आपकी वफ़ादारी का या शायद आप सलाहकार हैं, और कोई ये भी नहीं जानता कि आप उनके लिए प्राथना कर रहे हैं. पर आप जो कर रहे हैं उसके लिए आपको प्रेरणा मिली है कि ये है प्रभु के लिए.''

भलाई करते हुए निराश मत होईये क्योंकि जो भी काम आप दूसरों के लिए करते है वे उसे देखते हैं क्यों कि ये उन्ही के लिए आप कर रहे हैं एक भी नेक काम जो आप अच्छे मक़सद से करते हैं वो कभी परमेश्वर की नज़र में अनदेखा नहीं रहता. परमेश्वक्षर उस हर व्यक्ति को देखते हैं जिसकी मदद आप करते हैं, हर व्यक्ति जिसके प्रति आप दया दिखाते हैं; वो जानते हैं हर बार जब आप किसी के प्रति जरासी भी करूणा दिखाते

हैं, हर बार जब आप किसी के प्रति क्षमा भाव दर्शाते हैं; और वो इसके लिए आपको प्रतिफल देते हैं. यदि आप परमेश्वर के प्रतिफल की आशा रखते हैं, तो आप सही उद्देश्य से सभी बातें करनी जारी रखेंगे.

क्या करें जब संकट आये

आज नहीं तो कल हम सब पर जीवन में कोई ना कोई संकट आता ही है. हम सब को परीक्षाएं और मुसीबतें झेलनी पड़ती है. हर व्यक्ति को परीक्षा के समय से गुज़रना पड़ता है और हर तूफ़ान मौसम की पूर्व जानकारी में दिखाई नहीं देता कुछ दिन ऐसे होते हैं जब हम सुबह उठते हैं और सोचते हैं कि आज हर बात बढ़िया रहेगी. इससे पहले कि दिन बीते शायद हमें कई क़िस्म की सभी मुसीबतों की परीक्षाओं से गुज़रना पड़े जिनकी हमें उम्मीद नहीं थी.

मुसीबत जीवन का हिस्सा है, इसलिए हमें बस इसके लिए तैयार रहना होगा. हमें मुसीबत का योजनाबद्ध जवाब देने की ज़रूरत होती है. क्योंकि मुसीबत आने के बाद सुदृढ़ होने में और ज़्यादा मुश्किल होती है. इसलिए बेहतर है कि सुदृढ़ रहकर तैयार रहें.

पहली बात जो हमें करनी चाहिए वो ये कि जब मुसीबत आये हम प्रार्थना करें, (प्रभु भावनात्मक स्थिरता में मेरी मदद करें) अपनी भावनाओं को ख़ुद पर हावी ना होने दें. अगली बात जो आपको करनी है वो है परमेश्वर पर भरोसा. जैसे ही डर उत्पन्न हो प्रार्थना करो.

भावनात्मक रूप से स्थिर रहो, परमेश्वर पर भरोसा रखो और प्राथना करो. फिर जब आप परमेश्वर के उत्तर का इंतज़ार कर रहे हैं बस भलाई करते रहें, अपनी वचनबद्धता निभायें. परमेश्वर की सेवा करनी छोड़ ना दे सिर्फ इसलिए कि आपको कोई समस्या है. संसार में सबसे महान समय वही होता है जब आप आपदाओं और कष्टों में परमेश्वर के प्रति अपनी वचनबद्धता निभाते हैं. जब शैतान ये देखता है कि परीक्षायें और मुसीबतें आपको रोक नहीं सकतीं, कुछ देर तक वो आपको तंग करना छोड़ देगा.

''हम भले काम करने में हियाव ना छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले ना हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे'' (गलतियों ६:८)

इसलिए जब परीक्षाये और कष्ट आयें तो आपको चार बाते करने की ज़रूरत होती है: भावनात्मक स्थिरता रखें, परमेश्वर पर भरोसा रखें, तुरंत प्रार्थना करें भय से बचने के लिए, और भले काम करते रहें. पांचवी बात जो आपको करनी है वो है प्रतिफल की आशा.

हम बहुत कम इन बातों में एक भी कर पाते हैं जब मुसीबत आती है पर शायद ये इसलिए होता है कि हमारे पास कोई योजना नहीं होती. मेरा मानना है कि इन क़दमों पर चलकर हमें शक्तिशाली बने रहने की जरूरत है तब भी जब हम मुसीबत में नहीं हैं.

तैयार रहिए उस अगले समय के लिए जब आप स्वयं को किसी कठिन परिस्थिति में पायें ये कहने का अभ्यास करें, ''मैं परमेश्वर के प्रति निष्ठावान रहूंगा, और परमेश्वर मेरे कष्ट के बदले मुझे दुगना मुआवज़ा देंगे. शैतान, तुमने सोचा तुम मुझे ठेस पहुंचाओंगे, पर मुझे दुगनी आशीष मिलने वाली है, क्यों कि मैं वो हूँ जो निष्ठा से परमेश्वर को खोज रहा है.

आपके लिए परमेश्वर की इच्छा

आपके विषय में परमेश्वर की, इच्छा ये है: आपके लिए दोहरी आशीषें जमा करके रखी गई हैं क्यों कि आप विश्वास करते हैं कि ''वह है और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है'' (इब्रानियों ११:६)

जैसा कि आप देख सकते हैं कि यहां एक शर्त है- और वो है विश्वास करना. जहां कहीं भी सुविधा होती है, वहां ज़िम्मेदारी भी होती है. यदि आप अपनी भूमिका अदा करते है, परमेश्वर अपनी भूमिका अदा करने में कभी नहीं चूकेंगे.

आप पर मूसीबतें आयेंगी, पर मायने ये रखता है कि आप कैसे प्रतिक्रिया करते है. हतोत्साहित ना होईये, निराश, उदास, नकारात्मक या बाउम्मीद ना होईये जब परीक्षायें आये. इसके विपरीत बस उन्हें छाड़ दें और आगे बढ़ जायें. कष्टों के लिए एक प्रेरणा ये भी है. जब आप पर मुसीबत आती है, आप परमेश्वर के आराम का अनुभव करते हैं.

यीशु ने कहा ''धन्य है वे जो शोक करते हैं (वो प्रसन्नता पाते हैं वो प्रसन्नता जो परमेश्वर का पक्ष पाने के अनुभव से आती है और ख़ासकर उनकी अनुपम कृपा प्रकट करती है) क्यों कि वे शांति पायेंगे'' मत्ती ५:४).

यदि हम सचमुच समझ सकें कि परमेश्वर का आराम कितना अद्भुत है तो उनके चमत्कारिक आराम का अनुभव पाने के लिए समस्या कोई मायने नहीं रखती. बाईबल में लिखा है ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो जो दया का पिता (कृपा और करूणा) और सब प्रकार की शांति का परमेश्वर है (वो हर प्रकार की सांत्वना और उत्साह का स्रोत है) वह हमारे सब क्लेशों में शांति देता है (सांत्वना और उत्साह दिलाता है ताकि हम उस शांति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शांति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हो'' (२ कुरिन्थिओं १:३-४).

परमेश्वर हमें शांति प्रदान करते हैं ताकि हम दूसरों को शांति प्रदान कर सकें.

परमेश्वर की दया का आनंद लें

कई बार हमें अपने जीवन के हर दिन ये स्वीकार करने की ज़रूरत होती है ''मुझे परमेश्वर की कृपा प्राप्त है और परमेश्वर मुझे अन्य मनुष्यों से कृपा दिलाते हैं मैं परमेश्वर की कृपा में चलता हूँ'' जब आप पर परमेश्वर की कृपा हो, लोग आपको पसंद करते हैं और आपके लिए काम करना चाहते है और वो ये भी नहीं जानते कि क्यों. इसका कोई स्वाभाविक कारण नहीं, पर वो आपकी ओर आकर्षित होते हैं और आपके साथ भले बने रहना चाहते है, वो आपके लिए बस आशीष बनना चाहते है.

परमेश्वर की कृपा अद्भुत है. लोग जिनका शोषण हुआ है उन्हें ये सीखने की ज़रूरत है उन्हें बस अपने अपराध झाड़ कर फैंक देने हैं और परमेश्वर की इस मुफ़्त कृपा का आनंद उठाना है. वो जो स्वयं को विनम्र करते हैं अपने जीवन में ज़्यादा से ज़्यादा कृपा पाते हैं.

पतरस एक ऐसा व्यक्ति था जो आसानी से नाराज़ हो जाता था पर उसने विनम्र बनना सीखा और अपने जीवन में परमेश्वर की कृपा का आनंद लिया.

परमेश्वर की आशीषें आपकी कल्पना से कहीं ज़्यादा हैं

यदि मैंने अपनी चिंताये परमेश्वर पर छोड़नी ना सीखी होती, और उन्हें ख़ुद को सुदृढ़ और स्थिर बनाने ना दिया होता, तो मैं उस दोहरी आशीष का आनंद ना ले पाती जिसके द्वारा अब मैं सेवकाई कर रही हूँ. जब परमेश्वर ने हमें टेलीविज़न पर जाने का बुलावा दिया तब एक सुबह परमेश्वर का आत्मा डेव के पास आया जब वह अपने बाल बना रहा था. उसने डेव से कहा ''सारा समय मैंने तुम्हें और जॉयस को टेलीविज़न पर जाने के लिए तैयार किया है''.

हम नहीं जानते थे कि हम उन सभी सालों में एक तैयारी के अंतराल से गुज़र रहे थे जब हम पूरी निष्ठा से कहीं भी सफ़र करते ५० से १०० लोगों तक की सभाये करने के लिए; मैक डॉनल्ड की पार्किंग की जगहों पर सोते जब हमारे पास हॉटेल में रहने को पैसे ना होते, क्यों कि हम प्रचार के लिए इच्छुक थे चाहे थोड़ा मिलता था कुछ भी नहीं आलोचना और कटाक्ष सहते अपने स्थानीय गिरजे की अस्वीकृति सहते. ये सब तैयारी थी एक महान काम की.

हम निष्ठावान रहना जानते थे पर हमने कभी सपने में भी ना सोचा था कि परमेश्वर का प्रतिफल इतना बड़ा होगा. अब हम कई हजार लोगों में वचन का प्रचार करते हैं. उन दर्शकों

में जो परमेश्वर को और क़रीब से जानने को उत्सुक है. हमारा ''लाईफ़ इन ५ वर्ड'' प्रसारण रोज़ाना ४०० टेलीविज़न स्टेशनों पर आता है, जिसकी दर्शक संख्या २५० करोड़ है जो लगभग संसार का दो तिहाई भाग है. १६८८ से, हमने ५० से भी ज़्यादा किताबे प्रकाशित की हैं, जिनमें से ३६ संसार की ४५ भाषाओं में अनुवादित हुई हैं, और ३० लाख प्रतियां वितरित की गई है. मैं केवल परमेश्वर की प्रशंसा करती हूँ: परमेश्वर के मन में हमारे लिए प्रतिफल था और हम पर उनकी आशीष हर साल लगातार बढ़ती रही है.

मुझे नहीं मालूम था कि परमेश्वर के मन में ये है जब वे मुझे बता रहे थे ''सब्र रखो जॉयस मैं तुम्हें तुम्हारे कष्टों के बदले दोगुना मुआवज़ा दूंगा. शैतान जिसके द्वारा तुम्हारा बुरा चाहता है, वही मैं तुम्हारी भलाई में बदल दूंगा ताकि तुम इस स्थिति हो जहां बहुत से लोगों की मदद कर सको.''

हर एक के लिए परमेश्वर का यही संदेश है. हमें तैयारी के समय को सहना होगा पर हम निश्चित हो जाएं और जाने ''कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बाते मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उसकी उच्छा के अनुसार बुलाये हुए हैं'' (रोमियो ८:२८).

इसलिए जब अगली बार आपको मुसीबत का सामना करना पड़े, उसे झाड़ दें. यदि आप परमेश्वर से प्रेम करते है और अपने जीवन के लिए अपनी पूरी क्षमता से उनकी इच्छा अनुसार चल रहे हैं तब आप निश्चिंत हो सकते हैं कि हर बात आपके लिए भलाई हो उत्पन्न करेगी. हम एक ऐसे परमेश्वर की सेवा में हैं जो बुरी बातों को लेकर उन्हें हमारी भलाई की ओर मोड़ देते है.

परमेश्वर का महान आदान प्रदान

परमेश्वर आदान प्रदान के व्यवसाय में हैं; वो हमारा सभी कबाड़ ले लेते हैं जो हम नहीं चाहते और इसके बदले में हमें वो सब अच्छाईयां देते हैं जो उन्होंने हमारे लिए संभाल कर रखीं हैं.

उदाहरण के लिए, जब मैंने डेव से विवाह किया, मेरे पास कोई पैसा नहीं था. मेरे पास कार नहीं थी पर डेव के पास एक कार थी. जब हमारा विवाह हुआ, अचानक मेरे पास एक कार और पैसा आ गया, क्यों कि जब मेरा और डेव का विवाह हुआ तो हर चीज़ जो उसकी थी अचानक मेरी भी हो गई.

इसी तरह जब हम यीशु के प्रति वचनबद्ध होते हैं. वह दूल्हा हैं और हम उसकी दुल्हन.

हम उनके वादे के वारिस बस इस लिए ही नहीं बन जाते कि हम उनसे मिल रहे हैं, पर स्वयं को पूरी तरह उनके आगे समर्पित कर ना पड़ता है जैसे एक विवाह में होता है बहुत से लोग बस यीशु से बस ''मुलाक़ात ही करना चाहते हैं, बस इस उम्मीद में कि अभी भी उन्हें दोहरी आशीष मिलेगी.

यीशु के नाम में जो शक्ति है उसका आनंद केवल वही उठा सकते हैं. जो उसके हैं मुझे डेव का नाम तब तक नहीं मिला जब तक मैंने उससे विवाह नहीं कर लिया. जब आप प्रभु के पास आते हैं और अपने जीवन की हर बात उन्हें अर्पित कर देते हैं, पूरी तरह इसकी पीड़ा और अन्यायों सहित. परमेश्वर वादा करते हैं कि इसमें जो भी खराबी है उससे निपटेंगे और उसके बदले में वो देंगे जो धार्मिकता है यीशु ने कहा ''यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो तो मेरी इच्छा ओ को मानोगें (युहन्ना १४:१५) जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञा मानते वो बदले में वो महान प्रतिफल पायेंगे जिसका वर्णन यशायाह ६१:७ में है: ''तुम्हारी नाम धराई की संती दूना भाग मिलेगा, अनादर की संती तुम अपने भागके कारण जै जैकार करोगे; तुम अपने देश में दूने भाग के अधिकारी होगे; और सदा आनांदित बने रहोगे.

२७

इसे झाड़ फेंको

हमेशा नये-नये अवसर आयेंगे जब आप इस सिद्धांत को लागू कर पायेंगे कि अतीत को भूल जाओ और परमेश्वर के नाम के लिए आगे बढ़ते रहो. जिनके बारे में हमने इस किताब में चर्चा की है. कोई जो आपके लिए मायने रखता है वह अचानक कुछ ऐसा करेगा जो आपका ठेस पहुंचाये. जब ऐसा होता है तब आपको एक बार फिर चुनता होगा कि परमेश्वर का प्रेम स्वीकारें, जिसने ठेस पहुंचाई उसे क्षमा करें, उसके लिए प्रार्थना करें, उसे आशीष दें, ये विश्वास करके परमेश्वर इस परिस्थिति को आपकी भलाई की ओर मोड़ देंगे, और फिर उनके प्रति फल के इनाम का इंतज़ार करें.

अपने विश्वास को बढ़ाने के लिए कि उस ऊंचे इनाम की ओर आगे बढ़ें जिससे भावनात्मक पीड़ा से मुक्ति मिलती है, परमेश्वर ने बाईबल में विजय की बहुत-सी कहानियों को शामिल किया है ताकि आपको उन लोगों के बारे में याद दिलाया जा सकें जिन्होंने अपने प्रति अपराधों को छोड़कर फ़ैंक देना सीखा है और प्रभु के प्रति निष्ठावान रहना दरअस्ल, बाईबल ऐसी कहानियां से भरी पड़ी है जिन्होंने निष्ठावान रहकर दोहरी आशीष पाई. युसुफ़ कारावास से महल तक पहुंचा दानिय्येल शेरों की मांद से पदोन्नति के शिखर तक पहुंचा.

रूत ने शुरूआत की खेत में बचा-खुचा उठाकर खाने से, क्योंकि वह अपनी सास के प्रति वफ़ादार थी. जो उसके बना अकेली रह जाती. उनके पति मर गये थे. और रूत अपने ही लोगों की सुरक्षा में लौट सकती थी. उसकी सांस ने उससे कहा, ''बस, वापिस चली जा'' पर उसने

कहा, ''नहीं, मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगी, और तुम्हारे लोग मेरे लोग होंगे और तुम्हारा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा (देखिये रूत १:१६) फिर परमेश्वरने उसे कृपा प्रदान की और रूत का अंत में विवाह हुआ बोअज़ से, जो देश का सबसे अमीर आदमी था. ऐस्तर ने शुरूआत की एक डरी हुई जवान सेविका के रूप में जो सचमुच खुश नहीं थी उस पथ से जो उसे प्रदान किया गया. पर वो परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी थी और परमेश्वर के निर्देश पाल रही थी. और वो एक अनाथ से एक रानी बन गई, जिसने पूरे देश की एक क़ौम को बचाया.

और फिर बेशक़ अय्यूब की कहानी है अय्यूब के बारे में सबसे कमाल की बात ये है कि परमेश्वर ने उसे सभी पीड़ादायी अनुभवों का दुख भोगने दिया क्योंकि परमेश्वर जानते थे कि वो उनसे सफलतापूर्वक निकल आयेगा वे जानते थे कि अय्यूब एक ऐसा व्यक्ति है जिसपर भरोसा किया जा सकता है. यदि आपने कभी अय्यूब की पूरी किताब नहीं पढ़ी, मैं आपको उत्साहित करती हूँ कि इसे पढ़ें.

शैतान ने सोचा कि अय्यूब सिर्फ़ इसलिए, परमेश्वर के प्रति निष्ठावान है क्योंकि परमेश्वर उसे सुरक्षा दे रहे हैं, इसलिए परमेश्वर ने शैतान से कहा ''फिर ठीक है, हम थोड़ी सी सुरक्षा हटा देते हैं, और तुम देखोगे कि वो फिर मेरे प्रति निष्ठावान रहेगा'' (देखिये अय्यूब १:१२) इसलिए परमेश्वर ने शैतान को हमला करने दिया और वो हर अच्छी चीज़ तबाह करने दी जो अय्यूब की थी. उसने उसके जीवन को छोड़कर बाकी सबकुछ उससे छीन लिया, पर अभी भी अय्यूब ने प्रभु के प्रति अपनी आस्था से इंकार नहीं किया.

अय्यूब की वफ़ादारी का नतीजा

''जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुख दूर किया, और जितना अय्यूब का पहले था, उसका दुगना यहोवा ने उसे दे दिया.'' (अय्यूब ४२:१०) ये ग़ौर करना बहुत ज़रूरी है कि परमेश्वर ने अय्यूब की क़ैद हटाकर उसकी सारी सम्पत्ति उसे वापिस दे दी जब उसने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की. ये वहीं मित्र थे जिन्होंने उसे बुरी तरह निराश किया था. जिन्होंने उसका साथ नहीं दिया था और जिन्होंने उसपर दोष लगाया और आलोचना की. पर प्रभु ने अय्यूब को पहले से भी दुगना दिया, क्योंकि वो निष्ठावान था और धार्मिकता निभाता रहा लगातार जबकि ऐसा करना बहुत पीड़ादायी था. परमेश्वरने अय्यूब को उससे दुगना जो उसके पास पहले था मुसीबत शुरू होने से पहले. परमेश्वरने उसके सभी कष्टों के लिए जिनसे वो गुज़रा था उसने दो गुना मुआवज़ा दिया. अय्यूब ४२ के वचन १२ और १३ में लिखा है, ''यहोवा ने अय्यूब के पिचले दिनों में उसको अगले दिनों से

अधिक आशीष दी; और उसके १४ हज़ार भेड़ बकरियां, ६ हज़ार ऊँट, हज़ार जोड़ी बैल और हज़ार गदहियां हो गईं और उसके सात बेटे और तीन बेटियां भी उत्पन्न हो गई.''

अब शायद आपको ज़रूरत ना हो भेड़ों या ऊँटो, बैलों या गदहों या बच्चों की भी पर परमेश्वर जानते हैं कि आपकी निष्ठा के लि, उन्हें आपको किस प्रकार की दोहरी आशीष दे दी. पर आगे बढ़ते रहने के लिए और अपनी आशीष की दोहरी फसल काटने के लिए आपको सीखना होगा कि जो भी मुसीबतें आपकी राह में हैं उन्हें झाड़ फैंके.

मेरी एक बहुत ही मनपसंद कहानी एक किसान के गधे के बारे में है जा एक सूखे कूएं मं गिर गया. ये जानवर घण्टो दयनी अवस्था में चिल्लाता रहा. जब किसान यहीं अंदाज़ा लगाने की कोशिश कर रहा था कि अपने बैचारे गधे के लिए क्या करें. अंत में उसने ये नतीजा निकाला कि कुआं बहुत गहरां है, और वैसे भी इसे भर देने की ज़रूरत थी; इसके अलावा गधा भी बहुत बूढ़ा था. और उसे गढ्ढे से बाहर निकालने में बहुत ही मुसीबत होगी, किसान ने फ़ैसला किया कि जानवर को बचाने का कोई फ़ायदा नहीं. इसलिए उसने अपने पड़ोसियों से कहां कि कूआं भरने और गधे को दफ़न करने में उसकी मदद करें.

उन सबने फावड़े संभालने और कूएं में मिट्टी डालने. गधा तुरंत समझ गया कि क्या हो रहा है और उसने भयानक रोना शुरू कर दिया. रोना तो स्वाभाविक प्रक्रिया ही होती अगर कोई हमारे साथ ऐसा बुरा बर्ताव कर रहा होता, इसलिए ये गधा उसी तरह से प्रतिक्रिया कर रहा था जो पहली प्रतिक्रिया हमारीहोती, पर फिर वो बहुत ख़ामोश हो गया. बहुत सारी मिट्टी फाऊड़ों से डालने के बाद किसान ने अंदर कूएं में देखा, और जो उसने देखा उसे देखकर चकित रह गया, हर फाऊड़े की मिट्टी के साथ जो गधे की पीठ पर पड़ती, गधा उसे झाड़कर फैक देता और उसके ऊपर खड़ा हो जाता. किसान और उसके पड़ोसी इस जानवर के ऊपर लगातार मिट्टी डालते रहे और वो लगातार उसे झाड़ता रहा और एक कदम और ऊपर उठता रहा. बहुत जल्द ही गधेने आखिरी फावड़े की मिट्टी झाड़ी एक क़दम ऊपर उठाया और कूएं के बाहर निकल आया.

हम इस कहानी से बहुत कुछ सीख सकते है. जब मुसीबत आती है हम कुछ देर कराहना छोड़कर इतना स्थिर खड़े हों और सुने तो परमेश्वर हमें बताएंगे कि हमें संकट के लिए क्या करना है.

परमेश्वर की दया और कृपा के कारण मैं भी अपने जीवन में बहुत-सी बातें झाड़ सकीं. बहुत-सी चोट खाई भावना ढेर सारा दुरव्यवहार ढेर सारा शोषण, बहुत सारा अन्याय, ज़्यादती,

कठोर बातें. पर मैं परमेश्वर का धन्यवाद करती हूँ कि मैंने अंत में सीख लिया उन्हें झाड़ते झाड़ते कि अपने इनाम पर विश्वास रखूं.

परमेश्वर के इनाम की आशा रखने पर परमेश्वर आपाके बिना सुरक्षा के नहीं छोड़ देंगे. वे आपके लिए कुछ करेंगे. अगली बार जब आप कुछ ऐसे लोगों से मिलें जिन्हें आप जानते हैं कि वो क्रोधित हो जाते हैं उनसे बस कहें ''झाड़ फेंको जब आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलत है जो उदास हो ता उनसे कहें इसे झाड़ फेंके'' अगर आप किसी ऐसे व्यक्तियों को जानते है जो मूँह फूलाये घूम रहेहो क्योंकि किसीने उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाई. कहें ''इसे झाड़ फेंको'' मैं आपको अनुमति देती हूँ कि ये संदेश उस हर व्यक्ति को दें जिसे इसे सुनने की ज़रूरत है.

मुसीबत आयेगी

शायद आप सोचें कि आप मुसीबत का सामना करने से पूरीतरह सुरक्षित हैं क्योंकि आप परमेश्वर की सेवा कर रहे है, पर ये बात सही नहीं है. सच्चाई तो ये है कि यदि परमेश्वर आपको दूसरों की सेवकाई के लिए भेजते हैं तो यक़ीनन आपको मुसीबत आयेगी ही. पर उन तीन इब्रानी बच्चों की तरह जिन्हें धदकती भट्ठी में डाल दिया गया. आप भी उम्मीद कर सकेत हैं कि परीक्षा की आग से आप बिना जलने की गंध लिए शद्रक, मेशक, अबेदनगो की तरह सही सलामत बाहर निकल आयेंगे. (देखिये दानिय्येल ३:२३-२७)

यीशु ने अपने शिष्टों को दुष्ट आत्माओं के ऊपर अधिकार दिया जो उनपर मुसीबतें लाने के यत्न करती. उन्होंने अपने शिष्यों को ये भी बताया कि क्या करें कि जिन लागों को वो शिक्षश दे रहे हैं वे उन्हें अस्वीकार कर दें: ''और वह बारहों को अपने पास बुलाकर उन्हें दो दो कर भेजने लगा; और उन्हें दुष्ट आत्माओं पर अधिकार दिया. और उसने उन्हें आमा दी, कि मार्ग के लिए लाठी छोड़कर कुछ ना लो; ना तो रोटी, ना झोली न पटुके में पैसे. परंतु जूतियां पहनों और दो दो कुर्ते ना पहनों और उसने उनसे कहा; यदि कहीं तुम किसी घर में उतरों तो जब तक वहां से विदा ना हो तब तक उसीमें ठहरे रहो.

जिस स्थान के लोग तुम्हें ग्रहण ना करें, और तुम्हारी ना सुनें, वहां से चलते ही अपने तलवों की धूल झाड़ डालों कि उनपर गवाही हो. (मरकुस ६:७-१०)

सचमुच मैं तुमसे कहता हूँ किसदौम और गमौरा के लिए भी न्याय के दिन ये ज़्यादा सहनीय होगा बजाय उस शहरके.

यीशु हम सबको दिखा रहे थे कि वो सब कुछ उपलब्ध करायेंगे जो उनकी सेवा के लिए ज़रूरी है. उनके शिष्यों को अतिरिक्त कपड़ों और पैसे की ज़रूरत नहीं. उन्हें उस मुसीबत पर अधिकार दिया गया ता. जो उनके विरूद्ध आ सकती थी, और यदि कोई उन्हें अस्वीकार करता, तो उन्हें बस उसे ''झाड़ फेंकना था'' इसलिए वो गए और सब जगह पछतावें और उद्धार के संदेश का प्रचार किया.

यदि आपका परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल होना है, या यदि आप परमेश्वर के साथ चलने वाले हैं, आपको कुछ मात्रा में अस्वीकृति का अनुभव होगा. और बहुत ज़्यादा संभव है कि ये अस्वीकृति उन लोगों की ओर से आयेगी जो आपके लिए बहुत मायने रखते हैं. येआपके परिवारके सदस्यों या करीबी दोस्तों द्वारा भी हो सकती है. यदि परमेश्वर आपको स्पर्श करते है, और आप उनके साथ गहराई में जाना चाहते हैं बजाय अपने चर्च के मित्रों के साथ, तो शायद वो भी आपको नकार दें. लोग नहीं चाहते कि दूसरे ऐसी जगह जायें जहां वे जाने को राज़ी नहीं. यदि वे शारीरिक रूचिओं के पीछे हैं, और आप आत्मा में चलना चाहते हैं, तो शायद वो खुलकर आपसे घृणा करें आपके इस चुनाव के लिए.

यीशु ने अपने दिन के बारे में लोगों से कहा था, जिन्होंने उसका विरोध किया था और प्रतिकार किया था. ''उन्होंने मुझसे घृणा की बिना किसी कारण (युहन्ना १५:२५) एक दिन अचानक मुझे महसूस हुआ कि ये कितना अफ़सोसनाक था. यीशु ने लोगों का भलाकरना चाहा, पर उनसे प्रेम और उनकी प्रशंसा करने की बजाय उनसे घृणा की.

युसफ़ का एक सपना था और जिसके लिए उसके भाईओं ने उसस घृणा की (देखिये उत्पत्ति ३७:५) स्तीफ़ान कृपा औरशक्ति से परिपूर्ण था और उसने लोगों में महान आश्चर्य कर्म और चमत्कार किये पर धार्मिक अगुवे उसकी बुद्धिमता और उसके विवेक के लिए उससे घृणा करते थे और आत्मा की प्रेरणा जिसके द्वारा वो बात करता था, इसलिए उन्होंने उसे गिरफ़्तार किया और अंतमें पथराव किया (प्रेरितों के काम ६:८-१२, ७:५८)

हैरानी की बात है कितना आसान होता है दूसरों से घृणा और जलन और ईर्ष्या पाना यदि आप भला बनने की कोशिश करे तो इसके लिए भी कोई आपसे घृणा करेगा. परंतु यदि आप उसी ग़ुस्से से प्रतिक्रिया करें जो उन्होंने आपकी ओर दर्शायी थी, तो आप स्वयं को आशीष से वंचित रख रहे हैं. लोगों को अपने आपको नीचे नहीं गिराने दें उनके स्तर तक उसे झाड़ फेंके और ऊपर खड़े हो जाएं.

अस्वीकृति को झाड़ फैंकना कितना मुश्किल होता है, ये दुख पहुंचाता है. पर भावनाओं के अनुसार जीने से और भी ज़्यादा दुख होता है. अस्वीकृति और निराशा की धूल को झाड़ देना सीखें.

हर बार जब मैं किसी की मदद करने की कोशिश करती, तो मैंने सचमुच यहीं समझा कि मैं धार्मिकता निभा रही हूँ. मैं हमेशा इतनी व्यस्त रहती हूँ, मुझे सचमुच कुछ करने के लिए इधर-उधर देखने की ज़रूरत नहीं पड़ती, इसलिए मुझे लगा कि इस व्यक्ति की मदद के प्रयास में मैं सचमुच समय का बलिदान कर रही हूँ पर चाहे मैंने जो कुछ भी किया हो ये व्यक्ति सोचता कि काफ़ी नहीं है और इस विषय में मैं परेशान हो रही थी. मुझे लगा कि परमेश्वर चाहते हैं कि मैं इस व्यक्ति की मदद करूं जो मेरा मसीही दायित्व था. पर ऐसा लगता था कि मेरे सभी उत्तम प्रयासों के बावजूद मेरा कुछ भी किया सफल नही होता या सझा जाता या प्रशंसा प्राप्त करता अंत में मुझे एक प्रगति मिली जब मैंने महसूस किया कि मेरी ज़िम्मेदारी थी इस व्यक्ति की मदद करने के प्रति, पर मैं उस व्यक्ति के व्यक्तिगत आनंद के लिए ज़िम्मेवार नहीं थी.

कई बार हम चाहते हैं कि सब लोग जो सब हम कर रहे हैं उससे ख़ुश हा जाएं पर हमें इस सोच पर विजय पानी है कि हर कोई उससे ख़ुश हो जो हर बात हम करते है हमें वो करना ही है हमारे ख़्याल से धार्मिकता है, जो हम सोचते हैं कि परमेश्वर ऐसा करने के लिए हमारी अगुवाई कर रहे है. और हमें ये समझ लेना है कि हर व्यक्ति अपने-अपने आनंद के लिए ज़िम्मेदार है.

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि जाओ और सुसमाचार का प्रचार करो उन्होंने वहीं किया जो उनसे कहां गया था. पर उन्हें ये भी बताया कि यदि लोग उन्हें और उनके संदेश को अस्वीकार कर दें तो ये दूसरे लोगों के साथ उनकी उदासीनता कहीं उनके अपने बुलावे रूकावट ना बन जाएं.

अपनी सेवकाई ना त्यागें या घण्टों बैठकर दयनीय रोना मत रोयें क्योंकि हर कोई आपको स्वीकार नहीं करता या प्रशंसा नहीं करता. इसे झाड़ दें और अगले शहर की ओर आगे बढ़े, अगले व्यक्ति की ओ जिसे आपकी ये गवाही सुनने की ज़रूरत है कि परमेश्वर ने आपके जीवन में क्या किया?

यदि अस्वीकृति आपको राह में ही रोक लेती है, फिर अस्वीकृति की आत्मा विजयी होती है. आपको धार्मिकता करनी नहीं छोड़नी क्योंकि कोई ये पसंद नहीं करता जो आप कर रहे हैं.

सच्चाई तो ये है, मैं यहां तक कहना चाहूंगी कि हर बार जब परमेश्वर आपको उन्नति देने को तैयार है और आपको अगले स्तर तक लाते हैं तो अब जिस स्थान पर आप है वहां आपको अस्वीकृति का हमला महसूस होगा. शैतान इस अस्वीकृति को जहां आप खड़े हैं वहां इस्तेमाल करेगा या आपको वहां से नीचे गिराने की कोशिश करेगा.

इसीलिए बहुत से लोग जब पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते हैं तो अपने ही परिवार के सदस्यों द्वारा नकार दिये जाते हैं. वो घर जोश में भरे पहुंचते है सबको ये बताने के लिए कि उन्होंने अपने जीवन प्रभु के लिए जीना शुरू कर दिया है कि अचानक उन्हें लगता है कि वो अपने परिवार में अजनबी हो गए. शैतान उन लोगों को जो उनके लिए बहुत मायने रखते हैं इस्तेमाल करता है ताकि वो इन लोगों को नकार दें और जिससे वो अपनी पुरानी राहों की ओर वापस मुड़ जायें.

एक स्तर उपर उठिये

कूएं वाले गदेह की तरह, आपको जरूरत है कि शोषण और अस्वीकृति से भरा पूरा फाड़ा झाड़ फेके और इसे माह करे एक स्टर उपर उठने के लिये जब तक कि आप आनाद नहीं हो जाते उस जीवन का अनंद उठाने के लिये जो परमेश्वर ने आपके लिये रखा है. आप पहले ही परमेश्वर के साथ एक नये स्टर तक आ पहुंचे हैं. आपका विश्वास आब ज़्यादा तैयार है अगली बार के लिये जब पर शोषण जादा जाये.

इस दिन से आप परमेश्वर के स्थाय और भी मज़बूत स्तर पर चल सकेंगे क्योंकि उनके प्रति निष्ठा में दृढ़ निश्चय है, चाहे कुछ भी हो. आप शत्रु के लिये और भी खतरनाक हो जाते हैं जब आपमें पवित्र आत्मा का सामर्थ बसने लगता है.

क्योंकि आप यीशु पर विश्वास करते है और उनका पवित्र आत्मा पाते हैं. आप प्रार्थना कर सकते हैं और परमेश्वर का सर्वोत्तम पा सकते हैं. अपने जीवन में. आप परमेश्वर का इनाम पाने की और बढ़ने के लिये आज़ाद हैं. और आपकी गवाही शैतान को बहुत नुकसान पहुंचायेगी. इसके परिणाम स्वरूप, वह ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को प्रभावित करेगा कि इसके विषय में आपसे नाराज़ हो और आपकी अलोचना और विरोध करे.

पर याद रखिये उस गदहे को स्वयं को विनम्र करें और झाड़ डालें. जो आपके विरूद्ध इस्तेमाल कर रहा है उसका इस्तेमाल करें एक कदम और परमेश्वर के निकट जाने के लिये उस स्थान पर जहां वह आपको पहुंचाना चाहते हैं.

उद्धाहरण के लिये डेव और मुझसे कहा गया कि हम अपने घरेलु चर्च के झेड़ दें जब परमेश्वर ने हमारे जीवनो में सक्रिय होना शुरू किया. पर फिर वह हमें एक और किलिसिया मे ले गये जहां पास्टर ने हमें स्वीकार किया और हमें प्रार्थनाओं और आशीषों से ढांक दिया.

बाईबल में लिखा है कि हम शरीर और लहू के विरूद्ध युद्ध नहीं कर रहे. पर ऊंचे स्थानों के सिद्धांतों और शक्तियों और बुराईयों के विरूद्ध (देखिये इफ्रिसियों ६:२२). शैतान लगातार हमारे विरूद्ध लोगों को इस्तेमाल करता रहेगा. कि हमें आगे जाने से रोक सके. यदि सम्बव हो सके तो वह ऐसे लोगों को इस्तेमाल करेगा, जिन्हें हम जानतें है और प्रेम करते हैं ताकि उनकी अस्वीकृति और इंकार से हुये धावे और भी गहरे और पीड़ादायी हों.

कई बार हम लोगों के इंकार से इतना डरते हैं कि हम परमेश्वर के साथ अगले स्तर पर कदम नहीं उठाते क्योंकि पहले ही जानते हैं कि किसी को ये पसंद नहीं आयेगा. बहुत आश्यर्य है कि कितनी बार हम लोगों के आगे जुक जाते है जबकि हमें परमेश्वर के आगे झुनका चाहिये था.

यीशु ने कहा ''जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है और जो तुम्हे तुच्छ जानता है वह मुझे तुच्छ जानता है; और जो मुझे तुच्छ जानता है वह मेरे भेजने वाले को तुच्छ जानता है (लूका २०:२६) वह हमें नहा रहे थे कि अस्वीकृति को निखी न बनायें. यदि लोग हमें यीशु मसाहे केयी चहने के लिये अस्वीकार करते हैं. फिर वे यीशु और पिता को अस्वीकार कर रहे हैं.

अबये समझ ले कि इससे पहले कि आपने प्रभु को अपना हृदय दिया शैतान ने आपके विषय में परमेश्वर की योजना को जान लिया था और उसने ऐसी हर बात की कि आपको इसे पाने से रोक सके. यह संभव है कि आपके जीवन के लिये जितना महान बुलावा होगा उतना ही ज़्यादा आपके विरूद्ध ज्यादतियां बड़ जायेंगी यदि आप अत्मिक संसार में परमेश्वर के वचन के विरूद्ध युद्ध पर गौर करें तो आप समझ जायेंगे कि शैतान को सारी मुसीबतें भेजता है जो आप पर आती हैं क्योंकि वह जानता था कि परमेश्वर आपकी तलाश में हैं आपको आशीष देने के लिये.

पर यहोवा सेनाओं का प्रभु है और स्वर्गदूतों का प्रभु है. वह आपके लिये लड़ रहे हैं और ये आपको और भी बड़ा विजेता बना देता हैं. आपके लिये किया युद्ध जीत लिया गया है. और आपको अपनी मुसीबतों के बदले दुगनी आशीष का वादा किया गया है.

प्रभु के आनंद में भरे रहिये

प्रेरित पौलुस ने कहा, ''अब क्या मैं मनुष्यों को मानता हुं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहतां हुं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता''. (गलतियों १:१०)

हमे शास्त्रवचन के इस अगले अंश से देख सकते हैं कि पौलुस ने नकार को झाड़ फेकना सीखा और आनंद में आगे बढ़ना सीखा.

> ''तब प्रभु का वचन (अनंत उद्धार मसीह द्वारा) उस सारे देश में फैलने लगा.
>
> परन्तु यहूदियों ने भक्त और कुलीन स्त्रियों को और नगर के बड़े लोगों को उकसाया और पौलुस और बरनबास पर उपद्रव करवाकर उन्हे अपने सिकानों से निकाल दिया.
>
> तब वे उनके सामने अपने पावों की धूल झाड़कर इकुनियुम को गये. और चेले आनंद से और पवित्र आत्मा से परिवूर्ण होते रहे.'' (पेरितों के काम १३:४८:५२)

अपने प्राण में आनंद और पवित्र आत्मा को भरे रहो; अपना मन, इच्छा और भावनाओं को आनंद पर केंद्रित करों जो आपको परमेश्वर के आपमे वास करन पर उपलब्ध होता है. आप ये आनंद खो देंगे यदि आपने इस पर ध्यान लगाया कि हर कोई आपके बारे में क्या सोचता हैं. अपनी आत्य-संवेदना को झाड़ फेको और ''आत्मा से परिपूर्ण होते जाहो'' (इफिसियों ५:१८) आनंद की परिपूर्णाता से भरे रहे चाहे आपके विरूद्ध कोई भी मुसीबत क्यो न आये. आप अपना सर्वोत्तमकीजिये जो आपका विश्वास हो कि परमेश्वर आपसे चाहते है कि किस तरह हर परिस्थिति से आप निपटें.

यदि लोगों में पर्याप्त प्रेम नहीं आपको थोड़ी सी भी दया दिखा सकें सिर्फ़ इसलिये कि आप सब बातें वैसी नहीं करते जैसा वे चाहते हैं कि आप करें, फिर ये उनके और परमेश्वर के बीच का मामला है. अपना जीवन लोकप्रिय होने के लिये न जीये, इसे परमेश्वर की इच्छा अनुसार जीयें.

परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिये युसुफ़ को बहुत से दुख और निराशायें झाड़ देनी पड़ी. जैसे भाईयों का विश्वासघात, पोतिपर की पत्नी का झूट रसोईयों द्वारा भुला दिया गया वादा जिसकी उसने सहायता की थी. पर इसे आगे बढ़ते रहने का ये नतीजा हुआ कि युसुफ़

जहां भी गया वहां का अधिकारी बना दिया गया. परमेश्वर ने उसे उसके कष्टों के बदले दो गुना मुआवज़ा दिया और उसे बहुत महान आशीष मिली. (देखें निर्गमन: १ उत्पति ३७)

इसी तरह लोगे दानिय्येल को भी पसंद नहीं करते थे क्योंकि वह परमेश्वरीय मनुष्ट था जो हमेशा अस्वीकृति को झाड़ता रहा. उसे इतना नापसंद किया जाता था कि उसे भूरके शेरों की मांद में फेंक दिया गया पर परमेश्वर ने शेरों के मुंह बंद कर दिये. जब राजा ने दोखा कि परमेश्वर ने दानिय्येल के लिये क्या किया, उसने घोषणा की ''मैं आज्ञा देता हूं, कि जहां जहां मेरे राज्य का अधिकार है, वहां के लोग दानिय्येल के परमेश्वर के सम्मुख कांपते और थरथराते रहें, क्योंकि जीवता और युगनयुग तक रहने वाला परमेश्वर वही है; उसका राज्य अविनाशी और उसकी प्रभुता सदा स्थिर रहेगी (संसार के अंत तक)'' (दानिय्येल ६:२६)

दानिय्येल के परमेश्वर के साथ वफ़ादारी से चतने ने पूरे देश को प्रेरित किया कि वह विश्वास करें कि परमेश्वर जिससे दानिय्येल को सिधे से बचाया है वही बचानेवाला और छुड़ानेवाला है; और स्वर्ग में और पृथ्वी पर चिन्हों और चमत्कारों का प्रगट करने वाला हैं. (दानिय्येल ६:२७)

पौलुस के थिस्सलुनीकियो को पर में जो शुरू होता है २ थिस्सलुनीकियो १:३ से उन्होंने परमेश्वर का धन्यवाद किया क्योंकि विश्वासीयों का विश्वास बढ़ता जा रहा था. उनका आपसी प्रेम बढ़ रहा था.आर वे उपद्रव और कलेश सहते हुये भी अपने विश्वास में अडिग थे.

वचन ७ में, पौलुस विश्वासियों को दिलासा दिलाते हैं कि परमेश्वर तुम्हारे दूख और कलेश के लिये तुम्हे हर्जाना देंगे और तुम्हारा बदला उनसे लेंगे जिन्होंने तुम्हे कलेश दिया उन्हे बदले में कलेश देखर तब फिर उसने लिखा कि परमेश्वर उन्हे प्रतिफल देने का निश्यय कर चुके हैं:

''और तुम्हें जो कलेश पाले हो, हमारे साथ चैन दे (मुआवज़ा); उस समय जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकली हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा.

और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा.'' (२ थिस्सलुनीकियों १:७-८)

इसलिये यदि आपको उसके लिये दण्डित किया जा रहा है परमेश्वर की दृष्टि मे धार्मिकता है, आनंदित होईये प्रेरित पौलुस ने कहा है ''(आखिरकार) यदि तुमने अवराध करके घूसे खाये

और धीरज धरा, तो इसमें क्या बड़ाई की बात है. पर यदि भला काम करके दुख उठाते हो और धीरज धरते हो, तो यह परमेश्वर को भाता है'' (१ पतरस २:२०)

जब आप धार्मिकता करने के लिये दूख उठाते हैं, यीशु आपको आशीष देते हैं ये कहते हुये ''धन्य है वह जो धर्म के कारण सताये जाते हैं (धार्मिकता निभाते हुअे) क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्ही का है (पुर्जजीवित संतान परमेश्वर की प्रसनता में आनदित होती है और उद्धार पाती है अपनी बाहरी अवस्था से बेखबर). (मली ५:१०)

पतरस को असफलता झाड़ देनी पड़ी पौलुस को अस्वीकृति झाड़नी पड़ी और आपको असफलता और अस्थीकृति दोनो को झाड़ना होगा यदि आप परमेश्वर के द्वारा इस्तेमाल होना चाहते हैं. पर एक दोहरा प्रतिफल आपकी प्रतिक्षा कर रहा हैं.

झाड़ डालियो क्षमा न करना नाराज़गी मुसीबत और आत्म दया. झाड़ फेकिये अस्वाकृति, अपराध, विश्वासघात, अफ़वाहे, न्याय और यहुदा का चुंबन. झाड़ फेंको रिश्तेदारों का विवाद नज़दीकी दोस्तों और अजनबियों से विवाद. अपनी गलतियां और असफलतायें झाड़ फेंको. अपनी अंसंपूर्णता के प्रति निराशा झाड़ फेंको.

बस इसे भूल जाओ और आगे बढ़ो

शोक मनाने का समय खत्म हुआ. अब आनंद मनाने का समय है.

२८

चमत्कारी इनाम

जब मैं इस पुस्तक की पहली पण्डुलिपि की प्रूफ़ रीडिंग कर रही थी. परमेश्वरने एक महान दिशा में कार्य किया और मेरे और मेरे पिता के संबंधों में मुक्ति और चंगाई दी. मैं ये नहीं मानती कि ये अकस्मात हो गया कि मेरी कहानी के निष्कर्ष तक पहुंचते ये चमत्कारी अंत ऐसे सही समय पर हुआ कि मैं उसे अपनी इस किताब में शामिल कर सकीं.

हालांकि मैंने अपने पिता को क्षमा कर दिया था, हमारे संबंधों में तनाव और असहजता बनी रही थी. उन्होंने कभी भी पूरीतरह अपने कामों के लिये पूरी ज़िम्मेवारी नहीं स्वीकार की थी या इसका सामना किया था कि उनके इस बर्त्ताव का मेरे जीवन पर कितना हानिकारक प्रभाव पड़ा था. कई सालों तक मैं जितना हो सका अपने माता पिता के साथ मैंने रिश्ता बनाये रखने की कोशिश की पर ये लगातार एक चुनौती बना रहा.

मैंने दो अवसरों पर इन मुद्दों की अपने पिता और माता के साथ सामना करने की कोशिश की पर ये दोनों ही प्रयास असफल रहे. हरबार सामना करने पर गुस्सा, नाराज़गी और दोष उभर कर आते बिना कोई सही नतीजा निकले. कम से कम दरवाज़ा खुल गया था, और परमेश्वर गुप्त रूप से काम कर रहे थे, पर्दे की पीछे, तब भी जब ऐसा लगता था कि कुछ भी कभी नहीं बदलेगा.

उसके बाद जब मैंने अपने माता पिता को अपने नज़दीक रहने के लिये पास बसा दिया. परमेश्वर मेरे साथ निपटने लगे उस बाईबल की आज्ञा द्वारा ''तू अपने माता पिता का आदर करना'' (देखिये उत्पत्ति २०:२२) मैं सच कहूं तो हालांकि मैं उनका आदर करने को तैयार थी और ऐसा करने की इच्छा भी थी, पर मैं इतनी परेशान

थी कि जानती नहीं थी कि इसे कैसे किया जाये. मैं उनके यहां जाती, उन्हें बुलाती, उनके लिये प्रार्थना करती और उनके लिये उपहार लेकर जाती, पर फिर भी प्रभु मुझसे कहते, ''अपने माता पिता का आदर कर'' मैं जान गई कि वह मुझे कुछ दिखाने की कोशिश कर रहे हैं. पर मैं समझ नहीं पा रही थी कि वो क्या है.

अंत में एक शाम जब मैंने इसे दोबारा सुना, ''अपने माता पिता का आदर कर'' मैंने प्रभु से कहा कि मैंने सबकुछ किया जो मैं जानती थी, और मैं ये नहीं जानती कि अब और क्या वह चाहते हैं मुझसे.

फिर मैंने उन्हें ये कहते सुना उनका आदर अपने हृदय में करो. जिसके लिये मैंने उत्तर दिया, ''मैं किसके लिये उनका आदर करूं?'' उन्होंने मुझे दिखाया मैं उनका आदर और प्रशंसा कर सकती थी. अपने हृदय में कि उन्होंने मुझे जीवन दिया, मुझे खिलाया पिलाया और पहनाया, और मुझे स्कूल पढ़ने के लिये भेजा.

मैं उनके लिये बाहरी तौर पर काम कर रही थी, पर परमेश्वर दिल में देखते हैं. मुझे मुश्किल लगा उनके लिये प्रेम और प्रशंसा की भावना जगाना क्योंकि याद आती थी तो सिर्फ़ पीड़ा पर यहीं बात बार बार परमेश्वर से सुनने पर तकरीबन एक साल तक, मैं जान गई कि यह महत्वपूर्ण है, इसलिये मैंने वो किया जो उन्होंने कहा.

मैंने प्रार्थना की ''धन्यवाद प्रभु मेरे माता पिता के लिये और इस बात के लिये कि उन्होंने मुझे जीवन दिया. वे मुझे इस संसार में लाये; मुझे खिलाया पिलाया, पहनाया ओढाया और मुझे स्कूल भेजा, और ऐसा करने के लिये मैं उनका आदर करती हूँ.'' मैंने सचमुच देखा कि परमेश्वर क्या कह रहे थे, और उस घड़ी मैंने सचमुच अपने माता पिता की प्रशंसा की कि उन्होंने मेरे जीवन एक विशेष भूमिका अदा की है.

एक सप्ताह बाद हमारे नये टेलीविज़न प्रोग्राम ''लाईफ़ इन दि वर्ल्ड'' के संदर्भ में एक मुद्दा उठा. मुझे खबर मिली कि मेरे परिवार के सदस्यों ने प्रोग्राम देखा और वे मेरे माता पिता को मज़बूर कर रहे थे कि वे भी वो प्रोग्राम देखें जब वो आता है, और मैंने महसूस किया कि मुझे उन्हें बता देना चाहिये कि अपने बचपन के यौन शोषण के बात में प्रोग्राम में बोलती हूँ क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बुलाया था कि अन्य लोगों की भी मदद करूं जिनका शोषण हुआ और उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ.

मैं कल्पना नहीं कर सकीं कि उनपर क्या बीतेगी यदि उन्होंने अपना टेलीविज़न खोला और मुझे ये कहते सुना, ''मैं बाल शोषण वाले माहौल से नाता रखती हूँ'' मैं उन्हें ठेस नहीं पहुंचाना चाहती थी. मुझे बहुत बुरा लगा, पर मैं क्या कर सकती थी? मैं जानती थी कि लोगों को आसानी होती है मुझसे सम्पर्क सा महसूस करने में क्योंकि मैं अपनी पृष्ट भूमि के विषय में खुलकर बात करती थी, मैंने बहुत प्रार्थना की और फिर अपने परिवार की एक सभा बुलाई अपने पति के साथ, डेव और हमारे बच्चे हमने फ़ैसला किया कि चाहे मेरे माता पिता को बताने से वो थोड़ा बहुत रिश्ता जो है वो भी टूट सकता है. मुझे अपने जीवन में परमेश्वर की आज्ञा माननी चाहिये.

हम उनसे मिलने गये, और मैंने सच्चाई बता दी, और उन्हें ये बताया कि मैं ये उन्हें ठेस पहुंचाने के लिये नहीं कर रही थी. पर मेरे पास और कोई चारा नहीं था यदि मुझे उन लोगों की मदद करनी है जिनकी मदद करने के लिये परमेश्वर ने मुझे बुलाया है.

मैंने परमेश्वर की चमत्कार करने की शक्ति देखी. मेरे माता और पिता वहां बैठे रहें और उन्होंने मुझे शांति से सुना. कोई गुस्सा नहीं ज़ाहिर किया गया; कोई दोषारोपण नहीं हुआ सच से मागने की कोई कोशिश नहीं.

मेरे पिता ने फिर मुझसे और डेव से कहा कि वह कितने शर्मिंदा है उसके लिये जो उन्होंने मेरे साथ किया. उन्होंने कहा कि परमेश्वर जानते हैं कि उन्हें अफ़सोस है और यदि कोई तजवीज होती कि वह उसे वापस ठीक कर सकते तो वह करते. उन्होंने मुझे बताया कि कैसे वह स्वयं के वश में नहीं थे और खुद को रोक न सकते थे जो वह कर रहे थे उससे उन्होंने बताया स्वयं उनके साथ बचपन में शोषण हुआ और वह उसीको दोहरा रहे थे जो उन्होंने सीखा था और उसके आदी हो चुके थे.

उन्होंने बाद में बताया कि हाल ही में उन्होंने बहुत से शोषण पर आधारित टेलीविज़न प्रोग्राम देखे और उन्हें देखकर उन्हें महसूस हुआ कि यौन शोषण कितना हानिकारक हो सकता है और है. उन्होंने मुझे मुक्त कर दिया कि मैं जो चाहूं उनसे बात कर सकती हूँ और मुझे बताया कि मुझे किसी बात की फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं. उन्होंने कहा कि वह मुझसे रिश्ता सुधारना चाहते है और वह मेरा पिता और दोस्त दोनों बनने

की कोशिश करेंगे. मेरी माता बेशक बहुत खुश थी कि उन्हें अब अपने बेटी के साथ सच्चा रिश्ता निभाने का आनंद मिलेगा, नाती पोतों और पड़ पोतों के साथ.

उस दिन के बाद हमने मेरे पिता में कुछ बदलाव देखने शुरू किये वह विशेष अवसरों की सर्विस पर ईस्टर और क्रिस्मस पर चर्च जाते पर उन्होंने कभी इसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कहा. अभी तक उन्होंने अपना दिल यीशु को नहीं दिया था और अभी भी उनसे निभाना कठिन था. अंत में मेरी मां ने बताया कि उन्हें लगता है कि शायद परमेश्वर मेरे पिता से निपट रहे हैं. उन्होंने कहा, ''मैंने उन्हें कई बार देखा है अपने बिस्तर के छोट पर बैठे और रोते हुये.''

फिर एक थैंक्सगिविंग की सुबह मेरी मा ने मुझे टेलीफ़ोन किया और कहा कि, ''आज पारिवारिक भोज में शामिल होने के लियेमेरे पिता बहुत बिमार थे. वे चाहते तो थे कि आ सकें पर उन्हें बिल्कुल ठीक नहीं लग रहा, पर वह तुम्हें बताना चाहते है कि अगर तुम और डेव उनसे मिलने आओ, तो वह तुम दोनों से किसी विषय पर बात करना चाहते हैं.''

इसलिये हम वहा गये और जिस पल हम कमरे में आयें उन्होंने रोना शुरू कर दिया, उन्होंने कहा, ''मैं बस तुम्हें बताना चाहता हूं कि मुझे कितना अफ़सोस है उसके लिये जो मैंने तुम्हारे साथ किया. मैं इस बारे में कुछ कहना चाहता था पिछले तीन सालों से पर बस मुझमें हिम्मत नहीं थी.''

ये उनके शब्द थे. ये दिलचस्प है पीछे मुड़कर देखना कि तीन साल हो गये जबसे मैंने अपने माता पिता के लिये वो घर खरीदा था और उन्हें अपने पास बसा दिया था. इसलिये हमारा शुरूआती आज्ञाकारी कदम था कि प्रभु के निर्देश अनुसार एक बीज बोया गया था जो मेरे पिता की स्थिति में शैतान की कमर तोड़ने के लिये थे. फिर वो सच्चे पश्चात सहित रोये. मैंने कहा,''ठीक है डॅडी मैं आपको क्षमा करती हूँ.''

उन्होंने डेव से भी कहा, कि उन्हें क्षमा कर दें. और डेव ने कहां, ''मैंने आपको क्षमा किया'' फिर मैंने अपने पिता से पूछा कि क्या आप यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करना चाहेंगे?

और उन्होंने कहा ''हां''

क्योंकि उन्होंने सचमुच पश्चाताप किया था, इस बार ये बिल्कुल अलग था जब उन्होंने प्रार्थना की. उन्होंने परमेश्वर को पाया, हालांकि कई दिन तक वो इस से लड़ते रहे, ये सोचतेहुये कि वह बहुत खराब थे क्षमा पाने योग्य न थे, उन्होंने अंत में बपतिस्मा लेना चाहा.

दस दिन बाद हमने अपने पिता को बपतिस्मा दिया. मैं आपको ईमानदारी से बता रही हूं कि मैंने कभी किसी में इतना बदलाव नहीं देखा था. उनके चरित्र में संपूर्ण परिवर्तन हुआ. वह अभी भी बिमार हैं, वह हमेशा बुरा महसूस करते हैं, पर वह कभी ज़्यादा शिकायत नहीं करते. वह दरअस्ल एक बहुत ही प्यारे व्यक्ति बन गये हैं.

क्या मेरे पिता ने उसकी कीमत चुकाई जो उन्होंने किया? बिल्कुल. वह बूढ़े है और उनका कोई मित्र नहीं. वह कहीं घूम फिर नहीं सकते. पर सचमुच ये विश्वास करती हूं कि उन्हें प्रेम देकर, लगातार प्रेम और परमेश्वर की आज्ञा मानते हुये उन्हें अपने दिल में आदर देकर, यहीं वो है. जिसने अंत में सब दीवारे ढाह दी और उन्हें पश्चाताप करने लगाया.

मेरे पति डेवने मेरे पिता से कहा, कि उनके पश्चाताप का दिन उनके लिये उनके जीवन का सबसे महान दिन था. जहां तक मेरा सवाल है मैं पूरी तरह समझ गई हूं परमेश्वर का वादा जो भविष्यवक्ता यशायाह के ज़रिये उन्होंने कहा, ''तुम्हारी नाम धरायी की सन्ती दूना भाग मिलेगा, अनादर की सन्ती तुम अपने भाग के कारण जयजयकार करोगे. तुम अपने देश में दूने माग के अधिकारी होंगे. और सदा आनंदित होते रहोगे. (यशायाह ६१:७) हमें दुगनी आशीष मिली है! परमेश्वर ने दोनों शोषक और शोषित को संभाला है और स्थापित किया है!

परमेश्वर वफ़ादार हैं! वह सपने देखते हैं और कभी आशा नहीं छोड़ते.

लेखिका के विषय में

जॉयस मायर १९७६ से परमेश्वर के वचन की शिक्षा दे रही हैं और १९८० से संपूर्ण काल की सेवकाई में कार्यस्त हैं. वह ७० से ज़्यादा बिकने वाली प्रेरणात्मक पुस्तकों की लेखिका है. जिसमें शामिल हैं. ''हाऊ टू हियर फ्राम गॉड'', ''दि जॉय ऑफ़ बिलीविंग प्रेयर'' और ''बैटलफ़ील्ड ऑफ़ दि माईंड'' के साथ साथ हजारों ऑडियो कैसेट और एक पूरी वीडियो लायब्रेरी जॉयस के ''लाईफ़ इन दि वर्ड'' रेडियो और टेलीविज़न प्रोग्राम संसार भर में प्रचारित किये जाते हैं और वह 'लाईफ़ इन दि वर्ड' सभायें करती हुई बहुत यात्रायें करतीहैं. जॉयस और उसके पति डेव अपने चार व्यस्क बच्चों के माता पिता हैं और सेंट लुईस, मिसूरी में बस गये हैं.

प्रभु के साथ एक व्यक्तिगत संबंध के लिए प्रार्थना

अगर आपने कभी यीशु मसीह जो शांति का राजकुमार है उसको कभी अपने प्रभु और उद्धारकर्त्ता के रुप में ग्रहण नही किया है तो मैं आपको निमंत्रित करती हूँ कि आप इस समय ऐसा करें। आप निम्नलिखित प्रार्थना को करें और अगर आप इस बात के प्रति वाकई ईमानदार हैं तो आप मसीह में एक नए जीवन को अनुभव करेंगे।

हे पिता,

आपने इस जगत से ऐसा प्रेम रखा कि आपने अपने एकलौते पुत्र को दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए।

आपका वचन कहता है कि हम विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही बचाए गए हैं और यह आपकी ओर से एक दान है। हम उद्धार को कमाने के लिए कुछ भी नही कर सकते हैं।

मै विश्वास करता हूँ और अपने मूँह से अंगीकार करता हूँ कि यीशु मसीह आपका पुत्र और जगत का उद्धारकर्त्ता है। मैं विश्वास करता हूँ कि क्रूस पर वह मेरे लिए मारा गया और मेरे सारे पापों को उठा कर उनकी कीमत को चुकाया। मुझे अपने हृदय में इस बात का विश्वास है कि आपने यीशु को मृतकों में से जिलाया है।

मैं आपसे अपने पापों की क्षमा माँगता हूँ। मैं अंगीकार करता हूँ कि यीशु मेरा प्रभु है। आपके वचनानुसार, मेरा उद्धार हो गया है और मैं अनन्त काल आपके साथ व्यतीत करुँगा। धन्यवाद पिता, मैं बहुत आभारी हूँ। यीशु के नाम से, आमीन।

इन पदों को देखो यूहन्ना 3:16; इफिसियों 2:8,9; रोमियों 10:9,10; 1 कुरिन्थियों 15:3,4; यूहन्ना 1:9; 4:14-16; 5:1,12,13